नसीहत आमोज़ और
ईमान अफ़रोज़

ख़ुत्बाते हरम

इमामे काबा फ़ज़ीलतुश्शैख़ डॉक्टर अब्दुर्रहमान अस्सुदैस

सिलसिला मतबूआत इमामुद्दअवा (43) तर्जुमा सेक्शन

नसीहत आमोज़ और ईमान अफ़रोज़

खुत्बाते हरम

इमामे कअ़बा फ़ज़ीलतुश्शैख़ डाक्टर अब्दुर्रहमान अस्सुदैस
प्रोफ़ेसर दिरासातुल अलिया अश्शरईया शरीअ़त कालिज
उम्मुल कुरा यूनीवर्सिटी मक्का मुकर्रमा

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

ख़ुत्बाते हरम

इमामे कअ़बा फ़ज़ीलतुश्शैख़ डाक्टर अब्दुर्रहमान अस्सुदैस

बएहतिमाम: मुहम्मद नासिर ख़ान

नाशिर

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159, Fax:23279998, Res: 23262486

KHUTBAAT-E-HARAM

Imam-e-Ka'aba Fazeelatush-Shaikh Abdur Rehman Assudais

Hindi Edition: 2012 Pages: 310

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.:23265406, 23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

मज़ामीन

अर्ज़े नाशिर

अस्रे हाज़िर में ऐसी शख़्सियात बहुत कम होंगी जिन्हें आलमे इस्लाम में निहायत मुहब्बत और एहतिराम की नज़र से देखा जाता है। इस किताब के मुसन्निफ़ फ़ज़ीलतुश्शैख़ डाक्टर अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल अज़ीज़ अस्सुदैस उन्ही खुशक़िस्मत और नामवर शख़्सियात में से एक है जिन्हें आलमे इस्लाम में निहायत आला और मुम्ताज़ मक़ाम हासिल है। बिला मुबालिग़ा दुनिया में करोड़ों मुसलमान ऐसे हैं जिन्होंने इनकी इक़्तिदा में नमाज़ अदा की है, खुत्बाते जुम्आ में हाज़िर हुए हैं, नमाज़े तरावीह में शिर्कत की है और ख़त्मे क़ुर्आन के मौक़ा पर रो रोकर दुआएं की हैं।

शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस, जिनकी कुन्नियत अबू अब्दुल अज़ीज़ है, जब अपनी दिलकश आवाज़ में क़ुर्आने करीम तिलावत करते हैं तो सुनने वाले झूम उठते हैं। खुद इन पर और सुनने वालों पर भी विज्द तारी हो जाती है। वह क़ुर्आने हकीम की तिलावत के दौरान में खुद भी रोते हैं, अपने सामईन को भी रुलाते हैं।

सुब्हानल्लाह! तिलावते क़ुर्आने करीम की तासीर ही निराली है। जितनी बार पढ़ लें या सुन लें हर दफ़ा एक नई लज़्ज़त महसूस होती है। शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस की आवाज़ में तिलावते क़ुर्आने करीम पूरी दुनिया में मक़्बूले ख़ास व आम है। हर शहर और बस्ती में उनकी आवाज़ गूंजती है। हरमे पाक में जाएं तो शैख़ अब्दुर्रहमान की पुरसोज़ आवाज़ सुन कर दिल को सुकून मिलता है और रूह तर व ताज़ा हो जाती है।

फ़ज़ीलतुश्शैख़ डाक्टर अब्दुर्रहमान अस्सुदैस सऊदी अरब में सूबा

क़सीम के इलाक़ा बकीरिया में 1962 ई0 में पैदा हुए। उन्होंने रियाज़ में जमईयतुल तहफ़ीज़िल क़ुर्आनिल करीम के हलक़ाते क़ुर्आनिया में बारह साल की उम्र में क़ुर्आने करीम हिफ़्ज़ करने की सआदत हासिल की। उस दौर में फ़ज़ीलतुश्शैख़ अब्दुर्रहमान आले फ़रयान इस इदारे के सरबराह थे।

शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस बचपन ही से निहायत ज़हीन और फ़तीन थे। हाफ़िज़ा बला का तेज़ था। वालिदैन ने भी अपने होनहार बच्चे की तालीम व तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी। मुतअद्दिद नामवर उलमा और क़ुर्रा ने उन पर ख़ूब मेहनत की। इनमें शैख़ क़ारी मुहम्मद अब्दुल माजिद ज़ाकिर और शैख़ मुहम्मद अली हस्सान सरे फ़ेहरिस्त थे। इनकी इब्तिदाई तालीम रियाज़ के मदरसा मुसन्ना बिन हारिसा में हुई, फिर इनका दाख़िला रियाज़ के अलमअ़हदुल इलमी में हो गया। यहां उन्होंने इस्लाम के बुन्यादी उलूम हासिल किये। उस दौर में यहां बड़ी बड़ी शख़्सियात पढ़ाती थीं, उनके नुमायां असातिज़ा में शैख़ अब्दुल्लाह अलमुनीफ़ और शैख़ अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान तुवैजरी थे। अलमअ़हदुल इलमी एक ऐसा इदारा है जहां से उलूमे किताब व सुन्नत के चशमे फूटते हैं। उन्होंने 1979 ई0 में इस इदारे से मुम्ताज़ तक़दीर के साथ नुमायां तालिबे इल्म की हैसियत से फ़रागत हासिल की, फिर कुल्लियतुश्शरीआ में दाख़िल हुए, यहां उनके नुमायां असातिज़ा में मुफ़्तीये आज़म सऊदी अरब शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह आल अश्शैख़, शैख़ डाक्टर अब्दुल्लाह बिन जबरीन वग़ैरा जैसी नामवर शख़्सियात शामिल थीं। कुल्लियतुश्शरीआ से आप की फ़रागत 1983 ई0 में हुई।

रियाज़ की बड़ी बड़ी मसाजिद में बहुत से इल्मी हल्क़े क़ाइम हैं। जिस दौर में शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस तालिबे इल्म थे, शैख़

अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ का दीरा की मस्जिद में इल्मी हल्क़ा मअ्रूफ़ था। रियाज़ के हर कोने से तालिबे इल्म आते, तफ़्सीर, हदीस और फ़िक़्ह के उलूम सीखते और दिलों को मुनव्वर करते। शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस ने इन इल्मी हल्क़ों से वाफ़िर हिस्सा वसूल किया। जिन दीगर असातिज़ा से उन्होंने फ़ैज़ हासिल किया, उनमें अल्लामा अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अफ़ीफ़ी, डाक्टर सालेह अलफ़ौज़ान, शैख़ अब्दुर्रहमान अलबर्राक और शैख़ अब्दुल अज़ीज़ अलराजिही जैसी शख़्सियात शामिल हैं।

किसी भी मअ्रूफ़ इल्मी शख़्सियत की तामीर में असातिज़ा का किर्दार बहुत नुमायां होता है। हमारे बर्रे सग़ीर के बेशतर क़ारईन के लिये मुंदरजा बाला असातिज़ा यक़ीनन ग़ैर मअ्रूफ़ होंगे मगर जो लोग सऊदी अरब में हैं और जिनका दीनी उलूम से तअ्ल्लुक़ और वास्ता है, उनके लिये यह शख़्सियात जानी पहचानी और बड़े इल्मी मक़ाम की हामिल हैं।

शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस के इल्म में बदतरीज पुख़्तगी आती चली गई, ख़िताबत उनकी घुट्टी में पड़ी हुई थी। अल्फ़ाज़ उनके सामने हाथ बांधे खड़े होते। उन्होंने रियाज़ की बड़ी बड़ी मसाजिद में खुत्बए जुम्आ देना शुरू किया और फिर वह रियाज़ की बड़ी मअ्रूफ़ व मशहूर मस्जिद में, जो उनके उस्ताद शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अफ़ीफ़ी के नाम से मौसूम थी, बतौरे ख़तीब मुतअ्य्यन किये गए। साथ साथ वह कुल्लियतुश्शरीआ में तदरीस के फ़राइज़ सरअंजाम देने लगे। इन एज़ाज़ात के साथ कुदरत उनको एक आला, अरफ़ा और बड़ा मक़ाम देना चाहती थी।

शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस को 1984 ई0 में बैतुल्लाह अलहराम का इमाम और ख़तीब मुक़र्रर किया गया। उस वक़्त से अब तक

इस उहदए जलीला पर फ़ाइज़ हैं। इस दौरान में हर साल उन्हें रमज़ानुल मुबारक में तरावीह पढ़ाने का मौक़ा मिला। दीगर अइम्मए हरमैन शरीफ़ैन और बतौरे ख़ास फ़ज़ीलतुश्शैख़ सऊद अल शुरैम के साथ उन्होंने न जाने कितनी बार कुर्आन मजीद हरम शरीफ़ में सुनाया है। यह तो अल्लाह ही जानता है कि उनकी दर्द भरी दिलकश आवाज़ अब तक कितने लोगों के क़बूले इस्लाम का ज़रीआ बन चुकी है। कई एक लोग तो महज़ उनकी कैसिटों के ज़रीए से कुआने करीम हिफ़्ज़ कर चुके हैं।

उन्होंने 22 शाबान 1404 हि0 को अस्र की नमाज़ से अपनी इमामत का आग़ाज़ किया और तीन हफ़्तों के बाद 15 रमज़ान 1404 हि0 को हरम शरीफ़ में पहला खुत्बए जुम्आ इर्शाद फ़रमाया। बैतुल्लाह अलहराम की इमामत व ख़िताबत के साथ साथ उन्होंने तालीम व तदरीस को भी जारी रखा। उन्होंने रियाज़ की इमाम सऊद यूनीवर्सिटी से 1408 हि0 में फ़िक़्ह इस्लामी में मास्टर डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने जामिआ उम्मुल कुरा के किस्मुल क़ज़ा (ला कालिज) में तलबा को पढ़ाना शुरू कर दिया। पढ़ाने के दौरान में पी एच डी का मक़ाला भी लिखते रहे और 1996 ई0 में इम्तियाज़ी हैसियत से फ़िक़्ह इस्लामी में पी एच डी की डिग्री जामिआ उम्मुल कुरा मक्का मुकर्रमा से हासिल की।

डाक्टर अब्दुर्रहमान अस्सुदैस उन शख़्सियात में से हैं जिन्हें कुदरत ने दावते इस्लाम के लिये चुन लिया है। कुदरत ने एक और एज़ाज़ यह बख़्शा कि 1416 हि0 में बैतुल्लाह शरीफ़ के सिहन में मग़रिब के बाद दर्स व तदरीस के लिये उन्हें बतौरे मुदर्रिस मुक़र्रर किया गया। वह दुनिया भर से आए हुए हुज्जाज के सामने अक़ीदा, फ़िक़्ह, तफ़सीर और हदीस के मौज़ूआत पर दर्स देते और लोगों के

सवालात के शाफ़ी जवाबात भी देते थे। चार बेटों के शफ़ीक़ बाप एक बेहद मसरूफ़ और भरपूर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

दुनिया भर के बड़े बड़े लोग, ख़्वाह हुक्मरां हों या महकूम, सियासी रहनुमा हों या समाजी कारकुन, इल्मी शख़्सियात हों या उलमाए किराम सबकी दिली ख़्वाहिश होती है कि इस अज़ीम शख़्सियत से मुसाफ़हा करने का शर्फ़ हासिल करें।

2005 ई0 में दुबई की एक तन्ज़ीम की तरफ़ से उन्हें साले रवां की इस्लामी शख़्सियत के इन्आम के लिये मुंतख़ब किया गया और उन्हें इस्लाम और कुर्आन मजीद के तअ़ल्लुक़ के हवाले से नुमायां तरीन शख़्सियत क़रार दिया गया। शैख़ अस्सुदैस जितनी बड़ी शख़्सियत के मालिक हैं उसी क़दर मुतवाज़ेअ़ भी हैं और यह बड़े लोगों की अलामत भी है कि वह एहसानाते इलाही के बोझ से झुकने ही में अपनी बेहतरी ख़्याल करते हैं। कुदरत उन पर मेहरबान है और उनकी शोहरत व इज़्ज़त और एहतिराम चार सू फैला हुआ है।

राक़िमुल हुरूफ़ की यह खुश क़िस्मती है कि वह दारुस्सलाम को और मुझे ज़ाती तौर पर जानते हैं। फिर एक दिन उनके सैक्रेट्री अब्दुल अज़ीज़ अंसारी का फ़ोन आया कि शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस आप को सलाम कहते हैं और उनकी ख़्वाहिश है कि दारुस्सलाम उनकी किताब كَوكَبَةُ الكَوكَبَة का तर्जुमा मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाए करे। यह किताब उनके खुत्बाते हरम के मज्मूए كـــوكبة الخطب المنيفة का इख़्तिसार है।

शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस खुत्बए जुम्आ की तैयारी के लिये कितनी मेहनत करते हैं: इसका अंदाज़ा आप को इस वाक़िए से होगा। कुवैत के मशहूर आलिमे दीन डाक्टर मुहम्मद अलऊज़ी कहते हैं: एक दफ़ा जब शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस कुवैत के दौरे पर थे,

मेरी उनसे मुलाक़ात हुई। मैंने उनकी शख़्सियत में तवाज़ो, हिक्मत व दानिश और इल्म व अमल का एक उम्दा नमूना देखा। इसी दौरान में उन्होंने मुझे अपनी किताब "कोकबतुल कोकबा" का एक नुस्ख़ा हदया किया और फ़रमायाः जब मैं हरमे मक्की के लिये खुत्बा तैयार करता हूं तो हर खुत्बे को एक अज़ीम मिशन समझ कर उसकी तैयारी करता हूं। जुम्आ से एक दो रोज़ पहले ही मैं लोगों से मुलाक़ातें बंद कर देता हूं ताकि पूरी तवज्जोह और इन्हिमाक से अपने मौज़ूअ़ का हक़ अदा कर सकूं और इसके लिये दुरुस्त तरीन मालूमात जमा कर सकूं, इसलिये कि मैं जानता हूं कि यह वह अज़ीम मक़ाम है जिससे बढ़ कर दुनिया में कोई मक़ाम नहीं और यह वह जगह है जहां अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने खड़े होकर पूरी दुनिया के मुसलमानों को ख़िताब फ़रमाया था।

डाक्टर मुहम्मद अलऊज़ी कहते हैंः शैख़ अब्दुर्रहमान अस्सुदैस की इस बात में उन ख़तीब हज़रात के लिये सबक़ और नसीहत है जिन्हें जुम्आ के दिन सुब्ह दस बजे तक खुत्बे के मौज़ूअ़ और उसकी तैयारी का कुछ पता नहीं होता।

क़ारईने किराम! यक़ीनन मेरे और दारुस्सलाम के लिये यह बहुत इज़्ज़त व शर्फ़ की बात है कि हम उनके इर्शादकर्दा खुत्बाते हरम उर्दू ज़बान में शाए कर रहे हैं। मैंने खुद उनकी बहुत सारी तक़ारीर और खुत्बात सुने हैं। उनके ईमान अफ़रोज़ खुत्बात उम्मत की दुन्यवी और उख़्रवी नजात का गिरां क़द्र ज़रीआ़ हैं। उनका मंच बड़ा पुख़्ता है और उन्हें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और अदयान के उसूल व ज़वाबित पर बहुत उबूर हासिल है। उन्हें अरब ज़बान के हज़ारों अशआ़र अज़बर हैं और आवाज़ इस क़द्र खूबसूरत और वाज़ेह है कि अज्मी लोग भी

उन की अरबी आसानी से समझ लेते हैं। मुझे बारहा उनके पीछे क़्यामुललैल और ख़त्मे क़ुरआन की दुआ में शिर्कत का मौक़ा मिला। यह क़ुदरत की देन है कि घंटों तिलावत और दुआ के बावजूद उनकी आवाज़ में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं आता। हम इब्तिदाई बरसों में जिस तरह उनकी गूंजी हुई हयात बख़्श आवाज़ सुना करते थे, आज मुरूरेसिनीन के बाद भी उनकी वही आन बान क़ाइम है।

जहां तक इस किताब के मुतरजिम का तअ़ल्लुक़ है वह फ़ज़ीलतुश्शैख़ मुहम्मद अब्दुल हादी अलउमरी हैं। मेरा उनसे राबता, तअ़ल्लुक़ और दोस्ती बरसों पुरानी है। बिरमंघम में मुक़ीम अब्दुल हादी उमरी निहायत नफ़ीस शख़्सियत के मालिक हैं। असल वतन हिंदुस्तान है मगर मुद्दत हुई बरतानिया के हो चुके हैं। वहां वह मजलिसुल क़ज़ाउल इस्लामी के सदर की ज़िम्मादारी अदा कर रहे हैं। मुतअ़द्दिद बार वहां की मरकज़ी जमइयत अह्ले हदीस के अमीर और मर्कज़ी उहदेदार रहे। निहायत फ़ाज़िल आदमी हैं। बड़ी मरंज व मरंजां शख़्सियत के मालिक, बहुत बड़े आलिम व फ़ाज़िल, अदीब और बड़े पाए के ख़तीब हैं। उन्होंने निहायत मुहब्बत और शौक़ से इन ख़ुत्बात का तजुर्मा किया है। दारुस्सलाम रीसर्च सेंटर लाहौर के रुफ़क़ा जनाब तारिक़ जावेद आरफ़ी, हाफ़िज़ रिज़वान अब्दुल्लाह, साजिदुर्रहमान और हुज़ैफ़ा नसीर गूंदल ने न सिर्फ़ तजुर्मे पर नज़्रे सानी की, उसकी नोक पलक दुरुस्त की बल्कि अस्ल अरबी मुस्वद्दे को सामने रखते हुए मुतअ़द्दिद मक़ामात पर अहम अरबी इबारात, अहादीस, आसार, ज़र्बुल अम्साल और अशआ़र का इज़ाफ़ा भी किया है। इससे किताब की अहमियत व इफ़ादियत यक़ीनन दो चंद हो गई है। क्या कहने आर्ट डाइरेक्टर मुहम्मद सिफ़त इलाही और उनके

रुफ़का हारून अलरशीद, असद अली और अबू मुसअ़ब के जिन्होंने कमाल डीज़ाइनिंग करके इसके हुस्न को दो बाला कर दिया। इंशा अल्लाह यह किताब तमाम उम्मते मुस्लिमा के लिये मुफ़ीद साबित होगी।

ख़ादिमे किताब

अब्दुल मालिक मुजाहिद

मैनेजिंग डाइरेक्टर दारुस्सलाम अलरियाज़, लाहौर

अर्ज़े मुतरजिम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْمُجْتَبٰى مُحَمَّدِ ن الْمُصْطَفٰى وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ مَصَابِيْحِ الدُّجٰى وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ اللِّقَاءِ

अम्मा बअ़द:

खुत्बए जुम्आ की बड़ी अहमियत है। इसकी अहमियत और फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्दिद अहादीस वारिद हुई हैं जिनका खुलासा यह है कि खुत्बा शुरू होने से क़बल मुसलमानों को मस्जिद में पहुंच जाना चाहिये। जो शख़्स ख़तीब के मिंबर पर बैठने के बाद मस्जिद में दाख़िल होगा वह जुम्आ की फ़ज़ीलत से महरूम रहेगा, खुत्बा पूरी तवज्जोह से सुनना चाहिये। दौराने खुत्बा कोई शख़्स मामूली सी भी लग़्व हर्कत या बातचीत न करे। गोया उम्मते मुस्लिमा को कुदरती तौर पर हफ़्ता में एक दिन उनकी इस्लाह और रहनुमाई के लिये निहायत ज़र्री मौक़ा दिया गया, जो किसी और मज़हब के मानने वालों के हिस्से में नहीं आया। जुम्आ के मुक़ाबले में मुख़्तलिफ़ बड़े बड़े दीनी इज्तिमाअ़त, जल्सों और कांफ़्रेंसों को वह अहमियत हासिल नहीं जो जुम्आ को हासिल है, हालांकि दीगर इज्तिमाअ़त के लिये बहुत मेहनत की जाती है और बड़ा सरमाया ख़र्च किया जाता है, जबकि जुम्आ के लिये कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, लोग खुद अपनी ज़िम्मादारी और रग़बत से हाज़िर होते हैं। खुत्बाते जुम्आ की इतनी अहमियत है तो अंदाज़ा किया जा सकता है कि ख़तीब की

ज़िम्मादारी भी इसी हिसाब से किस क़द्र बढ़ जाती है ताकि इस हिफ़्त रोज़ा प्रोग्राम से भरपूर फ़ाएदा उठाया जा सके और ख़ुत्बाते जुम्आ तबर्रुक या वक़्त गुज़ारी के बजाए इस्लाह और दीनी पैग़ाम रसानी का बेहतरीन ज़रीआ़ बन सकें। लेकिन उमूमन देखा गया है कि ख़ुत्बाए किराम की अक्सरियत इससे मतलूबा फ़ासदा नहीं उठा पाती, ख़तीब को इतनी फ़ुर्सत ही नहीं होती कि हालाते हाज़िरा के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ख़ुत्बात मुरत्तब करे बल्कि बअ़ज़ औक़ात ख़तीब साहब ऐसे बेसर व पाक़्सों, कहानियों और मुबालिग़ा आमेज़ हिकायात का सहारा लेते हैं कि तालीम याफ़्ता सामईन की उलझन में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है हत्ता कि बसा औक़ात ऐसी कहानियों के बाइस ख़तीबों से तनफ़्फ़ुर पैदा होने लगता है।

ख़तीब को सुन्नत के मुताबिक़ हालात और ज़रूरत का अदराक और लिहाज़ करते हुए मौज़ूअ़ इख़्तियार करना चाहिये। मौज़ूअ़ की मुनासिबत से क़ुर्आनी आयात और सही अहादीस का इंतिख़ाब करना चाहिये। मुस्तनद किताबों का मुतालआ़ करना चाहिये, फिर हालात से उनकी मुताबिक़त ज़रूरी है ताकि गुफ़्तगू में ताज़गी रहे और लोगों की बरवक़्त सही रहनुमाई हो सके। इसके लिये हालात पर गहरी नज़र और ठोस मालूमात की ज़रूरत होगी ताकि आप सही नतीजे तक पहुंच सकें। यूं ख़तीब की हैसियत एक माहिर हकीम की सी होगी जो इलाज से पहले मर्ज़ की तशख़ीस करके मरीज़ का इलाज तजवीज़ करता है और उसकी गुफ़्तगू जज़्बाती अंदाज़, बेजा तन्क़ीद या बेमक़्सद तब्सिरों के बजाए मुफ़ीद नसीहतों पर मब्नी होती है। ख़ुतबाते जुम्आ चाहे किसी भी मस्जिद में दिये जाएं उनकी अपनी मुस्तक़िल अहमियत और इफ़ादियत है लेकिन इस बुन्यादी अहमियत और इफ़ादियत में ज़मान व मकान और ख़तीब की शख़्सियत के

लिहाज़ से इज़ाफ़ा होता रहता है। मुहल्ले की मस्जिद के मुक़ाबले में शहर की जामा मस्जिद में दिये जाने वाले ख़ुत्बे का दाइराए इफ़ादियत ज़्यादा वसीअ़ होगा। शहर से आगे बढ़ कर मुल्क की मर्कज़ी मस्जिद तो इसमें दिये जाने वाले ख़ुत्बों की इफ़ादियत दो चंद होगी। इसी तरह ख़तीब की शख़्सियत के एतिबार से भी इसके अस्रात मुरत्तब होंगे और अगर यह ख़ुत्बा दुनिया के मुक़द्दस तरीन शहर मक्का मुकर्रमा की मर्कज़ी मस्जिद, मस्जिदे हराम में दिया जाए तो इसकी अहमियत, जामइयत और इफ़ादियत के क्या कहने, जहां दुनिया भर के हुज्जाज, मुअ़तमरीन या ज़ाइरीन का हर वक़्त जम्मे ग़फ़ीर रहता है, ख़तीबे जुम्आ की आवाज़ दुन्या के कोने कोने में पहुंचती है और हर ख़ुत्बा अपनी जगह एक तारीख़ी अहमियत लिये हुए होता है। मुम्किन है कि सामईन में से बअ़ज़ हज़रात को पूरी ज़िंदगी में सिर्फ़ वही एक जुम्आ वहां अदा करने का मौक़ा नसीब हुआ हो लेकिन ख़तीब के इर्शादात के बराहे रास्त लाखों मुसलमान और बिलवास्ता करोड़ों अफ़राद सुन रहे होते हैं, यह वह बेमिस्ल एज़ाज़ व इम्तियाज़ है जो दुन्या के किसी और इमाम या ख़तीब के हिस्से में नहीं आया।

ज़ेरे नज़र किताब इन ख़ुत्बात का मज्मूआ है जो मस्जिदे हराम के इमाम व ख़तीब अल्लामा अश्शैख़ डाक्टर अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल अज़ीज़ अस्सुदैस हफ़िज़हुल्लाह ने इर्शाद फ़रमाए हैं। शैख़े मुहतरम की दुन्या भर में तिलावते क़ुर्आन मजीद के मुंफ़रिद उस्लूब की वजह से एक पहचान है। दुनिया के लाखों मुसलमान आप के उस्लूबे तिलावत से अपनी तिलावत को मरबूत करना बाइसे सआ़दत समझते हैं और दुन्या के हज़ारों हुफ़्फ़ाज़े किराम ने तिलावते क़ुर्आन का अंदाज़ आप ही से सीखा। वह आपकी नक़्ल अपने लिये बाइसे एज़ाज़ समझते

हैं। ذَلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَاءُ इस बुलंद मक़ाम के साथ साथ शैख़ मुहतरम निहायत बुलंद पाया ख़तीब, पुख़्ता आलिमे दीन और साहबे उस्लूब अदीब हैं। बारह साल की उम्र में क़ुर्आन मजीद हिफ़्ज़ करने के बाद आप ने अपना तालीमी सफ़र तेज़ी से जारी रखा और फ़िक़्ह इस्लामी में डाक्ट्रेट करने तक आप का यह सफ़र कहीं नहीं रुका। आप उम्मुल क़ुर्रा यूनीवर्सिटी मक्का मुकर्रमा में उलूमे आलिया के प्रोफ़ेसर भी हैं।

आप के ख़ुत्बात की शान निराली है, ज़बान व बयान की महारत गोया मौजें मारता हुआ समंदर है। उमूमन हम्द व सना में ख़ुत्बे के मौज़ूअ़ का ख़ुलासा समेट देते हैं, फिर हालाते हाज़िरा पर बक़द्र ज़रूरते तब्सिरा और आलमे इस्लाम के मर्कज़ी मिंबर से मुतअ़ल्लिक़ीन, हुक्काम, उलमा, मुबल्लिग़ीन, सहाफ़ी और मुख़्तलिफ़ शुअ़बा हाए ज़िंदगी से तअ़ल्लुक़ रखने वालों के लिये उनकी ज़िम्मेदारियों की हकीमाना उस्लूब में याद दिहानी आप का ख़ास इम्तियाज़ है। अल्लामा मौसूफ़ के दिल में दुन्या भर के मुसलमानों के लिये जो तड़प है इसका अंदाज़ा उन ख़ुत्बात पर नज़र डालते ही हो जाता है। और उम्मते मुस्लिमा के लिये शैख़ मुहतरम की पुरसोज़ दुआओं का तज़किरा तो ज़बान ज़दे ख़ास व आम है। وَلَا أُزَكِّي عَلَى اللّٰهِ أَحَدًا۔

डेढ़ महीना पहले की बात है, शैख़ मुहतरम मुसलमानाने बर्तानिया के शदीद इस्रार पर दावती मक़्सद से तशरीफ़ लाए तो शहर बांबरी आक्सफ़र्ड के सिटी हाल में मुअ़ज़्ज़ीन शहर की तरफ़ से मौसूफ़ के एज़ाज़ में इस्तिक़बालिया तक़रीब मुन्अक़िद हुई। इसमें राक़िम को बतौरे मुतरजम शिर्कत का मौक़ा मिला। अलहम्दु लिल्लाह इससे पहले भी मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों में अइम्मए हरमैन और उलमाए

किराम खुसूसन शैख़ मौसूफ़ की कई मर्तबा तर्जुमानी की सआदत हासिल हुई। इस मौक़ा पर शैख़ मुहतरम ने अपनी नई किताब "كَوكَبَةُ الكَوكَبة" जो खुत्बाते हरम का मुख़्तसर मज्मूआ है, जिसमें मस्जिदे हराम में दिये जाने वाले उन्नीस खुत्बात जमा किये गए हैं, के तर्जुमें का हुक्म दिया ताकि उर्दूदां तब्क़ा इससे मुस्तफ़ीद हो सके। शैख़ हफ़िज़ुल्लाह से अक़ीदत और तअ़ल्लुक़ का तक़ाज़ा था कि मैंने तामीले इर्शाद का वादा कर लिया। जब तर्जुमें के लिये दोबारा किताब पढ़ी तो अंदाज़ा हुआ कि यह काम ख़ासा तवज्जोह तलब है, इसलिये कि यह किसी बाक़ाएदा तहरीर का नहीं बल्कि तक़रीर का मज्मूआ है, तहरीर और तक़रीर दोनों के अपने अपने दवाइर, असालीब और जुदागाना तक़ाज़े हैं। अगर एहतियात न की जाए तो एक फ़न के महासिन बसा औक़ात दूसरे फ़न की कमज़ोरियों में तबदील हो सकते हैं। तक़रीर में ख़तीब सामईन, हालात और माहौल के मुताबिक़ अपनी बात करता है और बअ़ज़ औक़ात एक ही बात को मुख़्तलिफ़ पैरायों में दुहराता है या बअ़ज़ बातें किनाये में कह जाता है। इर्दगिर्द की ख़बरें ताज़ा होती हैं, इसलिये इशारों की तह तक पहुंचना सामईन के लिये आसान होता है लेकिन वक़्त गुज़रने कें बाद इन इशारों की तौज़ीह या इनका पसमंज़र बयान करने की ज़रूरत पेश आती है। अलहम्दु लिल्लाह तर्जुमें का काम अल्लाह की तौफ़ीक़ से तीन हफ़्तों में मुकम्मल हो गया, मैंने कोशिश की है कि लफ़्ज़ी तर्जुमें के बजाए तर्जुमानी की जाए ताकि क़ारईन को शैख़ मुहतरम के पैग़ाम और रूहे ख़िताब तक पहुंचने में आसानी हो सके जो लफ़्ज़ी तर्जुमें से बसा औक़ात मुम्किन नहीं होती। उमूमन हम्द व सलात का तर्जुमा नहीं किया जाता लेकिन मैंने किया है क्योंकि शैख़ मुहतरम हम्द व सलात भी मौज़ूअ़ के लिहाज़ से एक ख़ास तरतीब

से पेश करते हैं, इसलिये इसे बग़ैर तर्जुमा किये छोड़ना मुनासिब नहीं समझा, बअ़ज़ जगहों पर उर्दू तर्जुमे के साथ साथ इबारत भी नक़्ल की गई है ताकि खुतबा को सहूलत हो सके।

इमाम मुहतरम ने अपने ख़ुत्बात में हवालाजात का मुकम्मल एहतिमाम किया है, हत्ता कि अरबी के मुश्किल अल्फ़ाज़ की तहक़ीक़ भी हवालाजात से मुज़य्यन की है। शैख़ जिस मेहनत और बारीक बीनी से ख़ुत्बात तरतीब देते हैं, इसका अंदाज़ा उन हवालाजात पर नज़र डालने ही से हो जाता है और साफ़ मालूम होता है कि हर बात अस्ल माख़ज़ और मस्दर से ली गई है। उमूमन ख़ुत्बाए किराम इसका एहतिमाम कम ही करते हैं। अस्ल मराजअ़ तक पहुंचने के बजाए मालूमात में नक़्ल दर नक़्ल का सिलसिला चलता है जिससे बअ़ज़ औक़ात नुसूस का मफ़हूम ही कुछ से कुछ हो जाता है।

अज़ीज़ी मौलाना अब्दुल बासित अलअम्री इमाम मस्जिद न्यूकासिल ने तर्जुमे को टाइप करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और बड़ी दिलचस्पी के साथ टाइप का काम मुकम्मल किया, मौलाना अब्दुल रब साक़िब इमाम जामा मस्जिद डडली ने पुरूफ़ रीडिंग की। अल्लाह तआ़ला इन अहबाबे किराम को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए, इस काविश को क़बूल फ़रमाए, इस किताब को क़बूले आम बख़्शे और हर पढ़ने वाले को इसके मल्फ़ूज़ात व मफ़ाहीम पर मुख़्लिसाना अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे।

तालिबे दुआ

मुहम्मद अब्दुल हादी अलअम्री

बिरमंघम, बर्तानिया

19 रमज़ान 1430 हि0, 9 सितम्बर 2009 ई0

मुक़द्दमा

हम्द व सताइश अल्लाह ही के लाइक़ है जिसने अपनी किताब को मुहकम बनाया और अपना बयान वाज़ेह फ़रमाया। मैं उसी की हम्द बयान करता हूं और उसी का शुक्र अदा करता हूं, उसकी ही जनाब में तौबा करता हूं, उसी से मग़फ़िरत तलब करता हूं। उसी ने ज़बान में कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई।

अल्लाह की रहमतें और सलामती हों रसूले अकरम सल्ल0 की ज़ाते गिरामी पर कि आपने मिंबर को ज़ीनत बख़्शी और आप ने ख़िताबत का हक़ अदा फ़रमाया। आप पर, आप की आल और अस्हाबे किराम पर जिन्होंने दावत और ख़िताबत का आला नमूना दिखाया और क्यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलें।

हम्द व सलात के बादः

दीने इस्लाम में ख़िताबत का मर्तबा बहुत ऊंचा है, शरीअ़त ने इसको खुसूसी अहमियत दी है, इस्लाम ने इसकी शान निहायत बुलंद की क्योंकि दावत व तबलीग़ में फ़न्ने ख़िताबत को खुसूसी अहमियत हासिल है। हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 खुतबा के इमाम और उनके लिये बेहतरीन नमूना थे। आप को अल्लाह तआ़ला ने जवामिउल कलम अता फ़रमाए। आप सल्ल0 निहायत कम अल्फ़ाज़ में जामेअ़ तरीन मफ़हूम अदा कर दिया करते थे। अल्लाह ने आप सल्ल0 को अरब व अजम पर फ़साहत व बलाग़त में फ़ौक़ियत दी। आप सल्ल0 का इर्शादे गिरामी हैः

إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا

"बेशक बअ़ज़ बयान जादू का सा असर रखते हैं।"[1]

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा:

إِنْ طَالَ لَمْ يُمْلَلْ وَإِنْ أَوْجَزْتَهُ

وَدَّ الْمُحَدَّثُ أَنَّهُ لَمْ يُوجِزْ

"आप की गुफ़्तगू में जादूई असर था। अगर आप तवील गुफ़्तगू फ़रमाते तो कोई उक्ताहट न होती। अगर मुख़्तसर बात करते तो सुनने वाला आरज़ू करता कि काश मज़ीद कुछ फ़रमाते।"[2]

ख़िताबत का यह सुनहरा सिलसिला सलफ़े सालिहीन में इसी तरह एक से दूसरे तक मुंतक़िल होता रहा, यहां तक कि हम तक भी इसकी झलकियां और आसार पहुंचे। उस वक़्त जबकि जदीद आलात और इंटरनेट वग़ैरा की मदद से ख़्यालात बड़ी आसानी से दूर तक निहायत तेज़ी से पहुंचाए जा सकते हैं, गोया कि हम मालूमात और ख़्यालात की मुंतक़ली के लिहाज़ से एक ही बस्ती में रिहाइश पज़ीर हैं, इस एतिबार से ख़तीबों की ज़िम्मादारियां पहले से ज़्यादा बढ़ चुकी हैं। मुसलमान बड़ी रग़बत और शौक़ के साथ इस हफ़्त रोज़ा रब्बानी प्रोग्राम के लिये खुद ब खुद हाज़िर होते हैं, लिहाज़ा ख़तीबे जुम्आ को चाहिये कि दरपेश मौज़ूअ़ पर मुनासिब तैयारी और बेहतरीन तरतीब से ख़्यालात मुरत्तब करे। अच्छे उस्लूब में गुफ़्तगू करे। उम्मते मुस्लिमा के मसाइल का हल पेश करे। ज़ख़्मों को मुंदमिल करने वाला मरहम तलाश करे ताकि हफ़्तरोज़ा प्रोग्राम से सही तौर पर फ़ाएदा उठाया जा सके। गोया ख़तीब एक तबीब की हैसियत रखता है जो मुआ़शरे की बीमारियों की तशख़ीस और उनके अस्बाब का

जाइज़ा लेकर हिक्मत व दानाई से सही इलाज तजवीज़ करता है। तशख़ीस और इलाज के सिलसिले में उसे अपने सामने रसूले अकरम सल्ल0 का उस्वए हसना रखना चाहिये क्योंकि सिर्फ़ आप सल्ल0 ही का नमूना मुअ़तदिल और मुतवाज़िन रास्ता फ़राहम करता है। ख़तीब को चाहिये कि अपने ख़िताब में लोगों के दिलों को जोड़ने और उनमें इत्तिहाद पैदा करने वाली बातें करे ताकि उनमें ऐसी दरारें पड़ें जिन से मुआशरे की चूलें ढीली हों। यक़ीनन वह ख़तीब अक़्लमंद होगा जो अपने मंसब को पहचाने, अपनी ज़िम्मादारियों को समझे और सामईन के जज़्बात का एहतिराम करे क्योंकि ख़िताबत से फ़ाएदा उसी वक़्त होगा जब आप उसका हक़ अदा करेंगे। आप की ख़िताबत गहराई और गीराई लिये हुए होनी चाहिये। ख़ुत्बे के लिये तम्हीद, मौज़ूअ़ के बुन्यादी नुकात की तौज़ीह और उस्लूबे बयान की महारत ज़रूरी है। अगर ख़तीब नबीये करीम सल्ल0 का उस्वए मुबारक पेशे नज़र रखे और अपने अंदर मतलूबा सलाहियत पैदा करे तो हमारी ख़िताबत अस्रे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हो सकती है। अगर इस तरीक़ेकार पर ख़ुतबा अमल करते तो शायद उनकी पोज़ीशन मौजूदा हालत से कहीं ज़्यादा बेहतर होती क्योंकि मिंबर का एक मक़ाम और ख़ुसूसियत है। दावत व तबलीग़ के लिये इसकी एक मुअस्सिर हैसियत है। अस्रे हाज़िर में ज़राए इबलाग़ और नश्री वसाइल की कसरत के बावजूद, एक दीनी फ़रीज़ा होने की वजह से जुम्अ़ा के ख़ुत्बात की अपनी नुमायां शान और अहमियत है। यह इसी ख़ुत्बे का मुंफ़रिद एज़ाज़ है कि इसके दौरान कोई फ़ुज़ूल बात, लग़्व हर्कत हत्ता कि किसी का अपने साथी को ख़ामोश कराना भी ठीक नहीं। यह इम्तियाज़ किसी और ख़ुत्बे या स्टेज को हासिल नहीं।

मुहतरम क़ारईन! मेरे लिये यह बात बाइसे मुसर्रत व सआदत

थी कि कुछ ही अर्सा कब्ल मेरे इन खुत्बाते जुम्आ का पहला मज्मूआ "السفر الأول" जो मस्जिदे हराम में दिये गये खुत्बात पर मुशतमिल था "كوكبة الخطب المنيفة من منبر الكعبة الشريفة" के उन्वान से मंज़रे आम पर आया। उसे ज़ाहिरी हुस्न और मअ़नवी गहराई के साथ दिलकश तबाअ़त की शक्ल और उम्दा पैराए में क़ारईन की ख़िदमत में पेश किया गया जो उसके मुतालए के लिये बेचैन थे। इस मजमूए में रुब्अ़ सदी की ख़िताबत का खुलासा है। यह खुत्बात उमूमन मस्जिदे हराम के मिंबर से दिये गये थे। मैं इस कामियाबी पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का शुक्र अदा करता हूं कि उसकी तौफ़ीक़े ख़ास के बग़ैर ये काम मुम्किन न था, मेरे लिये यह बात बाइसे इतमीनान है कि क़ारईने किराम ने इस मज्मूए पर अपनी पसंदीदगी का इज़्हार किया और इस काविश को बहुत सराहा। والحمد لله۔

खुसूसन इल्मी हल्क़ों और दावत व तबलीग़ के मैदान में काम करने वालों में इस किताब को ज़बरदस्त पज़ीराई हासिल हुई। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से इसकी इशाअत भी वसीअ़ पैमाने पर हुई थी। मुल्क के अंदर और बाहर आलमे इस्लाम में फैली हुई मसाजिद और मराकिज़ के ज़रीए अइम्मा और ख़ुतबा की कसीर तादाद इससे मुस्तफ़ीद हुई। अल्लाह इस अमल में इख़्लास अता फ़रमाए। क़ारईन की पसंद के बाइस मेरी हिम्मत बंधी कि इसका दूसरा हिस्सा भी जल्द ही ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता किया जाए। ان شاء الله۔

क़ारईने किराम और मुख़्तलिफ़ करम फ़रमओं की तरफ़ से जो मुख़्तलिफ़ तजावीज़ पेश की गईं उनमें से एक यह भी थी कि इस मज्मूए को मुख़्तसर करके शाए किया जाए ताकि मज़ीद इफ़ादए आम की गुंजाइश पैदा हो सके। तजवीज़ दी गई कि यह मज्मूआ जो

पचास खुत्बात और बारह अबवाब पर मुशतमिल है, इसके जवाहिर पारों को उन्नीस खुत्बात की शक्ल में यक्जा किया जाए। हर बाब के एक या दो खुत्बात को इसमें शामिल किया जाए जिससे किताब का मक्सद भी पूरा हो और तक्सीम करने में भी सहूलत हो जाए। ताकि मसरूफ़ियत के मौजूदा दौर में लोगों को भी मुतालए में आसान रहे। अपने अहबाब और मुख़्लिसीन की यह तजवीज़ मुझे पसंद आई। चुनांचे मैंने इसे मंज़ूर कर लिया और मुख़्तसर मज्मूए का नाम "كوكبة الكوكبة" रखा। इसी मज्मूए को दारुस्सलाम "खुत्बाते हरम" के नाम से उर्दू में शाए कर रहा है। उम्मीद है कि यह मज्मूआ इस्मे बा मुस्मा साबित होगा। ان شاء الله۔

मैं इस मज्मूए को हदियए क़ारईन करते हुए दुआ गो हूं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इसे क़बूले आम बख़्शने और असल किताब की तरह बल्कि इससे भी ज़्यादा इसकी पज़ीराई हो। इस मौक़ा पर इन तमाम अहबाब का शुक्र गुज़ार हूं जिन्होंने इसकी तैयारी से लेकर तक्सीम के मराहिल तक किसी भी क़िस्म का तआवुन किया। अल्लाह तआला उन्हें जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। मेरी यह कोशिश इल्म और दावत व तबलीग़ के मैदान में मुफ़ीद साबित हो और अल्लाह तआला इसे हिम्मतों में इक़्दाम और तबीअ़तों में ज़ौक़ अमल बेदार करने का ज़रीआ बनाए। उम्मीद है कि क़ारईन मुझे अपनी दुआओं में याद रखेंगे और अपने मशवरों और तजावीज़ से आगाह करेंगे। मैं इसमें किसी कमाल का हरगिज़ दावेदार नहीं। बस इतनी बात ज़रूर है कि मैंने इसे ज़ाहिरी और मअ़नवी महासिन के साथ पेश करने की पूरी कोशिश की है। तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से होती है, इसी पर मेरा भरोसा है और इसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूं।

शाइर ने कहा है:

وإنْ تَجِدْ عَيبًا فَسُدَّ الخَلَلا
فَجَلَّ مَنْ لا عَيبَ فِيهِ وَعَلا

ऐ क़ारी! अगर अलफ़ाज़ और मफ़हूम की मुनासिबत हो तो इसे मुस्तरद न कर, इसको अपनी पसंदीदगी से नवाज़। अगर कोई ऐब दिखाई दे तो उसे दूर कर दे क्योंकि ऐब से पाक बुलंद व बाला अल्लाह तआला ही की ज़ात है।

अल्लाह तआला हमें इल्मे नाफ़ेअ़ और अमले सालेह की दौलत से मालामाल करे, दोनों जहानों की कामियाबी और ख़ैर अता फ़रमाए, हमारे वालिदैन, असातिज़ा किराम, अज़ीज़ व अक़ारिब और जुम्ला अहबाब को अपनी रहमत व मग़फ़िरत से नवाज़े।

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِينَ وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا۔

अलमुअल्लिफ़

मक्कतुल मुकर्रमा, 25/ज़ीक़ादह 1426 हि0

(1) सहीह बुख़ारी, हदीस: 5146

(2) यह शेअ़र इब्ने अलरूमी बिन अब्बास के दीवान से माख़ूज़ है: 2/183

खुत्बा 1

कुर्आन मजीद
अल्लाह तआला की नूरानी किताब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﴿الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا﴾ أَحْمَدُهٗ تَعَالٰی وَأَشْكُرُهٗ، جَعَلَ الْقُرْآنَ ﴿تِبْیٰنًا لِّكُلِّ شَیْءٍ وَّهُدًی وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰی لِلْمُسْلِمِیْنَ﴾۔ وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ، أَنْزَلَ كِتَابَهٗ هِدَایَةً لِّلْعَالَمِیْنَ، وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ، وَشِفَاءً لِّمَا فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ أَجْمَعِیْنَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ الَّذِیْ كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ، یُحِلُّ حَلَالَهٗ وَیُحَرِّمُ حَرَامَهٗ، وَیَعْمَلُ بِمُحْكَمِهٖ، وَیُؤْمِنُ بِمُتَشَابِهِهٖ، صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰی آلِهٖ وَصَحْبِهِ الَّذِیْنَ سَارُوْا عَلٰی نَهْجِهٖ، وَاقْتَفَوْا أَثَرَهٗ، وَتَمَسَّكُوْا بِهَدْیِهٖ، فَعَزُّوْا وَسَادُوْا، وَمَلَكُوْا وَقَادُوْا، وَمَنْ تَبِعَ هَدْیَهُمْ، وَلَزِمَ سُنَّتَهُمْ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ، وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔

أَمَّا بَعْدُ:

खुत्बाते हरम

"हर क़िस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने अपने बंदे पर फुर्क़ान नाज़िल फ़रमाया ताकि वह तमाम लोगों को (उनकी ज़िम्मेदारियों से) आगाह कर सके, उसी ज़ाते वाहिद की मैं तारीफ़ बयान करता हूं और उसी का शुक्र बजा लाता हूं जिसने कुर्आन को हर चीज़ की वज़ाहत का ज़रीआ बनाया और इताअत गुज़ारों के लिये हिदायत, रहमत और बाइसे बशारत बनाया। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपनी किताब तमाम जहानों के लिये मंबअ़ रुश्द व हिदायत बनाई, उसे मोमिनों के लिये बाइसे तसकीन व रहमत बनाया और दिलों के रोग और परेशानियों के लिये शिफ़ा और नजात का ज़रीआ बनाया। मैं शहादत देता हूं कि बेशक हज़रत मुहम्मद सल्ल० उसके बंदे और रसूल हैं। उनकी अख़्लाक़ कुर्आन का नमूना हैं। वह कुर्आन की हलाल कर्दा चीज़ों को हलाल और हराम कर्दा चीज़ों को हराम ठहराते हैं। वह उसके मुहकमात पर अमल करते हैं और मुतशाबिहात पर ईमान रखते हैं। आप पर अल्लाह की रहमतें हों और आप की आल और सहाबए किराम रज़ि० पर जो आप के तरीक़े और

नक़्शे क़दम पर चले। उन्होंने आप सल्ल० की सीरत को मज़बूती से थाम लिया तो इज़्ज़त व सियादत पाई और जहां बानी और क़यादत करने लगे। अल्लाह की रहमतें और सलामती क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर हो जो उनके नक़्शे क़दम पर चलते रहें और उनकी राह की पैरवी करते रहें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम, हामिलीने कुर्आन! अपने अंदर अल्लाह का तक़्वा पैदा कीजिये।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

"यक़ीनन यह अल्लाह का मोमिनों पर एहसान है कि उसने इन्ही में से एक रसूल भेजा।"(1)

अपने बंदे पर बेहतरीन किताब नाज़िल फ़रमाई और नुज़ूले किताब के लिये इस उम्मत को मुंतख़ब फ़रमाया। ऐसी किताब जो बहुक्मे इलाही लोगों को तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाती है, यही पुर फ़ितन हालात में पनाह का काम देती है, मुश्किलात और परेशानियों में सहारा साबित होती है।

मुअज़्ज़ज़ भाइयो! इस किताब में गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें, आने वाले हालात का तज़किरा और हमारे लिये नूरे हिदायत है। यह एक ऐसी फ़ैसलाकुन किताब है जिसमें कोई ग़ैर संजीदा बात नहीं। जो इसकी नाक़द्री करेगा वह सख़्त नुक़्सान से दो चार हो जाएगा, जो इसे छोड़कर कोई और राहे हिदायत तलाश करेगा वह गुमराह हो जाएगा, जो इसे तर्क करके इज़्ज़त हासिल करना चाहेगा वह ज़लील हो जाएगा और जो इस पर अमल किये बग़ैर कामरानी चाहेगा वह तबाह हो जाएगा। यही अल्लाह की रस्सी है, यही सिराते मुस्तक़ीम है और इसे जो भी थाम लेगा परेशानी से नजात पा जायेगा। इसकी तिलावत से कभी उक्ताहट नहीं होती। इसके ख़ज़ानों से अह्ले इल्म कभी नहीं थकेंगे। इसका इल्मी ज़ख़ीरा कभी ख़त्म नहीं होगा, जो इसके मुताबिक़ बोलेगा वह सच्चा कहलाएगा, जो इसके मुताबिक़

फ़ैसला करेगा आदिल कहलाएगा, जो इसके मुताबिक़ अमल करेगा अज्र पाएगा, जो इसकी तिलावत और इसके मुताबिक़ अमल करेगा वह अल्लाह की हिफ़ाज़त व ज़मानत में होगा, वह दुनिया में गुमराह होगा न आख़िरत में नाकाम, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने इर्शाद फ़रमाया: और जो इस किताब को छोड़ दे और इससे मुंह फेर ले वह दुनिया और आख़िरत में तबाह होगा।[2]

फ़रमाने इलाही है:

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًاۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى۔ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى۔ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا۔ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَاۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى۔ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى۔

"उस (अल्लाह) ने फ़रमाया: तुम दोनों यहां से इकट्ठे उतर जाओ, तुम्हारे बअ़ज़, बअ़ज़ के दुशमन हैं, फिर जब तुम्हारे पास मेरी हिदायत पहुंचे तो जिसने मेरी याद से इअ़राज़ किया तो बिला शुब्हा उसके लिये गुज़रान तंग होगा और रोज़े क़्यामत हम उसे अंधा करके उठाएंगे। वह कहेगा: ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया? जबकि मैं तो (दुनिया में) देखने वाला था। इर्शाद होगा: इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आईं तो तूने वह भुला दीं और

इसी तरह आज तुझे भी भुला दिया जाएगा। और जो हद से बढ़ गया और अपने रब की आयात पर ईमान न लाया, हम उसको इसी तरह सज़ा देंगे और यक़ीनन आख़िरत का अज़ाब शदीद तर और बाक़ी रहने वाला है।"(3)

रसूले अक्रम सल्ल0 ने हज्जतुल विदाअ़ के ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमायाः

وَقَدْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَّا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ اِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِهٖ، كِتَابُ اللّٰهِ۔

"मैं तुम्हारे लिये ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूं जिसे तुम थाम लोगे तो कभी गुमराह नहीं हो सकते, यअ़नी किताबुल्लाह।"(4)

यक़ीनन अल्लाह तआला ने यह अज़ीम किताब नाज़िल करके अपने बंदों पर एहसान फ़रमाया है, फ़रमाने इलाही है:

يَآاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ۔

"ऐ लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत और शिफ़ा, उन (बीमारियों) के लिये जो सीनों में हैं और मोमिनों के लिये हिदायत और रहमत आ गई है।"(5)

मज़ीद फ़रमायाः

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ۔

"और हमने आप पर हर चीज़ खोल कर बयान करने वाली यह किताब नाज़िल की है जो मुसलमानों के लिये

हिदायत, रहमत और ख़ुशख़बरी है।[6]

एक और जगह फ़रमायाः

يَآهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ۔ يَّهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرٰطٍ مُّسْتَقِيْمٍ۔

"ऐ अह्ले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारा रसूल आ चुका जो तुम्हारे सामने किताब की ऐसी बातें ज़ाहिर कर रहा है जो तुम छिपा रहे थे और बहुत सी बातों से दरगुज़र करता है। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से नूर और वाज़ेह किताब आ चुकी है। जिसके ज़रीए अल्लाह उन्हें जो उसकी रज़ा तलाश करने वाले हों सलामती की राहें बताता है और अपनी तौफ़ीक़ से उन्हें अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ लाता है और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ उनकी रह्बरी करता है।[7]

एक और मक़ाम पर फ़रमायाः

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا۔

"ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास एक दलील आ गई है और हम ने तुम्हारी तरफ़ एक वाज़ेह नूर नाज़िल किया है।"[8]

एक और मक़ाम पर इर्शादे बारी तआला हैः

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ۭ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى

"कह दीजिये: वह उनके लिये, जो ईमान लाए, हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और वह उनके हक़ में अंधापन है।"[9]

जो भी कुर्आने करीम की तिलावत तदब्बुर और हुज़ूरे क़ल्बी से करेगा उसे इस मौज़ूअ़ की मुतअ़द्दिद आयात मिलेंगी। तिलावते कुर्आन के लिये उमूमन सहाबए किराम रज़ि0 का तरीक़ा यह था कि वह दस आयात पढ़ते तो उस वक़्त तक आगे न बढ़ते जब तक वह उन आयात की गहराई और मफ़हूम तक न पहुंचते और उनके मुताबिक़ अमल शुरू न करते। वह इल्म और अमल दोनों को यक्सां तौर पर साथ साथ जारी रखते थे, जैसा कि जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से मरवी है।[10]

यही वह अज़ीम लोग थे जो कुर्आन के किसी हुक्म को पाते ही ठीक उसके मुताबिक़ बिला ताख़ीर अपनी ज़िंदगी ढाल लेते थे। यह वही पाकीज़ा हस्तियां हैं जिन्होंने कुर्आनी तालीमात इस अक़ीदे के ज़ेरे असर सीखीं कि यह कलामे इलाही है जो रसूलुल्लाह सल्ल0 की ज़बाने मुबारक से हम तक पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कुर्आन को अपने क़ौल व अमल से क़बूल किया। इसी अमल की ताक़त से वह दुश्मनाने इस्लाम को मरऊब करते रहे और दुनिया में अद्ल व इंसाफ़ और अम्न व सलामती के परचम लहराते रहे। उन्होंने अल्लाह के बंदों को इंसानों की बंदगी से निकाल कर परवरदिगारे आलम की बंदगी का रास्ता बताया और लोगों को दुनिया की तंग नाइयों से निकाल कर दुनिया व आख़िरत की वुसअ़तों की राह दिखाई और

मज़हबी इस्तिहसाल से बचाकर इस्लाम के अद्ल व इंसाफ़ की छांव में ला खड़ा किया। यह एक अज़ीम सहाबी रिबई बिन आमिर रज़ि0 का फ़रमान है, यह बात उन्होंने जंगे क़ादसिया के मौक़ा पर सिपह सालार फ़ारसे रुस्तम के दरबार में कही थी।(11)

बिरादराने इस्लाम! इस वक़्त हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जिसमें हर तरफ़ हवा व हवस का दौर दौरा है, शुकूक व शुबहात को हवा दी जा रही है, मुश्किलात और चैलंजज़ की यलग़ार है। दूसरी तरफ़ बिदआ़त व ख़ुराफ़ात की कसरत है और ग़लत रसम व रिवाज का चाल चलन आम होता जा रहा है। इससे गुलू ख़लासी का एक ही तरीक़ा है कि अवाम व ख़्वास, रिआया व हुक्मरान, जवान व बूढ़ा, मर्द व ज़न, उलमा और अनपढ़ सब मुकम्मल इख़्लास और शुऊर के साथ किताबुल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करें, तिलावत करें, मआ़नी समझें, तदब्बुर व तफ़क्कुर से काम लें और क़ुर्आनी अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करें। यक़ीन रखें यही वह चशमए साफ़ी है जो हमारी प्यास बुझा सकता है और जिसकी मिठास कभी मांद नहीं पड़ेगी। यही वह ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होगा लेकिन यह बात हमेशा याद रखनी चाहिये कि इल्म व मअ़रिफ़त और रुश्द व हिदायत से भरे उसके ख़ज़ानों से फ़ाएदा उठाने के लिये हुज़ूरे क़ल्ब और संजीदगी ज़रूरी है।

मुहतरम भाइयो! अस्रे हाज़िर में बहुत से लोगों ने क़ुर्आन से अपना रिशता तोड़ लिया, उनकी अमली ज़िंदगी क़ुर्आनी तालीमात से ख़ाली बल्कि क़ुर्आनी तालीमात के यक्सर मुख़ालिफ़ दिखाई देती है, उम्मते मुस्लिमा का क़ुर्आन से रिशता कमज़ोर हो गया, नौजवानों की क़ुर्आन से दिलचस्पी घट गई। हम ने दुनिया की हक़ीर चीज़ों को क़ुर्आन के मुक़ाबले में तरजीह दी वर्ना फ़ी ज़मान ख़्वातीने इस्लाम

की उर्यानियत क्या मअ़नी रखती है? जो किसी ज़माने में इफ़्फ़त व इस्मत और शर्म व हया का पैकर हुआ करती थीं। यही वह तल्ख़ हक़ाइक़ हैं जिनके बारे में फ़रमाने इलाही सादिक़ आता है:

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا۔

"और रसूल कहेंगे: ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुर्आन को मतरूक बना दिया (पसे पुश्त डाल दिया) था।"[12]

हिज्रे कुर्आन का मतलब बताते हुए अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह० ने लिखा है कि यह "हिज्र" बहुत वसीअ़ मफ़हूम में इस्तेमाल होता है, जैसे: तर्के समाअत, यअ़नी कुर्आन की तिलावत ही न सुनी जाए और इसके अहकाम हलाल व हराम भुला दिये जाएं। हालत यह हो जाए कि कभी कभार तिलावत तो हो रही है लेकिन अमल नहीं हो रहा। इसके मुताबिक़ मसाइल हल नहीं किये जा रहे। इस पर तदब्बुर किया जाता न इसके ज़रीए अपनी परेशानियों का हल तलाश किया जाता है।[13]

अफ़सोस कि आज हिज्रे कुर्आन के यह सारे मफ़ाहीम उम्मते मुस्लिमा में पाए जाते हैं। बहुत से लोग हैं जो कुर्आन मजीद की तिलावत तो करते हैं लेकिन उसकी अमली मुख़ालिफ़त पर डटे हुए हैं बल्कि बअ़ज़ लोग तो दीन में अपनी तरफ़ से आमेज़िश करने और बिद्अ़ात को रिवाज देने से भी गुरेज़ नहीं करते। यह वह लोग हैं, जिनका कुर्आन पर ईमान नहीं, चाहे यह हज़ार बार ईमान का दावा करें। यही वह लोग हैं जो कुर्आन पढ़ लेते हैं लेकिन इसके अहकाम पर अमल नहीं करते हत्ता कि बअ़ज़ इसकी हराम कर्दा चीज़ों से

अपने दामन दाग़दार करते हैं। ज़िनाकारी, सूदी लेन देन, क़त्ल व ग़ारत गरी, चोरी डकैती, धोका, ज़ुल्म, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, फ़साद और क़ौल व फ़ेअ़ल का तज़ाद यह बीमारियां हम से चिमटी हुई हैं। क्या यही क़ुर्आन पर ईमान का तक़ाज़ा है? कुछ लोग ऐसे भी हैं जो क़ुर्आनी अहकाम पर अमल करने में तसाहुल बरतते हैं। इक़ामते सलात, अदाए ज़कात, वालिदैन से हुस्ने सुलूक, सिलारहमी और ग़ुर्बा व मसाकीन की दिलजूई से हमारी ज़िंदगी का दामन ख़ाली दिखाई देता है जबकि फ़रमाने इलाही है:

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى۔

"और जिसने मेरी याद से इअ़्राज किया तो बिला शुब्हा उसके लिये गुज़रान तंग होगा और रोज़े क़्यामत हम उसे अंधा कर के उठाएंगे।"(14)

शायद यही वह लोग हैं जिनके बारे में कहा गया है:

وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا

"और वह कहते हैं: हमने सुना और हमने नाफ़रमानी की।"(15)

बिरादराने इस्लाम! हमें बहरहाल क़ुर्आन मजीद की तरफ़ रुजूअ़ करना पड़ेगा, उसी के चशमए साफ़ी से अपनी प्यास बुझानी होगी ताकि दुनिया और आख़िरत की सआ़दत हासिल कर सकें, फ़रमाने इलाही है:

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ

"क्या ईमान वालों के लिये अभी वह वक़्त नहीं आया कि

उनके दिल ज़िक्रे इलाही के लिये झुक जाएं और (इसके लिये) जो हक़ (अल्लाह) की तरफ़ से नाज़िल हुआ।''(16)

और फ़रमायाः

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا۔ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا۔

''बेशक यह कुर्आन वह राह बताता है जो सबसे सीधी है और मोमिनों को बशारत देता है जो नेक काम करते हैं कि यक़ीनन उनके लिये बहुत बड़ा अज्र है। और यह कि बिला शुब्हा जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिये हमने निहायत दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है।''(17)

ऐ अल्लाह! कुर्आन मजीद को हमारे दिलों की बहार, सीनों का नूर, परेशानियों का मदावा, ग़म और उलझनों से नजात का ज़रीआ बना दिये। परवरदिगारे आलम! ऐ हमारे बुज़ुर्ग व बरतर रब! कुर्आन मजीद की प्यास अता फ़रमा, इसकी छांव में जगह नसीब फ़रमा, इसकी नेअ़मतों से सरफ़राज़ फ़रमा और इसके ज़रीए अज़ाब दूर फ़रमा। मैं अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करता हूं अपने लिये और तमाम मुसलमानों के लिये, लिहाज़ा तुम भी मग़फ़िरत तलब करो। बेशक वह निहायत मुआफ़ करने वाला और मेहरबान है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا۔ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا۔ (الكهف ١٨:١،٢)

أَحْـمَـدُهٗ وَأَشْـكُـرُهٗ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ، نَـزَّلَ الْـفُـرْقَانَ عَـلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِيْنَ نَـذِيْرًا، وَّأَشْهَـدُ أَنَّ مُـحَـمَّـدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُـهٗ الَّذِى كَانَ خُـلُـقُهُ الْـقُـرْآنَ، بَعَثَهُ اللّٰهُ هَادِياً وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا، وَّ دَاعِياً اِلَـى الـلّٰـهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِـهٖ وَصَحْبِهِ الَّذِيْنَ كَانُوا لَا يَتَجَاوَزُونَ عَشْرَ آيَاتٍ حَتّٰى يَعْلَمُوا مَا فِيْهَا مِنَ الْعِلْمِ وَالْعَمَلِ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيْرًا۔

أَمَّا بَعْدُ

"सारी हम्द अल्लाह ही के लिये है जिसने अपने बंदे पर किताब नाज़िल की और इसमें कोई कजी नहीं रखी, निहायत सीधी (बग़ैर इफ़रात व तफ़रीत के उतारी) ताकि वह उस (अल्लाह) की तरफ़ से सख़्त अज़ाब से डराए और मोमिनों को बशारत दे जो नेक अमल करते हैं कि बेशक उनके लिये अच्छा अज्र है। मैं अल्लाह की हम्द बयान करता हूं, उसी का शुक्र बजा लाता हूं और गवाही देता हूं कि इबादत के लाइक़ वही अकेला परवरदिगार, उसका का कोई शरीक नहीं, उसने अपने बंदे पर कुर्आन नाज़िल फ़रमाया ताकि सारी दुनिया को उसके ज़रीए बाख़बर किया जाए और मैं शहादत देता हूं कि बेश हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० उसके बंदे और रसूल हैं और आप के अख़्लाक़े करीमाना कुर्आन का परतौ थे। अल्लाह ने आप को दुनिया के लिये हादी, बशीर, नज़ीर और अल्लाह की बंदगी की दावत देने वाला रौशन चिराग़ बना कर भेजा। अल्लाह की रहमतें और सलामती हो आप पर, आप की आल पर और आप के उन असहाब पर जो कुर्आन की इतनी क़द्र करते थे कि दस आयात से आगे उस वक़्त तक नहीं बढ़ते थे जब तक कि उनका मुकम्मल इहाता न कर लें और उन पर अमल पैरा न हो जाएं।"

हम्द व सलात के बादः

अल्लाह के बंदो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि बेहतरीन बात अल्लाह की किताब है और बेहतरीन रास्ता नबिये करीम सल्ल० का रास्ता है और बदतरीन बात दीन में नई बात शुरू करना है और नई बात बिद्अत है और हर बिद्अत गुमराही है।

बिरादराने इस्लाम! दुनिया की सरफ़राज़ी व सुरख़ुरूई और आख़िरत की फ़लाह व नजात इसी किताब के हामिलीन के लिये है। इस पर कुर्आन व सुन्नत के बहुत से दलाइल हैं, जैसे सही मुस्लिम की रिवायत है, हज़रत उमर रज़ि० से मरवी है कि नबीये करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

اِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَّيَضَعُ بِهٖ آخَرِيْنَ

"बेशक अल्लाह तआला इस किताब के ज़रीए कुछ क़ौमों को बुलंदी अता फ़रमाता है (जो उसकी क़द्र करें) और कुछ लोगों को ज़लील करता है (जो इसकी नाक़द्री करें।)"[18]

सही बुख़ारी की रिवायत में है, हज़रत उस्मान रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهٗ

"तुम में बेहतरीन आदमी वह है जो कुर्आन मजीद का इल्म सीखे और दूसरों को सिखाए।"[19]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने नबीये करीम सल्ल० से रिवायत की है कि आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

لَا حَسَدَ اِلَّا فِى اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَقُوْمُ بِهٖ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، وَرَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَهُوَ يُنْفِقُهٗ

آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ

"दो आदमी क़ाबिले रश्क हैंः एक वह जिसे अल्लाह ने कुर्आन का इल्म दिया और वह रात और दिन की घड़ियों में उसकी तिलावत करता है और दूसरा वह आदमी जिसे अल्लाह ने दौलत अता की और वह उसके रास्ते में रात और दिन की घड़ियों में उसे ख़र्च करता है।"(20)

हामिलीने कुर्आन की फ़ज़ीलत और उनके बुलंद मक़ाम व मर्तबे के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी अहादीस वारिद हुईं। हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से मर्वी है, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को यह फ़रमाते हुए सुना हैः

اِقْرَؤُوا الْقُرْآنَ، فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ۔

"तुम क़ुर्आन पढ़ो, बेशक यह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये सिफ़ारिशी बन कर आएगा।"(21)

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को यह फ़रमाते हुए सुना हैः

اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ، وَالَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَيَتَتَعْتَعُ فِيهِ، وَهُوَ عَلَيْهِ شَاقٌّ، لَهُ أَجْرَانِ

"क़ुर्आन का माहिर (क़यामत के दिन) लिखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ नेकूकार फ़रिश्तों के साथ होगा और ऐसा शख़्स जो क़ुर्आन की तिलावत करता है और उसमें अटकता है और वह उस पर दुशवार है, उसे दो गुना सवाब मिलेगा।"(22)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्ल0 ने फ़रमायाः

مَنْ قَرَأَ حَرْفاً مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهُ بِهٖ حَسَنَةٌ، وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا، لَا أَقُوْلُ الٓمّٓ حَرْفٌ، وَلٰكِنْ أَلِفٌ حَرْفٌ وَّلَامٌ حَرْفٌ وَّمِيْمٌ حَرْفٌ۔

"जो शख़्स किताबुल्लाह का एक हर्फ़ पढ़ेगा उसको एक नेकी मिलेगी और हर नेकी दस नेकियों के बराबर शुमार होगी, मैं यह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ शुमार होगा, लाम दूसरा हर्फ़ और मीम तीसरा हर्फ़ शुमार होगा।"(23)

हज़रत अब्दुल्लाह अम्र बिन आस रज़ि० ने नबीये करीम सल्ल० से रिवायत की है कि आप ने इर्शाद फ़रमायाः

يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: اِقْرَأْ وَارْتَقِ، وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُهَا

"क़्यामत के दिन साहिबे कुर्आन से कहा जाएगा कि तुम कुर्आन पढ़ते जाओ और ऊपर चढ़ते जाओ। जिस तरह दुनिया में तिलावत किया करते थे उसी तरह तिलावात करते चले जाओ। जहां तुम आख़िरी आयत की तिलावत करोगे वही तुम्हारा मक़ाम होगा।"(24)

यअ़नी जितना कुर्आन ज़्यादा याद होगा जन्नत के उतने ही आला दर्जात अता किये जाएंगे।

काश! मुसलमान इस हक़ीक़त को पहचानते और इस क़द्र अज़ीमुश्शान अज्र हासिल करने की कोशिश करते। यह यक़ीनन क़ाबिले रश्क और बाइसे सआ़दत बात है। इसकी अज़्मत के मुक़ाबले में सारी दुनिया और इसका सारा ऐश व इशरत हैच और नाक़ाबिले तवज्जोह है।

अज़ीज़ भाइयो! अपने रब की इस किताब की क़द्र करो, इससे वाबस्ता हो जाओ, इसे अपनी ज़िंदगी का दस्तूर बना लो, यही अज़्मत मआब किताब है जिसके ज़रीए से तुम अपनी अज़्मते रफ़्ता हासिल कर सकते हो।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

"और अल्लाह के लिये ये (काम) कुछ भी मुश्किल नहीं।"(25)

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ۔

"और अगर तुम फिरोगे तो अल्लाह तुम्हारे सिवा दूसरे लोग बदल लाएगा, फिर वह जैसे (नाफ़रमान) न होंगे।"(26)

दरूद व सलाम पढ़िये नबियों के सरदार हज़रत मुस्तफ़ा सल्ल० पर, जिस का परवरदिगारे आलम ने अपनी मुक़द्दस किताब में हमें हुक्म दिया है:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔

"बिला शुब्हा अल्लाह और उसके फ़रिशते नबी पर रहमत दरूर भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद व सलाम भेजो और खूब खूब सलाम भेजो।"(27)

हवाशी ख़ुत्बा न0.1

(1) आलेइमरानः 3:164 (2) मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबाः 371/13, व तफ़सीर अत्तब्रीः469/8, वलमुस्तदरक लिलहाकिमः381/2 (3) ताहा 20:123-127 (4) सही मुस्लिम, हदीसः 1218, व सुनन अबी दाऊद, हदीसः1905, व सुनन इब्ने माजा, हदीसः3074 (5) यूनुस 10:57 (6) अन्नहल 16:89 (7) अलमाएदा 5:15,16 (8) अन्निसा 4:174 (9) हा मीम अस्सज्दा 41:44 (10)

मुस्नद अहमद:410/5, व तफ़सीर अत्तब्री:60/1 (11) अलबिदाया वन्निहाया: 622/9 (12) अलफ़ुरक़ान 25:30 (13) अलफ़वाइद लिइब्ने क़य्यिम, स:123 (14) ताहा 20:124 (15) अन्निसा 4:46 (16) अलहदीद 57:16 (17) बनी इस्राईल 17:9,10 (18) सही मुस्लिम, हदीस:817 (19) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:5027 (20) सहीहुल बुख़ारी, हदीस: 7529, व सही मुस्लिम, हदीस: 815 (21) सही मुस्लिम, हदीस:804, व मुस्नद अहमद:249/5 (22) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:4937, व सही मुस्लिम, हदीस:798 वल्लफ़्ज़ु लहू, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस:2904 (23) जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस:2910, वलमुस्तदरक लिल हाकिम:555,566/1 (24) सुनन अबी दाऊद, हदीस: 1464, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस: 2914, व मुस्नद अहमद: 192/2 (25) इब्राहीम 14:20 (26) मुहम्मद 47:38 (27) अलअह्ज़ाब 33:56

ख़ुत्बा 2

इल्म, निहायत क़ीमती सरमाया

इल्म, निहायत क़ीमती सरमाया

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهُ، وَنَسْتَعِينُهُ، وَنَسْتَهْدِيهِ، وَنَسْتَغْفِرُهُ،
وَنَتُوبُ إِلَيْهِ، وَنَعُوذُ بِهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَسَيِّآتِ أَعْمَالِنَا،
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ،
وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، رَفَعَ شَأْنَ
الْعِلْمِ، وَأَعْلٰى قَدْرَ أَهْلِهِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ
وَرَسُولُهُ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ وَصَحْبِهِ
وَالتَّابِعِينَ الَّذِينَ كَانُوا بِعِلْمِهِمْ مَّنَارًا لِّلسَّالِكِينَ، وَقُدْوَةً
لِّلْعَامِلِينَ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर किस्म की हम्द सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के लिये है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से हिदायत चाहते हैं, उसी से मग़फ़िरत मांगते हैं, उसी की बारगाह में तौबा करते हैं और अपने नफ़्स की बुराइयों और आमाल की ख़राबियों से उसी की पनाह तलब करते हैं। जिसे अल्लाह तआला हिदायत अता फ़रमाए उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं शहादत देता हूं इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने इल्म की शान बढ़ाई और अहले इल्म का रुत्बा बुलंद किया और में शहादत देता हूं इस बात की कि बेशक हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। अल्लाह तआला की आप पर रहमतें और सलामतें हों और आप की आल, अस्हाब और ताबईन पर जो अपने इल्म व अमल के बाइस मुतलाशियाने हक़ के लिये मनारये नूर और अमल करने वालों के लिये बेहतरीन नमूना साबित हुए। और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो इनके नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, उसका तक़्वा ऐसे इल्म तक पहुंचने का ज़रीआ है जो नजात का ज़ीना है, फ़रमाने इलाहीः

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا

"ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हारे लिये फ़ुर्क़ान अता करेगा।"[1]

यअ़नी ऐसा इल्म जिससे तुम हक़ाइक़ को पहचान सकोगे और हक़ व बातिल के दर्मियान तमीज़ कर सकोगे।[2]

मुहतरम भाइयो! यह बात हर शख़्स को अच्छी तरह मालूम होनी चाहिये कि इल्म एक एज़ाज़, नूर और फ़ज़ीलत है जबकि जिहालत शर, मुसीबत और कोताही। और नफ़ा बख़्श इल्म तरक़्क़ी करने और बुलंदियों तक पहुंचने का ज़ीना है जबकि जिहालत बरबादी का पेश ख़ेमा है। इल्मे नाफ़ेअ़ ही अफ़राद और क़ौमों की तरक़्क़ी का ज़रीआ है। इसी से हमारी कामियाबी मुम्किन है। इसके बग़ैर ज़वाल, पस्ती, ज़िल्लत और रुसवाई के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा, यही वजह है कि इस्लाम ने रोज़े अव्वल ही से हुसूले इल्म की तरग़ीब और बशारत दी। बता दिया कि इल्म के रास्ते में उठने वाला हर क़दम जन्नत की तरफ़ ले जाने का सबब है, रसूले अक्रम सल्ल० का इर्शादे गिरामी हैः

مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَّلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا، سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِهٖ طَرِيقًا اِلَى الْجَنَّةِ

"जो इल्म की तलाश के रास्ते पर चलेगा अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत का रास्ता आसान कर देगा।"[3]

एक और जगह फ़रमायाः

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ

"तुम में से जो ईमान लाए हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दरजात बुलंद करेगा।"(4)

हम रसूले अकरम सल्ल0 की सुन्नत में भी देख सकते हैं। आप सल्ल0 ने मुअल्लिमे अव्वल की हैसियत से अपने अक्वाल के ज़रीए से निहायत अज़ीमुश्शान नमूना क़ाइम फ़रमाया जिससे इल्म और अह्ले इल्म के मक़ामे बुलंद को समझा जा सकता है। यही वजह है कि सलफ़े सालिहीन और बुज़ुर्गाने दीन ने हुसूले इल्म और तलबे इल्म की राह में ऐसे कारनामे अंजाम दिये जिनकी तारीख़ में नज़ीर नहीं मिल सकती। इन पाकबाज़ हस्तियों ने इस राह में सहराओं की परवा की न चट्टानों और कोहिस्तानों को सद्दे राह समझा, समंद्री रास्तों की हौलनाकियों को ख़ातिर में लाए न वह्शत नाक बयाबानों से ख़ौफ़ज़दा हुए। उन्होंने अपने अज़्म व हिम्मत के चिराग़ रौशन रख कर दुनिया को मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून का गिरां क़द्र तोहफ़ा दिया जिसकी गवाही दुनिया की हर लाइब्रेरी और मक्तबा देता है। उनकी यह कामियाबी उनके इख़्लास और इल्म से बेलौस मुहब्बत का नतीजा थी। उलूम व फ़ुनून की राह में यह अज़ीमुश्शान कामियाबी तनपरवरी और काहिली से हासिल नहीं होती।

आज हम अपनी हालते ज़ार पर निगाह डालते हैं तो इसका बुन्यादी सबब हमें अपनी जिहालत की शक्ल में नज़र आता है। जिहालत ही ने हमारा अक़ीदा बिगाड़ा, हमारी इबादत बर्बाद की, जिहालत ही की वजह से हमने शरीअत की हुक्मरानी के बजाए हवा

व हवस को अपना मअ्बूद बनाया, अपनी रोज़ मर्रा की ज़िंदगी को इस्लामी तालीमात से दूर रखा और अपने अख़्लाक़ व आदात को बिगाड़ लिया। इस तबाही से नजात का सही और वाहिद रास्ता इल्म से मुहब्बत है, इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं।

हालाते ज़माना के लिहाज़ से इल्म के मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं। सबसे पहला और अहम तरीन दर्जा किताबुल्लाह का इल्म है, इसकी तिलावत, हिफ़्ज़ और फ़ह्म है, फिर सुन्नते रसूल सल्ल0 का इल्म है। इसके लिये अहादीस का फ़ह्म, फिर हदीस की अमली शक्लें, दीन में बसीरत, अक़ाइद, इबादात और मुआमलात के फ़िक़ही मसाइल से वाक़फ़ियत ज़रूरी है। इसके लिये अगर हम अरबी ज़बान से वाक़फ़ियत हासिल करें तो यह बड़ी अच्छी बात है ताकि क़ुर्आन व सुन्नत के चशमए साफ़ी से बराहे रास्त मुस्तफ़ीद हो सकें। हम मुख़्तलिफ़ मुरव्वजा ज़बानों में महारत हासिल करने के लिये बड़े मुस्तइद रहते हैं लेकिन अपनी दीनी ज़बान की तहसील से ग़फ़लत और सुस्ती का मुज़ाहरा करते हैं। इल्मे दीन के बाद हमें मुख़्तलिफ़ शोअ़बों की तरफ़ तवज्जोह देनी चाहिये, जैसेः इल्मे तिब, इंजीनियरिंग, मआशियात, इक़्तिसादियात और सरमाया कारी वग़ैरा ताकि हम हर मैदान में इंसानियत की ख़िदमत कर सकें और दूसरों के मुहताज न हों। इसी तरह कुछ लोगों को जदीद फ़ुनूने हरब, अस्करी और दिफ़ाई शोअ़बों में भी दिलचस्पी लेनी होगी ताकि अपने दीन व मिल्लत, मुल्क व मआशिरत की बख़ूबी हिफ़ाज़त कर सके। ग़र्ज़ फ़रज़ंदाने उम्मत के लिये ज़रूरी है कि वह मुख़्तलिफ़ शोअ़बों में आगे बढ़ें और जिस शोअ़बे में भी जाएं ज़ह्न में हर दम यह एहसास ताज़ा रहे कि इसके ज़रीए से हम अपने दीन की ख़िदमत करेंगे और अपनी महारत को दावते दीन का ज़रीआ बनाएंगे।

वालिदैन को चाहिये कि तालीमी साल के आग़ाज़ ही में बच्चों के लिये मज़ामीन तजवीज़ करें ताकि इस शोअ़बे में बच्चों को आगे चल कर आसानी हो। हुसूले इल्म के लिये सही रास्ते की निशानदही और मुख़्लिस अह्ले इल्मे असातिज़ा का इंतिख़ाब ज़रूरी है।

असातिज़ए किराम के लिये ज़रूरी है कि वह तलबा के साथ खुलूस व हमदर्दी का बरताव करें। तलबा की सलाहियतें और उनका वक़्त एक अमानत है, इसमें कोताही क्यामत के दिन की रुसवाई का सबब बनेगी। असातिज़ा को चाहिये कि तालीम के साथ साथ वह तलबाए अज़ीज़ की सीरत साज़ी पर भी खुसूसी तवज्जोह दें। उन्हें अपने बुलंद अख़्लाक़ और दर्द मंदाना सलूक से कुंदन बनाएं।

उलमाए किराम को अल्लाह तआला ने अंबियाए किराम अलै0 की जानशीनी का मंसब अता फ़रमाया है, वह इस बालीदा रुत्बे की क़द्र करें, अपना बुलंद मक़ाम पहचानें, इल्म का नूर आम करें, इसके लिये मौज़ूं मक़ामात पर इल्मी मजालिस और तालीमी हल्क़ों का एहतिमाम करें और मसाजिद में दीनी तालीम का खुसूसी एहतिमाम करें ताकि लोग आसानी से फ़ायदा उठा सकें।

निसाबे तालीम मुरत्तब करने वाले अहबाब और तालीमी कमेटियों के सरबराहों से हमारी गुज़ारिश है कि वह निसाबे तालीम की तैयारी में अपनी अस्ली ज़िम्मेदारी के तक़ाज़े और ख़ौफ़े खुदा मलहूज़ रखें। निसाब की तरतीब व तैयारी में कुर्आन व सुन्नत की तालीमाते आलिया का ख़ास ख़्याल रखें। हर वह चीज़ जो इस्लामी तालीमात के मनाफ़ी हो उसे निसाब से ख़ारिज कर दें ताकि हमारे मदारिस, कालिज और यूनीवर्सिटियां रुश्द व हिदायत और ख़ैर व बर्कत का सरचश्मा साबित हो सकें।

तलबा और तालिबात के वालिदैन और सर परस्तों को चाहिये

कि वह अपने बच्चों की तालीमी तरक़्क़ी में ज़ाती तौर पर पूरी दिलचस्पी लें। मुअल्लिमीन के साथ बराहे रास्त राब्ता रखें ताकि तलबा के हालात और उनकी तालीमी कारकर्दगी का हर वक़्त इल्म होता है।

यह चंद सरसरी गुज़ारिशात हैं। इन पर ग़ौर करने और अमल करने की अशद्द ज़रूरत है ताकि हम अपनी अज़्मत रफ़्ता की बाज़याबी में कामियाब होकर क़ाएदाना रोल अदा कर सकें, अल्लाह तआला हमें इल्मे नाफ़ेअ़ हासिल करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमारी कोताहियों और लग़ज़िशों से दरगुज़र फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی عَلَّمَ بِالْقَلَمِ، عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ،
وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ الدَّاعِی اِلَی السَّبِيْلِ الْأَقْوَمِ،
صَلَّى اللّٰهُ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द व सताइश अल्लाह तआला के लाइक़ है जिसने क़लम से सिखाया, इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वही आला और बरतर है और मैं शहादत देता हूं कि हमारे नबी मुहम्मद सल्ल0 उसके बंदे और रसूल हैं जो सबसे बेहतरीन और सबसे सीधे रास्ते के अज़ीम दाई हैं। अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें हों आप सल्ल0 पर, आप की आल पर और आप के अस्हाब पर।"

हम्द व सलात के बाद:

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, इल्म की क़द्र करो और दीनी बसीरत हासिल करने की पूरी कोशिश करो।

रसूलुल्लाह का इर्शाद है:

مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُّفَقِّهْهُ فِى الدِّيْنِ

"जिस शख़्स के साथ अल्लाह तआला भलाई करना चाहता है तो उसे दीन की समझ अता फ़रमा देता है।"(5)

दरपेश मसाइल में रहनुमाई के लिये उलमाए किराम से रुजूअ़ करो, अपने औक़ात इल्म हासिल करने में सर्फ़ करो और जान लो कि हुसूले इल्म के लिये किसी उम्र या वक़्त की कोई क़ैद नहीं न यह सिलसिला कोई डिग्री लेने के बाद ख़त्म होता है बल्कि इसमें तरक़्क़ी करने और आगे बढ़ने की हर वक़्त ज़रूरत रहती है। खुसूसन जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं, इस दौर का मुअस्सिर हथियार इल्म ही है। इस वक़्त जबकि हुसूले इल्म की सुहूलतें ज़्यादा और आसान हो चुकी हैं, इनसे भरपूर फ़ाएदा उठाना चाहिये। दाइयाने दीन और मुबल्लिग़ीने इस्लाम की ज़िम्मेदारी है कि पहले वह खुद मसाइल से वाक़फ़ियत हासिल करें ताकि उनकी बात में असर हो और वह दावते दीन के लिये बेहतरीन रास्ता और हिक्मत से भरा उस्लूब इख़्तियार कर सकें वर्ना मालूमात की कमी दावत व तबलीग़ के मैदान में नाकामी से भी दो चार कर सकती है।

बिरादराने इस्लाम! एक अहम गुज़ारिश है, इसे हमेशा पेशे नज़र रखिये कि आजकल इल्मी इल्म की अज़्मत और अहमियत पर इस्लाम ने ज़ोर दिया है और हुसूले इल्म में सबसे पहली तरजीह किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल सल्ल० का इल्म है, फिर हर वह इल्म

जो तमद्दुनी, तरक़्क़ी और दुन्यवी ज़रूरत के लिये मुफ़ीद हो। इन सबका हुसूल फ़र्ज़न्दाने तौहीद के लिये लाज़मी है। वह जिस शोबए ज़िंदगी में चाहें ख़ूब महारत हासिल करें, इसकी गुंजाइश है, अलबत्ता इतनी बात ज़ह्न में रहे कि इस्लामी रूह और उसूल मुतअस्सिर न हों।

बिरादराने इस्लाम! इल्म और अह्ले इल्म की फ़ज़ीलत और अहमियत के मुतअ़ल्लिक़ कुर्आन मजीद की मुतअद्दिद आयात गवाही दे रही हैं, अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमायाः

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۚ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ۔

"क्या फिर वह शख़्स जो जानता है कि यक़ीनन जो कुछ आप के रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल किया गया है वही हक़ है, वह उस शख़्स के मानिंद (हो सकता) है जो अंधा है? बस अक़्ल वाले ही नसीहत पकड़ते हैं।"(6)

एक और मक़ाम पर फ़रमायाः

وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا۔

"और कहियेः ऐ मेरे रब! मुझे इल्म में ज़्यादा कर।"(7)

दूसरे मक़ाम पर फ़रमायाः

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ

"कह दीजियेः क्या जो लोग इल्म रखते हैं और जो इल्म नहीं रखते, बराबर हो सकते हैं?"(8)

महारत के झूटे दावे आम हैं, बअ़ज़ लोग इल्म के बग़ैर इस मैदान के शह्सवार बनने की कोशिश करते हैं, क़िल्लते इल्म के बावजूद निहायत हस्सास मसाइल में फ़त्वे देने से भी गुरेज़ नहीं करते,

इस ग़लत तर्ज़े अमल से सख़्त ग़लतफ़हमियां और ख़ल्फ़शार पैदा होता है। आप को इन ख़ुद साख़्ता मुफ़्तियों से चौकन्ना रहना चाहिये।

इल्म हासिल करने की भरपूर कोशिश कीजिये। इल्म के साथ अमल और दावत व तबलीग़ की ज़िम्मेदारियां ख़ुश उस्लूबी से अदा कीजिये। इफ़रात व तफ़रीत से बचिये। हमेशा एतिदाल मलहूज़ रखिये।

दरूद व सलाम पढ़िये उस मुअ़ल्लिमे इंसानियत सल्ल0 पर जिसने दुनिया को ज़ेवरे इल्म से ज़ीनत बख़्शी, जिसने जिहालत की तारीकी और इल्म की रौशनी फैलाई। अल्लाह तआला रसूले अकरम सल्ल0 की ज़ाते गिरामी पर लामहदूद रहमतें नाज़िल फ़रमाए! आमीन।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 2

(1) अलअन्फ़ाल 8:29 (2) मिफ़्ताहु दारिस्सआदहः1/519, व तयसीरुल करीमुर्रहमानि लिलअल्लामतिस्सअ़दीः1/243, (3) सही मुस्लिम, हदीसः 2699, (4) अर्रअ़द 13:19 (5) ताहा 20:114 (6) अज़्ज़ुमर 39:9 (7) अलमुजादिला 58:11 (8) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः71, व सही मुस्लिम, हदीसः 1037

खुतबा 3

अक़ीदए तौहीद कामियाबी की बुन्याद

اَلحَمدُ لِلّٰہِ الَّذِی مَنَّ عَلَینَا بِصِحَّۃِ الِاعتِقَادِ، وَطَهَّرَ قُلُوبَنَا مِنْ أَدرَانِ الشِّركِ وَالوَثنِيَّةِ وَالإلحَادِ، وَأَنقَذَنَا مِن دَرَكَاتِ الجَاهِلِيَّةِ وَالشَّرِّ وَالفَسَادِ، أَحمَدُهُ تَعَالٰی وَأَشكُرُهُ، وَأَتُوبُ إِلَيهِ وَأَستَغفِرُهُ، جَلَّ عَنِ الأَندَادِ، وَتَنَزَّهَ عَنِ الصَّاحِبَةِ وَالأَولَادِ، وَتَعَالٰی عَن مُّشَابَهَةِ العِبَادِ۔

وَأَشهَدُ أَن لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، شَهَادَةَ مَن عَلِمَ مَعنَاهَا، وَعَمِلَ بِمُقتَضَاهَا، وَحَقَّقَ المُرَادَ، وَأَشهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهُ، إِمَامُ المُوَحِّدِينَ، وَخَاتَمُ الأَنبِيَاءِ وَالمُرسَلِينَ، وَالهَادِیْ إِلٰی سَبِيلِ الحَقِّ وَالرَّشَادِ، وَالشَّافِعُ المُشَفَّعُ يَومَ المَعَادِ، صَلَّی اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيهِ وَعَلٰی آلِهٖ وَصَحبِهِ الأَمجَادِ، وَالتَّابِعِينَ وَمَن تَبِعَهُم بِإِحسَانٍ إِلٰی يَومِ التَّنَادِ۔

أَمَّا بَعدُ

"तारीफ़ उस अल्लाह की जिसने हमें बेहतरीन अक़ीदा इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, हमारे कुलूब व अज़हान को शिर्क, बुत परस्ती और इल्हाद की नजासत से पाक किया और हमें दौरे जाहिलियत की बुराइयों से नजात दी। मैं उसी अल्लाह की तारीफ़ करता हूं और शुक्र बजा लाता हूं, उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूं और उसी से बख़्शिश चाहता हूं। वह शरीकों से पाक, बीवी और औलाद से मुनज़्ज़ह और हर क़िस्म की मुशाबहत से बुलंद व बाला है। मैं उस आदमी की सी शहादत देता हूं जिसने इस शहादत के मफ़्हूम को समझा, इसके तक़ाज़ों पर अमल पैरा हुआ और उसके अज़ीम मक़सद को हक़ीक़ी तौर पर साबित किया कि अल्लाह के सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं शहादत देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह तआला के बंदे और उसके रसूल हैं, मूवह्हिदीन के इमाम हैं, अंबिया व मुर्सलीन के ख़ातिम हैं, हादिये बरहक़ हैं और शाफ़ए रोज़े महशर हैं। अल्लाह की रहमतें, सलामती और बरकतें नाज़िल हों आप पर, आप कीआल और सहाबए किराम पर, ताबिईन पर और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो अस्लाफ़े किराम के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, उसी की बंदगी करो, उसकी तौहीद के तक़ाज़े समझो, उसी इकलौती हस्ती को अपना मुश्किल कुशा और हाजत रवा मानो, और जान लो कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, उसके अलावा कोई रब नहीं। अगर तुम दुनिया में कामियाबी और आख़िरत में नजात चाहते हो तो रोज़े मह्शर के रब की तौहीद को दिल व जान से क़बूल करो। अपने अक़ीदे को हर क़िस्म की शिर्क की आलाइशों से पाक व साफ़ करो।

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَقِيَهٗ يُشْرِكُ بِهٖ، دَخَلَ النَّارَ

"जो शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि वह शिर्क नहीं करता था तो वह जन्नत में दाख़िल होगा और जो इस हाल में मिले कि शिर्क करता था तो वह जहन्नम में दाख़िल होगा।"[1]

बिरादराने इस्लाम! अगर हम ग़ौर करें कि तमाम मसाइल की बुन्याद और कामियाबी की जड़ कहां है? तो वह सिर्फ़ मस्लए तौहीद है। इसकी तरफ़ उलमाए किराम और ख़ुत्बाए मसाजिद को ख़ुसूसी तवज्जोह देनी चाहिये क्योंकि यही वह बुन्यादी मस्ला है जिसकी तरफ़ तमाम अंबियाए किराम बुलाते रहे बल्कि हर नबी और रसूल की तालीमात का मह्वर सिर्फ़ यही नुक़्ता रहा है क्योंकि इसी बीच से इस्लाम का दरख़्त निकलता है, इसी मस्ले को तमाम आसमानी किताबों में ज़बरदस्त अहमियत और वज़ाहत से बयान किया गया,

इसी बुन्याद को तसलीम करने वाले जन्नती कहलाए और इंकार करने वाले जहन्नमी ठहरे।

तौहीद और इसकी तमाम अक्साम रुबूबियत, उलूहियत और अस्मा व सिफ़ात को समझना, कुबूल करना और इसके तकाज़ों पर अमल करना हमारे लिये अशदूद ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स अक़ीदए तौहीद की नेअ़मत की क़द्र करना चाहता है तो उसे तारीख़ के सफ़हात उलटने होंगे ताकि वह जान जाए कि ज़मानए जाहिलियत में लोग अक़ीदा व ईमान की किन तारीकियों में डूबे हुए थे, फिर बअ़सते नबवी सल्ल0 के बाइस किस तरह तारीकी के बादल छटे। लेकिन अफ़सोस कि इस पुरफ़ितन दौर में जहां मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अफ़कार व नज़रियात जनम ले रहे हैं, मुख़्तलिफ़ क़िस्म की जमाअ़तें वजूद में आ रही हैं जो बिला रोक टोक अपने बातिल ख़्यालात का प्रचार कर रही हैं और लोग इनके खोखले नअ़रों की तरफ़ सरपट भागे चले जा रहे हैं, इस बात की परवा किये बग़ैर कि वह दीने इस्लाम की तालीमात के यक्सर मनाफ़ी और सलफ़े सालिहीन के तरीक़े से टकराने वाली बातें हैं और बअ़ज़ लोगों ने सियासी छतरियों के साए में इस्लाम की बात करने की कोशिश की लेकिन उनकी गुफ़्तगू और दावे खोखले साबित हुए, जिन्होंने बुन्यादी उमूर से पहलू तही करके चंद फ़िक्री बातों को सब कुछ साबित करने की कोशिश की जिसे कुछ सत्ही क़िस्म के लोगों ने क़बूल किया और कुछ लोगों ने सिर्फ़ वअ़ज़ और क़िस्सा गोई का सहारा लेते हुए ईमान व अक़ीदा के मसाइल को नज़र अंदाज़ किया और कुछ लोगों ने हालात से दिलबर्दाश्ता होकर ग़ुलू और तशद्दुद का रास्ता इख़्तियार करते हुए एक दूसरे के ख़िलाफ़ कुफ़्र साज़ी की फ़ैक्ट्रियां खोल दीं।

क्या यह हालात इस बात का तक़ाज़ा नहीं करते कि अहले

दानिश उठें और तौहीद का अलम बुलंद करें और लोगों को इस चशमए साफ़ी से सैराब करें, इस दौरे पुरफ़ितन में लोगों ने समझा कि आफ़ियत इसी में है कि ईमान की हिफ़ाज़त बल्कि कमाले ईमान के लिये इतना काफ़ी है कि हम यह कहें कि ख़ालिक़ एक है और रज़्ज़ाक़ एक है और बस। गोया ज़मानए जाहिलियत के मुश्रिकीन इसके बरअक्स दो ख़ालिक़ों और दो राज़िक़ों के क़ाइल थे।

यह तौहीद से अदमे वाक़फ़ियत का नतीजा है कि बअ़ज़ मुसलमान क़ब्रों और मज़ारों के आगे इस तरह झुकते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के आगे भी इस तरह नहीं झुकते। वह न सिर्फ़ अपनी जबीने नियाज़ ख़म करते हैं बल्कि उनसे अपने दरजात की बुलंदी, परेशानियों से नजात और बीमारों के लिये शिफ़ा भी तलब करते हैं और यह इज्ज़ व इंकिसार इस तसव्वुर के साथ होता है कि यह क़ब्रों में सोए हुए लोग मुश्किलकुशा हैं जो उनकी झोलियों को भर देंगे, गोया अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ से बेख़बर होकर अपने दरवाज़े बंद कर रखे हैं। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ۔

अल्लाह तआला की ज़ात इन तमाम ग़लत तसव्वुरात से पाक है। जब जज़्बए तौहीद सर्द होने लगता है तो दिल में खुद नुमाई के जज़्बात अंगड़ाई लेने लगते हैं। जब अल्लाह की वह्दानियत का तसव्वुर मांद पड़ता है तो लोग दूसरों के हाथ चूम कर और पांव छू कर अपनी आरज़ूएं पूरी करना चाहते हैं या उनके कपड़ों को छूकर अपना दिल खुश करते हैं, हालांकि उनकी यह हरकतें उन्हें कभी हक़ीक़ी मंज़िल तक नहीं पहुंचा सकतीं लेकिन इन आदतों के मतवाले एक बड़ी तादाद में मौजूद हैं।

अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह0 ने क्या खूब कहा है:

حَقُّ الْاِلٰهِ عِبَادَةٌ بِالْاَمْرِ لَا

بِهَوَى النُّفُوسِ فَذَاكَ لِلشَّيْطَانِ
مِنْ غَيْرِ اِشْرَاكٍ بِهِ شَيْئًا هُمَا
سَبَبَا النَّجَاةِ فَحَبَّذَا السَّبَبَانِ

"अल्लाह का हक़ यह है कि उसकी इबादत उसके अहकाम की रौशनी में की जाए न कि ख़्वाहिशाते नफ़्स के ज़रीए से क्योंकि यह शैतानी फ़ेअ़्ल है। अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया जाए। नजात के यही दो अस्बाब हैं।"

لَمْ يَنْجُ مِنْ غَضَبِ الْإِلٰهِ وَنَارِهِ
اِلَّا الَّذِى قَامَتْ بِهِ الْأَصْلَانِ
وَالنَّاسُ بَعْدُ فَمُشْرِكٌ بِاِلٰهِهٖ
أَوْ ذُوابْتِدَاعٍ أَوْلَهُ الْوَصْفَانِ

"अल्लाह के ग़ज़ब और जहन्नम की आग से कोई नजात नहीं पा सकता। सिर्फ़ वही शख़्स नजात पाएगा जो इन दो उसूलों पर क़ाइम रहे। अक्सर लोग अपने रब के साथ शिर्क करने वाले हैं। बहुत से बिद्आत का इर्तिकाब करने वाले हैं।"

فَلِوَاحِدٍ كُنْ وَاحِدًا فِى وَاحِدٍ
أَعْنِى سَبِيلَ الْحَقِّ وَالْإِيمَانِ

"लिहाज़ा तुम सिर्फ़ एक ही के होकर रहो। अकेले ही को मानो जो तने तन्हा है। यही राहे हक़ है और यही ईमान का तक़ाज़ा है।"[2]

तौहीद जिसकी इतनी ज़बरदस्त अहमियत है उसे समझने में

बहुत से लोगों ने सख़्त कोताही की है क्योंकि तौहीद सिर्फ़ मअ़रिफ़त का नाम नहीं है, जैसा कि जह्म बिन सफ़्वान और उसके पैरूकारों का नज़रिया है। तौहीद सिर्फ़ दिल की तसदीक़ का नाम भी नहीं है, जैसा कि अबू मन्सूर मा तुरीदी और उसके मुत्तबईन का ख़्याल है।[3]

वर्ना उन लोगों को क्या कहा जाएगा जो यह अक़ीदा रखते हैं कि इस दुनिया में कोई और भी तसर्रुफ़ का इख़्तियार रखता है। इस दुनिया के हालात अल्लाह के अलावा कोई और भी चला रहा है और अल्लाह की रुबीबियत में भी शिर्क पाया जाता है। रहा अल्लाह की इबादत में शिर्क तो यह इतना आम है कि इस पर जितना अफ़सोस कीजिये कम है। लेकिन मक़ामे तअ़ज्जुब है कि इस मस्ले से अवाम तो अवाम ख़्वास भी ग़ाफ़िल हैं। दुनिया के मंज़र नामा पर नज़र डालने से अंदाज़ा होगा कि अह्ले हक़ कितनी ग़फ़लत का शिकार हैं।

दुनिया के मुख़्तलिफ़ बड़े बड़े आलाम व मसाइल की बुन्याद ही फ़ासिद अक़ीदा है। यहूदियों के अज़ाइम फ़लस्तीन पस मंज़र में देखिये, वह मुसलमानों को सफ़्हए हस्ती से मिटा कर अपनी तहरीफ़ शुदा किताब तौरात और तलमूद की हुक्मरानी चाहते हैं। सलीबी नसरानियों को देखिये कि वह इंजील की बालादस्ती के लिये कोशां हैं। यूगोस्लाविया और अफ़रीक़ी मुमालिक में इनकी सलीबी कोशिशें इसका बहुत बड़ा सबूत हैं और भारत के बुत परस्त कशमीर और दीगर इलाक़ों में जो कुछ कर रहे हैं उसका मक़्सद अपने मज़हबी अफ़कार को तक़्वियत देना है। इसी तरह क़ब्रों के पुजारियों पर नज़र डालिये, फिर दूसरी तरफ़ अह्ले हक़ की कोशिशों का जाइज़ा लीजिये तो यहां सर शर्म से झुक जाएगा और नदामत के आंसू निकल आएंगे। क्या यह उम्मते मुस्लिमा के ग़ुयूर फ़रज़ंदाने तौहीद

का फ़र्ज़ नहीं कि वह सलफ़े सालिहीन के तरीक़े पर कारबंद रहें और इसको आम करें? लेकिन बुरा हो तअ़स्सुब का, लोग किस तरह हक़ और सच्चाई को अफ़राद और शख़्सियतों के तअ़स्सुब की नज़र करते हैं, हालांकि हमें अफ़राद के बजाए सही अक़ीदा और सदाक़त को देखना चाहिये, जहां से मिले उसे क़बूल करने का जज़्बा होना चाहिये। तौहीद की तमाम क़िस्मों को सलफ़े सालिहीन के पाकीज़ा मंच के मुताबिक़ अपनाइये। लोगों को खुश करने के लिये तौहीद में मुदाहनत और ग़फ़लत से काम न लीजिये और होशियार रहिये कि तौहीद के मस्ले में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर लोगों ने ठोकरें खाई हैं। किसी ने इबादत के मुआमले में ग़लती की तो किसी ने अस्मा व सिफ़ात को समझने में, किसी ने बैअ़त और इमामत के मस्ले में ग़लती की तो किसी ने मुस्लिम हुक्मरानों की इताअत के मस्ले में। कुछ लोगों का ख़्याल है कि अक़ीदे के बारे में गुफ़्तगू इख़्तिलाफ़ात पैदा करती है, इससे इंतिशार फैलता है और हमारी वहदत पारा पारा होती है, हालांकि यह खुली ज़लालत है कि दीन के बुन्यादी मस्ले को इन ग़लत मफ़रूदात की वजह से तर्क कर दिया जाए। क्या तौहीद के मस्ले को तर्क करने से हमारी सफ़ों में इत्तिहाद रहेगा? जबकि क़ुर्आन मजीद वाशिगाफ़ अलफ़ाज़ में मुतनब्बह कर रहा है:

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ۔

"बेशक जिन लोगों ने अपने दीन में तफ़रक़ा बाज़ी की और वह गिरोहों में बट गए, आपका उनसे कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, बेशक उनका मुआमला अल्लाह के हाथ में है, फिर

वह उन्हें उन कामों से आगाह करेगा जो वह करते रहे थे।''[4]

और फ़रमायाः

وَإِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ

''और जब तन्हा अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल तंग होते हैं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते और जब अल्लाह के सिवा दूसरों का ज़िक्र किया जाता है तो उस वक़्त वह बड़े ख़ुश होते हैं।''[5]

वह फ़िर्क़ा वारियत की वजह से मुख़्तलिफ़ गिरोहों में तक़सीम हो गए और हर गिरोह का एक अलग अमीर है। जान लो कि हमारी वहदत अक़ीदए तौहीद में है और इख़्तिलाफ़ात फ़िर्क़ा वारियत में हैं। अक़ीदा बाइसे वहदत है और मसालिक बाइसे इंतिशार हैं। कुछ लोगों की यह कमज़ोरी है कि जब भी अक़ीदे के मौज़ूअ़ पर गुफ़्तगू हो, वह जज़्बाती हो जाते हैं क्यों कि उनका ख़्याल है कि मुसलमान शिर्क नहीं कर सकते, लिहाज़ा इस मौज़ूअ़ पर गुफ़्तगू बेसूद है। यह बिल्कुल बे सर व पा बात है, इसकी कोई बुन्याद नहीं।

मुहतरम भाइयो! इस मौज़ूअ़ पर गुफ़्तगू अल्लाह से मुहब्बत का तक़ाज़ा है।

यह मुसलमान पर शफ़क़त और मेहरबानी की निशानी है ताकि लोग जहन्नम से बच जाएं और जन्नत के मुस्तहिक़ बन सकें। यह ज़माना छान बीन और तहक़ीक़ का ज़माना है। इसमें घबराने और परेशान होने की चंदां ज़रूरत नहीं, लिहाज़ा मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वह अपने अक़ीदे को पहचानें, इसकी तालीमात आम करें, इसके

लिये ज़िम्मादार और खुदा तरस उलमाए किराम से फ़ैज़ हासिल करें। इस मस्ले में प्रोपेगंडा मिशनरी से ख़ौफ़ज़दा होने की क़त्अन ज़रूरत नहीं क्योंकि यह चली हुई गोलियां और बे असर कारतूस हैं। अक़ीदे को तालीमाते नबवी की रौशनी में पहचानिये। हुब्बे नबी सल्ल0 का अस्ल तक़ाज़ा यही है कि हम हर बात आप सल्ल0 की तालीमात की रौशनी में समझें और इस पर अमल करें।

हर मां और हर बाप की ज़िम्मेदारी है कि वह खुद अक़ीदे की अहमियत को अच्छी तरह समझे और अपनी औलाद को ज़ह्न नशीन कराए ताकि हमारे बच्चे तौहीद व सुन्नत के शैदाई बनें और शिर्क व बिद्आत से मुतनफ़्फ़िर हों। माएं बचपन ही से उन्हें तौहीद की लोरियां दें और अपने दूध के साथ अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल0 की मुहब्बत भी उनके क़ुलूब व अज़हान में मुंतक़िल करें।

असातिज़ा किराम को चाहिये कि अपने शागिर्दों में तौहीद की अज़मत का सबक़ आम करें ताकि हमारी दर्सगाहें ईमान और अक़ीदे की हिफ़ाजत का क़िला बन जाएं।

निसाबे तालीम मुरत्तब करने वाले और तालीमी कमेटियों से मुंसलिक अफ़राद का दीनी फ़र्ज़ है कि वह निसाब तरतीब देते हुए इस्लाम के बुन्यादी अस्बाक़ और ज़रूरी अवामिर व नवाही खूब उजागर करें ताकि यह बातें तलबा के ज़ह्नों में रासिख़ हो सकें, प्रागंदा बातों को राह न दें और नौनिहालों के ज़ह्नों को उलझन में न डालें।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۚ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ۔

"कह दीजियेः अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, फिर अगर तुम फिरोगे तो इस रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ यह है जो इस पर बोझ डाला गया है और तुम्हारे ज़िम्मे सिर्फ़ वह है जो तुम पर बोझ डाला गया और अगर तुम इस (रसूल) की इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ खुला खुला पहुंचा देना है।"(6)

अल्लाह तआला हमें अपने हुक्मों के मुताबिक़ अपनी पसंदीदा राह पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, दुनिया व आख़िरत में साबित क़दम रखे, अक़ीदए तौहीद को समझने और इस पर क़ाइम रहने की सआ़दत बख़्शे और हर क़िस्म के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रखे। अल्लाह तआला हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ، أَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهُ، يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا وَحَبِيبَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ الْمُصْطَفَى الْمُخْتَارُ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الْأَخْيَارِ، وَصَحْبِهِ الْأَبْرَارِ، اَلْمُهَاجِرِينَ مِنْهُمْ وَالْأَنْصَارِ، وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ مَّا تَعَاقَبَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह के लिये है जो अकेला और ज़बरदस्त है। मैं उसी की तारीफ़ करता हूं और उसी का शुक्र अदा करता हूं। वह जो चाहता है पैदा करता है और

जो चाहता है फ़ैसला करता है। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, वह ज़बरदस्त और निहायत बख़्शने वाला है। और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं और चुने हुए पसंदीदा हैं। अल्लाह तआला की रहमतें और सलामती हो आप पर, आप की बेहतरीन आल पर, आप के नेकूकार और परहेज़गार अस्हाब मुहाजिरीन और अंसार पर, ताबईन पर और क़्यामत तक उनके नक़्शे क़दम पर चलने वालों पर।"

हम्द व सलात के बादः

बेशक सबसे सच्चा कलाम अल्लाह की किताब है और बेहतरीन रास्ता नबीये करीम सल्ल0 का रास्ता है और सबसे बुरी बात यह है कि दीन में नई बात शुरू की जाए। हर नई बात बिद्अ़त है और हर बिद्अ़त गुमराही है।

जान लो कि सही अक़ीदा रखने वालों के लिये यह बजाए ख़ुद बड़े एज़ाज़ की बात है कि वह नबीये करीम सल्ल0 की पैरवी करने वाले हैं। यही आप से मुहब्बत की निशानी है, नबी सल्ल0 से मुहब्बत की बात तो की जाए लेकिन आप की तालीमात की रौशनी में अपना अक़ीदा न संवारा जाए तो यह मुहब्बत नहीं। अक़ीदे की अहमियत हर मुसलमान समझने की कोशिश करे, इसका गहराई से इल्म हासिल करे और इसके तक़ाज़ों के मुताबिक़ अमल करे। मुबल्लिग़ीने इस्लाम की भी ज़िम्मादारी है कि इस मस्ले से ख़ुसूसी दिलचस्पी का मुज़ाहिरा करें ताकि अवाम ख़ुसूसन नौजवान बर वक़्त इसका इदराक कर सकें। फ़िक़्ही मसाइल में इख़्तिलाफ़ क़ाबिले

बर्दाश्त हो सकता है लेकिन अक़ीदे में इख़्तिलाफ़ के संगीन नुक़सानात हो सकते है, लिहाज़ा इस मस्ले में ख़ैरुल क़ुरून, इस्लाम के बेहतरीन ज़माने अह्दे नबवी, अह्दे सहाबा और अह्दे ताबईन को हम अपने लिये नमूना समझें। और यह बात लाइक़े शुक्र और क़ाबिले तहसीन है कि यह मम्लिकत सऊदी अरब अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से तौहीद के नूर से मुनव्वर है। इसके अवाम और हुकूमत सलफ़ी दावत और अक़ीदए तौहीद की मुहब्बत से सरशार और इसके पैरूकार हैं। وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

लोगो! अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो, अपने दिल व दिमाग़ में सही अक़ीदे की अज़्मत बिठाओ और इस्लाम की ठोस मा'लूमात मुअ्तबर उलमाए रब्बानी से हासिल करो ताकि दुनिया और आख़िरत की कामियाबी हासिल कर सको।

दरूद व सलाम पढ़िये उस नबीये मुर्सल सल्ल0 पर जिसने तौहीद का अलम बुलंद किया और शिर्क के रास्ते बंद किये। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर अल्लाह के बे पायां रहमतें और बरकतें हों।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 3

(1) सही मुस्लिम, हदीसः 93 (2) अलक़सीदतुल नूनिया, सः250,35,219 (3) शर्हुल अक़ीदतुल ताहाविया, सः 459-462, 796 (4) अलअन्आम 6:159 (5) अज़्ज़ुमर 39:45 (6) अन्नूर 24:54

खुत्बा 4

इत्तिबाए सुन्नत और उसके तक़ाज़े

"सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा ताकि वह उसे तमाम अदियान पर ग़ालिब कर दे चाहे मुशिरक उसको कितना ही नापसंद करें। मैं अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ़ बयान करता हूं जिसके ज़रीए से मोमिन और मुवहि्हद बंदे उसका तक़र्रुब हासिल करते हैं और मैं उसका ऐसा शुक्र अदा करता हूं जिसकी परहेज़गार और मुत्तबईन रग़बत रखते हैं और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोईन शरीक नहीं, वह पाक है और जुल्म करने और बोहतान बांधने वालों की बेबुनियाद बातों से बहुत बुलंद है, ऐसी शहादत जो फ़ाएदा दे गवाही देने वाले को उस दिन जिस दिन माल और औलाद फ़ायदा नहीं देंगे। और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। उन्हें अल्लाह ने हमारा रह्बरे आज़म, जन्नत की बशारत और जहन्नम से डराने वाला, दीने इस्लाम का दाई और रौशन चिराग़ बना कर मबऊस फ़रमाया। आप सल्ल० ने रिसालत का पैग़ाम पहुंचा दिया, अमानत अदा फ़रमाई, उम्मत को नसीहत फ़रमाने की ज़िम्मेदारी पूरी कर दी और अल्लाह के रास्ते में भरपूर जिद्दो जिहद की, जिससे अल्लाह ने बंद दिलों के हिजाब दूर कर दिये, नूरे बसीरत से अंधी आंखों को बीना कर कर दिया और हक़ से बहरे कानों

को हक़ से मानूस कर दिया। आप की वजह से अल्लाह ने गुमराही और ज़लालत से बचा कर लोगों को साहिबे हिदायत कर दिया और आप ही की वजह से उसने लोगों को बेराह रवी और शक़ावत से निकाल कर साहबे बसीरत बना दिया। इस काम के लिये अल्लाह तआला ने आप का सीना खोल दिया, आप के ज़िक्र को ता बंदगी अता फ़रमाई, आप की क़द्र व मंज़िलत बढ़ाई, आप के बोझों को उतार दिया और आप के मुख़ालिफ़ीन के लिये ज़िल्लत व रुसवाई मुक़द्दर फ़रमाई। आप के ज़रीए दीन पायए तकमील तक पहुंचाया और आप ही के ज़रीए इस नेअ़मत का इतमाम फ़रमाया और आप ने हमारे लिये ऐसी रौशन शाहराह की निशानदी फ़रमाई जिसे हर चीज़ वाज़ेह और अयां है, जिस पर चलने वाला गुमराह नहीं हो सकता, चुनांचे दीन वही है जो आप ने बताया और शरीअ़त वही है जो आप ने मुक़र्रर फ़रमाई। हम आप की मुहब्बत पर अल्लाह को गवाह बनाते हैं जिसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, ऐसी मुहब्बत जो हर मुहब्बत पर ग़ालिब है, जो नफ़्स, जान, औलाद, वालिदैन और तमाम दुनिया की मुहब्बतों पर फ़ाइक़ और सबसे बढ़ कर है। अल्लाह तआला की लामहदूद रहमतें और बरकतें हों आप सल्ल० पर, आप की आल और अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो आप के नक़्शे क़दम पर चलते रहे हैं।"

हम्द व सलात के बादः

इस पुरफ़िल्न दौर में जब हर तरफ़ दीन से बेज़ारी और हक़ व बातिल की कशमकश बरपा हो, जुल्मतों की घटा टोप तारीकी छाई हो, सुन्नतों के निशान मिटाए जा रहे हों, तक़्वा और परहेज़गारी की बात क़िंदीले रहनुमाई की हैसियत रखती है। इस तक़्वे की किर्नों से तारीकियां नाबूद होंगी और अल्लाह तआला के नेकूकार बंदों और शैतान के पुजारियों में वाज़ेह फ़र्क़ नुमायां होगा, इर्शादे रब्बानी है:

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنۡ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجۡعَلْ لَّكُمۡ فُرۡقَانًا وَّيُكَفِّرۡ عَنۡكُمۡ سَيِّاٰتِكُمۡ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ۔

"ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरो तो वह तुम्हारे लिये निकलने की राह बना देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बहुत बड़े फ़ज़्ल वाला है।"[1]

जो तक़्वे की दौलत से मालामाल होगा उसे ऐसी रौशनी मिलेगी जो मंज़िल तक पहुंचाएगी, फ़रमाने इलाही है:

يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوۡا بِرَسُوۡلِهٖ يُؤۡتِكُمۡ كِفۡلَيۡنِ مِنۡ رَّحۡمَتِهٖ وَيَجۡعَلْ لَّكُمۡ نُوۡرًا تَمۡشُوۡنَ بِهٖ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ۔

"ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से (अज्र) देगा और तुम्हारे लिये ऐसा नूर बनाएगा कि तुम उसके साथ चलोगे और वह तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बहुत मुआफ़ करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"[2]

आज के इस पुर आशूब दौर में हमें तक़्वे की अशद्द ज़रूरत है

ताकि अल्लाह तआला का वादा पूरा हो, जैसा कि फ़रमाया गयाः

وَعْدَ اللّٰهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ۔

"(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करता और लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।"(3)

बिरादराने इस्लाम! उम्मते मुस्लिमा की बक़ा, तरक़्क़ी और कामियाबी क़ुर्आन व सुन्नत की तालीमात पर अमल पैरा होने में मुज़मर है। जब तक लोगों ने इस उसूल को थामे रखा दुनिया की क़यादत व इमामत करते रहे, मश्रिक़ व मग़रिब में उनका ग़लग़ला था और इस्लाम का झंडा हर तरफ़ लहरा रहा था लेकिन जब उनमें दीन से बेज़ारी और किताब व सुन्नत से दूरी पैदा हुई तो इसके शदीद नुक़सानात ज़िंदगी के हर शोबे और हर गोशे में दिखाई देने लगे। ईमान व अक़ाइद, आमाल व अख़्लाक़ियात और तमद्दुनी तरक़्क़ी ग़र्ज़ हर जगह हमें नुक़सानात उठाने पड़े हत्ता कि बातिल अक़ाएद और नज़रियात हम में इस तेज़ी से सरायत कर गए कि वह दीन का हिस्सा बल्कि अस्ल दीन दिखाई देने लगे। उम्मत का शीराज़ा बिखर गया और हम मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों और गिरोहों में तक़सीम हो गए। हमारी सलाहियतें एक दूसरे को नीचा दिखाने में ज़ाए होने लगीं। यह सिलसिला यहीं ख़त्म नहीं हुआ बल्कि इसके असरात मज़ीद भयानक शक्ल इख़्तियार करके दूर तक फैलते चले गए। इस्लामी अक़ाएद और इसकी बुन्यादी तालीमात पर हमलों की बौछाड़ होने लगी, फ़रैब नअ़रों के ज़रीए से हक़ाइक़ को उलझाने की कोशिश की गई। सुन्नत की आईनी और शरई अहमियत, मंज़िलत

और हैसियत को घटाने की जसारत की गई। इन हमलों के नुक़्सानात हर सतह पर देखे जा सकते हैं, लिहाज़ा हक़ और सच्चाई के परस्तारों के लिये ज़रूरी है कि वह दिफ़ाए हक़ के लिये कमर बस्ता हो जाएं। यह वक़्त का तक़ाज़ा है कि हम अपनी सफ़ों को मुत्तहिद करके सच्चाई को आम करें। यह वक़्त है कि हम जुज़्वी इख़्तिलाफ़ात को एक तरफ़ रख कर सुन्नत की हिफ़ाज़त के लिये अढ़ खड़े हों। अहले इल्म के लिये इससे बेहतरीन की और क्या ख़िदमत हो सकती है कि वह दीन के इस चशमए साफ़ को गदला न होने दें, जैसा कि इमाम यहया बिन यहया नीशापूरी रह0, जो इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम रह0 के उस्ताद हैं फ़रमाते हैं:

اَلذَّبُّ عَنِ السُّنَّةِ أَفْضَلُ مِنَ الْجِهَادِ

"सुन्नत की हिफ़ाज़त जिहाद से अफ़ज़ल है।"[4]

और अल्लामा अबू उबैद क़ासिम बिन सलाम रह0 फ़रमाते हैं:

اَلْمُتَّبِعُ لِلسُّنَّةِ كَالْقَابِضِ عَلَى الْجَمْرِ، وَهُوَ الْيَوْمَ عِنْدِى أَفْضَلُ مِنَ الضَّرْبِ بِالسُّيُوفِ فِى سَبِيلِ اللهِ

"सुन्नत की पैरवी करने वाला यूं महसूस करेगा जैसे उसने अपनी हथैली पर आग का अंगारा रख लिया और ऐसा शख़्स मेरी नज़र में उससे कहीं बेहतर है जो तलवारों के साए में जिहाद कर रहा हो।"[5]

इस ज़माने में जबकि मुसलमान इंफ़रादी और इज्तिमाई तौर पर तरह तरह के ग़ैर इस्लामी अफ़कार और नज़रियाती हमलों की ज़द में हैं और लोगों के नज़दीक मेअ़यारे हक़ के पैमाने बदल चुके हैं, हमारी मालूमात हर क़िस्म की रतब व याबिस से भरी पड़ी हैं। नौबत यहां तक पहुंच गई है कि लोग मअ़रूफ़ को मुन्कर और सुन्नत को

बिद्अ़त समझने लगे हैं, इन हालात में अह्ले हक़ पर वाजिब हो चुका है कि किसी ख़ौफ़ और लगी लिपटी के बग़ैर हक़ाइक़ को सामने लाएं, सुन्नत का दिफ़ाअ़ करें और दीन के नाम पर फैलने वाले ग़लत अफ़कार व नज़रियात का इज़ाला करें, अपनी तवज्जोह अक़ीदे की इस्लाह और सुन्नत के एहतिमाम व इल्तिज़ाम पर मरकूज़ करें। हर वह चीज़ जो इसके ख़िलाफ़ हो या ग़लत क़िस्म के शुबहात को जनम दे रही हो उसकी जुर्अत से तर्दीद करें, चाहे यह बातिल नज़रियात बातिल अफ़राद की तरफ़ से पेश किये जा रहे हों या बातिल इदारों की तरफ़ से क्योंकि हक़ और सच्चाई के मुक़ाबले में कोई फ़िक्र या नज़रिया हरगिज़ क़ाबिले बर्दाश्त नहीं। उलमाए किराम हालाते हाज़िरा के तक़ाज़ों से पहलू तही कर रहे हैं। चारों तरफ़ से सुन्नत की आईनी और शरई हैसियत पर रकीक हमले हो रहे हैं। हमें क़मरबस्ता हो जाना चाहिये ताकि सुन्नत के ख़िलाफ़ होने वाले हमलों को मुदल्लल और मुस्कत जवाब दिया जा सके। यह वक़्त की पुकार है। इस सिलसिले में हमें अपने अवाम और नौजवानों की रहनुमाई का फ़र्ज़ अदा करना चाहिये।

दावत व तबलीग़ के मैदान में काम करने वालों के लिये ज़रूरी है कि वह अपनी दावती सरगर्मियों को सुन्नत के साथ मरबूत करें क्योंकि यह दीन की बुन्याद है। फ़िक्री और सक़ाफ़ती उमूर को अहमियत दी जाएगी और बुन्यादी मसाइल नज़रअंदाज़ किये जाएंगे तो ठोस नताइज नहीं निकल सकेंगे। अफ़सोस! इस वक़्त मैदान में काम करने वाले रहनुमाओं की एक भारी तादाद इस मर्ज़ में मुब्तला है। इसी तरह तालीमी इदारों से मुंसलिक अफ़राद के लिये भी ज़रूरी है कि वह दर्सगाहों में इन बुन्यादी उमूर को पूरी अहमियत दें ताकि इनमें परवान चढ़ने वाली नस्ल परेशान ख़्याली और तज़बज़ुब का

शिकार न हो।

ज़राए अबलाग़ व नशरियात की भी यह बुन्यादी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने प्रोग्रामों में सुन्नत के तक़ाज़ों को जिस क़दर मुम्किन हो, अहमियत दें। वालिदैन और घर के दीगर बुज़ुर्गों का फ़र्ज़ है कि वह रोज़ मर्रा की ज़िंदगी में सुन्नत से वालिहाना मुहब्बत का अमली मुज़ाहरा करें। ग़लत फ़िक्र व अमल के लोगों ने सुन्नत की ऐसी नाक़द्री कर रखी है कि इसके अलमनाक नताइज हर सतह पर देखे जा रहे हैं। हम ने सुन्नत से वाबस्तगी का बड़ा ही ग़लत और नाक़िज़ मफ़हूम अपने ज़ह्नों में बिठा रखा है, यअ़नी बअ़ज़ मख़्सूस दिनों और रातों में सुन्नत और हुब्बे नबी सल्ल० का रसमी तज़किरा कर दिया जाए और फिर शतर बेमहार की तरह हम बेफ़िक्री से आज़ाद ज़िंदगी गुज़ारें, गोया साल के बाक़ी दिनों में हमारा सुन्नत से कोई तअ़ल्लुक़ ही नहीं। हैरत है कि इस क़िस्म की बातें दीन का लबादा ओढ़ कर की जा रही हैं और इस पर मुहब्बत का लेबल लगा कर इसे मुज़य्यन करने की कोशिश की जा रही है, फ़रमाने इलाही है:

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا۔

"और (ऐ नबी!) उन लोगों को छोड़ दीजिये जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िंदगी ने उन्हें धोके में डाल रखा है।"(6)

इस वक़्त यह हम सब की इज्तिमाई ज़िम्मादारी है कि एहयाए सुन्नत की फ़िक्र और अमली तदबीरें करें क्योंकि हर मुसलमान आख़िरत की नजात का मुतमन्नी है और आख़िरत की नजात और जन्नत का हुसूल सिर्फ़ नबीये करीम सल्ल० की इत्तिबा और सल्फ़

सालिहीन के तरीक़े को अपना कर ही मुम्किन है।

इत्तिबाए सुन्नत के मस्ले में एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला ज़रूरी है जो मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से लोगों के ज़ह्नों में डाल दी जाती है, वह है अक्सरियत का रास्ता, अक्सरियत की पैरवी। यह इंतिहाई ग़लत प्रोपेगंडा है क्योंकि हक़ व सदक़ात को अक्सरियत की बुन्याद पर नहीं बल्कि दलील और बुरहान की वजह से पहचाना जाता है, फ़रमाने इलाही है:

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ۔

"और अगर आप अह्ले ज़मीन की अक्सरियत की इताअत करें तो वह आप को अल्लाह की राह से बहका देंगे, वह अपने गुमान के सिवा किसी बात की पैरवी नहीं करते और वह अटकल पच्चू बातें ही करते हैं।"[7]

उम्मते मुस्लिमा के ज़िम्मादारों को चाहिये कि इस नाज़ुक मौक़ा पर अपने जुज़्वी, ज़िम्नी और ज़ैली इख़्तिलाफ़ात भुला कर अपनी सफ़ों को मुत्तहिद करें, अपनी सलाहियतों को बर महल इस्तेमाल करें, अपनी अपनी जमाअत और तंज़ीमों के ख़ोल से बाहर निकल आयें, अपनी जिद्द व जिहद के दायरे को वुसअ़त दें, गिरोही और जमाअती इख़्तिलाफ़ात को पसे पुश्त डाल दें और वसीअ़ तनाज़ुर में दीन के ख़ादिम बनें। ख़ुसूसन जिनका मन्हज एक है, उन पर लाज़िम है कि एक दूसरे को नीचा दिखाने और शिकस्त देने की लाहासिल कोशिशें तर्क कर दें। शख़्सी ग़लतियां हर जगह मुम्किन हैं, उनसे चश्मपोशी करें। अफ़्व व दरगुज़र और हिक्मत व इस्लाह से काम लें ताकि वह अफ़कार और क़ुव्वतें जो इस्लाम की चूलें हिलाने में

सरगर्दां हैं उन्हें नाकाम व नामुराद बनाया जा सके। इसी में हम सबके लिय ख़ैर और भलाई है।

बिरादराने इस्लाम! हम मुहिब्बाने नबी सल्ल0 के अलावा और कौन जो सुन्नत की अहमियत को उजागर कर सके, इस पर होने वाली फ़िक्री यलग़ार को नाकाम बना सके और इस पर भिनभिनाने वाली मक्खियों को भगा सके। यह यक़ीनन हम मुत्तबिईने सुन्नत की ज़िम्मादारी है जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तौफ़ीक़ से पूरी की जा सकती है। अल्लाह तआला हमें किताब व सुन्नत की पैरवी करने की तौफ़ीक़ दे और हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى أَبَانَ الطَّرِيقَ، وَأَوْضَحَ الْمَحَجَّةَ، وَأَرْسَلَ رُسُلَهُ مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ، لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا وَحَبِيبَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهُ، كَسَاهُ مِنْ حُلَلِ النُّبُوَّةِ مَا زَادَهُ مَهَابَةً وَّبَهْجَةً، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ، الَّذِينَ فَدَوْهُ بِكُلِّ نَفْسٍ وَّمُهْجَةٍ، وَّالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह तआला ही के लिये है जिसने सच्चाई का रास्ता ज़ाहिर किया और शाहराहे हक़ को वाज़ेह किया और जिसने अंबियाए किराम को जन्नत की बशारत और जहन्नम से डराने वाले बना कर भेजा। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के

लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं शहादत देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह ने आप को नुबुवत की उम्दा पोशाकों में से आला तरीन पोशाक पहनाई जिससे आप की खूबसूरती और अज़मत व वक़ार में और इज़ाफ़ा हो गया। अल्लाह की लामहदूद रहमतें और सलामती हो आप पर, आप की आल और अस्हाब पर जो आप सल्ल0 पर हर दम रूह व दिल से फ़िदा रहते थे और क़्यामत तक आने वाले उन लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, अपने महबूब रसूल सल्ल0 की सुन्नत की पैरवी करो और जान रखो कि बेहतरीन बात अल्लाह की किताब है और बेहतरीन रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का रास्ता है और सबसे बुरी बात दीन में नया काम ईजाद करना है और हर नया काम बिद्अत है और हर बिद्अत गुमराही है।

यह अल्लाह का फ़ज़्ल व करम है कि उसने अपनी किताब और अपने हबीब सल्ल0 की सुन्नत की हिफ़ाज़त के लिये ऐसे लाइक़ व क़ाबिल लोगों को पैदा फ़रमाया जो हर ज़माने और हर इलाक़े में इसके हिफ़ाज़त का बीड़ा उठाये हुए हैं, जो उसकी तरफ़ आने वाली मस्मूम हवाओं का रुख़ फेरने की सलाहियत रखते हैं, उसके ख़िलाफ़ भड़काई जाने वाली आग बुझाते हैं और जो बेजा शुबहात का भरपूर जवाब देने के अह्ल हैं, जैसा कि फ़रमाने नबी सल्ल0 हैः

لَا تَزَالُ مِنْ أُمَّتِى أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللّٰهِ لَا يَضُرُّهُمْ مَّنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتّٰى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ عَلٰى ذٰلِكَ

"मेरी उम्मत में एक गिरोह हर दौर में हक़ के साथ वाबस्ता रहेगा। उनके बेयार व मददगार छोड़ने वाले और उनकी मुख़ालिफ़त करने वाले उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। वह इसी हाल में होंगे यहां तक कि अल्लाह का हुक्म (क़्यामत) आ जाएगा।"[8]

यही वजह है कि तारीख़ के इस तवील दौरानिये में सुन्नत के शैदाई हर जगह दिखाई देते हैं जिन्होंने राहे हिदायत का चिराग़ हमेशा रौशन रखा। लोगों की हर दम रहनुमाई करते रहे, हर ज़माने में सुन्नत शनासी और सही सिम्त की निशानदही करते रहे और इस राह में उठने वाला गर्द व गुबार साफ़ करते रहे।

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि इन उलमाए रब्बानी की क़द्र करें, अपनी सफ़ों को मुंतशिर न होने दें और अपना अज़ीम मक़्सद सामने रखें। उम्मत का हर फ़र्द अपनी सलाहियत और इस्तिताअ़त के मुताबिक़ इस सफ़ीनए हक़ को आगे बढ़ाए और इसके लिये खुद भी उलूमे शरइया से बहरह मंद हो क्योंकि इसके बग़ैर कोई भी जादए हक़ का राही बन सकता है न क़्यादत का फ़र्ज़ अदा कर सकता है।

दरूद व सलाम पढ़िये महबूब मुस्तफ़ा, क़ुद्वए आलम, रसूले अकरम सल्ल0 की ज़ाते गिरामी पर जिसका अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने अपनी किताबे अज़ीज़ में यूं हुक्म दिया है:

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۔

"बिला शुब्हा अल्लाह और उसके फ़रिशते नबी पर रहमत व दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी इस पर दरूर व सलाम भेजो और खूब खूब सलाम भेजो।"[9]

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 4

(1) अल्लअन्फ़ाल 8:29 (2) अलहदीद 57:28 (3) अलरूम 6:30 (4) सियरु आलाम अन्नुबला लिज़्ज़हबीः 10/518 (5) तारीख़ बग़दाद लिलख़तीबः 12/410, व सियरु आलाम अन्नुबला लिज़्ज़हबीः 10/499 (6) अलअन्आम 6:70 (7) अलअन्आम 6:116 (8) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 3641 (9)अलअहज़ाबः 33:56

खुत्बा 5

नमाज़ मोमिन की पहचान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ جَعَلَ الصَّلَاةَ عِمَادَ الدِّيْنِ، وَعِصَامَ الْيَقِيْنِ،

وَشَأْمَةَ الْقُرُبَاتِ، وَغُرَّةَ الطَّاعَاتِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ

وَرَسُوْلُهٗ، وَمُصْطَفَاهُ وَخَلِيْلُهٗ، أَفْضَلُ الْبَرِيَّةِ، وَسَيِّدُ الْبَشَرِيَّةِ،

الْقَائِلُ فِيْمَا صَحَّ عَنْهُ، وَجُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلَاةِ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَى الرَّحْمَةِ الْمُهْدَاةِ وَالنِّعْمَةِ

الْمُسْدَاةِ، نَبِيِّنَا مُحَمَّدِ ابْنِ عَبْدِ اللّٰهِ، وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ

وَأَزْوَاجِهٖ وَمَنْ دَعَا بِدَعْوَتِهٖ وَاهْتَدٰى بِهُدَاهُ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह के लिये ख़ास है जिसने नमाज़ को दीन का सुतून, यक़ीन की बुन्याद, तक़र्रुबे इलाही का वसीला और इताअत की पहचान बनाया, मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप अल्लाह के महबूब और ख़लील हैं, आप सारी मख़्लूक़ से आला और सब इंसानों के सरदार हैं, आप का इर्शादे गिरामी है:

وَجُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِي فِي الصَّلٰوةِ۔

"नमाज़ मेरी आंखों की ठंडक है।"[1]

ऐ अल्लाह! तू अपनी तरफ़ से भेजी गई सरासर रहमत और अता की गई अज़ीम नेअ़मत हमारे प्यारे नबी मुहम्मद सल्ल० पर रहमतें, बरकतें और सलामती नाज़िल फ़रमा, आप की आल, अज़्वाज और अस्हाब पर और उस इंसान पर भी जिसने आप की दावत का प्रचार किया और आप की सीरत की पैरवी की।

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! इस वक़्त हम एक ऐसे माद्दी दौर से गुज़र रहे हैं जो इंसान के लिये बड़ा सब्र आज़मा और आसाब शिकन है। हर तरफ़ दुनिया के हुसूल के लिये धक्कम पेल हो रही है। माद्दी ज़िंदगी की इस कड़ी धूप में आदमी कभी सुकून की ऐसी छांव को ढूंढता है जहां उसे कुछ देर के लिये आराम का मौक़ा मिल सके, कुछ देर के लिये दिल व दिमाग़ को राहत मयस्सर आ सके लेकिन इस माद्दी दौर में मतलूबा सुकून व इतमीनान इस्लाम के शजरे सायादार के अलावा कहीं नहीं मिल सकता। इस सुकून, राहत और ठंडक के हुसूल के लिये नमाज़ सबसे बेहतरीन अमली ज़रीआ है, चाहे वह फ़राइज़ की शक्ल में हो या नवाफ़िल की शक्ल में, फ़रमाने इलाही है:

اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ

"तुम सब्र और नमाज़ के साथ मदद मांगो।"[2]

मज़ीद फ़रमायाः

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ

"और नमाज़ क़ाइम कीजिये, यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है।"[3]

रसूले अकरम सल्ल0 हज़रत बिलाल रज़ि0 से फ़रमाया करते थे:

قُمْ يَا بِلَالُ! فَأَرِحْنَا بِالصَّلَاةِ

"बिलाल! उठो और नमाज़ के ज़रीए हमें राहत पहुंचाओ।"[4]

बल्कि ख़ुद रसूले अकरम सल्ल0 को भी कोई अहम मस्ला पेश

आता था तो आप नमाज़ का एहतिमाम फ़रमाया करते थे।[5]

अज़ीज़ भाइयो! क्या आप ने कभी ग़ौर किया कि नमाज़ के लिये यह एहतिमाम क्यों है? इसलिये कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और बंदे के दर्मियान तअ़ल्लुक़ पैदा करने का यह बेहतरीन ज़रीआ है। नमाज़ के लिये जब बंदा इज्ज़ व इंकिसार के साथ खड़ा होता है तो इसका जो बेहतरीन असर इस्लाही एतिबार से उसकी ज़ात पर पड़ता है, उसकी लज़्ज़त सच्चा नमाज़ी ही महसूस कर सकता है। लेकिन हमें यहां यह सोचना होगा कि वह कौनसी नमाज़ है जो इंसान को बुराइयों से रोकती है? वह कौनसी नमाज़ है जो तक़र्रुबे इलाही का ज़रीआ बनती है? वह कौनसी नमाज़ है जो दीन व दुनिया की तरक़्क़ी का सबब बनती है? क्या यह अज़ीमुश्शान फ़ाएदे सिर्फ़ नमाज़ की चंद ज़ाहिरी हरकात से हासिल हो सकते हैं? हरगिज़ नहीं! बल्कि इसका हक़ीक़ी फ़ाएदा सिर्फ़ उन्ही लोगों को होगा जो इसके मफ़हूम पर ग़ौर करें, जो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का पैकर बनें, जो जिस्मानी हरकात के साथ अपनी रूह को भी वक़्फ़े नमाज़ रखें, जिनकी नमाज़ क़ुर्आन व सुन्नत की तालीमात का नमूना हो। यही वह नमाज़ है जो मोमिन की मेअ़राज है, जो इसके दरजात की बुलंदी का ज़रीआ बनती है। इस कैफ़ियत से जब नमाज़ी बारगाहे इलाही में पेश होता है तो उसे वह सुरूर हासिल होता है जो उसके जिस्म व जान के लिये बाइसे राहत बन जाता है।

मुहतरम भाइयो! सच्चा मुसलमान नमाज़ की अहमियत से कभी ग़ाफ़िल नहीं हो सकता, इसलिये कि यह दीन का सुतून है, यह कुफ़्र और ईमान के दर्मियान फ़र्क़ करने वाली इबादत है बल्कि इसकी हैसियत वही है जो किसी जिस्म में सर की होती है। जिस तरह जिस्म सर के बग़ैर नाक़िस है उसी तरह दीन नमाज़ के बग़ैर नातमाम है।

लेकिन नमाज़ की इतनी ज़बरदस्त अहमियत के बावजूद कितने अफ़सोस की बात है कि हम में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो अदाए नमाज़ में ग़फ़लत बरतते हैं, नमाज़ पढ़ने में सुस्ती और काहिली का मुज़ाहिरा करते हैं। कहीं ऐसा न हो कि उन पर दुनिया ही में अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो जाए। मुसलमानों को नमाज़ पर ख़ुसूसी तवज्जोह देनी चाहिये ताकि वह दुनिया और आख़िरत की सआ़दत से मालामाल हो सकें।

नमाज़ की अहमियत के साथ साथ हमें यह इल्म भी होना चाहिये कि उसकी कुछ शराइत, व वाजिबात, अरकान और मसाइल हैं ताकि हम अपनी नमाज़ों से पूरा फ़ाएदा उठा सकें। बहुत से नमाज़ियों की नमाज़ में मुख़्तलिफ़ ग़लतियां आम हैं, उनकी रोकथाम ज़रूरी है, जैसा कि फ़रमाया गया:

أَسْوَأُ النَّاسِ سَرِقَةً الَّذِى يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ

"सबसे बुरा चोर वह है जो नमाज़ पढ़ने में चोरी करता है।"[6]

नमाज़ की चोरी यह है कि उसके अरकान सही अदा न किये जाएं, रुकूअ़, सुजूद वग़ैरा में सुस्ती की जाए, जैसा कि रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया:

إِنَّ الرَّجُلَ لَيَنْصَرِفُ وَمَا كُتِبَ لَهُ إِلَّا عُشْرُ صَلَاتِهِ تُسْعُهَا
ثُمُنُهَا سُبُعُهَا سُدُسُهَا خُمُسُهَا رُبُعُهَا ثُلُثُهَا نِصْفُهَا

"(बअ़ज़ औक़ात) इंसान नमाज़ से फ़ारिग़ होता है और इसके लिये उसकी नमाज़ से सिर्फ़ दसवां, नवां, आठवां, सातवां, छटा, पांचवां, चौथा, तीसरा और आधा हिस्सा ही लिखा जाता है।"[7]

यह कटौती उसकी नियत और नमाज़ पढ़ने के उस्लूब के मुताबिक़ होती है, लिहाज़ा कोशिश करनी चाहिये कि हर रुक्न सही अदा हो ताकि पूरा पूरा फ़ाएदा हो सके। यहां इफ़ादए आम की ग़र्ज़ से कुछ अहम बातें बयान की जाती हैं।

(1) ज़ाहिरी और बातिनी तहारते नमाज़ की बुन्यादी शर्त है, इसके बग़ैर नमाज़ क़ाबिले क़बूल नहीं होती। तहारत और वज़ू मसनून तरीक़े से करना चाहिये। वज़ू के मस्ले में बअ़ज़ लोग वसवसे का शिकार होते हैं और बेमक़्सद पानी ज़ाए करते हैं जबकि बअ़ज़ हद्दर्जा काहिली का मुज़ाहिरा करते हैं हत्ता कि पानी क़रीब होने के बावजूद तयम्मुम से काम चलाना चाहते हैं। यह दोनों फ़रीक़ ग़लत हैं, उन्हें इस्लाह करनी चाहिये।

(2) क़िब्लए रुख़ होना नमाज़ की बुन्यादी शर्त है, जो मस्जिदे हराम में हों उनके लिये तो ज़रूरी है कि उनका रुख़ बिल्कुल कअ़बतुल्लाह की तरफ़ हो वर्ना इस मस्ले में ग़फ़लत नाक़ाबिले क़बूल है।

(3) सतर पोशी नमाज़ की शराइत में से है लेकिन बअ़ज़ लोग इसका एहतिमाम नहीं करते, कभी उनका लिबास इतना बारीक होता है कि उनका जिस्म दिखाई दे रहा होता है और कभी इतना तंग कि उन्हें हर्कत करने ख़ुसूसन रुकूअ़ व सजूद में मुश्किल होती है। इस पर तवज्जोह देनी चाहिये।

(4) औरत के लिये सारा जिस्म ढांकना ज़रूरी है सिवाए चेहरे के और अगर ग़ैर महरम मर्द हो तो चेहरा भी ढांप ले, अगर मस्जिद में आए तो बिल्कुल सीधी साधी कैफ़ियत में बनाव सिंघार और ख़ुशबू इस्तेमाल किये बग़ैर आए ताकि उसे पूरा पूरा सवाब मिल सके।

(5) नमाज़ शुरू होने से पहले सफ़ों को सीधा करने का एहतिमाम करना चाहिये। नबीये करीम सल्ल0 इस पर ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाया करते थे, जैसा कि सही हदीस में है कि आप फ़रमाया करते थे:

لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْلَيُخَالِفَنَّ اللّٰهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ

"(अल्लाह के बंदो!) तुम अपनी सफ़ें ज़रूर ठीक करोगे वर्ना अल्लाह तआला तुम्हारे दर्मियान फूट डाल देगा।"(8)

ठीक सफ़बंदी इमाम और मुक़्तदी दोनों की ज़िम्मेदारी है लेकिन इसमें किसी को तकलीफ़ पहुंचाने से गुरेज़ किया जाए।

(6) ख़ुशूअ़ जो नमाज़ की रूह और क़बूलियत की पहचान है, फ़रमाने इलाही है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۔ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۔

"मोमिन यक़ीनन फ़लाह पा गए, वह जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी करने वाले हैं।"(9)

लेकिन वह लोग जो अपनी नमाज़ों में सुस्ती करते हैं या जो अपनी तवज्जोह इधर उधर मब्ज़ूल करते हैं या जो नमाज़ में ग़ैर ज़रूरी हरकात में मशग़ूल रहते हैं उन्हें मालूम होना चाहिये कि यह सब चीज़ें रूहे नमाज़ और ख़ुशूअ़ के मनाफ़ी हैं, इनकी नमाज़ नाक़िस और नातमाम होगी। नमाज़ में इतमीनान ज़रूरी है बल्कि इतमीनान नमाज़ का लाज़मी तक़ाज़ा है, इस लिये रसूले अकरम सल्ल0 ने एक सहाबी को, जिन्होंने नमाज़ में उज्लत की थी, नमाज़ दुहराने का हुक्म दिया और फ़रमाया:

اِرْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ

"जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी

(हालांकि उन्होंने आप के सामने नमाज़ पढ़ी थी लेकिन जल्द बाज़ी में पढ़ी थी।)"[10]

(7) जो लोग बा जमाअत नमाज़ अदा कर रहे है हों उनके लिये ज़रूरी है कि वह इमाम की इक़्तिदा करें, यअ़नी हर काम इसके बाद करें, जैसा कि नबीये करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः

إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ۔

"बेशक इमाम इसलिये बनाया जाता है कि उसकी इक़्तिदा की जाए।"[11]

इमाम से आगे बढ़ना सही नहीं क्योंकि इससे नमाज़ बातिल हो जाती है, जैसा कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः

أَمَا يَخْشَى أَحَدُكُمْ، أَوَلَا يَخْشَى أَحَدُكُمْ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ قَبْلَ الْإِمَامِ أَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ رَأْسَهُ رَأْسَ حِمَارٍ؟ أَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ صُورَتَهُ، صُورَةَ حِمَارٍ؟

"क्या तुम लोग इस बात से नहीं डरते कि कोई इमाम से पहले अपना सर रुकूअ़ या सज्दे से उठाए तो अल्लाह तआला (को यह इतना नापसंद है कि) उसका सर गधे का सर बना डाले?"[12]

इमाम अहमद बिन हंबल ने तो यहां तक फ़रमायाः

لَيْسَ لِمَنْ سَبَقَ الْإِمَامَ صَلَاةٌ

"जो इमाम से आगे बढ़े उसकी नमाज़ ही नहीं होती।"[13]

लिहाज़ा तमाम नमाज़ियों को ख़ास ख़्याल रखना चाहिये कि हमारी हर हरकत इमाम के पीछे हो। रुकूअ़, सुजूद और क़याम वग़ैरा में इस का ख़ास ख़्याल रखा जाए, इमाम से पहले रुकूअ़ में जाने या सज्दा करने से नमाज़ बातिल हो जाएगी।

नमाज़ अल्लाह तआला की तरफ़ बहुत दिल लगा कर पढ़े ध्यान से बेहतरीन अंदाज़ में पढ़नी चाहिये ताकि अल्लाह तआला ने हमें जो मौक़ा अता फ़रमाया उससे पूरा पूरा फ़ाएदा उठा सकें क्योंकि हमें जो नादिर मौक़ा दिया गया वह किसी और क़ौम और मज़हब के मानने वालों को नहीं मिला, लिहाज़ा चाहे हम दुनिया के किसी गोशे में रहें इस फ़रीज़े की अदाएगी में कोई ग़फ़लत नहीं होनी चाहिये।

अल्लाह तआला हमें दीन की सही समझ अता फ़रमाए, मुसलमानों के हालात दुरुस्त फ़रमाए, उन्हें शआइरे इस्लाम की हिफ़ाज़त और नमाज़ की पाबंदी की तौफ़ीक़ बख़्शे। अल्लाह हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهٗ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है, वह यक्ता है और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह की रहमत, सलामती और बरकतें नाज़िल हों आप पर, आप की आल और अस्हाब पर।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो आप पर लाज़िम है कि अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और इक़ामते सलात की भरपूर कोशिश करें क्योंकि नमाज़ ही से

आप को दुनिया में नूर हासिल होगा और आख़िरत में ज़बरदस्त अज्र व सवाब मिलेगा। अगर आप कुर्आन मजीद की वह आयात पढ़ें जिनमें नमाज़ का हुक्म दिया गया है तो आप पर यह हक़ीक़त उजागर होगी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नमाज़ का हुक्म देते हुए हमेशा "इक़ामते सलात" के अलफ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए हैं। इक़ामत सिर्फ़ ज़ाती तौर पर नमाज़ पढ़ने को नहीं कहते बल्कि मुकम्मल एहतिमाम और पूरी तवज्जो देने को कहते हैं, लिहाज़ा नमाज़ की सिर्फ़ ज़ाहिरी अदाएगी काफ़ी नहीं बल्कि अपने लवाहिक़ीन, औलाद, रिशतादार और पड़ोसियों को भी निहायत मुहब्बत और हकीमाना तरीक़े से नमाज़ की तरफ़ माइल करना चाहिये। अइम्मए मसाजिद को चाहिये कि लोगों में नमाज़ का सही शुऊर और आगाही पैदा करें, नमाज़ के मसाइल इल्तिज़ाम से बयान करते रहें, नमाज़ का नबवी तरीक़ा सिखाएं, जैसा कि आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي

"तुम नमाज़ इस तरह पढ़ो जिस तरह तुम ने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है।"(14)

नमाज़ का मस्नून तरीक़ा सीखने और सिखाने की हर सतह पर अशद्द ज़रूरत है ताकि हम सही तरीक़ से नमाज़ अदा कर सकें। इस सिलसिले में एक ज़रूरी गुज़ारिश यह है कि नमाज़ की तफ़सीलात में बअ़ज़ फ़िक्ही नौइयत के इख़्तिलाफ़ात हैं, खुसूसन नमाज़ की सुन्नतों और मुस्तहब्बात के सिलसिले में इख़्तिलाफ़ात पाए जाते हैं, इस बारे में हम सबको इंतिशार से बचना चाहिये, एक दूसरे के ख़िलाफ़ तेज़ व तुंद जुम्लों और हमलों से परहेज़ करना चाहिये। आदाब और हुदूद का ख़्याल रखते हुए आसान लफ़्ज़ों और मीठे लहजे में सुन्नत के मसाइल बयान करने चाहियें। दरूद व सलाम

पढ़िये उस ज़ात पर जिसने सबसे बेहतर नमाज़ अदा की, जो क़्यामत के दिन मक़ामे महमूद पर जल्वा अफ़रोज़ होंगे और हौज़ कौसर पर मेज़बानी फ़रमाएंगे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी खुत्बा नम्बर 2

(1) मुस्नद अहमद:3/128 व सुनन अन्नसाई, हदीस:3391 (2) अलबक़रा (3) अलअन्कबूत 29:45 (4) मुस्नद अहमद: 5/371 व सुनन अबी दाऊद, हदीस: 4988 (5) मुस्नद अहमद: 5/388, व सुनन अबी दाऊद, हदीस: 1319 (6) मुस्नद अहमद: 5/310 (7) मुस्नद अहमद: 4/321, व सुनन अबी दाऊद, हदीस 796 (8) सही बुख़ारी, हदीस: 717, व सही मुस्लिम, हदीस: 436 (9) अलमोमिनून 23:1,2 (10) सही बुख़ारी, हदीस: 793, व सही मुस्लिम हदीस: 397 (11) सही बुख़ारी, हदीस: 688, व सही मुस्लिम, हदीस: 412 (12) सही बुख़ारी, हदीस: 691, व सही मुस्लिम हदीस: 427 (13) अलमुग़नी इब्ने कुदामा: 2/209 (14) सही बुख़ारी, हदीस: 631

खुत्बा 6

ज़कात माल की तत्हीर और इसमें इज़ाफ़े की कलीद

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ، وَنَسْتَعِينُهٗ، وَنَسْتَهْدِيهِ وَنَسْتَغْفِرُهٗ، وَنَتُوبُ إِلَيْهِ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَمِنْ سَيِّآتِ أَنْفُسِنَا، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، فَرَضَ الزَّكَاةَ عَلٰى عِبَادِهٖ تَزْكِيَةً لِلنُّفُوسِ، وَتَطْهِيرًا لِلْقُلُوبِ، وَتَنْمِيَةً لِلْأَمْوَالِ، وَسَدًّا لِعَوَزِ الْمُحْتَاجِينَ، وَتَحْقِيقًا لِرُوحِ الْمَوَدَّةِ وَالْإِخَاءِ، وَالرَّأْفَةِ وَالرَّحْمَةِ وَالصَّفَاءِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ، وَمُصْطَفَاهُ وَخَلِيلُهٗ، وَمُجْتَبَاهُ وَحَبِيبُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَالتَّابِعِينَ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है। हम सिर्फ़ उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से रहनुमाई चाहते हैं, उसी से मग़फ़िरत मांगते और तौबा करते हैं और हम अपने नफ़्स की बुराइयों और बदआमालियों से अल्लाह तआला की पनाह तलब करते हैं। जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपने बंदों पर ज़कात फ़र्ज़ की ताकि उनका तज़किया और दिलों की सफ़ाई हो सके। अल्लाह ने ज़कात को माल में इज़ाफ़े का सबब और तंगदस्तों की मदद का ज़रीआ और बाहमी मुहब्बत और उख़ुवत का सबब बनाया है। मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, उसके महबूब और ख़लील हैं, अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामती हो आप सल्ल० पर, आप की आल और अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बाद:

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि इस्लाम मुकम्मल दीन है। उसकी बुन्याद पांच सुतूनों पर क़ाइम है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमाया:

بُنِيَ الإِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ، شَهَادَةِ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ۔

"इस्लाम की बुन्याद पांच सुतूनों पर क़ाइम है: (1)अल्लाह तआला की वह्दानियत और रसूले अकरम सल्ल0 की रिसालत की गवाही (2) इक़ामते सलात (3) अदाए ज़कात (4) हज्जे बैतुल्लाह (5) सौमे रमज़ान।"(1)

इन अहम तरीन पांच बुन्यादी बातों में से एक ज़कात है जिसे अदा करने में लोग दुनिया की हवस परस्ती और लालच की वजह से ग़फ़लत करते हैं। चूंकि ज़कात इस्लाम का तीसरा बुन्यादी सुतून है, इसलिये जो इसकी फ़र्ज़ियत का इंकार करेगा वह दाइरए इस्लाम से ख़ारिज होगा, इर्शादे बारी तआला है:

فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ۗ

"फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें तो वह दीन में तुम्हारे भाई हैं।"(2)

सहीहैन में सय्यदना इब्ने उमर रज़ि0 से मरवी है कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमाया:

أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ، وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ، فَإِذَا فَعَلُوا ذٰلِكَ عَصَمُوا مِنِّي دِمَائَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّ الْإِسْلَامِ وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللهِ۔

"मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से क़िताल करूं हत्ता कि वह अल्लाह की वहदानियत और मुहम्मद सल्ल० की रिसालत की गवाही दें। नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें। जब वह यह काम करेंगे तो उन्होंने अपना ख़ून और माल महफ़ूज़ कर लिया सिवाए उसके जो इस्लामी हुक्म हो और फिर उनका हिसाब अल्लाह पर होगा।"[3]

ज़कात की ज़बरदस्त अहमियत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि क़ुर्आन मजीद में इसका ज़िक्र नमाज़ के साथ साथ लिया गया है, इर्शादे बारी तआला है:

وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ۔

"और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो।"[4]

सय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० ने फ़रमाया था:

وَاللهِ! لَأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ۔

"अल्लाह की क़सम! मैं उस शख़्स के ख़िलाफ़ क़िताल करूंगा जो नमाज़ और ज़कात के दर्मियान फ़र्क़ करेगा।"[5]

यअ़नी जो फ़र्ज़ियते सलात को क़बूल और फ़र्ज़ियते ज़कात से इंकार करेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया:

ثَلَاثُ آيَاتٍ نَزَلَتْ مَقْرُونَةً بِثَلَاثٍ، لَا تُقْبَلُ مِنْهَا وَاحِدَةٌ بِغَيْرِ قَرِينَتِهَا۔

"क़ुर्आन मजीद की तीन आयात तीन आयतों से मरबूत हैं, इनमें से हर एक हुक्म अपने से मिले हुए हुक्म के बग़ैर क़ाबिले कबूल नहीं।"

इन तीन में से एक उन्होंने अल्लाह तआला का यह फ़रमान ज़िक्र किया:

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

"नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो।"(6)

और फ़रमाया:

مَنْ صَلّٰى وَلَمْ يُزَكِّ، لَمْ يُقْبَلْ مِنْهُ

"अब जो शख़्स नमाज़ अदा करे और ज़कात अदा न करे तो वह कबूल नहीं होगी।"(7)

बिरादराने इस्लाम! ज़कात की मशरूइयत में कई इस्रार पिन्हां हैं, एक पाकीज़ा सोसाइटी की तशकील के लिये ज़कात रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखती है, फ़रमाने इलाही है:

خُذْ مِنْ اَمْوٰلِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا

"(ऐ नबी!) उनके मालों में से सदक़ा लीजिये (ताकि) आप इसके ज़रीए से उन्हें पाक करें और उनका तज़किया करें।"(8)

ज़कात इंसान के दिल व दिमाग़ से दौलत परस्ती और हवस को दूर करने का ज़रीआ है। ज़कात इंसान को बख़ीली और ख़ुद ग़र्ज़ी से बचाती है और सख़ावत और हमदर्दी की आदत पैदा करती है। ज़कात फ़र्द और सोसाइटी के दर्मियान तअ़ल्लुक़ात उस्तुवार करने का

ज़रीआ बनती है। ज़कात माल में इज़ाफ़े का सबब और आफ़तों और बलाओं से छुटकारे का बाइस है। ज़कात अमीर, ग़रीब, दौलतमंद और मुहताज के दर्मियान तअल्लुक़ात में तवाज़ुन पैदा करती है। ज़कात अदा करने से दौलत मंदों में ग़रीबों की दस्तगीरी का एहसास बेदार रहता है। ज़कात की बरकत से ग़रीबों और मुहताजों में एहसासे महरूमी जनम नहीं लेता।

आज की जदीद दुनिया में जो तरह तरह के टैक्स लागू हैं, ज़कात कोई इस तरह का टैक्स नहीं है। मुख़्तलिफ़ हुकूमतें अपने शहरियों से अपनी मर्ज़ी शर्ह से टैक्स वसूल करती हैं। टैक्स देने वालों को बिल्कुल मालूम नहीं होता कि उनके टैक्स की रक़म कहां ख़र्च हो रही है। सिर्फ़ ज़कात ही ऐसी बाबरकत माली इबादत है जिसके वसूल की शर्ह भी पूरी तरह मालूम है और इसके ख़र्च के शोबे भी मुक़र्रर हैं। न उसे कोई अपनी मर्ज़ी की शर्ह से वसूल कर सकता है न अपनी मर्ज़ी की जगह पर ख़र्च कर सकता है। ज़कात की रुक़ूम ख़र्च करने के मसारिफ़ शरीअ़त ने मुक़र्रर कर दिये हैं और हर मुसलमान पर शरीअ़त के अहकाम की पाबंदी लाज़मी है।

ज़कात कम्यूनिज़्म या सरमायादाराना निज़ाम की तरह के जबर, ज़ुल्म व ज़्यादती या इस्तिहसाल का ज़रीआ नहीं है जिसमें ताक़तवर अपनी ताक़त का बेदरेग़ इस्तेमाल करके या तो लोगों को उनके बुन्यादी हुक़ूक़ ही से महरूम कर दे और लोगों को इज़्तिराब, बेचैनी और अफ़लास के हवाले कर दे और फिर वह अपने हुक़ूक़ के हुसूल के लिये लूट मार और चोरी डकैती पर मजबूर हो जाएं या ज़रूरियाते ज़िंदगी की बहुत मामूली चीज़ें हासिल करने में भी उन्हें शदीद मुश्किलात से दो चार होना पड़े बल्कि ज़कात एक आदिलाना और हकीमाना तर्ज़े मईशत का नाम है।

तारिके ज़कात के ख़िलाफ़ सख़्त वईदें आई हैं जिन पर आदमी ग़ौर करे तो कांप उठे, मुतअल्लिक़ा अहकाम की नज़ाकत पर तदब्बुर करे तो उस पर लर्ज़ा तारी हो जाए और संग दिल इंसान भी मोम की तरह पिघल जाए। तारिके ज़कात की हौलनाक सज़ा का तज़किरा किया जाए तो दिन का चैन और रात की नींद हराम हो जाए, इर्शादे बारी तआला है:

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ۔ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ۔

"और मुशिरकीन के लिये हलाकत है जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के भी मुन्किर हैं।"(9) और फ़रमाया:

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ۔ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ۔

"और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते तो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दें, जिस दिन वह माले दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उने माथों, उने पहलूओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा): यह वह (माल) है जो तुम ने अपने लिये जमा करके रखा था, लिहाज़ा (अब इसका मज़ा) चखो जो तुम जमा करते रहे थे।"(10)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया:

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُوْنَ بِمَا اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِن فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ط بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ط سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ۔

"और जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से बहुत कुछ दिया है और वह उसमें कंजूसी करते हैं तो वह उस (बुख़्ल) को अपने लिये हरगिज़ बेहतर न समझें बल्कि वह उनके लिये बहुत बुरा है। जिस माल में उन्होंने कंजूसी की, क़्यामत के दिन उसी के उन्हें तौक़ पहनाए जाएंगे।"(11)

इस आयत की तफ़सीर में नबीये करीम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ آتَاهُ اللّٰهُ مَا لاً فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ، مُثِّلَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُجَاعًا أَقْرَعَ، لَهُ زَبِيبَتَانِ، يُطَوِّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِلِهْزِمَتَيْهِ، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا مَالُكَ، أَنَا كَنْزُكَ۔

"जिसे अल्लाह तआला माल अता फ़रमाए और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो क़्यामत के दिन उसका माल एक निहायत ज़हरीले सांप की शक्ल इख़्तियार कर लेगा, उसकी आंखों के पास दो सियाह नुक़्ते होंगे, तौक़ उसके गले में डाल दिया जाएगा, फिर वह सांप उस शख़्स की बाछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।"(12)

आप सल्ल0 ने मज़ीद इर्शाद फ़रमायाः

"जो दौलतमंद ज़कात नहीं देता तो उसकी दौलत को जहन्नम की आग पर तपाया जाएगा और उससे उसके बाज़ू, पैशानी और पीठ और पीठ को दाग़ा जाएगा, उसकी यह हालत उस दिन होगी जो

पचास हज़ार साल के बराबर होगा, फिर अल्लाह तआला उसके मुतअ़ल्लिक़ जो चाहे फ़ैसला करेगा, चाहे उसे जन्नत का रास्ता दिखाया जाए, चाहे जहन्नम का। जिस शख़्स के पास ऊंट थे लेकिन उसने ज़कात अदा नहीं की, क़्यामत के दिन, जो पचास हज़ार साल के बराबर होगा, उसके ऊंट उसके पेट को बड़ी सख़्ती से रौंदेंगे। यह सिलसिला चलता रहेगा यहां तक कि अल्लाह तआला फ़ैसला फ़रमाते हुए उसे जन्नत या जहन्नम का रास्ता दिखा दे। इसी तरह वह शख़्स जिसे बकरियां दी गई थीं लेकिन उसने ज़कात अदा नहीं की, क़्यामत के दिन उसकी बकरियां उसके पेट में सख़्ती से सींग चुभोएंगी और उसे अपने पांव से रौंद डालेंगी। यह मुआमला उसके साथ उस दिन होगा, जो पचास हज़ार साल के बराबर है, फिर अल्लाह तआला उसका फ़ैसला फ़रमाते हुए उसे जन्नत का रास्ता दिखाए या जहन्नम का।"(13)

जिन सरमायादारों की दौलत करोड़ों की नक़्दी में है, जिनके बैंक बैलंस भारी भरकम हैं, जिनकी जाएदाद इतनी ज़्यादा है कि खेतों, बाग़ों और मवेशियों की तादाद का अंदाज़ा भी मुश्किल है, उन्हें बार बार उस हदीस पर ग़ौर करना चाहिये कि अदाए ज़कात में सुस्ती के बाइस वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर कितनी ज़िल्लत आमेज़ और किस क़दर इबरतनाक हालत में पेश होंगे, फिर उस आग में झोंक दिये जाएंगे जिसे दुनिया की आग की मिसाल से समझा ही नहीं जा सकता। वह इतनी सख़्त होगी कि उसकी मामूली सी चिंगारी भी इंसान को भस्म कर डालेगी। यह सिलसिला एक बार नहीं बल्कि बार बार मुतवातिर जारी रहेगी। एक बार दाग़ने के बाद नया जिस्म पैदा हो जाएगा और नया अज़ाब मुसल्लत कर दिया जाएगा। इस अज़ाब की शिद्दत में कभी कमी न होने पाएगी और फिर यह अज़ाब

इस दुनिया के एक दिन के बराबर नहीं बल्कि उस दिन ज़कात अदा न करने वालों के लिये वह दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा। सोचिये! हम में से कौन है जो इस क़दर ज़बरदस्त अज़ाब सहने की ताक़त रखता है?

अल्लाह की पनाह! इस अज़ाब से बार बार पनाह!

اِنَّ فِی ذٰلِكَ لَذِكْرٰی لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَی السَّمْعَ وَهُوَ شَهِیْدٌ۔

"बिला शुब्हा इसमें उस शख़्स के लिये नसीहत है जो (आगाह) दिल रखता है या वह कान लगाए जबकि वह (दिल व दिमाग़ से) हाज़िर हो।"(14)

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। खुशदिली से बरिज़ा व रग़बत ज़कात अदा करो। यह उस अल्लाह का हुक्म है जिसने हमें माले कसीर से नवाज़ा और निहायत क़लील हिस्सा बतौर ज़कात तलब फ़रमाया। हमें यक़ीन है कि अगर उम्मते मुस्लिमा का दौलतमंद तब्क़ा फ़रीज़ए ज़कात की अहमियत को समझे और सही तरीक़े से शरई तक़ाज़ों के मुताबिक़ अदा करे तो दुनिया में किसी ग़रीब और मिस्कीन को भीक मांगने की ज़रूरत पेश नहीं आएगी न पेट भरने के लिये किसी को चोरी या डकैती की ज़रूरत बाक़ी रहेगी।

अल्लाह तआला हमें एक दूसरे के दुख दर्द को समझने और उख़ुवते इस्लामी का पैकर बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, हम एक दूसरे के हुक़ूक़ को समझें, बड़ा छोटों पर रहम करे, अमीर ग़रीब की दस्तगीरी करे ताकि सब अमन और सलामती से ज़िंदगी बसर कर सकें। अल्लाह तआला के लिये यह बात भारी नहीं। अल्लाह अज़्ज़ व

जल्ल हमें कुर्आन मजीद की बरकत से सरफ़राज़ फ़रमाए और रसूले अकरम सल्ल0 की सीरत से फ़ाएदा पहुंचाए। अल्लाह हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ، وَالشُّكْرُ لَهٗ عَلٰى تَوْفِيْقِهٖ وَامْتِنَانِهٖ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ وَأَتْبَاعِهٖ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह तआला ही के लिये है, तारीफ़ उस अल्लाह की जिसने हम पर अनगिनत एहसानात किये और शुक्र उसका और उसकी लातादाद करम फ़रमाइयों का। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 उसके बंदे और रसूल हैं। अल्लाह की रहमतें और सलामती हो आप पर, आप की आल, अस्हाब और उनके पैरूकारों पर।"

हम्द व सलातः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जितनी ज़कात अल्लाह ने फ़र्ज़ की है, उसे ख़ुशदिली और रग़बत से अदा करो ताकि उसकी रज़ा हासिल कर सको, यह फ़र्ज़ बरवक़्त पूरा करो और बरवक़्त अंजाम दो। याद रखो अदाए ज़कात में रिया और नमूद से परहेज़ करना ज़रूरी है। ज़कात देकर किसी पर एहसान न जतलाओ। ज़कात अल्लाह का हक़ है। ज़कात की रक़म सर्फ़ करने में बड़ी एहतियात बरतो। वह शख़्स जो ज़कात लेने का मुस्तहिक़

नहीं वह क़तअ़न ज़कात हासिल न करे न उससे कोई ज़ाती फ़ाएदा उठाए, रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमायाः

لَا تَحِلُّ الصَّدَقَةُ لِغَنِيٍّ وَّلَا لِذِى مِرَّةٍ سَوِيٍّ

"सदक़ा किसी ग़नी के लिये हलाल नहीं और न किसी ताक़तवर सही सालिम के लिये।"(15)

खूब जान लो कि मसारिफ़ ज़कात की जो आठ जगहें क़ुर्आन मजीद में बताई गई हैं, ज़कात का पैसा उन ही जगहों में ख़र्च करना होगा, ज़कात की रक़म अपनी मर्ज़ी से जहां जी चाहे ख़र्च नहीं की जा सकती, इर्शादे बारी तआला हैः

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ۔

"ज़कात तो सिर्फ़ फ़क़ीरों और मिस्कीनों और उन अहलेकारों के लिये है जो इस (की वसूली) पर मुक़र्रर हैं और उनके लिये जिनकी दिलदारी मक़्सूद है और गर्दनें छुड़ाने और क़र्ज़ा दारों (के क़र्ज़ उतारने) के लिये और अल्लाह की राह में और मुसाफ़िरों (की मदद) में, (यह) अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ है और अल्लाह खूब जानने वाला, हिक्मत वाला है।"(16)

मसाइले ज़कात की बारीकियों में जाने और मुकम्मल तफ़सीलात बताने का यह वक़्त नहीं, इसके लिये मुख़्तलिफ़ किताबों से मालूमात हासिल की जा सकती हैं या अहले इल्म से रुजूअ़ किया जा सकता है।

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۔

"तुम अह्ले ज़िक्र (अह्ले किताब) से पूछ लो अगर तुम इल्म नहीं रखते।"[17]

दरूद व सलाम पढ़िये इंसानियत के रह्बरे आज़म रसूले अकरम सल्ल0 पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी खुत्बा नम्बर 6

(1) सही बुख़ारी, हदीसः8, व सही मुस्लिम, हदीसः16 (2) अत्तौबा 9:11 (3) सही बुख़ारी, हदीसः25, व सही मुस्लिम, हदीसः22 (4) अलबक़रा 2:43 (5) सही बुख़ारी, हदीसः 1400, व सही मुस्लिम, हदीसः20 (6) अलबक़रा 2:43, (7) तफ़सीर अलकुर्तुबी, अत्तौबा 9:12, (8) अत्तौबा 9:103 (9) हा मीम अससज्दा 41:6,7 (10) अत्तौबाः 9:34,35 (11) आले इमरान 3:180, (12) सही बुख़ारी, हदीसः 1403, व मुस्नद अहमदः 2/355 (13) सही बुख़ारी, हदीसः 1402, व सही मुस्लिम, हदीसः987, व मुस्नद अहमदः2/262 (14) क़ाफ़' 50:37 (15) मुस्नद अहमः 2/164, व सुनन अबी दाऊद, हदीसः 1633, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 652, व सुनन अन्नसाई, हदीसः 2598 (16) अत्तौबा 9:60 (17) अन्नह्ल 16:43

खुत्बा 7

रमज़ानुल मुबारक

नेकियों का मौसमे बहार

اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ، وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَهْدِيْهِ، وَنَسْتَغْفِرُهٗ
وَنَتُوْبُ اِلَيْهِ، وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ، وَنُثْنِيْ عَلَيْهِ الْخَيْرَ
كُلَّهٗ، وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّآتِ أَعْمَالِنَا،
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ۔
وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، مَنَّ عَلٰى
عِبَادِهٖ بِمَوَاسِمِ الرَّحْمَةِ وَالْمَغْفِرَةِ، وَجَادَ عَلَيْهِمْ بِأَوْقَاتِ
الْبِرِّ وَالْاِحْسَانِ، وَأَزْمَانِ الْخَيْرِ وَالْفَضْلِ وَالْاِمْتِنَانِ،
وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، خَيْرُ مَنْ صَلّٰى
وَصَامَ، وَأَفْضَلُ مَنْ تَهَجَّدَ وَقَامَ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ
عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَأَتْبَاعِهٖ بِاِحْسَانٍ،

أَمَّا بَعْدُ

"हर किस्म की हम्द अल्लाह तआला के लिये है। हम उसी की तारीफ़ करते है, उसी की बारगाह में तौबा करते हैं और हम उस पर ईमान रखते हैं, उसी पर तवक्कुल करते हैं और उसी की सना बयान करते हैं और अपने नफ्स की शरारतों और बदआमालियों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। जिसे अल्लाह ने हिदायत अता फ़रमाई उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता।

और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपने बंदों पर रहमत और मग़फ़िरत के दरवाज़े खोल कर बहुत बड़ा करम फ़रमाया और उनके लिये नेकी और हुस्न व सुलूक में इज़ाफ़े की घड़ियां मुक़र्रर की और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं जो नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने वालों में सबसे बेहतर और तहज्जुद अदा करने और क़यामुल लैल का एहतिमाम करने वालों में सबसे अफ़ज़ल तरीन हैं। अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों आप पर, आप की आल और अस्हाब पर और उन तमाम लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह का तक्वा इख़्तियार करो और उसकी नेअ़मतों का शुक्र अदा करो। अल्लाह की बेशुमार नेअ़मतों में से एक यह है कि उसने इज़ाफ़ी इबादत और अज्र व सवाब कमाने का मौसम बनाया है। ऐसा मौसम अता किया है कि उससे ईमान की बहार आती है, अमल की खेती लहलहाती है, हर तरफ़ अज्र व सवाब की हवाएं चलने लगती हैं और बुझे हुए दिलों में ज़िंदगी की लहर दौड़ जाती है, उस वक़्त जबकि हम तक़्वा और परहेज़गारी के मौसमे बहार "रमज़ान" से गुज़र रहे हैं जिसमें रूहानियत और नूरानियत की वह कैफ़ियत होती है जिसको लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता न उसकी क़द्र व क़ीमत का कोई अंदाज़ा लगाया जा सकता है क्योंकि इस मुबारक महीने में मुसलमान क़ुर्आन मजीद के सायए आतिफ़त में ज़िंदगी गुज़ारते हैं, इसमें वह अपने परवरदिगार से रहमत, मग़फ़िरत और रिज़्वान के तलबगार होते हैं और अल्लाह की बारगाहे आली से जन्नत की तमन्ना करते हैं। बिला शक व शुब्हा यह महीना नेकी व तक़्वा, इस्लाह और हिदायत का महीना है जिसमें अह्ले दिल एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करते हैं ताकि वह अपने रब की करम फ़रमाइयों से अपनी झोलियां भर सकें।

बिरादराने इस्लाम! इस अहम महीने के कुछ अहकाम व मसाइल भी हैं। मुसलमानों को इनका इल्म होना चाहिये ताकि वह इस मौसमे बहार की कमा हक़्क़हू क़द्र कर सकें, रोज़ों की हिक्मत को समझ सकें क्योंकि फ़र्ज़ियते सौम का यह मतलब नहीं कि सिर्फ़ दिन के औक़ात में हम खाने पीने से रुक जाएं और बस! बल्कि उसकी गहराई में जाने की ज़रूरत है ताकि हम सिर्फ़ जिस्मानी ही नहीं

बल्कि रूहानी एतिबार से भी रोज़ेदार बन सकें।

बिरादराने इस्लाम! उम्मते मुस्लिमा के लिये ज़रूरी है कि वह एहतिसाब, तदब्बुर और तफ़क्कुर की अहमियत को समझे, खुसूसन इस महीने में जबकि हर तरफ़ नेकी और ख़ैर की बातें होती हैं। यह महीना हमें बुर्दबारी और सब्र की ग़ैर मामूली तालीम देता है। इसमें मोमिन का ईमान ज़्यादा मज़बूत होता है। वह खुद को ज़माने के फ़ित्नों और ज़िंदगी की आलाइशों से बचाने की कोशिश करता है। इस महीने में बजा तौर पर इंसान की रूहानी बीमारियों का तीर बहदफ़ इलाज और रिस्ते ज़ख़्मों का मरहम मौजूद है। इस माहे मुबारक की बदौलत बेलगाम नफ़्स को लगाम दी जा सकती है और नफ़्स को तरह तरह की कुदूरतों, बुग्ज़ और हसद से पाक किया जा सकता है। इसमें एक दूसरे की हमदर्दी और ग़म ख़्वारी की वह कैफ़ियत है जो किसी और मौक़ा पर मुम्किन नहीं। यक़ीनन यह महीना सालिहीन के लिये अज्र व सवाब से अपने दामन भरने का महीना है और गुनाहगारों के लिये अपने रब की अफ़्व व दरगुज़र तलब करने का भी यही खुसूसी महीना है। यही वह महीना है जिसमें मुसलमान अपने दरख़्शां माज़ी की तबिंदा यादों का तज़किरा करके आसूदा होता है और बजा तौर पर उसे ग़ौर करना होता है कि क्या वह इस मुबारक महीने की मुबारक साअ़तों से फ़ाएदा उठा रहा है या ख़्वाबे ग़फ़लत का शिकार है? हर मुसलमान को इस माहे मुक़द्दस में जाइज़ा लेना चाहिये कि क्या मेरी ज़िंदगी की कैफ़ियत इस माह में साल के दीगर महीनों से मुख़्तलिफ़ है? क्या इसमें कोई अच्छी बुन्यादी तबदीली वाक़ेअ़ हुई है?

मुसलमानों में कुछ चीज़ें आम तौर पर रिवाज पा गईं हैं, इनकी तशख़ीस और इलाज अज़हद ज़रूरी है, जैसी दीनी मसाइल में कम

फ़हमी, दीन के अस्रार व रुमूज़ से नावाक़फ़ियत। हमारे रोज़ों का भी यही हाल होता है। हमें माहे सियाम में अपने सौम को शरीअ़त की मीज़ान में तौलना होगा और सुन्नत की रौशनी में जाइज़ा लेना होगा कि क्या हमारे रोज़े वही हैं जिनका हुक्म दिया गया या यह सिर्फ़ एक रिवाजी रोज़े हैं कि औरों ने रोज़ा रखा तो हमने भी रख लिया। अहम सोच बिचार की इन बातों पर अगर हम इस मुबारक महीने में ग़ौर नहीं करेंगे तो फिर हमें ग़ौर करने की फ़ुर्सत कब होगी?

अगर हमारे ज़िम्मादार इस बाबरकत महीने में क़िताबे अज़ीज़ से रिशता नहीं जोडेंगे तो फिर वह घड़ी कब आएगी जब वह किताब अल्लाह की बालादस्ती अमलन तसलीम करेंगे और उसके अहकाम अपनी रिआया पर नाफ़िज़ करेंगे? अगर हमारे उलमाए किराम और दानिशवराने मिल्लत को किताबे अल्लाह की तालीम और प्रचार का एहसास अब पैदा न हुआ तो फिर यह एहसास कब पैदा होगा? हमारी सफ़ों में अगर अब भी इत्तिहाद पैदा न हो सका तो फिर वह लम्हात कब मयस्सर आएंगे जब हम अपनी शीराज़ा बंदी कर सकेंगे? हालांकि इस महीने का आग़ाज़ हमने इकट्ठे किया। इसमें दिन के रोज़े और रात की इबादात हम सब मिल कर करते हैं तो फिर हम में यह दराड़ क्यों? और यह दूरियां कब तक और किस लिये? अगर हम हवाए नफ़्स की बुराइयों से हसद, बुग्ज़ और अदावत से अब नहीं बचे तो फिर इन बीमारियों से कब छुटकारा मिलेगा? अगर हमारी ज़बानें झूट, ग़ीबत, बोहतान और गाली गलोच से महफ़ूज़ नहीं तो फिर हम इन बुराइयों से नजात के लिये किस वक़्त का इंतेज़ार कर रहे हैं? क्या कोई इससे बेहतर महीना है जिस में हम खुद को अल्लाह के अहकाम और उसके रसूल सल्ल0 की सुन्नतों का खूगर बनाएं? अगर हमारे नौजवान इस महीने से फ़ाएदा न उठाएं

और हमारी ख़्वातीन अहकाम और शआइरे इस्लामी की पासदारी की फ़िक्र न करें तो फिर उन पर अमल कब होगा? अगर उम्मत का खुशहाल तब्क़ा मुहताजों की दस्तगीरी की अब कोशिश न करे तो फिर उनकी दौलत ज़रूरत मंदों के कब काम आएगी?

मुहतरम भाइयो! इस माहे मुबारक की इबादत का जज़्बा बा वक़्ती और मौसमी नहीं बल्कि दाइमी होना चाहिये ताकि यह महीना हमारे ईमान की मज़बूती, आमाल की तक़वियत और रुजूअ़ इलल्लाह का ज़रीआ बन जाए। यक़ीनन बशारत है उन मोमिनों के लिये जो गुनाहों को छोड़ें तो दोबारा उनका रुख़ न करें। यक़ीनन ख़ुशख़बरी है उन रोज़ादारों के लिये जो रोज़ों को बोझ या रस्मी ख़ानापुरी के लिये नहीं बल्कि इबादत और अल्लाह की ख़ुशनूदी का ज़रीआ बनाएं।

हमें अपने नफ़्स के धोके से बचना चाहिये कि हमने खूब इबादत की और बड़ी रियाज़त की, इसलिये अल्लाह की रज़ा मिल कर रहेगी, सच तो यह है कि अल्लाह तआला एहसानात के मुक़ाबले में हमारी इबादत की हैसियत ही क्या है? कहीं नफ़्स का धोका ख़सारे का मूजिब न बन जाए। इबादत गुज़ार मोमिन बंदे इस महीने की तेज़ी से वाक़िफ़ हैं कि यह बादे बहारी के झोंकों की तरह आता और गुज़र जाता है लेकिन ग़ाफ़िल लोग इस महीने में भी सुस्ती और काहिली का मुज़ाहिरा करते हैं। उनकी रातें फ़ुज़ूलियात और लह्व व लइब में बसर होती हैं, दिन सुस्ती और आराम करने में गुज़रते हैं और जब फ़ुर्सत मिले तो ज़बानें बेहूदा गोई और आंखें मम्नूअ़ चीज़ों के नज़ारे में मह्व रहती हैं।

हमें ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाना चाहिये। देखते ही देखते रमज़ान का पहला अशरा गुज़र गया। अब हम दूसरे अशरे के निस्फ़ में पहुंच गए। हमें बाक़ी लम्हात से फ़ाएदा उठाने के लिये कमरबस्ता

हो जाना चाहिये, यह ग़फ़लत और सुस्ती कब तक? क्या हम नहीं जानते कि पिछले साल हम में कितने ही ऐसे भाई थे जो आज हम में मौजूद नहीं, हम ही ने उन्हें मनों मिट्टी के नीचे दबाया। हम नहीं जानते थे कि गुज़िश्ता रमज़ान उनकी ज़िंदगी का आख़िरी रमज़ान साबित होगा। हमें नहीं मालूम कि आइंदा रमज़ान हमें मिलेगा या नहीं। हो सकता है कि मौजूदा रमज़ान ही हमारे लिये आख़िरी रमज़ान साबित हो बल्कि क्या मालूम कि मौत की घड़ी इस रमज़ान के मुकम्मल होने से पहले हमें दबोच ले और फिर हमें भी वहां जाना पड़ जाए जहां से कोई लौट कर नहीं आता।

रमज़ान के बाक़ी दिनों के गुज़रने से पहले हमें बेदार हो जाना चाहिये क्योंकि इसके गुज़रते देर नहीं लगती। अभी हम इसकी आमद का इंतेज़ार कर रहे थे कि रमज़ान आया और अब निस्फ़ हिस्सा गुज़र चुका। क्या हम इस बाक़ी मांदा हिस्से से फ़ाएदा उठाने के लिये तैयार हैं? क्या हम अपनी ज़िंदगी का गुनाहों से आलूदा सफ़्हा पलट कर इबादत से आरास्ता नया सफ़्हा खोलना चाहते हैं? फिर आख़िरी अशरे की आमद आमद है जिस में लैलतुल क़द्र भी है। क्या हम इबादत के लिये कमर बस्ता होंगे? क्या हम बारगाहे इलाही से मग़फ़िरत के तलबगार होंगे? क्या अभी वक़्त नहीं आया कि हम गुनाहों से आलूदा ज़िंदगी को नेकियों से बदल डालें? अगर अभी नहीं आया तो फिर वह कब और कौनसी घड़ी होगी जिसका हमें इंतेज़ार है? हमें हुसूले जन्नत की कोशिश में पूरी तवज्जोह से लग जाना चाहिये और जहन्नम से नजात की फ़िक्र करनी चाहिये। ऐ ख़ैर के मुतलाशी! आगे बढ़। और ऐ शर पसंद! पीछे हट जा।

अज़ीज़ भाइयो! इस अशरे से हमारी दरख़्शां तारीख़ की अज़ीम यादें व वाबस्ता हैं। इसी अशरे में वह अजीब व अज़ीम वाक़िआ पेश

आया जिसने तारीख़ का धारा बदल डाला, जिसने लोगों को एक नया वलवला अता किया कि इस उम्मत की सरफ़राज़ी और सरबुलंदी दीन से वाबस्तगी में है। यह ग़ज़वए बदर का वाक़िआ है। इसमें अल्लाह तआला ने अपने बंदों को ऐसी सुरख़ुरूई अता फ़रमाई जिसकी नज़ीर नहीं मिलती। इस मअरकए हक़ व बातिल में बहुत कम अफ़रादी क़ुव्वत वाले अस्हाबे ईमान व अमल ने बेहद क़लील जंगी साज़ व सामान के बावजूद कुफ़्र व शिर्क के उन सरग़नों को शिकस्त दे दी जो तादाद में कहीं ज़्यादा और भारी अस्लहे से लैस थे।

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِىٌّ عَزِيْزٌ۔

"और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उस (के दीन) की मदद करेगा, बेशक अल्लाह यक़ीनन बहुत क़ुव्वत वाला, ख़ूब ग़ालिब है।"[1]

अल्लाह का वादा है किः

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ۔

"और मोमिनों की मदद करना हम पर लाज़िम है।"[2]

इस वक़्त उम्मते मुस्लिमा जिन पुरआशोब हालात से गुज़र रही है। इस तनाज़ुर में उसे ग़ज़वए बदर से ईमान की मुहकमी, अमल की दरख़्शंदगी और हिम्मत की बालीदगी का सबक़ सीखना चाहिये। जो लोग अपने माज़ी से सबक़ नहीं लेते उनके मुस्तक़बिल की कामियाबी की तवक़्क़ो नहीं की जा सकती। हमारा एक निहायत अज़ीमुश्शान दरख़्शां माज़ी है। इससे हम अपने हाल और मुस्तक़बिल की कामियाब मंसूबा बंदी कर सकते हैं, इस वाक़िआ में एक सबक़ आमोज़ पहलू यह भी है कि यह महीना सुस्ती और

ग़फ़लत का नहीं बल्कि जिद्द व जिह्द, जिहाद और इज्तिहाद का महीना है। इसमें मुसलमानों को सिर्फ़ एक नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ शानदार कामियाबियां मिलीं। इस वाक़िए में यह सबक़ भी चमक रहा है कि इंसान कठिन हालात से परेशान न हो अगर यक़ीने मुहकम हो तो हालात का रुख़ बदला जा सकता है, शब तारीक से सुब्ह दरख़्शां नमूदार होकर रहती है, हालात बदलने देर नहीं लगती। हमारी यही उम्मीदें मस्जिदे अक़्सा और फ़लस्तीनी भाइयों के साथ वाबस्ता हैं। लेकिन यह कामियाबी हासिल करने के लिये ज़रूरी है कि हम कुर्आन व सुन्नत की तालीमात को अपने फ़िक्र व अमल में जल्वा गर करें। हर क़िस्म की ग़ैर इस्लामी हरकत से परहेज़ करें क्योंकि अल्लाह की मदद दीन से वाबस्तगी और इस पर अमल पैरा होने से मशरूत है। क्या हम इस रमज़ान में अपनी तारीख़ को दुहरा सकेंगे? क्या हम अपनी इबादत से तक़रुबे इलाही की राहें तलाश कर सकेंगे? क्या हम इस माह को अज्र व सवाब और नेकियों के हुसूल का ज़रीआ बना पाएंगे? क्या हम में इस्लामी उख़ुवत व ग़मगुसारी के मतलूबा जज़्बात पैदा हो सकेंगे? अल्लाह हमें अपनी नुसरत और कामियाबी से सरफ़राज़ फ़रमाए। अल्लाह तआला हमें कुर्आन की बरकत से मालामाल करे और नबीये करीम सल्ल0 के तरीक़े की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى جَعَلَ الصِّيَامَ جُنَّةً، وَّوَسِيلَةً مُّوصِلَةً
اِلَى التَّقْوٰى وَالْجَنَّةِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، الَّذِى
شَرَعَ لَنَا الصِّيَامَ تَفَضُّلًا مِّنْهُ وَمِنَّةً، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، الدَّاعِى اِلٰى خَيْرِ مِلَّةٍ وَّ أَقْوَمِ سُنَّةٍ، صَلَّى

اللهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह की के लिये है जिसने रमज़ान के इन अय्याम को गुनाहों की ढाल, तक़्वे में इज़ाफ़े और जन्नत में दाख़िले का सबब बनाया। मैं गवाही देता हूं कि इबादत के लाइक़ सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जिसने हमारे लिये रोज़े मुक़र्रर फ़रमा कर हम सब पर एहसान किया और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं जो सबसे बेहतरीन उम्मत और सबसे मुतवाज़िन तरीक़े के दाई हैं। अल्लाह की रहमतें और सलामती हो आप सल्ल0 पर, आप की आल और अस्हाब पर।"

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, उसके अहकाम की क़द्र करो और उसके शआइर की ताज़ीम करो। इस मुबारक महीने की ऐसी क़द्र करो जिस तरह इसका हक़ है। इसके शब व रोज़ से भरपूर फ़ाएदा उठाओ। अपने रोज़ों को हर ग़लत चीज़ से पाक रखो। ख़बरदार रहो कि कहीं हमारे रोज़े सिर्फ़ भूक प्यास की हैसियत इख़्तियार न कर जाएं और हमारी रातें सिर्फ़ शब बेदारी न बन जाएं। हमारे सामने अपने महबूब नबी सल्ल0 का उस्वए हसना होना चाहिये। आप जूद व सख़ा के पैकर थे लेकिन रमज़ान में ख़ास तौर पर ख़ैर और तक़्वे के कामों की अंजाम दही में आप सल्ल0 का हाथ इतना तेज़ होता जैसे बाद बहारी चल रही है, हालांकि अल्लाह ने आप को वह शान अता फ़रमाई कि आप के अगले पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ किये जा चुके थे, इसके बावजूद

अगर आपकी यह कैफ़ियत थी तो फिर ग़ौर करना चाहिये कि हम जैसे गुनाहगारों और नातवानों का क्या हाल होना चाहिये?

बिरादराने इस्लाम! अपनी नमाज़, रोज़ा, ज़िक्र व अज़्कार और तिलावत व दुआ के साथ साथ अदाए ज़कात में ग़फ़लत न कीजिये। यह फ़रीज़ए इलाही है, यह इस्लाम का तीसरा रुक्न है, इसलिये ज़कात बरिज़ा व रग़बत अदा करनी चाहिये ताकि इस मुबारक महीने में ग़रीबों, मिस्कीनों, ज़रूरत मंदों और मुजाहिदीन की क़द्र हो सके। जब आप अपने लिये दुआ करें तो अपने उन भाइयों को न भूलें जो मुख़्तलिफ़ परेशानियों से दो चार हैं। दुआ उनकी राहत का ज़रीआ और तक़्वियत का सबब है, फ़रमाने इलाही है:

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ؕ

"और (ऐ नबी!) जब मेरे बंदे आप से मेरे बारे में सवाल करें तो बेशक मैं क़रीब हूं, मैं दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता हूं, जब भी वह मुझ से दुआ करे।"

लोगो! अपनी इस्लाह करो। तौबा की फ़िक्र करो, राहे रास्त पर क़ाइम रहो। हर मस्ले में अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करो। शायद तुम्हारी नजात हो जाए और इस मुबारक महीने की बरकत से तुम्हें अज़ाब से छुटकारा मिल जाए। दरूद व सलाम पढ़िये नबीये रहमत और हादिये उम्मत अशरफ़ुल अंबिया, वलमुर्सलीन पर जिसका रब्बुल आलमीन ने हमें हुक्म दिया है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 7

(1) अलहज 22:44 (2) अर्रूम 30:47 (3) अलबक़रा 2:186

खुत्बा 8

हुज्जाजे किराम की ख़िदमत में रहनुमा बातें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى جَعَلَ بَيْتَهُ الْحَرَامَ لِلنَّاسِ أَمْنًا وَّمَثَابَةً، وَّزَادَهُ سُبْحَانَهُ تَعْظِيمًا وَّتَشْرِيفًا وَّتَكْرِيمًا وَّمَهَابَةً، أَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهُ، وَأَسْأَلُهُ التَّوْفِيقَ وَالتَّوْبَةَ وَالْاِنَابَةَ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهُ، وَمُصْطَفَاهُ وَخَلِيلُهُ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ أُولِى الْفَضْلِ وَالْاِصَابَةِ، وَالنَّخْوَةِ وَالنَّجَابَةِ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّينِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह तआला ही के लिये है जिसने अपने घर को लोगों के लिये अम्न व अमान और हुसूले अज्र व सवाब की जगह बनाया और इसकी अज़्मत, इज़्ज़त, वक़ार और रोअ़्ब में इज़ाफ़ा फ़रमाया, मैं उसी का शुक्र अदा करता हूं और उसी से हर क़िस्म की तौफ़ीक़, तौबा और इनाबत तलब करता हूं और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला, उसका कोई शरीक नहीं और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह ने आप सल्ल० को मुंतख़ब फ़रमाया और अपना दोस्त बनाया। अल्लाह तआला की आप पर बेशुमार रहमतें और सलामतें हों, आप की आल और आप के सहाबए किराम पर जो बुलंद मर्तबे पर फ़ाइज़ थे और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलते रहें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार कीजिये क्योंकि जो तक़्वा इख़्तियार करता है अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है और जो अल्लाह पर भरोसा करता है अल्लाह उसके लिये काफ़ी हो जाता है।

मुहतरम भाइयो! उम्मते मुस्लिमा हर साल इन दिनों में एक ऐसे रुक्ने इस्लाम की याद ताज़ा करती है जिसका हर मुसलमान इंतिहाई बेताबी से इंतेज़ार करता है जो तमाम मुसलमानों के दिलों की आरज़ू है, यअ़नी फ़रीज़ए हज की अदाएगी। इस अर्ज़े मुक़द्दस की ज़ियारत की तमन्ना हर मुसलमान करता है ताकि वह अपनी आंखों से बैतुल्लाह का दीदार कर सके। वह बैतुल्लाह जहां से वह्य का आग़ाज़ हुआ, जहां से नूरे इस्लाम की किर्नें चमकीं, जहां लोग अपने गुनाहों को नदामत के आंसुओं से धोने के लिये दीवाना वार चले आते हैं, जहां हर लम्हे तजल्लियात और अनवार की बारिश होती है, जहां उठने वाला हर क़दम गुनाहों से कफ़्फ़ारा और दरजात की बुलंदी का बाइस बनता है, जिसके मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह सल्ल0 का इर्शादे गिरामी हैः

وَالْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهٗ جَزَاءٌ اِلَّا الْجَنَّةُ۔

"हजे मबरूर का बदला सिर्फ़ जन्नत ही है।"(1)

आप सल्ल0 ने मज़ीद इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ حَجَّ هٰذَا الْبَيْتَ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهٗ۔

"जिसने हज किया और फ़ह्शगोई और फ़िस्क़ व फ़ुजूर से बचा रहा वह इस तरह वापस जाएगा जैसे उसे उसकी मां

ने आज ही जनम दिया है।"[2]

मुहतरम हुज्जाजे किराम! इस सफ़रे मुक़द्दस से भरपूर फ़ाएदा उठाने और अपना दामन अज्र व सवाब से भरने के लिये हमें इस बात का एहतिमाम करना चाहिये कि अदाए हज के शरई तरीक़े से वाक़फ़ियत हासिल करें। नबीये करीम सल्ल० के हज का तरीक़ा सीखें, हज की कुछ शर्तें, अर्कान, वाजिबात, मुस्तहब्बात और आदाब हैं जिन्हें मलहूज़ रखना ज़रूरी है।

मुअज़्ज़ज़ भाइयो! जब दूर दराज़ का सफ़र करके मुख़्तलिफ़ सऊबतें बर्दाश्त करते हुए आप लोग यहां तक पहुंचे हैं, पीछे अपने अह्ल व अयाल और अज़ीज़ व अक़ारिब को छोड़ कर यहां आए हैं तो अब मेरी गुज़ारिशात पर ग़ौर कीजिये ताकि जिस अहम मक़्सद के लिये हम यहां जमा हुए हैं वह पूरा हो सके।

(1) तौहीदः याद रखिये! तमाम इबादत की बुन्याद तौहीदे बारी तआला है, कुर्आने करीम में इर्शादे रब्बानी हैः

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْيَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ لَا شَرِیْكَ لَهٗ

"कह दीजियेः बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत (सब कुछ) अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिये है। उसका कोई शरीक नहीं।"[3]

चुनांचे हज का सबसे अहम मक़्सद तौहीदे बारी तआला की मअ़रिफ़त और शिर्क से बराअ़त है, इर्शादे बारी तआला हैः

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِیْمَ مَكَانَ الْبَیْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِیْ شَیْئًا۔

"और (याद करें) जब हमने इब्राहीम के लिये बैतुल्लाह की जगह मुक़र्रर कर दी (और उसे हुक्म दिया) कि तू मेरे

साथ किसी शै को शरीक न कर।"[4]

इसलिये यह किसी भी सूरत में हरगिज़ जाइज़ नहीं कि लोग अपनी मुश्किलात के हल, ज़रूरियात की तकमील या बीमारियों से शिफ़ा के लिये अल्लाह को छोड़ कर किसी और की तरफ़ देखें क्योंकि उस ज़ाते वाहिद के सिवा कोई परेशानियों को दूर कर सकता है न ज़िंदगी और ज़माने के हालात पर किसी और का कंट्रोल है। अल्लाह की ज़ाते आली हर क़िस्म के शिर्क से पाक और बुलंद है।

(2) इख़्लासः इंसान का कोई भी अमल ख़ुलूसे नियत के बग़ैर मक़्बूल नहीं होता, फ़रमाने इलाही है:

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ

"सुनो! ख़ालिस इताअत व बंदगी अल्लाह ही के लिये है।"[5]

लिहाज़ा रियाकारी, नमूद या किसी दीनवी लालच और ग़ैर इस्लामी अग़राज़ से बालातर होकर यह फ़रीज़ा अंजाम देना चाहिये।

(3) इत्तिबाए सुन्नतः इस्लाम का कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत तरीक़े से हरगिज़ क़ाबिले क़बूल नहीं, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 का इर्शादे गिरामी है:

مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَّيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ۔

"जो शख़्स ऐसा अमल करे जिसका हमने हुक्म नहीं दिया तो वह मुस्तरद कर दिया जाएगा।"[6]

हज के मुतअ़ल्लिक़ आप सल्ल0 का इर्शाद है:

خُذُوا عَنِّى مَنَاسِكَكُمْ

"तुम मुझ से अपने हज के तरीक़े सीख लो।"[7]

लिहाज़ा निहायत ज़रूरी है कि कोई भी इबादत ख़िलाफ़े सुन्नत

न होने पाए।

(4) अल्लाह का तक़्वा: इस मुबारक सफ़र में हर क़दम पर तक़्वे को अपनाओ और अपने हुस्ने अमल से अल्लाह तआला को राज़ी करने की कोशिश करो, ज़िक्र व अज़्कार, दुआ, तिलावते क़ुर्आन, कसरत से तवाफ़े बैतुल्लाह, तलबिया, नवाफ़िल और दूसरों के साथ नेकी और एहसान करते रहो, फ़रमाने इलाही है:

وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى

"और (हज के लिये) ज़ादे राह ले लो, बेशक बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है।"(8)

(5) अहमियते हज: फ़रीज़ए हज की अहमियत से पूरी तरह आगाह हो क्योंकि यह कोई तफ़रीही सफ़र है न यह कोई रसमी या रिवाजी मुआमला बल्कि यह ईमान से भरपूर निहायत बुलंद पाया अज़्मतों वाला सफ़र है जिसके बुलंद तर मक़ासिद हैं। उनका हुसूल उसी शख़्स के लिये मुम्किन है जो सिराते मुस्तक़ीम पर चले, किताब व सुन्नत के मुताबिक़ अक़ीदा रखे और पाकीज़ा आमाल अंजाम दे।

(6) अहमियते हरम: इस मक़ामे मुक़द्दस की रिफ़अ़त व अज़्मत का ख़्याल क़ल्ब व दिमाग़ में हमेशा ताज़ा रहना चाहिये। तुम बैतुल्लाह के पड़ोसी हो जहां किसी परिंदे तक को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया जा सकता, जहां किसी दरख़्त और झाड़ी तक को नहीं तोड़ा जा सकता न यहां की किसी गिरी पड़ी चीज़ को ग़लत मक़्सद से उठाया जा सकता है, जैसा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

لَا يُعْضَدُ شَوْكُهُ، وَلَا يُنَفَّرُ صَيْدُهُ، وَلَا يَلْتَقِطُ لُقَطَتَهُ إِلَّا مَنْ عَرَّفَهَا۔

"हरम की हुदूद में किसी दरख़्त और झाड़ी को न काटा जाए, न यहां के शिकार को भगाया जाए और न कोई यहां की गिरी हुई चीज़ उठाए इल्ला यह कि वह इसका एलान करे।"(9)

यहां दरख़्त, शिकार, इंसान, हैवान हर चीज़ अमल में होगी, किसी को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाया जा सकता, कोई अद्ना से अद्ना तकलीफ़ भी नहीं दी जा सकती जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है:

وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا

"और जो कोई इसमें दाख़िल हुआ अमन वाला हो गया।"(10)

लिहाज़ा इस मुक़द्दस शहर की अज़मत हर दम बरक़रार रखो, ख़िलाफ़े शरीअ़त कोई काम न करो, यहां सिर्फ़ अल्लाह की बड़ाई और किब्रियाई बयान करो, किसी मुसलामन को तुम से कोई तकलीफ़ न पहुंचे, न तुम्हारी वजह से किसी के सुकून में कोई ख़लल पड़े, यहां ख़िलाफ़े सुन्नत कोई हरकत न करो, अल्लाह तआला का इर्शाद है:

وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ۔

"और जो इसमें ज़ुल्म के साथ कज रवी का इरादा करे हम उसे निहायत दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे।"(11)

(7) अदाए हज के लिये इल्म की ज़रूरतः हज एक अहम इबादत है, उसकी अंजाम दही के लिये उसके अहकाम, मसाइल और जुज़इयात व तफ़सीलात का इल्म हासिल कीजिये। अगर किसी मस्ले में कोई उलझन पेश आए तो बर वक़्त अह्ले इल्म से रुजूअ़ कीजिये क्योंकि

नावाकफ़ियत और जिहालत की हालत में कोई इबादत सुन्नत के मुताबिक़ नहीं की जा सकती न ख़िलाफ़े सुन्नत की जाने वाली कोई इबादत क़बूल होती है।

(8) फ़िस्क़ व फ़ुजूर से बचनाः यह निहायत मुक़द्दस सफ़र है, इसमें हर क़िस्म के गुनाहों से बचने की कोशिश कीजिये, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ۔

"हज के महीने मालूम व मुक़र्रर हैं, चुनांचे जिस शख़्स ने इन (महीनों) में हज को लाज़िम कर लिया तो हज के दौरान में वह जिंसी बातें न करे, अल्लाह की नाफ़रमानी न करे और किसी से झगड़ा न करे।"[12]

अपने नफ़्स को मुन्करात से बचाए और नेकी का ख़ूगर बनाइये।

(9) अस्बाबे तक़्वा की जुस्तजूः दौराने सफ़र क़बूलियते आमाल की ज़्यादा जुस्तजू और उसके अस्बाब तलाश कीजिये ताकि नेकियों में इज़ाफ़ा हो सके, मसलनः रफ़ीक़े सफ़र का इंतिख़ाब वग़ैरा। इस सफ़र में आप का दोस्त अगर नेक और सालेह होगा तो आप को आमाले सालिहा अंजाम देने में मदद मिलेगी। सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि आप की कमाई हलाल की होनी चाहिये क्योंकि इसके बग़ैर कोई इबादत क़बूल नहीं होती।

(10) हुस्ने अख़्लाक़ः इस सफ़र में हर जगह आला अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा कीजिये। आप की ज़बान या हाथ से किसी को तकलीफ़ न पहुंच पाए। हज इंसान के अख़्लाक़ व किर्दार को संवारने का

बेहतरीन ज़रीआ है। यहां आप को जगह जगह और क़दम क़दम पर सब्र व ज़ब्त और तहम्मुल व बुर्दबारी की ज़रूरत पेश आएगी, इसलिये एक दूसरे के मुआविन और मददगार रहने और किसी को अज़ियत देने और धक्कम पेल करने से परहेज़ कीजिये।

बिरादराने इस्लाम! हुज्जाजे किराम को चाहिये कि इन मज़्कूरा बातों पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें और जहां तक हो सके उन पर अमल करें। आज हर शख़्स ईमान, इत्तिहाद, सब्र और एक दूसरे की मदद का ज़रूरत मंद है। हम सबको मिलकर इन बातों पर अमल करना होगा ताकि वादए रब्बानी के मुताबिक़ हज की बरकतों, फ़ज़ीलतों और फ़ाएदों से फ़ैज़याब हो सकें, अल्लाह तआला का इर्शादे आली है:

لِّيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ

"ताकि वह अपने मुनाफ़ा के लिये हाज़िर हों।"[13]

अल्लाह तआला से उसके पाकीज़ा नामों और आला सिफ़ात का वास्ता देकर हम दुआ करते हैं कि अल्लाह हुज्जाजे किराम की मसाई कबूल फ़रमाए, उनके हज को हजे मबरूर बनाए, गुनाहों को मुआफ़ करे, मुनासिक हज अदा करने की सहूलत अता फ़रमाए और हमारे आमाल का अंजाम बेहतरीन करे। अल्लाह हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْقَائِلِ:

﴿وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا﴾

أَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهُ، وَأَسْأَلُهُ أَنْ يَّجْعَلَ لَنَا إِلٰى دَرْبِ الْحَقِّ طَرِيقًا وَّمَسْلَكًا، وَّأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ

وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَمَنِ اقْتَفٰى۔

أَمَّا بَعْدُ

हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जिसने इर्शाद फ़रमायाः

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا۔

"और हमने हर उम्मत के लिये क़ुर्बानी मुक़र्रर की।"(14)

मैं उसी की तारीफ़ बयान करता हूं, उसी का शुक्र अदा करता हूं और दुआ करता हूं कि अल्लाह हम सब को राहे हक़ पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह की बेतहाशा रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल0 पर, आप की आल, अस्हाब और तमाम लागों पर जो आप सल्ल0 के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। हुज्जाजे बैतुल्लाह! अल्लाह से डरो, उसकी करम फ़रमाइयों का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हें यहां तक पहुंचने की ताक़त बख़्शी और रूहानियत से भरे इस पुर कैफ़ माहौल में वक़्त गुज़ारने की सआदत अता फ़रमाई। यह अहम फ़रीज़ा अदा करने के लिये हमें अमन व सलामती, जिस्मानी सिहत व तंदुरुस्ती और ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया जिनसे हम सब सुब्ह व शाम फ़ाएदा उठा रहे हैं, लिहाज़ा हर दम और हर लम्हा हर तरह की तारीफ़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के लिये है।

मेहमानाने गिरामी क़द्र! आप अल्लाह रब्बुल आलमीन की

मेहमानी में हैं। यहां क़्याम के दौरान खूब अच्छी तरह दिल लगा कर इबादत कीजिये और जब यहां से वापसी का क़सद हो तो इसी जज़्बे को हिर्ज़े जान बनाकर साथ ले जाइये। इस शहरे मुक़द्दस में अदाए हज के लिये आला तरीन इंतिज़ामात किये गए हैं ताकि यह अहम फ़र्ज़ बेहतर से बेहतर अंदाज़ से अंजाम दिया जा सके। अल्लाह तआला मुंतज़िमीन और मुतअल्लिक़ा हुक्काम को इसका बेहतरीन सिला अता फ़रमाए।

लोगो! अल्लाह के तक़्वे को अपना शिआर बनाओ। यहां इंतिज़ामी उमूर की अंजामदही के लिये जो क़ाएदे और ज़ाब्ते मुक़र्रर किये गए हैं उनकी पासदारी कीजिये ताकि नज़्म व ज़ब्त बाक़ी रहे। ग़ैर ज़रूरी धक्कम पेल से बचिये, रास्तों में किसी तरह की कोई रुकावट न खड़ी कीजिये। अल्लाह हमें कामियाबी अता फ़रमाए।

दरूद व सलाम पढ़िये रसूले अकरम सल्ल0 पर जिन्होंने सलात व सियाम और हज का फ़रीज़ा सबसे बढ़ कर अहसन उस्लूब से निभाया। सलाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी खुत्बा नम्बर 8

(1) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 1773, व सही मुस्लिम, हदीसः 1349 (2)सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 1521, व सही मुस्लिम, हदीसः 1350 (3)अलअन्आम 6:162,163 (4) अलहज 22:26, (5) अज़्ज़ुमुर 39:3 (6) सही मुस्लिम, हदीस(18) 1718 (7) सही मुस्लिम, हदीसः 1297, वस्सुननुल किब्रिया लिलबहीक़ीः 5/125 (8) अलबक़रा 2:197 (9) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 3189, व सही मुस्लिम, हदीसः 1353 (10) आले इम्रान 3:97 (11) अलहज 22:25 (12) अलबक़रा 2:197 (13) अलहज 22:28 (14) अलहज 22:34

खुत्बा 9

अम्र बिल मअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर

मुस्लिम मुआशरे की पहचान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى شَرَّفَ هٰذِهِ الْأُمَّةَ، فَجَعَلَهَا خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ، تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ، وَتَنْهٰى عَنِ الْمُنْكَرِ، وَتُؤْمِنُ بِاللّٰهِ، أَحْمَدُهٗ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهٗ عَلٰى مَا أَوْلَاهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ، كَتَبَ الْخَيْرِيَّةَ وَالْفَلَاحَ لِدُعَاةِ الْخَيْرِ وَالْإِصْلَاحِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، حَامِلُ لِوَاءِ الدَّعْوَةِ وَالْجِهَادِ وَالْكِفَاحِ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ، وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهِ الَّذِيْنَ سَارُوْا عَلٰى نَهْجِهٖ وَتَرَسَّمُوْا خُطَاهُ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ، مَّا تَعَاقَبَ الْمَسَاءُ وَالصَّبَاحُ

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जिसने इस उम्मत को बेहतरीन उम्मत होने का शर्फ़ बख़्शा, वह बेहतरीन उम्मत जो लोगों को नेकी का हुक्म दे, बुराई से मना करे और अल्लाह पर ईमान रखने वाली हो। मैं उसी अल्लाह की तारीफ़ करता हूं और उसकी अनगिनत नेअ्मतों का शुक्र अदा करता हूं और शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। अल्लाह ने नेकी और इस्लाह की दावत देने वालों के लिये ख़ैर और भलाई के रास्ते मुक़र्रर फ़रमाए और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं जिन्होंने दावत और जिहाद का अलम बुलंद किया। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतियां हों आप सल्ल० पर, आप की आल और अस्हाब पर जिन्होंने आप की हिदायत की पैरवी की और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो आप सल्ल० के नक़्शे क़दम पर चलते रहें।"

बिरादराने इस्लाम! उम्मते मुस्लिमा की अहम सिफ़ात यह हैं कि हम अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर ईमान रखें, उसके दीन की तरफ़ दावत दें और बंदों के साथ भलाई, ख़ैरख़्वाही तक़्वा और परहेज़गारी से पेश आएं। एक दूसरे को हक़ और सब्र की तलक़ीन करें ताकि नेकी का उजाला आम हो। शर की रोकथाम की जाए ताकि मुआशरा बिगाड़ और फ़साद से पाक रहे। यह उम्मते मुहम्मदिया सल्ल0 की अहम सिफ़ात हैं, फ़रमाने इलाही है:

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ

"तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों (की इस्लाह) के लिये पैदा की गई है, तुम नेक कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो और तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो।"[(1)]

अम्र बिल मअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर, यअ़नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना हमारी अहम तरीन ज़िम्मादारी है। इसी मक़्सद के लिये तमाम अंबियाए किराम को मबऊस किया गया। यह फ़र्ज़े ऐन है और इस क़दर ज़बरदस्त अहमियत वाला काम है कि बअ़ज़ लोगों ने तो इसे इस्लाम का छटा रुक्न तक क़रार दे दिया क्योंकि इसकी तकमील के बग़ैर हम अपना मक़्सदे तख़्लीक़ पूरा नहीं कर सकते और इस फ़र्ज़ की अंजामदही में तसाहुल बरतने से हर सतह पर ख़तरनाक असरात मुरत्तब हो सकते हैं जो अल्लाह तआला के ग़ैज़ व ग़ज़ब का मूजिब होंगे। इस फ़र्ज़ की अंजामदही में ग़फ़लत से अफ़राद और सोसाइटी दोनों बुरी तरह मुतअस्सिर होते हैं।

अम्र बिल मअ्रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर ईमान की अलामत है और इसे तर्क करना मुनाफ़िक़त की निशानी है, फ़रमाने इलाही है:

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ۔

"मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उनके बअ्ज़ बअ्ज़ से हैं (सब एक जैसे हैं) वह बुरे काम का हुक्म देते हैं और नेक काम से रोकते हैं।"[2]

जबकि मोमिन इसके बरअक्स हैं, फ़रमाने इलाही है:

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ۔

"मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं। वह नेकी का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं।"[3]

इस फ़र्ज़ को अदा करना अल्लाह की नुसरत और मदद हासिल करने का यक़ीनी ज़रीआ और दुशमनों पर ग़ल्बा हासिल करने का बेख़ता तरीक़ा है, फ़रमाने इलाही है:

وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ۔ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ۔

"और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उस (के दीन) की मदद करेगा, बेशक अल्लाह यक़ीनन बहुत क़ुव्वत वाला, ख़ूब ग़ालिब है। (यह) वह लोग (हैं) कि जिन्हें अगर हम ज़मीन में इक़्तिदार बख़्शें (तो) वह नमाज़ क़ाइम करें

और ज़कात दें और नेकी का हुक्म दें और बुराई से रोकें और तमाम उमूर का अंजाम अल्लाह ही के इख़्तयार में है।"(4)

नेकी की दावत देना और बुराई से रोकना जहां ज़बरदस्त कामियाबी का ज़ामिन है, वहीं उसका तर्क करना तबाही का पेश ख़ेमा है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ۔

"फिर जब उन्होंने वह बातें भुला दीं जिनकी उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन लोगों को नजात दी जो बुरे काम से रोकते थे और हम ने उन लोगों को बदतरीन अज़ाब के साथ पकड़ लिया जिन्होंने ज़्यादती की थी, इसलिये कि वह नाफ़रमानी करते थे।"(5)

लिहाज़ा नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना बेहतरीन अमल और अहम तरीन फ़रीज़ा है। इस अम्र की ताकीद कुर्आन की कई आयात और अहादीसे नबवी सल्ल0 में मिलती है, अल्लाह तआला का इर्शादे आली है:

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أُمَّةٌ يَّدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ۔

"और तुम में से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिये जो ख़ैर की तरफ़ बुलाए और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।"(6)

सही मुस्लिम में हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने कहा: मैंने रसूले अकरम सल्ल0 को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना

है:

مَنْ رَّأٰى مِنْكُمْ مُّنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ، فَإِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ، فَإِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ، وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الْإِيْمَانِ۔

"तुम में से जो भी बुराई देखे, वह उसे अपने हाथ से रोक दे, अगर यह नहीं कर सकता तो ज़बान से रोकक और अगर यह भी नहीं कर सकता तो अपने दिल में (उसे बुरा जाने) और यह कमज़ोर तरीन ईमान है।"(7)

एक और हदीस में कहा गया कि उन तीन दरजात के बाद ईमान का कोई मामूली दर्जा भी नहीं है।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० नबीये करीम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया:

وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ، لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ، وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ، أَوْلَيُوْشِكَنَّ اللّٰهُ أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِّنْهُ، ثُمَّ تَدْعُوْنَهٗ فَلَا يَسْتَجِيْبُ لَكُمْ۔

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर लोगों को नेकी का हुक्म दोगे और बुराई से रोकोगे या (अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो) क़रीब है कि अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब मुसल्लत कर दे, फिर तुम उसे पुकारोगे लेकिन वह तुम्हारी दुआ क़बूल नहीं करेगा।"(8)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा कि रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद है:

إِنَّ أَوَّلَ مَا دَخَلَ النَّقْصُ عَلٰى بَنِىْ إِسْرَائِيْلَ كَانَ الرَّجُلُ يَلْقَى الرَّجُلَ فَيَقُوْلُ: يَا هٰذَا! إِتَّقِ اللّٰهَ وَدَعْ مَا

تَصْنَعُ، فَإِنَّهُ لَا يَحِلُّ لَكَ، ثُمَّ يَلْقَاهُ مِنَ الْغَدِ فَلَا يَمْنَعُهُ ذٰلِكَ أَنْ يَّكُونَ أَكِيلَهُ وَشَرِيبَهُ وَقَعِيدَهُ، فَلَمَّا فَعَلُوا ذٰلِكَ ضَرَبَ اللّٰهُ قُلُوبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ......

"बनी इस्राईल की पहली ख़राबी यह थी कि कोई शख़्स किसी को बुराई करते पाता तो उसे कहता कि ऐ फ़लां! अल्लाह से डर और अपनी हरकत से बाज़ आ क्योंकि यह काम तेरे लिये हलाल नहीं, फिर वही शख़्स दूसरे दिन उससे मिलता उसके साथ खाने पीने और बैठने उठने से उसे उसका यह बुरा अमल रुकावट न बनता था, जब उनकी यह कैफ़ियत हो गई तो (उन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ) अल्लाह ने उनके दिलों को एक दूसरे पर दे मारा (उनके अंदर इख़्तिलाफ़, तनाज़ुअ़, बुग्ज़ और हसद पैदा हो गया, उनमें से इत्तिफ़ाक़, इत्तिहाद और उल्फ़त उठा ली गई)।"

फिर आपने कुर्आने करीम की इन आयात की तिलावत फ़रमाई:

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۔ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۔ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۔ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۔

"बनी इस्राईल में से जो लोग काफ़िर हुए उन पर दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की ज़बान से लअ़नत की गई, यह इस वजह से हुआ कि उन्होंने नाफ़रनमानी की और वह हद से गुज़र जाते थे। वह एक दूसरे को बुरे काम से मना नहीं करते थे क्योंकि उन्होंने वह खुद किया होता था, बहुत बुरा था जो वह करते थे। आप उनमें से बहुतों को देखेंगे कि वह उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन्होंने कुफ़्र किया। बहुत बुरा है जो उनके नफ़्सों ने उनके लिये आगे भेजा कि अल्लाह उनसे नाराज़ हो गया और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। और अगर ऐसा होता कि वह अल्लाह पर और उसके नबी पर और उस पर ईमान लाते जो उसकी तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन (काफ़िरों) को दोस्त न बनाते लेकिन उनमें से ज़्यादातर लोग नाफ़रमान हैं।"(9)

फिर आपने फ़रमायाः

كَلَّا، وَاللّٰهِ! لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَلَتَأْخُذُنَّ عَلٰى يَدَيِ الظَّالِمِ، وَلَتَأْطِرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ أَطْرًا، وَلَتَقْصُرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ قَصْرًا۔

"हरगिज़, अल्लाह की क़सम! तुम्हें ज़रूर नेकी का हुक्म करना होगा, बुराई से रोकना होगा और ज़ालिम का हाथ पकड़ना होगा और उसे हक़ क़बूल करने पर आमादा करना और हक़ के आगे झुकाना होगा।"

और एक रिवायत में यह अल्फ़ाज़ हैंः

أَوْلَيَضْرِبَنَّ اللّٰهُ بِقُلُوبِ بَعْضِكُمْ عَلٰى بَعْضٍ، ثُمَّ لَيَلْعَنَنَّكُمْ

كَمَا لَعَنَهُمْ۔

"वर्ना अल्लाह तुम्हारे दिलों को आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ फेर देगा, फिर तुम पर भी लअ़नत करेगा जैसे उन पर लअ़नत की।"(10)

मुअ़ज़्ज़ज़ भाइयो! बदी की मिसाल सोसाइटी के लिये ऐसी ही है जैसे एक मूज़ी मर्ज़ जिस्म के हिस्से को लाहिक़ हो जाए। अगर बरवक़्त उसके इलाज और रोकथाम की तदबीर न की जाएगी तो उसके जरासीम मरीज़ के सारे जिस्म में फैल जाएंगे, फिर उसका इलाज मुम्किन नहीं रहेगा। इसी तरह बुराइयां सोसाइटी को तबाह कर देती हैं और अगर यह बरवक़्त उनके रोकथाम की कोशिश न की गई तो फिर यह बुराइयां इतनी आम हो जाएंगी कि इनका इलाज मुहाल हो जाएगा और इनके नुक़्सानात तमाम लोगों में सरायत कर जाएंगे। इसकी रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक बड़ी उम्दा मिसाल बयान फ़रमाई है, आप सल्ल० ने फ़रमाया:

مَثَلُ الْقَائِمِ عَلٰى حُدُودِ اللّٰهِ وَالْوَاقِعِ فِيهَا كَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَهَمُوا عَلٰى سَفِينَةٍ، فَأَصَابَ بَعْضُهُمْ أَعْلاهَا وَبَعْضُهُمْ أَسْفَلَهَا، فَكَانَ الَّذِينَ فِي أَسْفَلِهَا إِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوا عَلٰى مَنْ فَوْقَهُمْ فَقَالُوا: لَوْأَنَّا خَرَقْنَا فِي نَصِيبِنَا خَرْقًا وَّلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، فَإِنْ يَّتْرُكُوهُمْ وَمَا أَرَادُوا هَلَكُوا جَمِيعًا۔

"अल्लाह तआला के अहकाम और हुदूद की पासदारी और पामाली करने वाले की मिसाल उन लोगों की तरह है जो किसी (दो मंज़िला) कशती (में सफ़र करने) के लिये कुर्आ

अंदाज़ी करते हैं, कुछ लोग बालाई मंज़िल में जगह पाते हैं और कुछ निचली मंज़िल में, निचली मंज़िल में रहने वालों को पानी लेने के लिये ऊपर जाना पड़ता है, उन्होंने कहा कि हम (ऊपर जाकर पानी लेने के बजाए) क्यों न नीचे ही सूराख़ कर लें (ताकि हमें आसानी से पानी मिल जाया करे) और ऊपर वालों को तकलीफ़ भी न पहुंचाएं, तो अगर वह कशती में सूराख़ कर लें और बालाई मंज़िल वाले उन्हें मना न करें तो सब के सब डूब मरेंगे और अगर वह उनके हाथ पकड़ लें तो सब महफ़ूज़ रहेंगे।"[11]

उलमाए किराम ने हर दौर में इस मस्ले पर ज़ोर दिया, इमाम ग़ज़ाली रह0 ने फ़रमाया है कि अम्र बिल मअ्रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर दीन की पहचान है, यह अहम काम जो तमाम अंबियाए किराम का अव्वलीन मक़्सद रहा है, अगर दानिशवराने मिल्लत इस अहम फ़रीज़े की अदाइगी में कोताही करें तो इल्म व अमल की बिसात लपेट दी जाएगी, नुबुवत का मक़्सद ख़त्म हो जाएगा, दीनदारी के बजाए फ़िस्क़ व फ़ुजूर का बाज़ार गरम होने लगेगा। हर सू जिहालत और तारीकी फैलेगी जिसके मुह्लिक असरात अफ़राद और इलाक़ों को तबाह कर देंगे और फिर आख़िरत में उसकी सख़्त बाज़ पुर्स होगी।[12]

शैख़ुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रह0 फ़रमाते हैं:

"अम्र बिल मअ्रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर ऐसी अज़ीमुश्शान ज़िम्मादारी है कि इसी मक़्सद के लिये आसमानी किताबें नाज़िल हुई और इसी नस्बुल ऐन के लिये अंबियाए किराम तशरीफ़ लाते रहे। फ़िल जुम्ला यह काम दीन की बुन्याद है।"[13]

इमाम नौवी रह० ने फ़रमायाः

"यह ऐसी ज़बरदस्त ज़िम्मादारी है कि दीन की तमाम बातों का दारोमदार इसी पर है, लिहाज़ा आख़िरत की नजात के आरज़ूमंद और रज़ाए इलाही के मुतलाशी के लिये ज़रूरी है कि इस काम पर तवज्जोह दे क्योंकि इसके फ़ाएदे बहुत ज़्यादा और हमा जिहत हैं।"[14]

बिरादराने इस्लाम! अम्र बिलमअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर की बहुत ताकीद की गई है। "अलमअ़रूफ़" से मुराद हर वह चीज़ है जिसका अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने हुक्म दिया हो, चाहे इसका तअ़ल्लुक़ इबादात से हो, अक़वाल से या आमाल से या हुस्ने अख़्लाक़ और ज़िंदगी के आम बरताव से, यह सब मअ़रूफ़ के हुक्म में हैं। और "अलमुन्कर" से मुराद हर वह चीज़ है जिससे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ने मना फ़रमाया हो और इसकी बदतरीन क़िस्म अक़ीदे के मुआमले में पाई जाने वाली ख़राबियां और बिद्अ़ात वग़ैरा हैं। इसी तरह कबीरा गुनाह भी मुन्करात में दाख़िल हैं।

मअ़रूफ़ का प्रचार और मुन्कर की रोकथाम किसी एक या चंद मख़्सूस आदमियों की ज़िम्मादारी नहीं बल्कि पूरी उम्मते मुस्लिमा के हर फ़र्द की ज़िम्मादारी है कि वह अपनी सलाहियत व इस्तिताअ़त के मुताबिक़ उसमें हिस्सा ले लेकिन उलमाए किराम और साहिबे असर व रुसूख़ लोगों की ज़िम्मादारी आम अफ़राद के मुक़ाबले में ज़्यादा है।

एक बाप अपनी औलाद और घर के तमाम अफ़राद का ज़िम्मादार है। एक मुअ़ल्लिम अपनी दर्सगाह का, एक मुलाज़िम अपने दाइरए अमल का और एक ताजिर मार्केट का ज़िम्मादार है। ग़र्ज़ हर शख़्स अपने अपने दाइरए अमल में इस ज़िम्मादारी को अदा करने

पर मामूर है क्योंकि हर फ़र्द अपनी जगह एक ज़िम्मादार शख़्स है और इससे ज़िम्मादारी के बारे में पूछा जाएगा। एक मुसलमान जहां भी जब कभी अम्र बिल मअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर की ज़रूरत महसूस करते तो फ़ौरन इस पर अमल करे क्योंकि वह उम्मत का एक हिस्सा है। जब उम्मत को मर्ज़ लाहिक़ होगा तो उसकी तकलीफ़ से हर फ़र्द मुतअस्सिर होगा।

ऐ फ़र्ज़न्दाने उम्मते मुहम्मदिया! अपनी ज़िम्मादारियों को समझो वर्ना इस वक़्त हमें जो चैलंज दरपेश हैं और वक़्त के जो तक़ाज़े हमारे सामने हाथ फैलाए खड़े हैं, हम उनसे उह्दा बरआ नहीं हो सकेंगे। हालात व हवादिस का मुक़ाबला अल्लाह के दीन से तअ़ल्लुक़ मज़बूत करके ही किया जा सकता है क्योंकि हमारी इज़्ज़त व सरफ़राज़ी सिर्फ़ दीने हनीफ़ से वाबस्तगी के साथ मशरूत है, लिहाज़ा मअ़रूफ़ को आम करने और मुन्कर को रोकने की ज़िम्मादारी निभाए बग़ैर हम मौजूदा बुहरान से नहीं निकल सकते लेकिन इस अहम फ़रीज़े को अंजाम देने के लिये इसके लाज़मी अज्ज़ा को मलहूज़ रखना ज़रूरी है वर्ना कामियाबी की तवक़्क़ो नहीं की जा सकती। नर्मी, इल्म, बुर्दबारी, प्यार, मुहब्बत और हिक्मत इस मैदान के मुअस्सिर हथियार हैं, इन से लैस हुए बग़ैर कामियाबी मुहाल है।

अ़ज़ीज़ भाइयो! "أهـل الحسبـه" जो इस शोअ़बे के ज़िम्मादार हैं, उनकी काविश क़ाबिले क़द्र और लाइक़े तहसीन हैं। उनकी दामे दर में, क़दमे सुख़्ने हर एतिबार से हौसला अफ़ज़ाई की जानी चाहिये। उनकी मामूली सी लग़ज़िश को बढ़ा चढ़ा कर न पेश किया जाए, शाइर ने कहा है:

مَـــنْ ذَا الَّـــذِی مَـــا سَـــاءَ قَـــطُّ

وَمَنْ لَّهُ الْحُسْنٰى فَقَطْ؟

"वह कौन है जिसने कभी कोई ग़लती नहीं की? और वह कौन है जिससे हर दम सिर्फ़ नेकी ही सरज़द होती है?"

जो लोग अम्र बिल मअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर के शोअ़बे से मुंसलिक हैं और बेलोस ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं हम उनकी क़द्र करते हैं और हमारा ख़्याल है कि वह इस उम्मत के बेहतरीन अफ़राद हैं। हर चंद कमाल सिर्फ़ अल्लाह के लिये है और बेऐब ज़ात सिर्फ़ उसी की ज़ाते आली है। यह शोअ़बा हमारी उम्मत की पहचान और तुर्रये इम्तियाज़ है, इसी शोअ़बे के ज़रीए हम तरह तरह की ख़राबियों से महफ़ूज़ रह सकते हैं, चाहे वह अक़ीदे के मस्ले में हों या अख़्लाक़ियात के ज़िम्न में। किसी मुस्लिम मम्लिकत की कामियाबी इस शोअ़बा के फ़आ़ल हुए बग़ैर मुम्किन नहीं, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ۔

"(यह) वह लोग (हैं) कि जिन्हें अगर हम ज़मीन में इक़्तिदार बख़्शें (तो) वह नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और नेकी का हुक्म और बुराई से रोकें।"[16]

इस शोअ़बे से मुंसलिक अफ़राद मअ़रूफ़ को आम करने और मुन्करात की रोकथाम की कोशिश करते हैं। मुन्करात को रोकने के लिये ग़ैर मामूली जुर्अत और हौसले से काम लेने की ज़रूरत होती है लेकिन अगर उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद का ज़मीर बेदार हो तो यह काम मुश्किल नहीं। इस शोअ़बे से मुंसलिक लोग दर्दमंदाने मिल्लत के हुस्ने तआ़वुन से मुख़ालिफ़त की आंधियों में हिदायत का चिराग़

जलाए हुए हैं ताकि हिक्मत व बसीरत से मुआशरे के बिगाड़ की इस्लाह कर सकें। हर साहिबे बसीरत जानता है कि बिगाड़ की इस्लाह आसान नहीं बल्कि यह जान जोखों का काम है क्योंकि जिनके मफ़ादात बुराइयों को परवान चढ़ाने से वाबस्ता हैं वह इस्लाही कोशिशों को बर्दाश्त नहीं कर सकते, इसलिये बअज़ खूबसूरत अलफ़ाज़ का सहारा लेकर वह फ़सादी उमूर की मुलम्मअ़ साज़ी कर सकते, इसलिये बअज़ खूबसूरत अलफ़ाज़ का सहारा लेकर वह फ़सादी उमूर की तम्अ़ साज़ी करते हैं। वह कहते हैं कि यह आज़ादी पर क़दग़न है या यह रजअ़त पसंदों और क़दामत पसंदों का टोला है जो हमारी आज़ादी सलब करना चाहता है वग़ैरा वग़ैरा। लेकिन हम गवाही देते हैं कि मुन्करात में डूबे हुए लोगों की बातों में कोई वज़न नहीं। जो लोग मुआशरे को मुन्करात से साफ़ करने की जिद्द व जिहद कर रहे हैं हम उनकी कामियाबी की तबाही का पेश ख़ेमा साबित हो सकती है। अगर हम अपने इर्दगिर्द पड़ोसी मुस्लिम मुमालिक पर नज़र डालें तो सूरते हाल का सही अंदाज़ा कर सकते हैं। अल्लाह तआला ने सलतनते हरमैन शरीफ़ैन को यह एज़ाज़ अता फ़रमाया कि उसके ज़िम्मादारों ने क़ानूनी और सरकारी सतह पर "الحسبة" यअ़नी शोअ़बए अम्र बिल मअ़रूफ़ व नह्य अनिल मुन्कर क़ाइम किया, इसका एक निज़ाम बनाया, इस पर अमलदरआमद को आसान बनाया, इसलिये हमें इन मसाइये जमीला का शुक्रिया अदा करना चाहिये और इस शोअ़बे की कामियाबी के लिये भरपूर तआ़वुन करना चाहिये क्योंकि शर और फ़साद की तुग़यानी हर तरफ़ से मोजिज़न होकर आगे बढ़ रही है और मुन्करात का तूफ़ान हक़ व सदाक़त के सफ़ीने को डुबोना चाहता है लेकिन जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ۔

"बेशक अल्लाह नहीं बदलता जो किसी क़ौम में है हत्ता कि वह उसे बदल लें जो उनके नफ़्सों में है।"(17)

होना तो यह चाहिये कि हम सब इस कारे ख़ैर में हिस्सा लें ताकि मुआ़शरे में नेकी आम हो और बदी की रोक थाम हो और हर वह हाथ जो सफ़ीनए हक़ को नुक़्सान पहुंचाना चाहता है हम उसे पकड़ लें ताकि मिल्लत की यह कशती फ़िस्क़ व फ़ुजूर और मुन्करात के भंवर में न फंस जाए। इसके लिये हमें इख़्लास, हिक्मत, शफ़क़त व मेहरबानी और प्यार व मुहब्बत को अपनाना होगा। ख़ुसूसन वह लोग जो शोअ़बए अम्र बिल मअ़रूफ़ और नह्‌य अनिल मुन्कर से वाबस्ता हैं उनमें इस सिफ़ात का जलवा गर होना निहायत ज़रूरी है क्योंकि वह दूसरों के लिये नमूना हैं।

मुहतरम भाइयो! जब भी इस अहम काम के रास्ते में रुकावटें खड़ी की गईं और उन्हें अपनी दीनी ज़िम्मादारी अदा करने से रोका गया तो फिर हर तरफ़ गुमराही, बिगाड़ और फ़साद ने डेरे डाल लिये। हर ग़ुयूर मुसलमान जो मुख़्तलिफ़ मुमालिक में पाई जाने वाली बुराइयों पर नज़र डाले उसे इन तल्ख़ हक़ाइक़ का सामना करना पड़ता है। बअ़ज़ औक़ात बुराइयों का ग़ल्बा देख कर सर शर्म से झुक जाता है और यह बिगाड़ वहां हर शोअ़बे में देखा जा सकता है, चाहे इसका तअ़ल्लुक़ अक़ाइद से हो या आमाल से, अख़्लाक़ियात से हो या बेराह रवी से। और फिर इस बुराई की आग पर वहां पाए जाने वाले टी वी चैनल और इंटरनेट तेल छिड़कने का काम करते हैं। यहां बजा तौर पर यह सवाल पैदा होता है कि हमारी इस्लामी ग़ैरत कहां चली गई? हमारी दीनी हमियत को क्या हुआ? इंसानी शराफ़त कहां दम तोड़ गई? क्या हमारे दिल मुर्दा हो चुके हैं? और हमारा

ज़मीर बेहिस हो चुका है? हालांकि यही वह अस्बाब हैं जिनकी पादाश में अज़ाब आ सकता है। हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने फ़रमाया:

أَوْحَى اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ إِلٰى جِبْرَائِيلَ أَنِ اقْلِبْ مَدِينَةَ كَذَا وَكَذَا بِأَهْلِهَا، قَالَ: يَا رَبِّ إِنَّ فِيهِ عَبْدَكَ فُلَانًا لَّمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ، قَالَ: اَقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ فَإِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ۔

"अल्लाह तआला ने जिब्रील अलै० की तरफ़ वह्य की कि फ़लां बस्ती को उसके बाशिंदों समेत उलट दो। उन्होंने अर्ज़ की: ऐ मेरे रब! इस बस्ती में फ़लां तेरा (नेक) बंदा रहता है जिसने पलक झपकने के बराबर भी तेरी नाफ़रमानी नहीं की। फ़रमाया कि उस समेत बस्ती को उलट दो क्योंकि बुराइयों को देखकर उसके चेहरे पर कभी कोई नागवारी ज़ाहिर नहीं हुई।"[18]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ि० ने दरयाफ़्त किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम हलाक कर दिये जाएंगे जबकि हम में नेक लोग मौजूद होंगे? तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया:

نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ۔

"हां जब बुराई आम हो जाएगी।"[19]

हमें नाउम्मीद नहीं होना चाहिये क्योंकि अल्लाह के नेक बंदे अपनी मेहनतों में लगे हुए है लेकिन इन इस्लाही कोशिशों में अभी मज़ीद इज़ाफ़े की ज़रूरत है ताकि ख़ैर व ख़ूबी फले फूले और शर का ख़ातमा हो सके।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

"और अल्लाह के लिये यह (काम) कुछ भी मुश्किल नहीं।"[20]

अल्लाह तआला कुर्आन मजीद की बरकत से हमें सरफ़राज़ फ़रमाए और रसूले अकरम सल्ल0 की इत्तिबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें सिराते मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रखे और अपने फ़ज़्ल व करम से अज़ाबे अलीम से महफ़ूज़ फ़रमाए।

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। अल्लाह तआला ने अम्र बिल मअरूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर की जो ज़िम्मादारी सौंपी है उसे अंजाम दो क्योंकि इस काम का दीन में बड़ा और ऊंचा मक़ाम है और इस अहम काम में ग़फ़लत बरतने का अंजाम बड़ा भयानक है, इस फ़रीज़े को छोड़ने वालों का अंजाम हम देख चुके हैं और मुआशरे का बिगाड़ करने का तरीक़ा हम जान चुके हैं तो फिर सुस्ती किस बात? हमें अपना मिज़ाज बदलना होगा क्योंकि उमूमन हम दूसरों पर तकिया करने के आदी हैं और ख़ुद अपनी ज़िम्मादारी अंजाम नहीं देते, हालांकि यह हम सबकी पहली और फ़ौरी ज़िम्मादारी है। अगर हम सब अपनी अपनी ज़िम्मादारी अंजाम दें तो बातिल को पनपने का मौक़ा ही नहीं मिलेगा। हमारे लिये ज़रूरी है कि हम रसूले अकरम सल्ल0 को अपने लिये उस्वा बनाएं, आप सल्ल0 दीन के मस्ले में किसी क़िस्म की कोई मुदाहनत क़तअन बर्दाश्त नहीं करते थे, आप सल्ल0 हर दम अल्लाह के दीन की तबलीग़ में मसरूफ़ रहते थे और अल्लाह के अहकाम की नाफ़रमानी से आप को सख़्त तकलीफ़ होती थी, लिहाज़ा अगर हम नबीये करीम

सल्ल0 को अपने लिये उस्वा बनाएंगे तो फ़लाह और सआदत पाएंगे। दरूद व सलाम पढ़िये रसूले अकरम सल्ल0 की ज़ाते गिरामी पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी खुत्बा नम्बर 9

(1) आले इमरान 3:110 (2) अत्तौबा 9:67 (3) अत्तौबा 9:71 (4) अलहज 22:40,41 (5) अलअअराफ़ 7:165 (6) आले इमरान 3:104 (7) सही मुस्लिम, हदीसः 49 (8) मुस्नद अहमदः 5/388, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 2169 (9) अलमाएदा 5:77-81 (10) सुनन अबी दाऊद, हदीसः 4336,4337, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 3047, व मुस्नद अहमदः 391/1 (ज़ईफ़) (11) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 2493, व मुस्नद अहमदः 268/4 (12) इह्याए उलूम अद्दीनः 306/2 (13) मज्मूउल फ़तावाः 121/28 (14) शर्ह सही मुस्लिम लिन्नौवीः 24/2 (15) यह अशआर अबुल क़ासिम अलहरीरी के हैं, देखियेः मक़ामात अलहरीरी, सः 2312 (16) अलहज 22:41 (17) अर्रअ़द 13:11 (18) अलमुअ़जमुल औसत लित्तिबरानीः 7661, व शुअ़बुल ईमान लिल बैहिक़ीः 7595 (19) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 7059, व सही मुस्लिमः 2880 (20) इब्राहीम 14:20, व फ़ातिर 35:17

खुत्बा 10

हलाल और हराम का इस्लामी तसव्वुर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى أَحَلَّ لَنَا الطَّيِّبَاتِ، وَحَرَّمَ عَلَيْنَا الْخَبَائِثَ، أَحْمَدُهُ تَعَالٰى حَمْدَ مُعْتَرِفٍ بِنِعَمِهٖ، وَأَشْكُرُهُ جَلَّ وَعَلَا شُكْرَ مُقِرٍّ بِمِنَنِهٖ، وَأُثْنِى عَلَيْهِ بِمَا هُوَا أَهْلُهٗ، فَهُوَا أَهْلُ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ، وَمُسْتَحِقُّ الشُّكْرِ وَالْحَمْدِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، جَعَلَ لَنَا فِى الْحَلَالِ غُنْيَةً عَنِ الْحَرَامِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ خَيْرُ الْأَنَامِ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الْبَرَرَةِ الْكِرَامِ، وَأَصْحَابِهٖ وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हम्द अल्लाह ही के लिये है जिसने हमारे लिये पाकीज़ा चीज़ें हलाल की और नापाक चीज़ें हराम। मैं उसी की हम्द बयान करता हूं, उसकी नेअ्मतों का एतिराफ़ करते हुए उसी ज़ाते आली का शुक्र अदा करता हूं, उसके एहसानात का मैं बेहद शुक्रगुज़ार हूं, उसी की सना बयान करता हूं जैसा कि हक़ है। यक़ीनन उसकी ज़ात क़ाबिले सताइश और लाइक़े हम्द व शुक्र है। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने हमारे लिये हलाल के दरवाज़े खोल दिये ताकि हम हराम से बचे रहें और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप का मक़ाम मख़्लूक़ में सबसे बुलंद है। अल्लाह की बेशुमार रहमतें, सलाम और बरकतें हों आप पर, आप की आल पर और अस्हाबे किराम व ताबईन पर और क़्यामत तक आने वाले उन लोगों पर जो सिराते मुस्तक़ीम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। उसका शुक्र अदा करो कि उसने हमें इस्लाम की नेअ़मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। हमें हलाल का रास्ता बताया और हराम से बेनियाज़ फ़रमाया।

इस्लाम एक मुकम्मल दीन और ज़ाबतए हयात है, इसमें ज़िंदगी के हर शोअ़बे के बारे में भरपूर रहनुमाई दी गई है। अल्लाह तआला के हुक़ूक़ और मुआमलात साफ़ और वाज़ेह उस्लूब में बताए गए हैं। दुनिय कमाने के पाकीज़ा और हलाल तरीक़ों की निशानदही की गई है। जिसमें हर एक के लिये मस्लिहत और ख़ैर है, इस रास्ते को अपनाने में बुराइयों की रोकथाम है, इस्लामी तरीक़ों पर अमल करने से इ़ज़्ज़त व आबरू, माल व दौलत और अमल व अमान, हर चीज़ एतिदाल के साथ बरक़रार रहेगी। इस्लाम ने जिस तरह अक़ाइद और इबादात के मसाइल में हमारी रहनुमाई की है इसी तरह हमें अपने मुआमलाते ज़िंदगी के लिये भी बेहतरीन तालीमात से नवाज़ा है। इसके लिये शरीअ़ते इस्लामिया ने आला उसूल व क़वाइद और आदाब बताए हैं। इन पर अमल करने में सबके लिये बड़ी आसानी और सहूलत रखी है। न किसी पर ज़ुल्म, न किसी का इस्तिहसाल, न हुक़ूक़ की छीना झपटी, न किसी के साथ ख़्यानत और बेईमानी। हमारे दीने हनीफ़ के तरीक़े सबके लिये राहत बख़्श और फ़ैज़ रसां हैं, फ़रमाने इलाही है।

يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ـ وَّمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ـ

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ मगर यह कि आपस की रज़ामंदी से तिजारत हो और तुम अपने आप को क़त्ल न करो, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत रहम करने वाला है। और जो शख़्स सरकशी और ज़ुल्म से ऐसे (नाफ़रमानी के) काम करेगा तो उसे हम जल्द आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिये बहुत आसान है।"[1]

और फ़रमायाः

وَلَا تَأْكُلُوٓا أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِٱلْبَٰطِلِ وَتُدْلُوا بِهَآ إِلَى ٱلْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ بِٱلْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ۔

"और तुम अपने माल आपस में नाजाइज़ तरीक़े से न खाओ और उन्हें हाकिमों के पास न ले जाओ ताकि तुम लोगों के मालों में से कुछ माल गुनाह के साथ खाओ, हालांकि तुम जानते हो।"[2]

रसूले अकरम सल्ल० ने अपने अहम तरीन ख़ुत्बे में अरफ़ा के दिन फ़रमायाः

إِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِي شَهْرِكُمْ هٰذَا، فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا۔

"बेशक तुम्हारे ख़ून और माल तुम पर हराम हैं जिस तरह तुम्हारे आज के दिन की हुर्मत है, तुम्हारे इस महीने और तुम्हारे इस शहर की हुर्मत है।"[3]

रसूले अकरम सल्ल० ने मज़ीद इर्शाद फ़रमायाः

لَا يَحِلُّ مَالُ امْرِئٍ إِلَّا بِطِيبِ نَفْسٍ مِّنْهُ۔

"किसी इंसान का माल जाइज़ नहीं मगर वह जो वह अपनी रज़ा और ख़ुशदिली से दे।"[4]

आप सल्ल० ने फ़रमायाः

إِنَّ اللّٰهَ طَيِّبٌ، لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا، وَإِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى أَمَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِمَا أَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِيْنَ، فَقَالَ:-

"बेशक अल्लाह तआला पाक है और पाकीज़ा चीज़ें ही कबूल करता है और बेशक अल्लाह तआला ने मोमिनों को भी वही हुक्म दिया है जो अपने रसूलों को दिया, चुनांचे फ़रमायाः

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صٰلِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ-

"ऐ रसूलो! तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ और नेक अमल करो, बेशक तुम जो अमल करते हो मैं उसे खूब जानता हूं।"[5]

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमायाः

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ-

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें रिज़्क़ के तौर पर दी हैं।"[6]

फिर आप सल्ल० ने एक आदमी का तज़किरा करते हुए फ़रमायाः

الرَّجُلُ يُطِيلُ السَّفَرَ، أَشْعَثَ أَغْبَرَ، يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ، يَا رَبِّ! يَا رَبِّ! وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ، وَّمَشْرَبُهُ حَرَامٌ، وَّمَلْبَسُهُ حَرَامٌ، وَّغُذِيَ بِالْحَرَامِ، فَأَنّٰى يُسْتَجَابُ لِذٰلِكَ؟

"वह आदमी जो दूर दराज़ का सफ़र करे, उसके हाथ पांव गर्द व गुबार में अटे हुए हों, वह अपने दोनों हाथ निहायत आजिज़ी से आसमान की तरफ़ फैला देता है और कहता है: ऐ मेरे रब! लेकिन उसका खाना हराम का, उसका पीना हराम का, उसका लिबास हराम का और उसकी रोज़ी हराम की, लिहाज़ा उसकी दुआ कैसे कुबूल की जा सकती है।"(7)

मुहतरम भाइयो! एक मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि वह अपने मुआमलात ठीक रखे, ख़रीद व फ़रोख़्त, किराया और कर्ज़, रहन या तिजारत हर चीज़ किताब व सुन्नत की तालीमात के मुताबिक़ अंजाम दे, वह लोग तबाह बरबाद हुए जिन्होंने अपने दीन के सिर्फ़ एक हिस्से, यअ़नी इबादात पर तो अमल किया लेकिन मुआमलात में अपनी मर्ज़ी पर चलते रहे। दीन को उन्होंने सिर्फ़ इबादात की हद तक महदूद कर दिया, चाहे यह जिहालत की वजह से हो या दीन से बेज़ारी और दुनिया के लालच में। फिर वह इस ग़लत रास्ते पर दूर निकल गए हत्ता कि उन्हें इसकी कोई परवा ही नहीं रही कि माल कैसे हासिल हो रहा है, हलाल तरीक़े से या हराम रास्तों से, उनमें इतनी बेहिसी पैदा हो गई है कि अल्लाह तआला के हराम कर्दा रास्तों से माल बटोरते हुए उन्हें एहसास नदामत तक नहीं होता। माल व दौलत की हिर्स ने उन्हें इतना अंधा कर दिया है कि वह दुनिया के लालच में दीन तक का सौदा कर बैठे, दिरहम व दीनार की मुहब्बत ने उन्हें अल्लाह और रसूल से ग़ाफ़िल कर दिया और बअ़ज़ लोग सूदख़ोरी में मुब्तला हो गए और बअ़ज़ मकर व फ़रेब से दौलत कमाने लगे, बअ़ज़ लोगों ने धोके बाज़ी को अपना शआ़र बना लिया और झूटी क़समें उनका तकियए कलाम बन गईं। वह ज़ुल्म,

दरोगगोई और धोकाबाज़ी के आदी बन गए। दुनिया तलबी में मरने लगे और माल की रेल पेल ने उन्हें ज़लील कर दिया। न वह अपनी ज़िम्मादारियों को ख़ातिर में लाते हैं न उन्हें अपने अंजाम की फ़िक्र है। उन्हें ख़ुद अपना एहतिसाब करने की फ़ुर्सत है न दूसरों की मौत उनके लिये बाइसे इबरत है। न वह अल्लाह से डरते हैं न यौमे हिसाब की उन्हें कोई परवाह है:

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ۔

"और ज़ालिम लोग जल्द जान लेंगे कि कौनसी पलटने की (ख़ौफ़नाक) जगह वह पलटेंगे।"[8]

बिरादराने इस्लाम! शरीअ़ते इस्लामिया में मुआमलात ठीक रखने की बड़ी ताकीद की गई है। फ़िक्ह इस्लामी इसकी तफ़सीलात से भरी पड़ी है क्योंकि इंसानी ज़िंदगी का इन मसाइल से बड़ा गहरा तअ़ल्लुक़ और मज़बूत रिश्ता है, इसी लिये इसको ख़ुसूसी अहमियत दी गई लेकिन अफ़सोस कि हम मुआमलात को शरई तालीमात की रौशनी में अंजाम देने से ग़ाफ़िल और बेपरवाह हैं। आज हर तरफ़ हवा व हवस, हिर्स व लालच, ख़ुद ग़र्ज़ी और माद्दियत का दौर दौरा है। इस पुरफ़ित्न दौर में तक़्वा, परहेज़गारी और हलाल व हराम की तमीज़ कम होती जा रही है, इसलिये इस मौज़ूअ़ पर इज़हारे ख़्याल करना ज़रूरी समझता हूं क्योंकि इंसान की ज़िंदगी पर इसके दूर रस नताइज मुरत्तब होते हैं।

हज़रात! कस्बे हलाल का पाकीज़ा असर आदमी की सीरत व किर्दार और इबादात समेत हर चीज़ पर पड़ता है, न सिर्फ़ उसकी इंफ़रादी ज़िंदगी पर बल्कि उसकी औलाद, ख़ानदान और फिर सारी सोसाइटी पर उसके ख़ुशगवार आसार व नताइज देखे जा सकते हैं। इसके बरअक्स हराम कमाई के मुह्लिक असरात भी हर सतह पर

देखे जा सकते हैं, उसका नुक़सान सिर्फ़ हराम कमाई वाले इंफ़िरादी ज़िंदगी ही पर नहीं बल्कि उसकी औलाद, ख़ानदान और सोसाइटी तक हर जगह साफ़ महसूस किया जा सकता है, रसूलुल्लाह सल्ल० का इर्शादे गिरामी है:

إِنَّهُ لَا يَرْبُوْ لَحْمٌ نَّبَتَ مِنْ سُحْتٍ إِلَّا كَانَتِ النَّارُ أَوْلَى بِهِ۔

"सूरते हाल यह है कि नहीं बढ़ता कोई गोश्त जिसकी हराम से नशो व नुमा हुई हो मगर आग उसके ज़्यादा लाइक़ है।"[9]

इमाम अहमद रह० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत की है कि नबीये करीम सल्ल० ने फ़रमाया:

وَلَا يَكْسِبُ عَبْدٌ مَّالًا مِّنْ حَرَامٍ فَيُنْفِقُ مِنْهُ فَيُبَارَكُ لَهُ فِيهِ، وَلَا يَتَصَدَّقُ بِهِ فَيُقْبَلُ مِنْهُ، وَلَا يَتْرُكُهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ إِلَّا كَانَ زَادَهُ إِلَى النَّارِ، إِنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ لَا يَمْحُوا السَّيِّئَ بِالسَّيِّئِ وَلٰكِنْ يَّمْحُو السَّيِّئَ بِالْحَسَنِ، إِنَّ الْخَبِيثَ لَا يَمْحُو الْخَبِيثَ۔

"जब कोई बंदा हराम माल कमाता है और ख़र्च करता है तो उसमें बरकत नहीं होती, वह ख़ैरात देता है तो क़बूल नहीं होती और अगर अपने पीछे कुछ छोड़ जाता है तो वह उसके लिये जहन्नम का तोशा बन जाता है, बेशक अल्लाह तआला बुराई को बुराई के ज़रीए नहीं मिटाता, अलबत्ता बुराई को नेकी के ज़रीए दूर करता है। बिला शुब्हा गंदगी गंदगी को ख़त्म नहीं कर सकती।"[10]

बिरादराने इस्लाम! हराम कमाई और ग़ैर इस्लामी मुआमलात सरासर मुसीबत हैं। यह दुनिया में फ़ित्ने और आख़िरत में अज़ाबे जहन्नम का बाइस हैं, फिर एक मुसलमान के लिये यह क्योंकर मुम्किन है कि वह इतनी सख़्त वईदें सुनने और इतने भयानक और रुसवाकुन अंजाम से आगही हासिल करने के बाद फिर भी उनमें मुलव्विस हो। क्या यह उसकी दीन से बेज़ारी और अक़्ल व शुऊर में ख़लल की दलील नहीं? रसूले अकरम सल्ल0 ने इसके बारे में पहले ही आगाह फ़रमा दिया था:

يَأْتِى عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يُبَالِى الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ: أَمِنَ الْحَلَالِ أَمْ مِنْ حَرَامٍ۔

"लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जिसमें इंसान इसकी परवा नहीं करेगा कि वह कैसे कमा रहा है हलाल से या हराम से।"(11)

शायद हमारा यही वह ज़माना है जिसका हदीस में ज़िक्र किया गया क्योंकि हराम कारोबार की इतनी कसरत हो गई है कि बहुत से मुसलमान भी इस रेले की ज़द में आ गए, धोका और फ़रेब देकर दौलत कमाना, दूसरों को नुक़्सान पहुंचाना और अपनी ज़िम्मादारियों की अंजाम दही में ख़्यानत करना वह अमराज़ हैं जो हमारे मुआशरे में वबा की शक्ल इख़्तियार कर चुके हैं।

एक इदारे में काम करने वाला अगर अपनी ड्यूटी अंजाम न दे और लोगों को तंग करे तो वह अपने काम में ज़ुल्म और बद्दियानती का मुज्रिम ठहरेगा, जो तन्ख़्वाह वह हासिल करेगा वह हराम समझी जाएगी क्योंकि जिस मक़्सद के लिये उसे तनख़्वाह दी जा रही है वह उसे पूरा नहीं कर रहा। अक्सर इदारों में यहां तक नौबत पहुंच गई है कि लोग बग़ैर रिशवत लिये अपनी ड्यूटी भी अंजाम नहीं देते। यह

मुसलमानों के साथ खुला धोका है, सरीहन मअ़सियत और ख़ियानत है। वह ताजिर जो सूदी लेनदेन के ज़रीए कारोबार करता है, वह ब्योपारी जो तिजारत का सामान धोके और झूट के सहारे फ़रोख़्त करता है, नाप तौल में कमी करता है या उन चीज़ों की तिजारत करता है जो शर्अन हराम हैं वह सब के सब गुनाहगार हैं। कुछ लोग अपने मातहत मुलाज़िमों पर ज़ुल्म करते हैं, मज़दूरों के हुक़ूक़ अदा नहीं करते और बअ़ज़ लोगों के माल में ग़बन करते हैं और क़ौम का पैसा ग़लत क़िस्म की इंशोरंस के ज़रीए दौलत कमाते हैं। कुछ लोग ज़ुल्म और ज़्यादती से दूसरों का माल छीनते हैं, उनकी इम्लाक पर क़ाबिज़ हो जाते हैं, इन बुराइयों में जो मुलव्विस होगा, चाहे वह अफ़राद हों या इदारे, सब के सब अल्लाह तआला के आगे जवाबदेह होंगे। यह वह बुराइयां हैं जिनका ज़िक्र करते हुए भी एक ग़यूर मुसलमान की ज़बान लड़खड़ा जाती है लेकिन यह ऐसी बीमारियां हैं जो हमारे मुआशरे में मौजूद हैं और हमारी अख़्लाक़ी क़द्रों को खोखला कर रही हैं। अगर कोई इनका जाइज़ा लेना चाहे तो किसी मार्केट या बाज़ार में चला जाए और वहां जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाले, चाहे वह अशयाए ख़ोर व नोश हों या मलबूसात का बाज़ार हो, सवारियों की मार्केट हो या जाइदाद का कारोबार करने वाले, साफ़ दिखाई देगा कि हमारे यह बाज़ार हमारी शरीअ़त से दूर जा चुके हैं, शरई क़वानीन और बाज़ारी क़वानीन में नुमायां फ़र्क़ दिखाई देगा। अगर कोई अदालत का रुख़ करे और वहां ज़ेरे समाअ़त मुक़द्दमात का जाएज़ा ले कि किस पर किसने महज़ माल बटोरने के लिये कैसे कैसे मज़ालिम ढाए हैं तो एक मुसलमान का सर शर्म से झुक जाएगा।

मुअज़्ज़ज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। अपने कारोबार और कमाई का जाएज़ा लेते रहो। ख़ूब जांचो कि हमारे घर

में क्या आ रहा है? और हम अपने बच्चों के पेट किस तरह भर रहे हैं? ताजिर बिरादरगी को चाहिये कि अपनी तिजारत में सच्चाई और इस्लामी उसूलों को सामने रखें, क़ितने खुश बख़्त हैं वह लोग जो हलाल तरीक़े से कमाते हैं और कैसे बदबख़्त हैं वह लोग जो हराम रोज़ी से जिस्म परवरी कर रहे हैं।

मुहतरम भाइयो! हुक़ूक़ुल इबाद का मुआमला बड़ा ही नाज़ुक है, रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْشَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ أَنْ لَّا يَكُونَ دِينَارٌ وَّلَا دِرْهَمٌ، إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ، وَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّآتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ۔

"जिस शख़्स के ज़िम्मे अपने किसी भाई की इज़्ज़त से मुतअ़ल्लिक़ या किसी और चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ कोई हक़ हो तो वह आज ही उससे मुआफ़ करा ले वह उसे आज अदा कर दे उस दिन से पहले जिसमें (पूरा पूरा हिसाब चुकाया जाएगा। उस वक़्त किसी) दिरहम और दीनार (का मुआमला) नहीं होगा (बल्कि) अगर उसकी नेकियां होंगी तो ज़ुल्म के बराबर वही नेकियां उससे ले ली जाएंगी (और उन मज़लूमों को दे दी जाएंगी जिनके हुक़ूक़ ग़सब किये गए थे) और अगर उसकी नेकियां नहीं तो मज़लूम के गुनाह ज़ालिम के खाते में डाल दिये जाएंगे।"[12]

मुअ़ज़्ज़ज़ भाइयो! उस घड़ी का एहसास आज और अभी कर लो जब तुम से अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल एक एक पाइ के बारे में सवाल करेगा, वह बड़ा कठिन वक़्त होगा, उस वक़्त की हौलनाकी

होश उड़ा देगी, मां अपने शीर ख़्वार बच्चे को भूल जाएगी और हामिला औरत का हमल साक़ित हो जाएगा। उस वक़्त किसी शख़्स के क़दम चार सवालात का जवाब दिये बग़ैर हिल भी नहीं सकेंगे। उसके माल के मुतअ़ल्लिक़ दो बातें पूछी जाएंगी कि कैसे कमाया? और कहां ख़र्च किया जैसा कि रसूले अकरम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है।(13)

हमें इस जवाब की तैयारी करनी चाहिये वर्ना हश्र के मैदान में हमारी ज़बानें गुंग हो जाएंगी और कोई जवाब बन नहीं पड़ेगा। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल हम सबको हलाल कमाने और हराम से दूर भागने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह तआला हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضٰى، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، شَهَادَةً نَّرْجُو بِهَا النَّجَاةَ يَوْمَ يَبْعَثُ مَا فِي الْقُبُورِ، وَيُحَصَّلُ مَا فِي الصُّدُورِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهٗ، وَحَبِيبُهٗ وَخَلِيلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ۔

أَمَّا بَعْدُ

“हम्द अल्लाह तआला ही के लिये है। बहुत ज़्यादा, बेहद पाकीज़ा और ऐसी बाबरकत तारीफ़ जो हमारे रब को पसंद आ जाए और जिससे वह राज़ी हो जाए। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। ऐसी शहादत जिससे क़यामत के दिन नजात की उम्मीद की जा सके।

जिस दिन क़ब्रों में मद्फ़ून पड़े हर शख़्स को उठाया जाएगा और हर शख़्स को उसके आमाल के मुताबिक़ बदला दिया जाएगा और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप अल्लाह के महबूब और ख़लील हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल पर, आप के अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन तमाम मुसलमानों पर जो अस्लाफ़े किराम के नक़्शे क़दम पर चलते रहें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, पाकीज़ा और बरकत वाली चीज़ों को लाज़िम पकड़ो क्योंकि अल्लाह तआला सिर्फ़ पाकीज़ा चीज़ ही क़बूल करता है। हलाल और हराम के मुआमलात में बहुत होशियार रहो, अगर किसी मस्ले में कोई उलझन हो तो अह्ले इल्म से मालूम करो, शक व शुब्हा की चीज़ों से परहेज़ करो क्योंकि मुशतबिहात हराम की तरफ़ ले जाने का ज़रीआ हैं, रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया हैः

إِنَّ الْحَلَالَ بَيِّنٌ وَّإِنَّ الْحَرَامَ بَيِّنٌ وَّبَيْنَهُمَا مُشْتَبِهَاتٌ، لَّا يَعْلَمُهُنَّ كَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ، فَمَنِ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ اسْتَبْرَأَ لِدِينِهِ وَعِرْضِهِ، وَمَنْ وَّقَعَ فِي الشُّبُهَاتِ وَقَعَ فِي الْحَرَامِ......

"बेशक हलाल भी वाज़ेह है और हराम भी वाज़ेह है और उनके माबैन कुछ चीज़ें मुशतबिहात हैं जिनको अक्सर लोग नहीं जानते, जो उनसे बच गया उसने अपनी ईमानदारी

और इज़्ज़त को बचा लिया और जो मुशतबिहात में दाख़िल हुआ वह हराम में मुब्तला होगा।"(14)

मुहतरम भाइयो! अपने मुआमलात को बहुत साफ़ सुथरा रखो, अपने काम और अपनी ड्यूटी की अंजामदही में कामिल दियानत और अमानतदारी का मुज़ाहिरा करो, तिजारत में सच्चाई को अपनाओ। यही इख़्लास को तक़ाज़ा है। यही अवाम और हुक्काम के साथ ख़ैर ख़्वाही है। यही अमल मुसलमानों के साथ हमदर्दी और उख़ूवते इस्लामी का मज़हर है। यक़ीन कीजिये कस्बे हलाल से बड़ा सुकून और इतमीनान हासिल होगा जिसके तुम्हारी औलाद, घर और ख़ानदान पर बड़े अच्छे असरात मुरत्तब होंगे। इस दुनिया में हर दम ज़ह्न में यही बात रहनी चाहिये कि क़्यामत के दिन हश्र के हुजूम व हीजान में हमें एक एक पाइ का हिसाब देना होगा। पस हलाल रोज़ी ही हमारे लिये दुनिया में सुकून की ज़मानत और आख़िरत में नजात का ज़रीआ है। दरूद व सलाम पढ़िये नबीये करीम, रहमतुल लिलआलमीन, रह्बरे आलम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर जिस का अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुक्म दिया है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 10

(1) अन्निसा 4:29,30 (2) अलबक़रा 2:188 (3) सही मुस्लिम, हदीस:1218, व सुनन अबी दाऊद, हदीस: 1905, व सुनन इब्ने माजा: हदीस: 3074 (4) मुस्नद अहमद: 72/5 (5) अलमोमिनून 23:51 (6) अलबक़रा 2:172 (7) सही मुस्लिम, हदीस: 1015 (8) अलशअ़रा 26:227 (9) मुस्नद अहमद: 321/3, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस: 614, व सही इब्ने हिब्बान, हदीस: 1723, वलमअ़जमुल कबीर लितिबरानी: 19/136 (10) मुस्नद अहमद: 1/387, व शुअ़बुल ईमान: 5524 (11) सहीहुल बुख़ारी, हदीस: 2059 (12) सहीहुल बुख़ारी, हदीस: 2449 (13) जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस: 2417, व सुनन दारिमी: 554, व मुस्नद अबी यअ़ला अलमूसली, हदीस: 7434 (14) सहीहुल बुख़ारी, हदीस: 52, व सही मुस्लिम, हदीस: 1599

खुत्बा 11

इस्लामी मुआशरे की बुन्याद

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِينُهٗ وَنَسْتَهْدِيهِ، وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَتُوبُ إِلَيْهِ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ الْأَنْفُسِ وَنَزَغَاتِ الشَّيْطَانِ وَسَيِّاٰتِ الْأَعْمَالِ، مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا۔

وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، جَعَلَ التَّآخِيَ سِمَةً مِّنْ سِمَاتِ أَهْلِ الْإِسْلَامِ، وَلَا زِمًا مِّنْ لَوَازِمِ صِحَّةِ الْإِيمَانِ، وَصَيَّرَ عِبَادَهٗ بَعْدَ الْفُرْقَةِ كَأَشَدِّ وَأَقْوٰى بُنْيَانٍ، وَّأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهٗ، وَخِيَرَتُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ، وَصَفْوَتُهٗ مِنْ رُّسُلِهٖ، آخٰى بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ، وَسَعٰى إِلَى التَّأْلِيفِ بَيْنَ قُلُوبِ الْمُسْلِمِينَ، فَجَمَعَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْدَ الْفُرْقَةِ، وَأَغْنٰى بِهٖ بَعْدَ الْعَيْلَةِ، وَأَعَزَّ بِهٖ بَعْدَ الذِّلَّةِ، فَصَلَوٰتُ اللّٰهِ وَتَسْلِيمَاتُهٗ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الْأَطْهَارِ، وَصَحْبِهِ الْأَخْيَارِ، اَلْمُهَاجِرِينَ مِنْهُمْ وَالْأَنْصَارِ، وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ، مَّا تَعَاقَبَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हम्द अल्लाह ही के लिये है। हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से हिदायत मांगते हैं, उसी से मग़फ़िरत के तलबगार हैं और उसी की बारगाह में तौबा करते हैं, हम पनाह तलब करते हैं अल्लाह तआला की अपने नफ्स की शरारतों और शैतानी उक्साहट और बुरे आमाल से, जिसे अल्लाह हिदायत दे वही सीधा रास्ता पाएगा और जिसे वह गुमराह कर दे उसके लिये कोई रहनुमा नहीं। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने बाहमी उख़ूवत व मुहब्बत को इस्लाम की ख़ुसूसियात में से नुमायां ख़ुसूसियत और ईमान के सही होने का लाज़मी अन्सुर क़रार दिया है और अपनी तौफ़ीक़े ख़ास से अपने बंदों के माबैन इख़्तिलाफ़ात मिटा कर भाई भाई बनने की सआदत बख़्शी है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। वह अल्लाह के मख़्लूक़ में सबसे बरगुज़ीदा हैं और रसूलों में सबसे आला हैं। आप सल्ल० ने मोमिनों को आपस में भाई बनाया और मुसलमानों को जोड़ने की भरपूर कोशिश की। आप की ज़बरदस्त कोशिशों से अल्लाह ने

मुसलमानों को एक वहदत की लड़ी में पिरो दिया, तंगदस्ती के बाद तवंगरी अता फ़रमाई और ज़िल्लत के बाद इज़्ज़त बख़्शी। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और मुहाजिरीन व अंसार सहाबए किराम पर, ताबईन पर और क़यामत तक आने वाले उन सब सआदतमंदों पर जो अस्लाफ़े किराम के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! आपस में मुसालिहत करो, फ़रमाने इलाही हैः

وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ صلے وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۔

"और आपस में बाहमी इस्लाह कर लो और इताअत करो अल्लाह की और उसके रसूल (सल्ल0) की अगर तुम मोमिन हो।"[1]

इस्लाम की अहम तरीन तालीमात में से एक खुसूसी तालीम उख़ूवते इस्लामी और आपस में भाई चारे की है। बेशक मोमिन आपस में भाई भाई हैं। हर चंद दुनिया के रिश्तों की हैसियतें और नौइयतें जुदा जुदा हैं लेकिन सबसे ज़्यादा पाएदार और दाइमी मुहब्बत का ज़ामिन रिश्ता इस्लामी उख़ूवत का रिश्ता है। जिसकी बुन्याद दीने हनीफ़ पर क़ाइम है। यह हालात व हवादिस से मुतअस्सिर हो सकता है न ज़मान व मकान से मांद पड़ता है बल्कि दुनिया भर के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों और गोशों में फैले हुए फ़रज़ंदाने तौहीद इस दीने इस्लाम की बदौलत एक ऐसी मुहकम लड़ी में पिरोए

हुए हैं जिसे न आंधियां हिला सकती हैं न तूफ़ान ख़त्म कर सकते हैं। यह सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह हैं। दुनिया भर में फैले हुए मुसलमानों की हैसियत एक ही जिस्म के मुख़्तलिफ़ अअ्ज़ा जैसी है, रसूले अकरम सल्ल0 ने क्या खूब इर्शाद फ़रमाया:

إِنَّ الْمُومِنَ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا۔

"एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये एक दीवार की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को थामता और मज़बूत बनाता है।"(2)

आप सल्ल0 ने फ़रमाया:

مَثَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ مَثَلُ الْجَسَدِ، إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عَضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى۔

"मोमिनों की मिसाल बाहमी मुहब्बत, रहमत और हमदर्दी में एक जिस्म की तरह है कि जब उसके किसी एक हिस्से को तकलीफ़ पहुंचे तो बाक़ी सारा जिस्म उसके लिये बेदारी और बुख़ार की अज़ियत महसूस करता है।"(3)

बिरादराने इस्लाम! इस्लामी भाई चारे की मिसाल एक दरख़्त की मुख़्तलिफ़ शाख़ों जैसी है। जो एक ही जड़ से जुड़ी हुई होती हैं और उसकी घनी छांव में रंग, नस्ल, इलाक़ाई, लिसानी, क़बाइली और कुंबा बिरादरी की तमाम अस्बियतें दम तोड़ देती हैं। सब मुसलमान एक ही इस्लामी अलम के साए में जगह पाते हैं, फ़रमाने इलाही है:

يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّأُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ

عَلِيمٌ خَبِيرٌ-

"ऐ लोगो! बिला शुब्हा हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हमने तुम्हारे ख़ानदान और क़बीले बनाए ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बिला शुब्हा अल्लाह के यहां तुम में से ज़्यादा इज़्ज़त वाला (वह है जो) तुम में से ज़्यादा मुत्तक़ी है, बिला शुब्हा अल्लाह बहुत इल्म वाला है, खूब बाख़बर है।"(4)

इस्लामी मुआशरे की बुन्याद अक़ीदे पर है और इस बुनियाद पर क़ाइम होने वाला रास्ता हसब व नसब और दूसरे तमाम रिश्तों और तअ़ल्लुक़ात से ज़्यादा होता है, इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि माद्दी अग़राज़ और ज़ाती लालच से बालातर होकर इस दीनी उख़ूवत के तक़ाज़े निभाए, दूसरों के साथ भलाई और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बात रखे, अपने लिये जो चीज़ पसंद करे, वही दूसरों के लिये भी पसंद करे, दूसरों की खुशी अपनी खुशी और दूसरों का ग़म अपना ग़म बन जाए। अपनी तारीख़ पर नज़र डालिये। इस्लाम से पहले हमारी जो हालत थी उसके पेशे नज़र नाक़ाबिल तसव्वुर था कि हम एक वह्दत में इकट्ठे हो जाएंगे और हमारी कुव्वत इतनी मज़बूत हो सकेगी कि दुशमन ख़ौफ़ज़दा हो जाए। इस वक़्त के हालात में यह भी नामुम्किन था कि हमें कभी हुकूमत और शान व शौकत मिल जाएगी लेकिन यह सब कुछ और कैसे मुम्किन हुआ? यही उख़ूवते इस्लामी है जो इस्लाम ने अता की है। इस्लाम ने हमारे दिल व दिमाग़ में इसकी अहमियत इस क़दर रासिख़ कर दी कि हम आपस में एक दीवार की तरह जुड़ गए, हम एक उम्मत के तौर पर उभरे और हम ने एक ताक़त और क़ौम की हैसियत से मर्दानावार आंधियों का मुंह फेरा, तूफ़ानों का मुक़ाबला किया, सहराओं को उबूर किया,

समंद्रों का सीना चीरा, पहाड़ों को रौंदा, मुख़ालिफ़ीन के हमले नाकाम बनाए और ज़ालिम कुव्वतों के हाथ तोड़ कर बातिल के सारे हर्बे बेकार कर दिये। यह सब कुछ इस इस्लामी भाई चारे की बदौलत मुम्किन हुआ जिसकी बुन्याद रसूले अकरम सल्ल0 ने रखी। इस उख़ूवत ने नाक़ाबिल फ़रामोश हैरत अंगेज़ मिसालें पेश कीं। जब आप सल्ल0 ने अंसार और मुहाजिरीन के दर्मियान इस उख़ूवत को क़ाइम करते हुए एक मुहाजिर का हाथ अंसारी के हाथ में थमा दिया कि आज से यह तुम्हारा भाई है, इन दोनों के दर्मियान सिवाए इस्लाम के और कोई तअ़ल्लुक़ नहीं था लेकिन उस अंसारी ने भी इस रिशते को ऐसे निभाया कि दुनिया उसकी कोई मिसाल पेश नहीं कर सकती, यह अंसारी उस अजनबी मुहाजिर का हाथ थाम कर उसे अपने घर ले गया। अपनी ज़िंदगी का सारा सरमाया उसके सामने खुद पेश कर दिया और कहाः ऐ मेरे भाई! यह मेरा घर है, यह मेरा बाग़ है, यह मेरी जाएदाद है। यह......यह......यह......तुम आज से इस सारी जाएदाद के निस्फ़ हिस्से के मालिक हो!!

इर्शादे रब्बानी हैः

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُ والدَّارَ وَالْاِيْمٰنَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِىْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۔

"और (यह माल उनके लिये है) जिन्होंने (मदीना को) घर बना लिया था और उन (मुहाजिरीन) से पहले ईमान ला चुके थे, वह (अंसार) उनसे मुहब्बत करते हैं—जो उनकी तरफ़ हिज्रत करे और वह अपने दिलों में इस (माल) की

कोई हाजत नहीं पाते जो उन (मुहाजिरीन) को दिया जाए और अपनी ज़ात पर (उनको) तरजीह देते हैं अगर्चे खुद उन्हें सख़्त ज़रूरत हो; और जो कोई अपने नफ़्स के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।"[5]

लेकिन इसके बाद हमारे आमाल बदले, हमारी हालत बदली, दीन की मुहब्बत की जगह हम दुनिया की हवस का शिकार हुए, ईमान की हलावत जाती रही। हम माद्दी लज़्ज़तों में डूब गए, दूर अंदेशी के बजाए आक़िबत ना अंदेशी में मुब्तला हुए, खुद तदबीरें करने के बजाए दूसरों की साज़िशों की ज़द में आ गए, फिर हमारी कुव्वतें आपस ही में एक दूसरे के ख़िलाफ़ इस्तेमाल होने लगीं। हालत यह हो गई कि ग़ैर तो ग़ैर हम खुद अपनों ही से दस्त बा गिरेबान हो गए, भाई भाई का दुशमन बना, क़रीबी रिशतेदार एक दूसरे पर चढ़ दौड़े, दुनिया की मुहब्बत ने हमें हर एक से बेगाना कर दिया, एक ही ख़ानदान के कई टुक्ड़े हो गए। भाई ने भाई को दुनिया की हवस की ख़ातिर अपना शिकार बनाया, हमने घरेलू मसाइल के हल के लिये क़ानूनी दरवाज़ों पर दस्तक दी, अदालत से इंसाफ़ की भीक मांगने लगे, पुलिस से मदद तलब करने लगे और यह सब कुछ इसी फ़ानी दुनिया के लिये हुआ। कहीं ज़मीन का झगड़ा तो कहीं ज़र परस्ती की लड़ाई, ज़मीन और ज़री की मुहब्बत ने अपनों से जुदा कर दिया। एक दूसरे पर जानें निछावर करने वाले सलाम दुआ से भी कतराने लगे, अज़ीज़ तरीन रिशतादारों में दूरियां पैदा हुईं, खूनी रिशतेदारों के यहां भी आमद व रफ़्त मौक़ूफ़ हो गई बल्कि टेलीफ़ोन के ज़रीए भी ख़ैरियत मालूम करने को आर समझने लगे, सालहा साल से जारी यह अदावत किसी बड़े सबब से नहीं हुई बल्कि आपस में महज़ चंद जुम्लों की तकरार का नतीजा थी, जिग्री

दोस्त एक दूसरे के ख़ून के प्यासे बन गए, पड़ोसी पड़ोसी के लिये पराया बन गया, बच्चों के खेल कूद में झगड़े की वजह से बड़े आपस में झगड़ पड़े, हालांकि बच्चे चंद लम्हों के लिये खेले, लड़े और फिर से खेलने के लिये इकट्ठे हो गए मगर उनके बड़ों ने इस छोटे से मस्ले को बड़ा बना दिया हत्ता कि मुस्तक़िल दुशमनी और नक़्ल मकानी की नौबत आ पहुंची।

क्या यही अह्ले ईमान की मुहब्बत और पहचान है? क्या यही उख़ूवते इस्लामी का नमूना है? क्या हम तक रसूले रहमत सल्ल० के वह अलफ़ाज़ नहीं पहुंचे कि आप ने फ़रमायाः

لَا يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَّهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، يَّلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِى يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ۔

"किसी आदमी के लिये जाइज़ नहीं कि वह अपने भाई से तीन रातों से ज़्यादा बातचीत छोड़ दे, दोनों मिलते हैं लेकिन यह एक तरफ़ फिर जाता है और दूसरा दूसरी तरफ़। और इनमें बेहतर वह है जो सलाम करने में पहल करे।"(6)

आप सल्ल० ने मज़ीद फ़रमायाः

أُنْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْمَظْلُومًا۔

"तुम अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम (ज़ालिम का ज़ुल्म के ख़िलाफ़ हाथ पकड़ लो और मज़लूम से हमदर्दी करो।)"(7)

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ فِى كُلِّ اثْنَيْنِ وَخَمِيْسٍ، فَيَغْفِرُ اللّٰهُ

عَزَّوَجَلَّ لِكُلِّ عَبْدٍ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اِلَّا الْمُتَشَاحِنَيْنِ،
يَقُوْلُ اللّٰهُ لِلْمَلَائِكَةِ: ذَرُوْهُمَا حَتّٰى يَصْطَلِحَا۔

"इंसान के आमाल हर पीर और जुमेरात को पेश किये जाते हैं, हर उस बंदे को अल्लाह तआला बख़्श देता है जिसने उसके साथ शिर्क न किया हो मगर वह दो भाई जिन में अदावत चली आ रही है। अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देता हैः इन्हें उस वक़्त तक के लिये छोड़ दो जब तक कि आपस में ख़ुद मसालिहत न कर लें।"(8)

अज़ीज़ भाइयो! अगर हमारी आपस ही में यह हालत होगी तो हम दूसरे मुसलमान भाइयों के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियों से कैसे उहदा बरआ हो सकते हैं। दुनिया में बहुत से ग़रीब हमारी हमदर्दी के मुंतज़िर हैं। बहुत से भूके हैं जो फ़क्र व फ़ाक़े की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं और हमारी तरफ़ हसरत भरी नज़रों से देख रहे हैं। जो अपना तन ढांकने के लिये ज़रूरी लिबास से भी महरूम हैं, वह हमारे फ़ालतू कपड़ों के पुलिंदों और कपड़ों से भरी अलमारियों की तरफ़ देख रहे हैं। बअ़ज़ तो ऐसे हैं जो हम से ज़्यादा दूर नहीं रहते लेकिन उनकी फ़रयाद हम तक क्यों नहीं पहुंच रही? उनकी पुकार से हम क्यों ग़ाफ़िल हैं? बज़ाहिर हमारी तरफ़ से यह उन मजबूरों और बेकसों के लिये मामूली हमदर्दी होगी लेकिन अल्लाह रब्बुल आलमीन के यहां इसका अज्र बहुत ज़्यादा होगा। यह उख़ूवते इस्लामी का अमली मुज़ाहिरा होगा क्योंकि इस्लामी उख़ूवत के रिश्ते ने हमें मुजाहिदीन और मुस्लिम अक़ल्लियतों के दुख दर्द में सहारा देने का सबक़ दिया है। मेरी तमाम भाइयों से गुज़ारिश है कि अपने सख़ावत

के हाथों को तंग न करो, अपनी दुआओं में अपने भाइयों को ज़रूर याद रखो और यक़ीन करो कि अल्लाह की राह में दी जाने वाली कोई चीज़ मामूली और हक़ीर नहीं।

हमारे वह भाई जो सरज़मीने मेअ़राज (फ़लस्तीन) में अपनी जवां मर्दी और जुर्अत व बहादुरी से हालात के आगे सीना सिपर हैं अगर तुम उनकी माली मदद नहीं कर सकते तो क्या उनके लिये दुआए ख़ैर भी नहीं कर सकते कि अल्लाह तआला वह दिन जल्द दिखाए कि अर्ज़ मुक़द्दसा ग़ासिब के तसल्लुत से आज़ाद हो।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

"और अल्लाह के लिये यह (काम) कुछ भी मुश्किल नहीं।"(9)

इर्शादे बारी तआला है:

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۔

"मोमिन तो (एक दूसरे के) भाई हैं, लिहाज़ा तुम अपने भाइयों के दर्मियान सुलह करा दो और तुम अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए।"(10)

अल्लाह तआला हम सब को क़ुर्आन मजीद की बरकत से मालामाल करे और हम सब को रसूले अकरम सल्ल० के तरीक़े पर चलने की सआ़दत अता फ़रमाए। अल्लाह हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَمَا يَنْبَغِي لِجَلَالِ وَجْهِهٖ وَلِعَظِيْمِ سُلْطَانِهٖ، أَحْمَدُهٗ تَعَالٰى عَلٰى عَظِيْمِ فَضْلِهٖ وَأَشْكُرُهٗ عَلٰى جَزِيْلِ إِحْسَانِهٖ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

تَعْظِيمًا لِشَأْنِهِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ الدَّاعِي إِلَى مَغْفِرَتِهِ وَرِضْوَانِهِ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَأَتْبَاعِهِ وَإِخْوَانِهِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिये ख़ास है, जैसा कि उसकी ज़ात की अज़मत व जलाल के लाइक़ और उसकी अज़ीम सलतनत के शायाने शान है, मैं उसी की तारीफ़ करता हूं उसकी बेपायां करम फ़रमाइयों पर और उसी का शुक्रिया अदा करता हूं उसके बेशुमार एहसानात पर। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसकी शान बुलंद है और मैं शहादत देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप अल्लाह की मग़फ़िरत और रिज़वान के सबसे बड़े दाई हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामती हो आप पर, आप की आल, अस्हाब और उम्माहातुल मोमिनीन पर और उन तमाम पर जो आप की पैरवी करें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। जान लो कि तक़्वे का लाज़मी जुज़ यह है कि हम अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर भाई चारे का अमली मुज़ाहिरा करें। अपने अंदर इस बात की आदत डालें कि दूसरों के लिये भी हम वही पसंद करें जो हम ख़ुद अपने लिये पसंद करते हैं। इमाम यहया अरीज़ी रह0 ने क्या ख़ूब फ़रमायाः

لِيَكُنْ أَقَلُّ حَظِّ الْمُؤْمِنِ مِنْكَ ثَلَاثٌ: اِنْ لَّمْ تَنْفَعْهُ فَلَا تَضُرَّهُ، وَاِنْ لَّمْ تُفْرِحْهُ فَلَا تَغُمَّهُ، وَاِنْ لَّمْ تَمْدَحْهُ فَلَا تَذُمَّهُ۔

"तुम्हारे ज़रीए मुसलमानों को कम से कम तीन फ़ाएदे पहुंचने चाहियें:

(1) अगर तुम किसी को कोई फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकते तो नुक़सान भी न पहुंचाओ।

(2) अगर किसी को कोई ख़ुशी नहीं दे सकते तो ग़म भी न दो।

(3) अगर किसी की तारीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी न करो।"(11)

नोट कर लीजिये! अगर हम इस्लामी उख़ूवत के रिशते को कमज़ोर करेंगे तो हमें ज़िल्लत, रुसवाई और शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। भला हम इस रिशतए इस्लामी को कमज़ोर करके कामियाबी कैसे हासिल कर सकते हैं जबकि दुशमनाने इस्लाम अपनी सफ़ों को मुत्तहिद कर रहे हैं, जैसा कि कुर्आन ने फ़रमाया है:

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ۔

"और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं। (ऐ मुसलमानो!) अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फ़ित्ना और बड़ा फसाद मचेगा।"(12)

मेरे भाइयो! आपस की दुशमनियों, नफ़रतों और कदूरतों से तौबा करो, आपस में एक दूसरे के हमदर्द, ख़ैर ख़्वाह और दोस्त बन जाओ। यही तुम्हारी सलामती और तरक़्क़ी का राज़ है, यही तुम्हारी

नजात का रास्ता है। मुझे यक़ीन है कि इस गुफ़्तगू को सुनने का फ़ाएदा अभी, इसी वक़्त फ़ौरी तौर पर होगा, अगर किसी की आपस में नाराज़ी है तो वह उन्हें और एक दूसरे को गले लगा लें। जो इस कारे ख़ैर में पहल करेगा, अज्र व सवाब में वही सबक़त ले जाएगा, ज़िंदगी के लम्हात गिने चुने और महदूद हैं।

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۔

"और जो अल्लाह के पास है वही बेहतर और पाएदार है क्या तुम समझते नहीं?"

दरूद व सलाम पढ़िये रसूले रहमत, हादिये उम्मत, रहबर व रहनुमा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 11

(1) अलअन्फ़ाल 8:1 (2) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 481, व सही मुस्लिम, हदीसः 2585 (3) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 6011, व सही मुस्लिम, हदीसः 2586 (4) अलहुज्रात 49:13 (5) अलहश्र 59:9 (6) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 6077, व सही मुस्लिम, हदीसः 2560 (7) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 2443 (8) सही मुस्लिम, हदीसः 2565, व मुस्नद अहमदः 268/2, वल्लफ़्ज़ु लहू, वत्तयालिसी, हदीसः 2565 (9) इब्राहीम 14:20, व फ़ातिर 35:17 (10) अलहुज्रात 49:10 (11) जामिउल उलूम वलहिकम लिइब्ने रजब, सः 294 (12) अलअन्फ़ाल 8:73 (13) अलक़सस 28:60

ख़ुत्बा 12

ग़ीबत

मुआशरे की मुह्लिक बीमारी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ أَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهُ، أَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِ الْمُؤْمِنِيْنَ، وَجَعَلَهُمْ اِخْوَةً مُّتَحَابِّيْنَ مُتَرَاحِمِيْنَ، عَلَى الْخَيْرِ مُتَعَاوِنِيْنَ، وَفِى سَبِيْلِ الْفَضَائِلِ مُتَكَاتِفِيْنَ، لِأَلْسِنَتِهِمْ وَجَوَارِحِهِمْ حَافِظِيْنَ، وَعَنِ الْغِيبَةِ وَالْبُهْتَانِ مُبْتَعِدِيْنَ، وَلِلْفُحْشِ وَالزُّورِ مُجْتَنِبِيْنَ، وَعَنْ أَعْرَاضِ اِخْوَانِهِمْ ذَابِّيْنَ وَمُدَافِعِيْنَ۔ أَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اَلْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ، هُوَ الْمَرْجُوُّ سُبْحَانَهُ لِصَلَاحِ أُمُورِ الدُّنْيَا وَالدِّيْنِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ الصَّادِقُ الْأَمِيْنُ، خَاتَمُ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ، وَإِمَامُ الْمُتَّقِيْنَ، وَسَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ أَجْمَعِيْنَ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الطَّاهِرِيْنَ الطَّيِّبِيْنَ، وَصَحْبِهِ الْغُرِّ الْمَيَامِيْنَ، وَمَنِ اقْتَفٰى أَثَرَهُ، وَدَعَا بِدَعْوَتِهِ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हम्द अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिये है जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है, रोज़े जज़ा का मालिक है। मैं उसी की तारीफ़ बयान करता हूं और उसी का शुक्र अदा करता हूं जिसने मोमिनों के दिल जोड़ दिये, उसने उनके माबैन उख़ूवत और मुहब्बत का रिश्ता क़ाइम फ़रमाया। उमूरे ख़ैर में एक दूसरे का हमदर्द और भलाई के कामों में एक दूसरे का मददगार बनाया। उसने ज़बान और जवारेह की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया। हमें ग़ीबत, इलज़ाम तराशी और बुहतान तराशी से बाज़ रहने की ताकीद की। फ़ह्श और मुन्करात से परहेज़ करने का हुक्म दिया और अपने भाइयों की इज़्ज़त का रखवाला बनाया। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, वही मालिके हक़ीक़ी और दीन व दुनिया का आख़िरी सहारा है और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप सादिक़ और अमीन हैं, ख़ातिमुल अंबिया वलमुरसलीन हैं, आप इमामुल मुत्तक़ीन हैं, आप औलादे आदम के सरदार हैं। अल्लाह की बेपायां रहमतें और सलामतें और बरकतें हों आप पर, आप की पाकीज़ा आल पर, सहाबए किराम पर और क़्यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलते रहें।"

हम्द व सलात के बादः

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और अपनी रोज़ मर्रा ज़िंदगी को परहेज़गारी से मुज़य्यन करो, यही तक़्वा तुम्हें ख़ैर से मुहब्बत करने वाला, उसका प्रचार करने वाला और शर की रोकथाम करने वाला बनाएगा।

बिरादराने इस्लाम! इस्लामी मुआशरे की एक अहम ख़ुसूसियत यह है कि वह बाहमी मुहब्बत और हमदर्दी के जज़्बात पर क़ाइम होता है, उसके अफ़राद एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह बन जाते हैं, इस्लामी मुआशरे में मक्र व फ़रेब और नुख़ूवत व तकब्बुर की कोई गुंजाइश नहीं, उसका हर फ़र्द दूसरे का ख़ैख़्वाह होता है, इसके लिये उसकी ज़बान ख़ैर की तर्जुमान बन जाती है, वहां एक दूसरे को नुक़्सान पहुंचाने या दूसरों की हक़ तल्फ़ी या बुग्ज़ व हसद का दौर दौरा नहीं होता, जैसा कि फ़रमाने इलाही हैः

وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّاۗءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۗءُ بَيْنَهُمْ صلے

"और जो लोग आप के साथ हैं, वह काफ़िरों पर बहुत सख़्त हैं, आपस में निहायत मेहरबान हैं।"[1]

और फ़रमायाः

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ۔

"वह मोमिनों पर नर्मी करने वाले होंगे और काफ़िरों पर सख़्ती करने वाले।"[2]

इस्लाम ने मुआशरे की तशकील के लिये जो बुन्याद फ़राहम की है उस पर तामीर होने वाली इमारत निहायत मज़बूत और पुख़्ता होगी। उसमें हर शख़्स के हुक़ूक़ की ज़मानत होगी और हर वह चीज़ जो उसकी बुन्यादों को कमज़ोर करे या उसकी इमारत में दराड़ें डाले

उसकी मुस्लिम मुआशरे में कोई गुंजाइश नहीं। उस मुआशरे के अफ़राद के लिये ज़रूरी होगा कि वह अपनी ज़बानों की हिफ़ाज़त करें, एक दूसरे की हुकूक़ की पासदारी करें, मुआशरे को जराइम से पाक करें और उन तबाहकुन बीमारियों की बेख़कुनी करें जो उसकी जड़ों को खोखला करें या उसके सुकून को बर्बाद और अमन को मुतअस्सिर करें वर्ना इस्लामी मुआशरे की सलामती ख़तरे में पड़ जाएगी और उसके ख़िलाफ़ घात लगा कर बैठने वाले दुशमनों के लिये तर निवाला साबित होगी।

बिरादराने इस्लाम! क्या आपने उस मर्ज़ का अंदाज़ा किया है जो हमारे मुआशरे को घुन की तरह खाए जा रहा है, जिसके ज़हरीले जरासीम तेज़ी से फैल रहे हैं जिनसे हमारी कोई मजलिस और कोई महफ़िल ख़ाली नहीं इल्ला माशा अल्लाह, यह है ग़ीबत की बीमारी, जिसके मुह्लिक असरात अफ़राद और मुआशरे को बर्बाद कर रहे हैं। हमारी अख़्लाक़ी क़द्रें मुतअस्सिर हो रही हैं और हम नूरे ईमानी से ख़ाली होते जा रहे हैं, लोग इस मर्ज़ की ज़ह्रनामी से शायद वाक़िफ़ नहीं, वह इसे आम बीमारी और मामूली बात समझते हैं, हालांकि इसके ख़तरनाक नुक़्सानात घर, ख़ानदान और मुआशरे को तबाह कर रहे हैं, इसकी वजह से भाइयों में नाचाक़ियां, दोस्तों में दूरियां हत्ता कि मियां बीवी में इख़्तिलाफ़ात और बाप बेटे में फूट पड़ रही है और फिर रफ़्ता रफ़्ता इसके शदीद नुक़्सानात बाहमी जंग व जिदाल और नफ़रत व अदावत की शक्ल इख़्तियार कर जाते हैं। यूं आपस में ख़ूंरेज़ तसादुम और लड़ाइयां बरपा होती हैं।

चुग़लख़ोरी मुस्लिम मुआशरे का एक रिस्ता हुआ नासूर है जो अपनी बुरी ख़सलत से अल्लाह और रसूल सल्ल0 और पूरे मुआशरे को तकलीफ़ पहुंचाता है और ऐसे फ़सादी को अल्लाह तआला

हरगिज़ पसंद नहीं करता, इसी लिये इस्लाम ने इस बीमारी को ख़त्म करने के लिये ग़ीबत को हराम क़रार दिया है। इमाम क़ुर्तुबी रह० ने फ़रमाया है:

"इस बात पर इज्माए उम्मत है कि ग़ीबत कबीरा गुनाह है।"(2)

यह गुनाह क़त्ल, सूद, ज़िना और दूसरे कबीरा गुनाहों की तरह है। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने फ़रमाया:

اَلْغِيبَةُ: هِيَ الدَّاءُ الْعُضَالُ وَالسُّمُّ الَّذِي فِي الْأَلْسُنِ أَحْلَى مِنَ الزُّلَالِ۔

"ग़ीबत एक मुह्लिक बीमारी और ज़बान पर ज़ह्रे हिलाहल की तरह है।"

रसूले अकरम सल्ल० ने इस आदत को क़त्ल और लूट खसोट के ज़ुमरे में शामिल फ़रमाया:

كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ۔

"हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का ख़ून, माल और आबरू रेज़ी हराम है।"(4)

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया:

وَاللّٰهِ، لَلْغِيبَةُ أَسْرَعُ فِي دِينِ الْمُؤْمِنِ مِنَ الْأَكِلَةِ فِي جَسَدِهِ۔

"अल्लाह की क़सम! ग़ीबत एक मोमिन के दीन को जिस्मानी बीमारी की निस्बत ज़्यादा तेज़ी से नुक़सान पहुंचाती है।"(5)

इन सब बातों से बढ़ कर इर्शादे बारी तआला है:

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۚ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ

اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ۔

"और न तुम में से कोई दूसरे की ग़ीबत करे, क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए। तो (ज़ाहिर है कि) तुम इसे नापसंद करते हो।"(6)

आप को इस कुर्आनी मिसाल पर ग़ौर करना चाहिये कि ग़ीबत की क़बाहत को किस तरह बयान किया गया क्योंकि मुर्दा इंसान का गोश्त नोच कर खाने के तसव्वुर ही से इंसान को घिन आने लगती है, चाहे वह काफ़िर ही का जिस्म क्यों न हो और अगर मुसलमान हो तो मुआमला और भी बुरा है, फिर जब सड़ी हुई लाश हो तो उसे खाने का तसव्वुर कौन करेगा? सुब्हानल्लाह! यह है ग़ीबत का इस्लामी तसव्वुर लेकिन हम इससे ग़फ़लत करते हैं बल्कि हमारी मजलिस ग़ीबत के बग़ैर उमूमन अधूरी रहती हैं।

मुहतरम भाइयो! ग़ीबत का मफ़हूम बताते हुए ख़ुद रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

أَتَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ؟

"क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत क्या है?"

सहाबए किराम ने कहाः अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं।

आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ۔

"तुम अपने भाई का तज़किरा उस अंदाज़ में करो जिसे वह पसंद नहीं करता।"

लोगों ने कहाः अगर हम वही बात कहें जो उसमें पाई जाती है

(तो क्या फिर भी ग़ीबत है?) आप सल्ल० ने फ़रमायाः

اِنْ كَانَ فِيهِ مَا تَقُولُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وَاِنْ لَّمْ يَكُنْ فِيهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ۔

"अगर तुम उसमें पाई जाने वाली बात करो तो तुमने उसकी ग़ीबत की है और अगर (तुम कोई ऐसा ऐब या कमज़ोरी जो) उस में नहीं पाई जाती (उसकी तरफ़ मंसूब करोगे) तो तुम ने उस पर बोहतान लगाया है।"[7]

जो लोग चुग़लख़ोरी में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें रसूले अकरम सल्ल० के इस फ़रमान को सामने रखना चाहियेः

يَا مَعْشَرَ مَنْ آمَنَ بِلِسَانِهِ وَلَمْ يَدْخُلِ الْإِيمَانُ قَلْبَهُ، لَا تَغْتَابُوا الْمُسْلِمِينَ وَلَا تَتَّبِعُوا عَوْرَاتِهِمْ، فَإِنَّهُ مَنِ اتَّبَعَ عَوْرَاتِهِمْ يَتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهُ، وَمَنْ يَّتَّبِعِ اللّٰهُ عَوْرَتَهُ يَفْضَحْهُ فِي بَيْتِهِ۔

"ऐ वह लोगो जो ज़बानी मुसलमान बने हो लेकिन ईमान दिल में दाख़िल नहीं हुआ! तुम लोग मुसलमानों की ग़ीबत न किया करो और न उनकी इज़्ज़त के दर पै रहो क्योंकि जो किसी की इज़्ज़त के दर पै होगा अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त के दर पै होगा और अल्लाह तआला जिसकी इज़्ज़त के दर पै होगा तो उसे उसके घर में ज़लील करके रख देगा।"[8]

जो लोग इस बुराई को हल्का समझते हैं उन्हें रसूले अकरम सल्ल० का यह फ़रमान ज़ह्न में रखना चाहिये कि आप ने मेअ़राज का वाक़िआ़ बताते हुए फ़रमायाः

لَمَّا عُرِجَ بِي، مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَّهُمْ أَظْفَارٌ مِّنْ نُّحَاسٍ، يَخْمِشُونَ وُجُوهَهُمْ وَصُدُورَهُمْ، فَقُلْتَ مَنْ هٰؤُلَاءِ يَاجِبْرِيلُ؟ قَالَ: هٰؤُلَاءِ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ لُحُومَ النَّاسِ وَيَقَعُونَ فِي أَعْرَاضِهِمْ۔

"मेअ़राज की रात में ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जिनके नाखुन तांबे के थे और वह खुद अपने ही चेहरों और सीनों को नोच रहे थे, मैंने पूछाः ऐ जिब्रील! यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा कि यह वह लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते हैं और उनकी इज़्ज़त से खेलते हैं।"[9]

एक मर्तबा जब उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि0 ने हज़रत सफ़िया रज़ि0 के बारे में सिर्फ़ इतना सा जुम्ला कहाः......सफ़िया जो कुछ छोटे कद की हैं......यह सुनकर आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَّوْ مُزِجَتْ بِمَاءِ الْبَحْرِ لَمَزَجَتْهُ۔

"तुमने ऐसी बात कह दी है अगर वह समंदर में जाए तो उसकी भी हालत बदल जाए।"[10]

यअ़नी यह छोटी सी बात नहीं है बल्कि सारे समंदर का पानी ख़राब करने के लिये काफ़ी है।

इन अहादीस को सामने रख कर हम अपने आमाल का जाइज़ा लें कि एक ही मजलिस बल्कि एक लम्हे में हम दूसरों की कितनी बुराइयां कर जाते हैं। कभी किसी को गाली दे दी, कभी किसी को बेवकूफ़ कह दिया, कभी किसी को जाहिल कह डाला, कभी किसी को गुमराह करार दे दिया बल्कि शायद पानी का एक घूंट हलक़ से उतारना कुछ मुश्किल हो लेकिन दूसरे की ग़ीबत हमारे लिये इतनी भी मुश्किल नहीं। क्या यही ख़ौफ़े इलाही और ख़शियते इलाही का

तक़ाज़ा है? क्या यही उनका किर्दार है जो अल्लाह को अपना निगरान समझते हैं? मुअज़्ज़ज़ भाइयो! इस ख़तरनाक बुराई की फ़ौरी रोकथाम और तदारुक होना चाहिये जिसे हम अपनी महफ़िलों का लाज़िमा समझते हैं, हालांकि यह तो उनके मुर्दा जिस्मों का गोश्त है जो हम चटख़ारे लेकर हलक़ से उतार रहे हैं, अल्लाह की पनाह! और ख़ुसूसन यह आदत उन लोगों में ज़्यादा है जो सुस्त, काहिल और निखट्टू होते हैं, न कोई काम न काज बस बेफ़िक्र और बेपरवाह बैठे रहते हैं, उनके लिये यह वक़्त गुज़ारी का मशग़ला है कि दूसरों की ग़ीबत और ऐब जूई की जाए और अपनी ख़ामियों के बजाए दूसरों की कमज़ोरियां ढूंढी जाएं, यह बेहद मुह्लिक बीमारी है। इसकी मुहब्बत शैतान ने उनके दिलों में डाल दी है। वह अपने अंजाम से ग़ाफ़िल हैं और शैतान को खुश करने में लगे हुए हैं। इमाम इब्ने क़य्यिम रह0 फ़रमाते हैं:

"इंसान का मुआमला भी कितना अजीब है कि उसके लिये हराम कामों से परहेज़ करना आसान लेकिन ज़बान की हिफ़ाज़त मुश्किल है हत्ता कि बअ़ज़ दीनदार लोग जो ज़ुह्द व तक़्वा में मशहूर हैं उनकी ज़बान से भी ऐसे कलिमात फिसल पड़ते हैं जो अल्लाह के ग़ज़ब का मूजिब हैं मगर इसे वह महसूस तक नहीं करते, हालांकि इस तरह का एक जुम्ला भी रहमत से कोसों दूर फैंकने के लिये काफ़ी है।"[11]

हज़रत हसन बसरी रह0 फ़रमाते हैं:

إِذَا رَأَيْتَ الرَّجُلَ يَشْتَغِلُ بِعُيُوبِ غَيْرِهِ، وَيَتْرُكُ عُيُوبَ نَفْسِهِ، فَاعْلَمْ أَنَّهُ قَدْ مُكِرَ بِهِ۔

"अगर तुम किसी शख़्स को अपने ऐबों के बजाए दूसरों के ऐब तलाश करता देखो तो समझो कि वह फ़ित्ने में मुब्तला है।"[12]

एक रिवायत में है कि रसूले अक्रम सल्ल0 ने दरयाफ़्त फ़रमायाः

أَتَدْرُونَ مَا أَرْبَى الرِّبَا عِنْدَ اللّٰهِ؟

"क्या तुम जानते हो अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा रिबा क्या है?"

सहाबा ने अर्ज़ कीः अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं। तो आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

فَإِنَّ أَرْبَى الرِّبَا عِنْدَ اللّٰهِ اسْتِحْلَالُ عِرْضِ امْرِىءٍ مُّسْلِمٍ۔

"बेशक सबसे बड़ा रिबा अल्लाह के नज़दीक किसी मुसलमान की इज़्ज़त को हलाल समझ लेना है।"

फिर आप सल्ल0 ने इस आयत की तिलावत फ़रमाईः

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا۔

"जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बग़ैर किसी जुर्म के तकलीफ़ पहुंचाएं वह बड़े ही बुहतान तराज़ और खुल्लम खुल्ला गुनाहगार हैं।"[13]

रसूले अकरम सल्ल0 ने अपने सहाबए किराम की ऐसी ज़बरदस्त तरबिय फ़रमाई कि आप ने साफ़ ख़बरदार कर दियाः

لَا يُبَلِّغُنِي أَحَدٌ مِّنْ أَصْحَابِي عَنْ أَحَدٍ شَيْئًا أُحِبُّ أَنْ أَخْرُجَ إِلَيْكُمْ وَأَنَا سَلِيْمُ الصَّدْرِ۔

"कोई शख़्स मेरे किसी सहाबी की कोई बात मुझे न

पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हारी तरफ़ निकलूं तो मेरा सीना साफ़ हो (किसी के मुतअ़ल्लिक़ मेरे दिल में कदूरत न हो।)"[14]

हमें चाहिये कि इन औसाफ़े हमीदा को अपनी हालते ज़ार पर चस्पां करके देखें कि हमें दूसरों की ऐबजूई में कितना मज़ा आता है, दूसरों को ज़लील करके कितनी आसूदगी हासिल होती है बल्कि बसा औक़ात ज़र्रे को पहाड़ बना दिया जाता है। बअ़ज़ औक़ात यही चिंगारियां आग के शोलों में तबदील हो जाती हैं और जो इन की लपेट में आता है उन सबको भस्म कर देती हैं, चाहे वह अफ़राद हों या मुआशरा, मुहल्ला हो या पूरा इलाक़ा बल्कि पूरा मुल्क, चाहे वह कोई ख़ान्गी इदारा हो या सरकारी महकमा, चाहे वह उलमा हों या अवाम, नौजवान इसकी ज़द में आएं या बूढ़े, मर्द हों या औरतें, यह बीमारी सबको मस्मूम और मुतअ़स्सिर करके रख देती है।

सलफ़े सालिहीन का उस्लूब यह होता था कि वह ख़ैरख़्वाही फ़रमाते थे, नसीहत करते थे, फ़ज़ीहत नहीं करते थे, ऐबचीनी से एहतिराज़ फ़रमाते थे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः

عَلَيْكُمْ بِذِكْرِ اللهِ، فَإِنَّهُ شِفَاءٌ، وَإِيَّاكُمْ وَذِكْرَ النَّاسِ فَإِنَّهُ دَاءٌ۔

"तुम अल्लाह के ज़िक्र को मामूल बनाओ क्योंकि यह बाइसे शिफ़ा है और लोगों की बुराई से बचो क्योंकि यह बीमारी है।"[15]

सलफ़े सालिहीन से मन्क़ूल है कि ग़ीबत ज़िनाकारी से ज़्यादा घिनावना गुनाह है, पूछा गयाः वह कैसे? उन्होंने जवाब दियाः

اَلرَّجُلُ يَزْنِي ثُمَّ يَتُوبُ، فَيَتُوبُ اللهُ عَلَيْهِ، وَصَاحِبُ

الْغِيبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتَّى يَغْفِرَ لَهُ صَاحِبُهُ۔

"हो सकता है आदमी ज़िना करे और फिर तौबा करे तो शायद अल्लाह उसकी तौबा कबूल करके मुआफ कर दे, मगर ग़ीबत करने वाले को उस वक़्त तक मुआफ नहीं किया जाता जब तक कि वह उस शख़्स से मुआफी न मांग ले जिसकी उसने ग़ीबत की है।"(16)

हज़रत क़तादा रह0 ने फ़रमायाः

ذُكِرَ لَنَا أَنَّ عَذَابَ الْقَبْرِ مِنْ ثَلَاثَةِ أَثْلَاثٍ: ثُلُثٌ مِنَ الْغِيبَةِ، وَثُلُثٌ مِنَ الْبَوْلِ، وَثُلُثٌ مِنَ النَّمِيمَةِ۔

"हमें बयान किया गया है कि अज़ाबे क़ब्र की तीन तिहायां हैंः एक तिहाई ग़ीबत, एक तिहाई पेशाब करने में बेएहतियाती और एक तिहाई चुग़लख़ोरी की वजह से है।"(17)

बिरादराने इस्लाम! ग़ीबत की बदतरीन शक्ल "أولى الأمر" "मुसलमानों के ज़िम्मादार हुक्मरानों" की ग़ीबत है जबकि उनके लिये दुआए ख़ैर और उनकी ख़ूबियों को ज़ाहिर करना चाहिये, उनके लिये बेहतर उस्लूब में नसीहत होनी चाहिये जो आप के और उन्ही के माबैन हो ताकि लोगों में ग़लतफ़ह्मियां न पैदा हों न अवाम के जज़्बात मजरूह हों। इसी तरह उलमाए किराम और मुबल्लिग़ीने इस्लाम की ग़ीबत से परहेज़ ज़रूरी है क्योंकि जो इस बुरी आदत में पड़ेगा अल्लाह तआला उसका ज़मीर मुर्दा कर देगा, जैसा कि हाफ़िज़ इब्ने असाकिर रह0 ने वज़ाहत की है।(18)

अबू क़ासिम हुरैरी ने क्या ख़ूब कहा हैः

مَنْ ذَا الَّذِي مَا سَاءَ قَطُّ

وَمَنْ لَّهُ الْحُسْنٰى فَقَطْ؟!

"कौन है वह जिसने कभी ग़लती न की हो और वह कौन है जिसने हमेशा नेकी ही की हो"[19]

मुहतरम ख़्वातीन को इस बारे में ख़ुसूसी एहतियात करनी चाहिये क्योंकि चुग़ल ख़ोरी की आदत उन में निस्बतन ज़्यादा पाई जाती है बल्कि रसूले अकरम सल्ल0 ने जहन्नम में डाले जाने वालों की अक्सरियत के मुतअ़ल्लिक़ बताया कि वह औरतें होंगी।[20]

लोगो! चुग़ल ख़ोरों से अपनी मजालिस पाक रखो और किसी की बात पर तहक़ीक़ किये बग़ैर यक़ीन न करो, जैसा कि फ़रमाने इलाही है:

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآئَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ۔

"ऐ ईमान वालो! अगर कोई नाफ़रमान तुम्हारे पास कोई ख़बर लाये तो तहक़ीक़ कर लिया करो (ताकि) तुम किसी क़ौम को नादानी से तकलीफ़ (न) पहुंचाओ कि फिर तुम अपने किये पर पछताते फिरो।"[21]

रिपोर्टर्ज़, सहाफ़ियों और अह्ले क़लम हज़रात को चाहिये कि मुसलमानों में बदगुमानी फैलाने से बचें, मासूम लोगों को तख़्तए मश्क़ न बनाएं। उलमाए किराम और दाइयाने दीन के लिये ज़रूरी है कि शैतानी हमलों से चौकन्ने रहें, किसी की इज़्ज़त पर हमला आवर होने से परहेज़ करें, चाहे किसी का उनसे इख़्तिलाफ़े राए ही क्यों न हो। लोग शैतान की पूजा करने से तो रहे लेकिन शैतान आपस में नफ़रतों के बीज बोने से बाज़ नहीं आएगा। ग़र्ज़ मंदों और चापलूसों के नर्ग़े में नौजवानाने मिल्लते इस्लामिया को चाहिये कि ख़ैर के

कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें और उलमाए रब्बानी के साथ वक़्त गुज़ारें, ज़िम्मादार हज़रात के साथ हुस्ने ज़न का मुज़ाहिरा करें, दुशमनाने इस्लाम की चाल बाज़ियों से चौकन्ने रहें और अपनी सफ़ों को मुत्तहिद रखें, फ़रमाने रब्बानी है:

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ صلے وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۔

"तुम अल्लाह से डरो और बाहमी इस्लाह कर लो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो अगर तुम मोमिन हो।"(22)

अल्लाह तआला हम सबको कुर्आन मजीद की बरकतों से मालामाल करे। रिसालते मआब सल्ल0 के रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हम सब को निठल्ले चुग़लख़ोरों की आदतों से महफ़ूज़ रखे और हमें उख़ूवते इस्लामिया का सच्चा नमूना क़ाइम करने की हिम्मत अता फ़रमाए। अल्लाह हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، قَوْلُهُ الْحَقُّ، وَوَعْدُهُ الصِّدْقُ، وَأَمْرُهُ الْاِحْسَانُ وَالرِّفْقُ، نَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَنَشْكُرُهُ بِالْعَمَلِ وَالنُّطْقِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ فِي الْعِبَادَةِ وَالتَّدْبِيْرِ وَالرِّزْقِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ اِلٰى كَافَّةِ الْخَلْقِ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ وَالتَّابِعِيْنَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है। उसकी बात बरहक़ है। उसका वादा सच्चा है। उसका हुक्म एहसान, नर्मी और नवाज़िश से आरास्ता है। मैं उसी की तारीफ़ बयान करता हूं और उसी का शुक्र अदा करता हूं अपने क़ौल और अमल से और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, न इबादत में, न तदबीर में और न रोज़ी देने में। और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और तमाम लोगों के लिये उसके रसूल हैं। अल्लाह की बेहद रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल० पर, आप की आल पर, आप के अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और लोगों के दिल जीतने की कोशिश करो, अपने अल्लामुल ग़ुयूब परवरदिगार की निगरानी को ज़ह्न में रखो, ग़ीबत की मजलिसों से दूर रहो क्योंकि उसकी बुराई सिर्फ़ बोलने वाले तक महदूद नहीं बल्कि सुनने वाला और ऐसी महफ़िलों में शिर्कत करने वाला सब बराबर हैं। चुग़लख़ोरों की कसरत से तुम में नेकी का जज़्बा मांद न पड़ने पाए।

बिरादराने इस्लाम! हम ग़ीबत के ख़तरे और बुराई को समझ चुके हैं। यह गंदगी मामूली सी ऐबजूई से भी लग जाती है, चाहे वह बुराई किसी की ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ हो या उसकी आदत के बारे में। हम इस हिक्मत को भी समझ चुके हैं कि शरीअ़त की नज़र में ग़ीबत क्यों इस क़दर संगीन गुनाह है। शरीअ़त का मक़्सद यह है कि मुस्लिम मुआशरा मुहब्बत और उख़्वत की फ़ज़ा में ज़िंदगी बसर कर सके और कोई उसकी मुहब्बतों की दीवार ढाने न पाए।

अगर हम ग़ीबत के बुन्यादी अस्बाब का जाइज़ा लें तो इसके अहम अस्बाब में सबसे बड़ा सबब ज़ुअ़फ़े ईमान है, फिर ख़शियते इलाही का फ़ुक़दान, बुग्ज़ व हसद, नफ़्से अम्मारा की सरकशी, ख़ुद पसंदी और दूसरों की नाक़द्री है। इस मर्ज़ में मुब्तला मरीज़ ख़ुद को दूसरों से कामिल, अपने आप को सही और दूसरे को ग़लत समझने लगता है। वह दूसरे की हक़ तल्फ़ी करते हुए किसी हिसाब या जवाबदही का तसव्वुर ही नहीं करता।

बअ़ज़ उलमाए रब्बानी, जैसे इमाम ग़ज़ाली और इमाम नौवी रह० वग़ैरा ने इन छः बातों को ग़ीबत के हुक्म से मुस्तसना किया हैः (1) मज़लूम (2) दीनी राए मालूम करने के लिये हक़ीक़ते हाल का ज़िक्र करने वाला (3) बुराई को रोकने के लिये मदद तलब करने

वाला (4) मुसलमानों को किसी शर से बचाने के लिये उसका ज़िक्र करने वाला (5) खुल्लम खुल्ला फ़िस्क़ व फ़ुजूर करने वाले और अल्लाह तआला की हुदूद तोड़ने वाले का ज़िक्र (6) किसी शख़्स की कोई ऐसी मख़्सूस सिफ़त जिसे बताए बग़ैर लोग उस शख़्स को पहचान न पाएं, वह भी सिर्फ़ उसकी शनाख़्त की ग़र्ज़ से।[23]

इन बातों का इहाता किसी ने इन दो अशआर में किया है:

وَالْقَدْحُ لَيْسَ بِغِيبَةٍ فِى سِتَّةٍ
مُتَظَلِّمٍ، وَّمُعَرِّفٍ، وَّمُحَذِّرٍ
وَلِمُظْهِرٍ فِسْقًا، وَّمُسْتَفْتٍ، وَّمَنْ
طَلَبَ الْإِعَانَةَ فِى إِزَالَةِ مُنْكَرٍ

"छः बातों में ऐब बयानी ग़ीबत नहीं, मज़लूम, उरफ़ियत (किसी को उसकी तौहीन या तन्क़ीस किये बग़ैर ऐसे नाम से पुकारना जिससे वह मअ़रूफ़ हो, जैसेः अअ़मश (चुंधा), अअ़रज (लंगड़ा), बहरा, अंधा वग़ैरा) ख़बरदार करने वाला, खुला फ़ासिक़, फ़त्वा तलब करने वाला और दफ़अ़े मुन्कर के लिये फ़रयादरसी करने वाला।"[24]

मुहतरम हज़रात! मूज़ी मर्ज़ का इलाज इस बुराई को छोड़कर अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा और कसरत से इस्तिग़फ़ार करना है। ग़लत मजलिसों से इज्तिनाब कीजिये। ओबाश लोगों से दूर रहिये। जिसकी ग़ीबत की गई उसका ज़िक्रे ख़ैर और उसके हक़ में दुआए ख़ैर कीजिये, खुसूसन उन लोगों के सामने जिनकी मौजूदगी में बुराई बयान की गई थी। मजलिस के कफ़्फ़ारे के आदाब मलहूज़ रखिये। मजालिस को अल्लाह के नाम और इस्तिग़फ़ार के साथ इख़्तिताम पर पहुंचाइये, अपने अंदर हुस्ने ज़न की आदत डालिये, बदगुमानी से

परहेज़, मौत की फ़िक्र और आख़िरत के लिये नेकियों का तोशा इकट्ठा कीजिये। मौत की घाटी सख़्त और आख़िरत के रास्ते वह्शतनाक हैं।

हज़रत मअ़रूफ़ कर्ख़ी रह० की मजलिस में कोई किसी की ग़ीबत करता था तो वह कहा करते थे:

يَا هٰذَا، اُذْكُرِ الْكَفَنَ وَالْقُطْنَ وَالْحَنُوطَ إِذَا وُضِعَ عَلَيْكَ۔

"जनाब! उस वक़्त को याद कीजिये जब आप को कफ़न में लपेटा जाएगा, रूई से नाक बंद की जाएगी और आप पर काफ़ूर मला जाएगा।"[25]

किसी ने हज़रत हसन बसरी रह० की ग़ीबत की, उन्हें इल्म हुआ तो फ़ौरन खजूरों से भरा एक तश्त उसकी ख़िदमत में रवाना किया और कहा:

بَلَغَنِي أَنَّكَ أَهْدَيْتَ إِلَيَّ حَسَنَاتِكَ، أَيْ: بِغِيبَتِكَ لِي۔ فَأَرَدْتُّ أَنْ أُكَافِئَكَ عَلَيْهَا، فَاعْذُرْنِي، فَإِنِّي لَا أَقْدِرُ عَلٰى مُكَافَأَتِكَ عَلَى التَّمَامِ۔

"मुझे इत्तिला मिली है कि आप ने मेरी ग़ीबत करके अपने कुछ नेकियां मेरे हवाले की हैं, उसका मुआवज़ा इर्साले ख़िदमत है। मुआफ़ कीजिये! आप ने जितनी नेकियां मुझे मुंतक़िल की हैं मैं उसका पूरा बदला नहीं दे सकता।"[26]

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, गुनाहों से आज और अभी तौबा करो ताकि दुनिया और आख़िरत की कामियाबी पा सको, अल्लाह तआला हमें ख़ालिस तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दरूद व सलाम पढ़िये रहमतुल लिलआलमीन हज़रत मुहम्मद

मुस्तफ़ा सल्ल0 पर।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 12

(1) अलफ़तह 48:29 (2) अलमाएदा 5:54 (3) तफ़सीर अलक़ुर्तुबी: 337/16 (4) सही मुस्लिम, हदीसः 2564 (5) अस्समतु लिइब्ने अबी अद्दुन्या, सः192, (6) अलहुज्रात 49:12 (7) सही मुस्लिम, हदीसः 2589, व सुनन अबी दाऊद, हदीसः 4874, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 1934 (8) मुस्नद अहमदः 420/4, व सुनन अबी दाऊदः 4880 (9) सुनन अबी दाऊद, हदीसः 4878 (10) मुस्नद अहमदः 189/6, व सुनन अबी दाऊदः 4875, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 2502 (11) अद्दाअ वद्दवाअ, सः244, (12) अस्समतु लिइब्ने अबी अद्दुन्याः 198 (13) अलअहज़ाब 33:58, मुस्नद अहमद अबी यअ़ला अलमूसली, हदीसः 4689, व शुअ़बुल ईमान लिल बैहिक़ीः 6711 (14) सुनन अबी दाऊद, हदीसः 4860, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः 3896 (15) अस्समतु लिइब्ने अबी अद्दुन्या, सः204 (16) अस्समतु लिइब्ने अबी अद्दुन्या, सः164, व कन्ज़ुल उम्मालः 3/589 (17) अस्समतु लिइब्ने अबी अद्दुन्या, सः299 (18) तबईनु किज़्बिल मुफ़तरी लिइब्ने असाकिर, सः307 (19) मक़ामात अलहुरैरी, सः231 (20) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः29, व सही मुस्लिम, हदीसः 2737 (21) अलहुज्रात 49:6 (22) अलअन्फ़ाल 8:1 (23) तफ़सीलात के लिये देखियेः अहयाउ उलूमिद्दीनः 152-153/3, व रियाज़ुस्सालिहीनः 450,451, वलअज़्कार लिलनौवीः540-543, वलज़्वाजिर लिइब्ने हजर अलहैसमीः 29-31/2, वसुबलुस्सलामः 310-311/8, ورفع الريبة عما يجوز ولا يجوز من الغيبة للشوكاني (24) सुबुलुस्सलाम लिलसनआनीः8/311 (25) हिल्यतुल औलियाः 364/8, वसीर अअ़लामुन्नब्लाः 341/9 (26) इह्याए उलूमुद्दीनः 164/3

ख़ुत्बा 13

शादी ख़ाना आबादी और शादमानी का ज़रीआ़

اَنَّ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِينُهٗ وَنَسْتَهْدِيهِ، وَنَتُوبُ اِلَيْهِ

وَنَسْتَغْفِرُهٗ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَمِنْ سَيِّآتِ

أَعْمَالِنَا، مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ فَقَدْ رَشَدَ، وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ

وَرَسُولَهٗ فَقَدْ غَوٰى، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا

شَرِيكَ لَهٗ، خَلَقَنَا مِنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ، وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا،

وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَّنِسَاءً، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا

عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهٗ، النَّبِيُّ الْقُدْوَةُ، وَالْمُرَبِّى الْأُسْوَةُ،

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ

مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسْوَةِ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيراً۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर किस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से हिदायत मांगते हैं, उसी से मग़फ़िरत चाहते हैं और उसी की जनाब में तौबा करते हैं। हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं अपने नफ़्स की बुराइयों और बदआमालियों से। जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वह फ़लाह पाएगा और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा वह गुमराह होगा। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने हमें एक नफ़्स से पैदा किया, उसी से जोड़े बनाए, फिर उनसे बहुत से मर्द और औरतें पैदा कीं। और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप पूरी दुनियाए इंसानियत के लिये उस्वा, अज़ीम मुरब्बी और बेहतरीन नमूनए अमल हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल० पर, आप की आल और अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन सब मर्दों और ख़्वातीन पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। उसी की इताअ़त करो। उसी के अहकाम की हर दम पासदारी करो, उसकी नाफ़रमानी से बचो।

इस्लाम से जिन मसाइल पर बहुत ज़ोर दिया और उनकी ज़बरदस्त अहमियत बयान की है और क़ुर्आन व सुन्नत में जिनकी बड़ी तफ़सीलात बताई गई हैं, उनमें से एक अहम मस्ला शादी ब्याह का है क्योंकि इस मुआमले से दीन व दुनिया की बहुत सी मस्लिहतें जुड़ी हुई हैं। शादी के बहुत फ़ाएदे हैं। यह एक ऐसी ज़रूरत है जिसका तअ़ल्लुक़ इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों ज़िंदगियों से है। इसके ज़रीए इफ़्फ़त व इस्मत की हिफ़ाज़त होती है, नज़र की पाकीज़गी मयस्सर होती है और नस्ले इंसानी का सिलसिला आगे चलता है। शादी ब्याह फ़ित्री और समाजी फ़रीज़ा और दानिशमंदी का तक़ाज़ा है, उसकी बरकतों, फ़ाएदों और मस्लिहतों को समझने के लिये क़ुर्आन मजीद की एक आयत पर ही ग़ौर व फ़िक्र काफ़ी है। सूरए रूम की इक्कीसवीं आयत में अल्लाह तआला ने इस बंधन को अपनी क़ुदरत की निशानी के तौर पर पेश किया हैः

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ -

"और (यह भी) उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से बीवियां पैदा कीं ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी, बिला शुब्हा इसमें लोगों

के लिये अज़ीम निशानियां हैं जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं।"(1)

शादी ब्याह एक शरई हुक्म, इंसानी ज़रूरत और बाइसे अज्र व सवाब अमल है। मियां बीवी को अपनी नियत सही रखनी चाहिये। इस्लाम में शादी करने का तरीक़ा बहुत है ताकि इस मुआमले की अंजामदही लड़के और लड़की के लिये मुश्किल न हो। लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि हम ने अपनी ग़लत आदात, मक़ामी रुसूम व रिवाज, जाहिलाना तसव्वुरात और बेहूदा फ़ख़्र व मुबाहात की वजह से शादी को मुश्किल बना दिया। इस मस्ले में रुसूम व रिवाज को इतनी अहमियत दी गई गोया इनका तअ़ल्लुक़ शरीअ़त से है, हालांकि दरहक़ीक़त इन चीज़ों को शरीअ़त से कोई तअ़ल्लुक़ है न अक़्ले सलीम से। इन ग़ैर इस्लामी रुसूम के ख़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ सुलहाए उम्मत, दाइयाने दीन और उलमाए किराम ने अपने क़लम व ज़बान के ज़रीए आवाज़ बुलंद की है बल्कि शादी ब्याह के सिलसिले में पाई जाने वाली ख़ुराफ़ात के ख़िलाफ़ लोगों ने मुस्तक़िल किताबें लिख डालीं लेकिन हम उन पर कान धरने के लिये तैयार नहीं। आज कल शादी का फ़रीज़ा एक दूसरे पर सबक़त ले जाना, रियाकारी, नुमूद व नुमाइश और तकल्लुफ़ात व तसन्नुआत में दूसरों को नीचा दिखाने का ज़रीआ़ बन चुका है। इसके बरअक्स रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया है:

إِنَّ أَعْظَمَ النِّسَاءِ بَرَكَةً أَيْسَرُهُنَّ مَؤُونَةً۔

"सबसे ज़्यादा ख़ैर व बरकत वाली औरतें वह हैं जो कम बोझ वाली हों।"(2)

लेकिन हमारी शादियां इस मन्हजे नबवी के ख़िलाफ़ हैं, मैं इस मुनासिबत से कुछ हक़ीक़ी परेशानियों का ज़िक्र करना ज़रूरी समझता

हूं। पहली परेशानी नौजवान लड़कों और लड़कियों की शादी में ग़ैर ज़रूरी ताख़ीर है जिसका ज़्यादातर तअ़ल्लुक़ ख़्याली मंसूबों के साथ है, बअ़ज़ अपनी तालीम को सबब बनाते हैं कि तालीम की आख़िरी डिग्री हासिल करने तक हम तजर्रुद की ज़िंदगी ही गुज़ारेंगे क्योंकि शादी तालीम की राह में रुकावट है, हालांकि यह महज़ एक लूला लंगड़ा मफ़रूज़ा है क्योंकि तजुर्बात इसके बरअक्स यह बताते हैं कि शादी इंसान के लिये मुआ़विन है रुकावट नहीं है, इसके ज़रीए वह अपने ज़ह्न व दिमाग़ की सफ़ाई से यक्सूई के साथ तालीम जारी रख सकते हैं, फिर इसमें ख़ास तौर पर बड़ी तवज्जोह तलब बात लड़कियों के लिये है कि अगर कोई लड़की आला तालीम और ऊंची डिग्री के लिये बरवक़्त शादी न करे और बाद में उसे मुनासिब रिशता न मिले तो क्या यह ऊंची डिग्री इसका बदल है? क्योंकि सही उम्र गुज़रने के बाद मुनासिब रिशता मिलना दुशवार हो जाता है, इस तरह अगर वह बेचारी ग़ैर शादी शुदा ही बैठी रही तो क्या औरत के लिये यह पुरसुकून ज़िंदगी है? इसके बरअक्स जिस लड़की की सही उम्र में शादी हो जाए, उसकी औलाद हो, उसका अपना घर हो जो उसके लिये सहारा बन जाए। क्या उस लड़की की ज़िंदगी उस लड़की के मुक़ाबले में पुरसुकून और बाबरकत नहीं है जो ऊंची डिग्री की तलब में बरवक़्त शादी से गुरेज़ करती रही और जब डिग्री मिली तो उम्र का क़ाफ़िला आगे निकल गया और मौज़ूं रिशता मिलना मुहाल हो गया? लिहाज़ा मैं नौजवानों को ताकीद करता हूं कि वह ख़्याली बातों और मफ़रूज़ात के चक्कर से निकल कर हक़ाइक़ की तरफ़ आएं और अच्छे मुस्तक़बिल के लिये तख़य्युलाती मंसूबों के बजाए यह यक़ीन रखें कि मुस्तक़बिल अल्लाह तआ़ला के हाथ में है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।

बअ़ज़ लोग मआ़शी इस्तिहकाम के लिये शादी ब्याह में ताख़ीर करते हैं जबकि अल्लाह का वादा है:

اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ۔

"अगर वह फ़क़ीर होंगे तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी कर देगा और अल्लाह वुसअत वाला, ख़ूब जानने वाला है।"[3]

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 कहा करते थे:

أَطِيعُوا اللّٰهَ أَمَرَكُمْ مِنَ النِّكَاحِ، يُنْجِزْ لَكُمْ مَّا وَعَدَكُمْ مِنَ الْغِنٰى۔

"तुम अल्लाह के हुक्म की तामील करते हुए निकाह कर लो, अल्लाह तआला अपना वादा पूरा करते हुए अपने ख़ज़ाने खोल देगा।"[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 फ़रमाया करते थे:

اِلْتَمِسُوا الْغِنٰى فِى النِّكَاحِ۔

"तुम निकाह के ज़रीए ख़ुशहाली हासिल करो।"[5]

शादी ब्याह में ताख़ीर करने से नौजवानों पर ख़तरनाक नुक़्सानात मुरत्तब हो सकते हैं, ख़ुसूसन मौजूदा ज़माने में जबकि बेहयाई और मुन्करात की कसरत है और अख़्लाक़ी बुराइयों के ख़तरात चारों तरफ़ मंडला रहे हैं। यह इंतिहाई अफ़सोसनाक बात है कि बअ़ज़ नौजवान अपनी जवानी की उम्र से तजावुज़ कर रहे हैं, तीस तीस साल उनकी उम्रें हो गई हैं लेकिन अभी तक उन्होंने शादी की तरफ़ तवज्जोह नहीं दी, इसकी वजह से ज़िनाकारी, अग़लाम बाज़ी और बहुत सी अख़्लाक़ी बुराइयां आम हो रही हैं और इन

बुराइयों को हवा देने में प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया बिलखुसूस टी वी के हयासोज़ मनाज़िर का हाथ बहुत तेज़ है। अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाए...... ।

शादी को मुश्किल बनाने का एक सबब लड़कियों के लिये मुनासिब रिशता मिलने के बावजूद शादी में ताख़ीरी हर्बे हैं, हालांकि रसूल सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

إِذَا أَتَاكُمْ مَّنْ تَرْضَوْنَ خُلُقَهُ وَدِينَهُ فَزَوِّجُوهُ، إِلَّا تَفْعَلُوا تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ عَرِيضٌ-

"जब तुम्हारे पास कोई ऐसा शख़्स निकाह का पैग़ाम भेजे जिसका अख़्लाक़ और दीन तुम्हें पसंद हो तो उससे (अपनी बेटी या बहन की) शादी कर दो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फ़ित्ना और ज़बरदस्त फ़साद फैल जाएगा।"[6]

बअ़ज़ वालिदैन इस मस्ले में मुज्रिमाना ग़फ़लत का शिकार हैं। मुनासिब रिशता आने के बावजूद वह हिर्स और लालच की वजह से और बअ़ज़ ग़ैर ज़रूरी चीज़ों को बुन्याद बना कर ऐसे रिशतों को कोरा जवाब दे देते हैं, बअ़ज़ औक़ात लड़के का काम, दौलत और मंसब के लालच में दीन, अख़्लाक़ और किर्दार को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और कभी बेटी का इस अंदाज़ में भाव ताव करते हैं जैसे यह ख़रीद फ़रोख़्त का सामान है। यह तर्ज़े अमल हक़्क़े विलायत का ग़लत इस्तेमाल और लड़की के हक़ में ख़्यानत है, यह इंसानी अख़्लाक़ और मुरव्वत की तौहीन है। ऐसे लोगों को इसके भयानक नुक़्सानात पर नज़र रखनी चाहिये। वर्ना यह तर्ज़े अमल अपनी बेटियों पर, ख़ानदानों पर बल्कि पूरे मुआशरे पर बड़ा संगीन ज़ुल्म होगा। शादी

ब्याह के मस्ले में एक परेशानी महूर और जहेज़ के मसाइल हैं, बअ़ज़ लोगों ने ऊंचे महूर को अपनी शान का मेअ़यार बनाया है और बेटियों के लिये इतना भारी महूर तलब करते हैं जिसे अदा करना लड़के के बस की बात नहीं होती, सिवाए इसके कि वह क़र्ज़ पर रक़म हासिल करे, गोया शादी की इब्तिदा ही में वह भारी क़र्ज़ के बोझ तले दब जाता है। बअ़ज़ औक़ात महूर की रक़म एक लाख और दो लाख रियाल उन लड़कों के सर मढ़ दी जाती है जिनकी माली हालत इस क़दर ख़तीर रक़म की मुतहम्मिल ही नहीं होती, गोया महूर की भारी मिक़्दार के ज़रीए लड़की का दर्जा मुक़र्रर किया जा रहा है कि जिसका महूर जितना ज़्यादा होगा वह उतनी ही आला व अफ़ज़ल मुतवस्सुर होगी।

महूर एक वसीला है, आख़िरी मक़्सूद नहीं है। महूर के सिलसिले में ग़ुलू के संगीन नताइज मुरत्तब हो सकते हैं, भारी महूर मुक़र्रर करने का दूसरा मतलब यह है कि गोया आप नौजवानों को शादी करने से रोक रहे हैं और शादी को मुश्किल बना रहे हैं। अफ़सोस की बात यहां ख़त्म नहीं होती, महूर के बाद वालिद के लिये नज़राना, वालिदा के लिये हदिया और रिश्तेदारों के लिये तहाइफ़ मांग मांग कर वसूल किये जाते हैं। यह बात मिज़ाजे शरीअ़त और सलफ़े सालिहीन के मंच के मुनाफ़ी है, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमायाः

لَا تُغَالُوا صَدَاقَ النِّسَآءِ، فَإِنَّهَا لَوْ كَانَتْ مَكْرُمَةً فِي الدُّنْيَا، أَوْ تَقْوٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَانَ أَوْلَاكُمْ وَأَحَقَّكُمْ بِهَا مُحَمَّدٌ ﷺ

“महूर के मस्ले में ग़ुलू न करो क्योंकि अगर यही शराफ़त का मेअ़यार और तक़्वे की अलामत होता तो नबीये करीम

सल्ल0 इस शिक पर बढ़ चढ़ कर अमल करते।"[7]

एक शख़्स शादी करने का मुतमन्नी था। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उससे फ़रमायाः

أَعْطِهَا ثَوْبًا "(हक़ महर में) उसे कोई कपड़ा दे दो।" उसने कहाः मेरे पास कपड़ा नहीं है ता आपने फ़रमायाः

أَعْطِهَا وَلَوْ خَاتَمًا مِّنْ حَدِيْدٍ "उसे (हक़ महर) दो, अगर्चे लोहे की अंगूठी ही हो।" जब उसे अंगूठी भी न मिल सकी तो आप ने फ़रमायाः

مَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟ "तुम्हें कुर्आन कितना याद है?" उसने कहाः फ़लां फ़लां सूरत। तो आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

فَقَدْ زَوَّجْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟ "तुम्हें जितना कुर्आन याद है मैंने उसके बदले में तुम्हारी उससे शादी कर दी है (वह अपनी बीवी को सिखा दो) यही तुम्हारी तरफ़ से उसका हक़ महर है।"[8]

यअ़नी उस ग़रीब सहाबी की शादी निहायत आसानी से हो गई।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने महर में खजूर की गुठली के बराबर सोना दिया, यअ़नी दर्मियानी दर्जे का महर दिया।[9]

रसूले अकरम सल्ल0 की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ की कि मैंने महर में चार ऊक़िया चांदी रखी है, यअ़नी एक सौ साठ दिरहम। नबीये करीम सल्ल0 ने तअ़ज्जुब से फ़रमायाः

عَلٰى أَرْبَعِ أَوَاقٍ؟ كَأَنَّمَا تَنْحِتُونَ الْفِضَّةَ مِنْ عُرْضِ هٰذَا الْجَبَلِ! مَا عِنْدَنَا مَا نُعْطِيكَ۔

"चार ऊक़िया चांदी, गोया तुम उस पहाड़ के दामन से चांदी तराशते हो! हमारे पास तुम्हें देने के लिये कुछ नहीं है।"[10]

यअ़नी उस शख़्स के पास रक़म नहीं और वह आप सल्ल0 से मदद मांगने आया था। शादी के लिये आला तरीन होटल, महंगे हाल, ज़ेवरात का मुतालबा, घरेलू सामान की लम्बी चौड़ी फ़ेहरिस्त वग़ैरा वग़ैरा। यह वह अख़्राजात हैं जिनकी कोई हद नहीं, न यह कोई ख़ैर व बरकत की बात है बल्कि यह चाव चौंचले अल्लाह तआला के ग़ज़ब का मूजिब हैं, इर्शादे बारी तआला है:

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ

"बेशक फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं।"(11)

आजकल एक शादी पर उठने वाले मसारिफ़ अगर एक गांव के ज़रूरतमंदों की किफ़ालत के लिये ख़र्च किये जाएं तो शायद सब आसूदा हो जाएं। शादी ब्याह की सीधी साधी ज़रूरत पर यह अलल्ले तलल्ले और ताम झाम किसलिये? कितनी मलाल अगेज़ बात है कि मजबूरों, मुफ़लिसों और कसमपुर्स लोगों की बेचारगी का किसी को ख़्याल ही नहीं आता। आजकल की जाह व हशम वाली शादी की तक़रीबात में कितने आला खानों की तरह तरह की डिशें कितनी बेदर्दी से ज़ाए की जाती हैं। निहायत उम्दा और ख़ुश ज़ाइक़ा खाने फ़ालतू बच जाने की सूरत में कूड़े के ढेर पर बेदरेग़ फैंक दिये जाते हैं। क्या अल्लाह तआला के हुज़ूर इसका हिसाब नहीं होगा? अल्लाह हमें अज़ाब से बचाए।

मुहतरम भाइयो! इस शादी के मस्ले में होश के नाख़ुन लो, हर क़िस्म की फ़ुज़ूल ख़र्ची से बचो, उलमाए किराम और सुलहाए उम्मत को इस सिलसिले में अ़वाम की आगही के लिये अपनी ज़िम्मादारी निभानी चाहिये और शादी का वही सीधा और बाबरकत तरीक़ा राइज करना चाहिये जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बताया है।

अल्लाह हमें ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हर क़िस्म के

शर से महफ़ूज़ रखे। गुफ़्तगू का मक़सद इस्लाह करना है और इसकी तौफ़ीक़ अल्लाह ही देने वाला है। मेरा इसी पर तवक्कुल है और मैं इसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूं। अल्लाह हमारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْحَكِيْمِ الْعَلِيْمِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اِلَى الْعَالَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، وَالتَّابِعِيْنَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

أَمَّا بَعْدُ:

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो हिक्मत वाला और इल्म वाला है और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह बहुत ज़्यादा रहम करने वाला और निहायत मेहरबान है और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और तमाम दुनिया के लिये उसके रसूल हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और तमाम अस्हाब पर और क़्यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बाद:

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। उसकी हर क़िस्म की ज़ाहिरी और बातिनी नेअ़मतों का शुक्र अदा करो,

ज़िंदगी के तमाम मुआमलात इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ अंजाम दो, ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों से परहेज़ करो क्योंकि शरीअ़त की ख़िलाफ़त वर्ज़ी करने वाले लोगों ही के लिये अल्लाह की नाराज़ी और आख़िरत का अज़ाब है। शादी ब्याह के मसाइल में लोगों ने जो ख़िलाफ़े शरीअ़त रस्में, फ़ुज़ूल ख़र्ची और फ़ख़्र व मुबाहात की चीज़ें शुरू कर रखी हैं वह सब ईमान की कमज़ोरी और आख़िरत से बेफ़िक्री का नतीजा हैं, इन बहुत सारी बुराइयों में से एक मर्द व ज़न का इख़्तिलात है जिसकी शरीअ़त में हरगिज़ इजाज़त नहीं। दूल्हा दुल्हन दोनों फ़ैशन की मुनासिबत से मेकअप में बने संवरे होते हैं, फिर शादी की भरी महफ़िलों में दूल्हा दुल्हन का सबके सामने आना, उनकी फ़ोटो ग्राफ़ी, फिर उन तसावीर को बाद में कौन कौन लोग न जाने कहां कहां देखते हैं और फिर इससे जो बिगाड़ पैदा होता है वह किसी से मख़्फ़ी नहीं, फिर बहुत देर रात गए तक लह्व व लअ़ब की मजलिस सजी रहती है, इस मौक़ा पर ग़लत मिज़ाज के लोग आपस में नाजाइज़ मिलाप के बहाने तलाश करते हैं, फिर गाने बजाने का शोर होता है, दूसरों को सुकून बर्बाद किया जाता है, रात गए तक गाड़ियों के हार्न बजते हैं। ग़र्ज़ यह वह काम हैं जिन पर हमें नज़्रे सानी क़रनी चाहिये और मुआशरे को तबाही से बचाने के लिये सीरत और सुन्नत की तरफ़ लौटना चाहिये। यहां मैं उन लोगों की हौसला अफ़ज़ाई करना चाहूंगा जो फ़साद ज़दा माहौल में भी अपने दीन पर साबित क़दम हैं, उन्होंने अपने घरों में शादी ब्याह की तक़रीब उसी पाकीज़गी और सादगी से मुन्अ़क़िद की है जो सुन्नत और सलफ़े सालिहीन का तरीक़ा है। इन कोशिशों को आम होना चाहिये और इस मस्नून तरीक़े की हर सतह पर बढ़ चढ़ कर तरवीज और हौसला अफ़ज़ाई होनी चाहिये। दरूद व सलाम पढ़िये रसूले मुहतशिम, रहमते

दो आलम, शाफ़िऐ महशर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 13

(1) अर्रूम 30:21 (2) मुस्नद अहमद 145/6, व सुननुल कुब्रा लिल बैहिक़ी: 235/7 (3) अन्नूर 24:32 (4) तफ़सीर अत्तबरी: 311/9 (5) तफ़सीर इब्ने अबी हातिम: 2582/8 (6) जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस:1084,1085, व सुनन इब्ने माजा, हदीस: 1967, व़लमुस्तदरक लिलहाकिम: 165-166/2 (7) मुस्नद अबी दाऊद अलतयालिसी:64, व मुस्नद अहमद:41/1, व सुनन इब्ने माजा, हदीस:1887 (8) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:5029, व सही मुस्लिम, हदीस:1425 (9) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:5155, व सही मुस्लिम, हदीस:1427 (10) सही मुस्लिम, हदीस:1424, व सही इब्ने हब्बान, हदीस:4094 (11) बनी इस्राईल 17:27

खुत्बा 14

औरत

इस्लाम के सायए आतिफ़त में

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، أَحْمَدُهٗ وَأَسْتَعِينُهٗ، وَأَتُوبُ اِلَيْهِ وَأَسْتَغْفِرُهٗ،
وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، خَلَقَ
الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى، وَجَعَلَ لِكُلٍّ دَوْرَهٗ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ الَّذِي
أَوْصٰى أُمَّتَهٗ بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ
وَأَصْحَابِهٖ وَأَتْبَاعِهٖ مَا صُبْحٌ بَدَا، وَمَا لَيْلٌ سَجَا، وَسَلَّمَ
تَسْلِيمًا سَرْمَدِيًّا أَبَدًا۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है, मैं उसी की तारीफ़ करता हूं, उसी से मदद तलब करता हूं, उसी से मग़फ़िरत चाहता हूं, उसी की बारगाह में तौबा करता हूं और मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने मर्द और औरत दोनों का जोड़ा बनाया और हर एक को उसकी ज़िम्मेदारियां सिपुर्द कीं और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप ने औरतों के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद फ़रमाई, अल्लाह तआला की लामुत्नाही रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल पर, आप के अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

भाइयो और बहनो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो। उसकी नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करो। ख़ुसूसन इसलिये कि उसने हमें इस्लाम की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया। इस्लाम एक कामिल ज़ाबतए हयात है, इसमें ज़िंदगी का कोई गोशा तारीक नहीं छोड़ा गया, अल्लाह तआला ने अपनी हिक्मते बालिग़ा से जो चाहा वह फ़ैसला किया, उससे बेहतर कोई फ़ैसला कर सकता है न कोई उससे बढ़ कर हिक्मत वाला है।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَاللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ۔

"भला वह न जानेगा जिसने (सबको) पैदा किया और वही बारीक बीन, बहुत बाख़बर है।"[1]

इस्लाम ने जिन उमूर पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी है उनमें से अहम मस्ला औरतों की शख़्सियत है, उनके हुक़ूक़, फ़राइज़ और ज़िम्मेदारियां हैं क्योंकि औरत एक सालेह मुआशरे की बुन्याद की पहली ईंट है। औरत मां है, औरत बहन है, औरत बेटी है, औरत बीवी है। हर रिश्ते और हर हैसियत से औरत के गिर्द अज़मत व एहतिराम का हाला मौजूद है। औरत हमारे हाल का उजाला और हमारे मुस्तक़बिल की दरख़्शन्दगी है। उसी की गोद में मुस्तक़बिल के मेअ़मार परवान चढ़ते हैं। इस्लाम ने औरत को जो आला रुत्बा अता किया उसे समझने के लिये यह जानना ज़रूरी है कि इस्लाम से पहले उमूमन औरत की हैसियत क्या थी, औरत को एक हक़ीर मख़्लूक़ तसव्वुर किया जाता था, मुआशरे में उसके लिये कोई बाइज़्ज़त मक़ाम नहीं था। ईसाइयों के बड़े बड़े राहिब और पादरी औरत को ख़ूबसूरत बला और शैतान का एजन्ट कहते थे। बअ़ज़ दीगर

मज़ाहिब के मानने वालों के नज़दीक और नुहूसत की अलामत थी। कैसर व किस्रा की फ़रमांरवाइयों में औरत का वजूद ऐश व इशरत और मर्द की हवसरानियों का ज़रीआ था। वह किसी चीज़ की मालिक बन सकती थी न विरासत में उसका कोई ह्क़ था। बअ़ज़ संगदिल तो उसे पैदा होते ही ज़िंदा दफ़्न कर देते थे।

यह थी उसके साथ हाने वाले सुलूक की उमूमी कैफ़ियत। लेकिन इस्लाम ने औरत को इज़्ज़त की मसनद अता की। उसकी अज़्मत और हिफ़ाज़त की मुनासिबत से उसे हुक़ूक़ मरहमत फ़रमाए। उसे घर की मलिका बनाया। उस ज़ालिम तह्ज़ीब व सक़ाफ़त को दफ़्न कर दिया जो औरत को हवस का खिलौना समझती थी। इस्लाम ने औरत को मर्द की रफ़ीक़ए हयात बनाया। उसके साथ अद्ल व इंसाफ़ और मुसावात का वह हकीमाना और आदिलाना बरताव किया कि जाहिलियत की ग़लत तह्ज़ीब को दफ़्न कर दिया गया, उसे मर्द के लिये सिर्फ़ मताए तसकीन नहीं बल्कि शरीके हयात का दर्जा दिया, इसके लिये हक़्क़े मिलकियत तसलीम कराया, विरासत में उसका हिस्सा मुक़र्रर किया, ईमान व अमल के मैदान में मर्द के साथ साथ औरत को नेकियों और अज्र व सवाब का एलान खुद अल्लाह तआला ने किया:

اَنِّیْ لَآ اُضِیْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ

"तुम में से मैं किसी अमल करने वाले का अमल ज़ाए नहीं करूंगा, ख़्वाह कोई मर्द हो या औरत।"(2)

एक और मकाम पर फ़रमाया:

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

يَعْمَلُوْنَ۔

"जिसने नेक अमल किये, मर्द हो या औरत, जबकि वह मोमिन हो तो हम ज़रूर उसे पाकीज़ा ज़िंदगी बसर कराएंगे और हम उन्हें ज़रूर उनका अज्र व सवाब उन बेहतरीन आमाल के बदले में देंगे जो वह करते थे।"(3)

एक और जगह फ़रमायाः

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى۔

"ऐ लोगो! बिला शुब्हा हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।"(4)

नबीये करीम सल्ल0 ने औरतों से हुस्ने सुलूक की पुरज़ोर ताकीद फ़रमाई है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मर्वी है कि रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः

أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا، وَّخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَاءِهِمْ۔

"मोमिनों में से सबसे कामिल तरीन ईमान वाला वह है जो अख़्लाक़ में बेहतर हो और तुम में बेहतर लोग वह हैं जो अपनी औरतों के लिये बेहतर हों।"(5)

इस्लाम ही ने औरत के हुकूक़ की हिफ़ाज़त की ज़मानत दी, उसे इज़्हारे ख़्याल की आज़ादी बख़्शी और उमूरे ज़िंदगी की अंजामदही में उसकी हैसियत तसलीम की और इस ज़िम्न में उसके जिस्मानी और फ़ित्री तक़ाज़े भी मलहूज़ रखे ताकि ज़िंदगी की दौड़ में इफ़रात और तफ़रीत न रहे न कोई अपने हुदूद से तजावुज़ करे। मर्द और औरत की ज़िम्मेदारियां उनकी जिस्मानी साख़्त, सलाहियत और कुव्वत के मुताबिक़ आइद की गईं। अल्लाह तआला ने मर्द को

जिस्मानी कुव्वत ज़्यादा अता की ताकि वह मेहनत व मशक़्क़त करके कमाए और औरत में शफ़क़त व मेहरबानी का जज़्बा ज़्यादा रखा ताकि बच्चों की परवरिश और तरबियत कर सके। अल्लाह तआला ने इस तरह मुहतरम ख़्वातीन के लिये जो राहे अमल मुक़र्रर फ़रमाई वह निहायत मुनासिब और मुअ़तदिल है।

अगर इस राहे एतिदाल को छोड़कर औरतें मज़ीद हुक़ूक़ हासिल करना चाहें तो यह उनकी बर्बादी का सौदा होगा, इसमें उनकी कोई भलाई नहीं। औरत का अस्ल हुस्न और वक़ार उसकी हया, ग़ैरत व हमियत और इफ़्फ़त व इस्मत है और पर्दा औरत का ज़ेवर है, अगर औरत हया व हिजाब को तर्क कर दे तो फिर वह औरत नहीं रहती, औरत के नाम पर तोहमत हो जाती है। आजकल पर्दा, हिजाब, नक़ाब और इफ़्फ़त व इस्मत को छोड़ कर हुस्न व जमाल की नुमाइश और मर्द व ज़न के आज़ादाना इख़्तिलात की सदाएं गूंज रही हैं और आज़ादिये निस्वां के नाम पर नित नए मुतालबे हो रहे हैं। नोट कर लीजिये यह सारी बातें औरत की बदतरीन तौहीन हैं। मुसलमान ख़्वातीन को नई तह्ज़ीब के फ़रेब से ख़बरदार रहना चाहिये और आज़ादिये निस्वां के नाम से किसी धोके में नहीं आना चाहिये। औरत को क़ुर्आन व सुन्नत ने जो मक़ाम दिया उससे बेहतर मक़ाम उसे कहीं नहीं मिल सकता। टेलीवीज़न की स्क्रीन पर थिरकने वाली तह्ज़ीबे जदीद की औरत मुसलमान ख़्वातीन की आइडियल (Ideal) नहीं हो सकती। हमारी मुहतरम ख़्वातीन के लिये रहनुमाई का बेहतरीन नमूना, अख़्लाक़ व किर्दार की बुलंदियों पर फ़ाइज़ उम्महातुल मोमिनीन आइशा, ख़दीजा, सय्यदा फ़ातिमा, सुमय्या और नसीबा रज़ि0 जैसी जलीलुल क़द्र ख़्वातीन ही हैं।

मेरी मुहतरम बहन! अगर कोई ख़ातून इस्लामी तालीमात को

छोड़ कर तरक़्क़ी और वक़ार हासिल करना चाहे तो यह उसकी भूल है, उसके लिये ख़ैर और बरकत सिर्फ़ इस्लाम के साए में है, शरीअ़त ने औरतों के लिये जो अहकाम बताए हैं वह ख़ुद उसकी हिफ़ाज़त का ज़रीआ हैं। औरत के लिये अपने घर से बेहतर कोई जगह नहीं और इस्लमी आदाब पर अमल करने से ज़्यादा बरकत किसी और हुक्म में नहीं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

وَقَرْنَ فِىْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجٰهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى ط

"और तुम अपने घरों में टिक कर रहो और गुज़िश्ता दौरे जाहिलियत की ज़ेब व ज़ीनत की नुमाइश के मानिंद (अपनी) ज़ेब व ज़ीनत की नुमाइश न करती फिरो।"[6]

आगे फ़रमाया:

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ط

"ऐ नबी! अपनी बीवियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की औरतों से कह दीजिये कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें।"[7]

औरत इस्लाम के नज़दीक क़ीमती सरमाया है। इस्लाम के सायए रहमत से बाहर की औरत बाज़ारी चीज़ है। जिस औरत ने इस्लामी आदाब की मुख़ालिफ़त की, उसे ऐश पसंदों ने शमए महफ़िल बना कर रुसवा किया, उसकी आबरू लफ़गों का माल बन गई, फिर उससे न जाने कितने फ़ित्ने जनम लेते रहे। अब औरत को यह फ़ैसला कर लेना चाहिये कि वह अपने वक़ार, अज़्मत और मक़ामे बुलंद को बाक़ी रखते हुए किताब व सुन्नत की पासदारी करती है या शर पसंदों की हिर्स व तमअ़ का शिकार होकर अपनी

बर्बादी का सामान खुद अपने हाथों करती है। यह कितनी दर्दनाक हक़ीक़त है कि लोगों ने पुर फ़रेब नअ़रों के ज़रीए ईमान व अक़ीदे का सौदा किया। काश! हमारी मुहतरम ख़्वातीन इन नअ़रों की हक़ीक़त जानने की कोशिश करें, मार्डन दानिशवरों के पुर फ़रेब मक़ालात और बयानात के पीछे छिपे अज़ाइम को पहचानें। वह मालूम करें कि ख़ातूने ख़ाना को शमए महफ़िल बनाकर तहज़ीबे जदीद के लोग क्या हासिल करना चाहते हैं? औरत को उसके घर से निकाल कर कहां ला खड़ा करना चाहते हैं? वह औरत को कौनसी अनोखी ज़िम्मादारियों तले कुचलना चाहते हैं ताकि घरों का सुकून दरहम बरहम हो जाए, औलाद की तरबियत के ख़्वाब बिखर जाएं और पूरा मुआशरा बरबादी की लपेट में आ जाए। उसकी इबरतनाक मिसाल वह तहज़ीब, वह मुआशरा और वह इलाके हैं जिन्होंने आज़ादिये निस्वां के नाम पर औरत को घर से निकाला, उसकी असली और फ़ित्री ज़िम्मादारियों से दूर किया, फिर क्या हुआ? वह मुआशरा इतनी गंदगी, गिरावट और पस्ती में गिर चुका है कि मुहताज बयान नहीं, अब इसी मुआशरे के दानिशवर खुद अपनी तबाही पर आंसू बहा रहे हैं। इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि जब औरत घर से अपने क़दम ग़लत तौर पर बाहर निकालती है तो इससे फ़ित्ना व फ़साद जनम लेता है और इसके शदीद नुक़्सानात सारी सोसाइटी को अपनी लपेट में ले लेते हैं।

हम इस सरज़मीने मुक़द्दस से अपनी मुहतरम बहनों की ख़िदमत में यह दर्दमंदाना इल्तिजा करते हैं कि वह किताबे अल्लाह और सुन्नते रसूल सल्ल० को मज़बूती से थाम लें और इस्लामी आदाब के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करें।

हम ख़्वातीन की तन्ज़ीमों से गुज़ारिश करते हैं कि वह ग़ैर

इस्लामी सरगर्मियों से बाज़ आएं और गुमराह कुन प्रोपेगंडे को तर्क कर दें। लड़कियों की तालीमी, इज्तिमाई और तरबियती सरगर्मियों से मुंसलिक ज़िम्मादार अहबाब से इल्तिमास है कि वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का तक़्वा इख़्तियार करते हुए अपनी ज़िम्मादारियां पूरी करें, तरबियती और अख़्लाक़ी पहलूओं पर भरपूर तवज्जोह दें, मुख़र्रिब अख़्लाक़ फ़िल्मों, नीम उर्यां तसावीर की नुमाइश और हयासोज़ हरकतों का सख़्ती से सद्देबाब करें। यही चीज़ें हैं जो अख़्लाक़, शर्म व हया और ग़ैरत को मल्यामेट कर रही हैं। यहां हम औलियाए उमूर बाप और शौहर वग़ैरा को भी उनकी ज़िम्मादारियां याद दिलाना चाहते हैं कि मर्द औरतों पर क़व्वाम हैं, उन्हें चाहिये कि इस क़व्वामियत का हक़ अदा करें। अपनी औरतों और बेटियों को अज़ाबे इलाही से बचाएं। यह बात उनकी दीनी तालीम और इस्लामी तरबियत के बग़ैर मुम्किन नहीं। उन्हें अपनी ग़ैरत और शराफ़त का सौदा नहीं करना चाहिये, अपनी बेटियों की इज़्ज़त और पाकदामनी को दाग़दार होने से बचाना चाहिये, अक़्लमंद वह है जो दूसरों की कमज़ोरियों से सबक़ हासिल करे, इस वक़्त हमारा मुआशरा तबाही के जिस दहाने पर पहुंच चुका है उस बिगाड़ का बुन्यादी सबब ख़ानदानी निज़ाम का ख़लल है, रसूले अकरम सल्ल0 ने इंतिबाह फ़रमा दिया थाः

مَا تَرَكْتُ بَعْدِى فِتْنَةً هِىَ أَضَرُّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَآءِ۔

"मेरे बाद मर्दों के लिये जो सबसे ज़्यादा नुक़्सानदेह फ़ित्ना होगा वह औरतों का फ़ित्ना है।"[8]

आप सल्ल0 ने पूरी वज़ाहत से आगाह फ़रमाया थाः

فَاتَّقُوا الدُّنْيَا، وَاتَّقُوا النِّسَآءَ، فَإِنَّ أَوَّلَ فِتْنَةِ بَنِى إِسْرَائِيلَ كَانَتْ فِى النِّسَآءِ۔

"तुम डरो दुनिया से और औरतों से, बेशक बनी इस्राईल में फ़ित्ना की इब्तिदा औरतों ही से हुई।"[9]

फ़रमाने इलाही है:

يَآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ۔

"ऐ ईमान वालो! तुम ख़ुद को और अपने अहल व अयाल को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन लोग और पत्थर हैं, उस पर तुंद मिज़ाज और सख़्तगीर फ़रिशते (मुक़र्रर) हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे वह उसकी नाफ़रमानी नहीं करते और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।"[10]

अल्लाह तआला हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْحَكِيمِ الْعَلِيمِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ اِلَى الْعَالَمِينَ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِينَ، وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّينِ۔

أَمَّا بَعْدُ:

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो हिक्मत वाला और इल्म वाला है और में शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह बहुत ज़्यादा रहम करने वाला और निहायत मेहरबान है और मैं

गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और तमाम दुनिया के लिये उसके रसूल हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और तमाम अस्हाब पर और क़्यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

अल्लाह के बंदो और बंदियो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, सब मिलकर अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत को मज़बूती से थाम लो क्योंकि बेहतरीन रास्ता सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का बताया हुआ रास्ता है और सबसे बुरी चीज़ दीन में नए काम हैं।

बिरादराने इस्लाम! औरत का मस्ला इंतिहाई नाज़ुक और अहम है। इस पर निहायत संजीदगी से ग़ौर करने की ज़रूरत है क्योंकि दुशमनाने इस्लाम ने बड़ी चालाकी से इस मस्ले की शक्ल बिगाड़ने की कोशिश की है और इस्लामी नज़रियात के बारे में लोगों के दिल व दिमाग़ में शुकूक व शुबहात के कांटे उगाने की तहरीक चलाई है। आज एहतियात और हक़ीक़त पसंदी का मुज़ाहिरा करते हुए इस्लाम की पाकीज़ा तालीमात पेश करने की अशद्द ज़रूरत है ताकि दुनिया को मालूम हो सके कि वह हक़ पसंद लोग जो इस्लामी तालीमात से वाक़फ़ियत रखते हैं, वह अभी मौजूद हैं और अपने दीन से बड़ी अक़ीदत और मुहब्बत रखते हैं, उन्हीं पुर फ़रेब नअ़रों के ज़रीए गुमराह नहीं किया जा सकता, खुसूसन हम सरज़मीने हरमैन शरीफ़ैन के बाशिंदों को, जहां औरत निहायत पुरवक़ार ज़िंदगी बसर कर रही है, फ़ित्नों के तलातुम में वह यहां पुरसुकून तौर पर अपने फ़राइज़

अंजाम दे रही है। इसकी वजह से शरई हुदूद से वाक़फ़ियत और इस पर अमल है। यहां औरत हर क़िस्म की बेहयाई और बेपर्दगी से महफ़ूज़ है। वलिल लाहिल हम्द।

इस वक़्त में यह तंबीह करना चाहता हूं कि ख़्वातीन जब मसाजिद में आएं, खुसूसन हरमैन शरीफ़ैन में तो मुकम्मल इस्लामी आदाब का पूरा ख़्याल रखें। लिबास और पर्दे पर खुसूसी तवज्जोह दें। चेहरे समेत पूरे वजूद का पर्दा करें क्योंकि किताब व सुन्नत में इसकी ताकीद की गई है। औरतें मर्दों की भीड़ से दूर रहें, खुशबू, बनाव सिंगार और ज़ेवरात की नुमाइश से परहेज़ करें ताकि इन मुक़द्दस जगहों से पूरा पूरा सवाब हासिल कर सकें। मेरी गुज़ारिशात पर पूरी तरह अमल करें। ऐसा न हो कि मेरी गुज़ारिशात सदा बसहरा साबित हों।

إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۚ

"मैं कुछ नहीं चाहता सिवाए (तुम्हारी) इस्लाह के जहां तक मुझ से हो सके और मुझे (इसकी) तौफ़ीक़ मिलना अल्लाह की मदद के सिवा (मुम्किन) नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूं।"[11]

दरूद व सलाम पढ़िये रसूले रहमत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 पर जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी खुत्बा नम्बर 14

(1) अलमुल्क 67:14 (2) आल इम्रान 3:195 (3) अन्नह्ल 16:97 (4) अलहुज्रात 49:13 (5) सुनन अबी दाऊद, हदीस:4682, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस:1162 (6) अलअह्ज़ाब 33:33 (7) अलअह्ज़ाब 33:59 (8) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:5096, व सही मुस्लिम, हदीस: 2740 (9) सही मुस्लिम, हदीस:2742 (10) अत्तहरीम 66:6 (11) हूद 11:88

खुत्बा 15

तर्बियते औलाद
तरक़्क़ी याफ़्ता दौर का एक हस्सास मस्ला

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِينُهٗ، وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَسْتَهْدِيهِ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّآتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، شَهَادَةً أَدَّخِرُهَا لِيَوْمٍ كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيرًا، وَّأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهٗ، بَعَثَهٗ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ هَادِيًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا، وَّدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ، وَجَزَاهُ عَنْ أُمَّتِهٖ وَدَعْوَتِهٖ جَزَاءً وَّفِيرًا۔

أَمَّا بَعْد

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से मग़फ़िरत मांगते और उसी से हिदायत मांगते हैं और हम पनाह चाहते हैं अल्लाह की अपने नफ़्स की शरारतों और आमाल की बुराइयों से। जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, ऐसी शहादत जो रोज़े क़्यामत काम आ सके और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। अल्लाह ने आपको हादी, मुबश्शिर और नज़ीर बनाकर भेजा। आप अल्लाह के दीन के दाई और रौशन चिराग़ हैं, अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और अस्हाब पर और अल्लाह तआला आपको आपकी कोशिशों का बेहतर से बेहतर सिला अता फ़रमाए।"

खुत्बाते हरम

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! मैं ख़ुद अपने आपको और आप तमाम हज़रात को तक़्वा इख़्तियार करने की ताकीद करता हूं, आप अपने अहल व अयाल और मातहत लोगों के हक़ में अल्लाह से डरते रहें।

क्या आपने कभी ग़ौर किया कि क़ौमों के उरूज व ज़वाल और मुआशरे में इस्लाह और बिगाड़ का दारोमदार किन चीज़ों पर है? इस हस्सास मौज़ूअ़ को नज़र अंदाज़ करके अच्छी सोसाइटी की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती, यह ऐसा मौज़ूअ़ है जो सुलहाए उम्मत और दानिशवराने मिल्लत का अहम तरीन मस्ला रहा है, जो वालिदैन की आरज़ुओं का मह्वर और असातिज़ा की कोशिशों का मर्कज़ बल्कि हुक्मरानों की तवज्जोह का तालिब रहा है, जिस पर क़ौम व मिल्लत का ख़ज़ाना बेदरेग़ लुटाया जा सकता है क्योंकि अगर इस कसीर सरमाए से मतलूबा मक़्सद हासिल हो जाए तो यह सारी दुनिया उसके आगे हेच है। क्या आप जानते हैं किं वह मौज़ूअ़ जो हम सबकी सबसे ज़्यादा तवज्जोह का मुस्तहिक़ है वह क्या है? वह है तरबियत का मस्ला। यह एक अमानत है जो हमारे ज़िम्मे है, उसकी जवाबदही करनी होगी। तरबियते औलाद का मस्ला जिसके ज़रीए मुस्तक़बिल के होनहार मेअ़मार तैयार हों, यह बड़ी भारी ज़िम्मादारी है। इसका तअ़ल्लुक़ हमारे जिगर गोशों से है, इस अहम मस्ले में हर मुतअ़ल्लिक़ा इदारे और अफ़राद को अपना किर्दार अदा करना चाहिये क्योंकि हमारी कामियाबी और मुआशरे की तरक़्क़ी इसके बग़ैर मुम्किन नहीं, चुनांचे इसके लिये गहरी मंसूबा बंदी और जुह्दे मुसलसल ज़रूरी है, इस काम के लिये माहिरीने इल्म व फ़न की ख़िदमात की ज़रूरत है ताकि इन नौनिहालों का वक़्त तजरबात की भेंट न चढ़ जाए। किसी घिसे पिटे फ़रसूदा उस्लूब का कोई

फ़ाएदा नहीं होगा बल्कि कामियाब तजरबात की रौशनी में जुर्अतमंदाना इक्दाम की ज़रूरत है, अलबत्ता इतनी बात हर दम पेशे नज़र रहे कि हम मुसलमान हैं, हमें अपनी इस्लाम पसंदी और दीन से वाबस्तगी पर फ़ख़्र है, लिहाज़ा हमारा कोई कदम कुर्आन व सुन्नत की तालीमात से हट कर नहीं उठना चाहिये। तरबियत का मस्ला बड़ा अहम है क्योंकि मुअस्सिर और नतीजा ख़ेज़ तरबियत के बग़ैर रूहानी तरक्की और अख़्लाकी शराफ़त नसीब नहीं होती। अख़्लाकी फ़ज़ीलत के बग़ैर हमारी हैसियत बिल्कुल बेजान जिस्म, अंधी रूह और गूंगे ज़मीर जैसी होगी। भला बेजान काग़ज़ी ख़ाकों का क्या फ़ाएदा? जब क़ल्ब व दिमाग़ माउफ़ हो जाएं तो इस जिस्म से ख़ैर की क्या तवक्क़ो की जा सकती है। सिर्फ़ खाना पीना तो हमारा मस्ला नहीं, इसमें तो जानवर और परिंदे भी हमारे साथ हैं। महज़ ग़िज़ा और ख़्वाहिशाते नफ़्स की तकमील मोमिन की ख़ुसूसियत नहीं, इसमें तो कुफ़्फ़ार भी हमारे साथ शरीक हैं। हमें जो चीज़ दूसरों से मुम्ताज़ करती है वह हमारी अख़्लाकी क़द्रें और दीन से वाबस्तगी है। इसमें किसी क़िस्म की मुदाहनत न होने पाए। क्या आपने ग़ौर किया कि इस वक़्त इंसानी मुआशरा किन मसाइब और आलाम से दो चार है, किस किस क़िस्म की आज़माइश और आशूब से लोग गुज़र रहे हैं, दुनिया में जराइम की शरह किसी तेज़ी से बढ़ती जा रही है, यह सब कुछ क्यों? इसलिये कि इसकी बुन्यादी वजह तरबियत का फ़ुक़दान है, लोग न अल्लाह के हुकूक़ को पहचानते हैं, न बंदों के हुकूक़ से बाख़बर हैं और न ज़िंदगी का कोई वाज़ेह मक़्सद है जो उन्हें जानवरों और चौपायों से मुम्ताज़ करे। उनकी ज़िंदगी लहूव व लअ़ब से ज़्यादा कुछ नहीं, न उन्हें ख़ैर की तलाश है और न शर से नजात की फ़िक्र। इस सूरते हाल के ज़िम्मादार कौन हैं? किसको

मूरिद इल्ज़ाम ठहराया जाए? जबकि इसके संगीन नुक़्सानात सारी सोसाइटी को अपनी लपेट में ले चुके हैं। वालिदैन अपनी औलाद की आदात व अतवार से सख़्त परेशान हैं। बुज़ुर्गों के हुक़ूक़ की पामाली किसी से ढकी छिपी नहीं, क्या औलाद की गुस्ताख़ी और सरकशी के वाक़िआत हमारे मुर्दा ज़मीरों को झिंझोड़ने के लिये काफ़ी नहीं? क्या इन वाक़िआत से हमारे ज़िम्मादार हज़रात ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होंगे ताकि अच्छी तरबियत का फ़रीज़ा अंजाम दें। इस काम को मुअस्सिर और नतीजा ख़ेज़ बनाने के लिये वह तमाम वसाइल बरूएकार लाने होंगे जो इस मस्ले में मुमिद्द व मुआविन साबित हो सकते हैं, घर, ख़ानदान, वालिदैन, अक़रिबा, मदारिस, दर्सगाहें, मसाजिद, अंजुमनें और ज़राए अबलाग़ व नशरियात इन सबको अपना अपना रोल अदा करना होगा ताकि अख़्लाक़ व तहज़ीब की बात हर तरफ़ से हो और लड़के और लड़कियों की इस्लामी अक़्दार पर मुशतमिल आला खेप तैयार हो सके। इस्लाम ने रोज़े अव्वल से तरबियत के अमल पर इतना ज़ोर दिया है जिसका किसी और मज़हब और मुआशरे में तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, महज़ फ़लसफ़ियाना बातों औरत नज़रियाती उसूलों से तरबियत के अमली फ़ाएदे नामुम्किन हैं। इससे क़तअ़ नज़र कि मुख़ालिफ़ीने इस्लाम अपने नज़रियात को खूबसूरत अंदाज़ से पेश करने के लिये कितनी ही मुलम्मा साज़ी करें, क़ुर्आन व सुन्नत ने जो अमली तदाबीर बताई हैं उनसे बेहतर और नतीजाख़ेज़ कोई कोशिश नहीं हो सकती, बल्कि दीगर गोशों के नतीजे में तरबियते औलाद के नाप पर फूटी कोड़ी भी हाथ नहीं आती। जो खुद बुलंद अख़्लाक़ और पाकीज़ा किर्दार से ख़ाली हों भला वह नौजवानों को क्या दे सकते हैं। इस्लामी तालीमात का दरख़्त जो ठंडी छांव फ़राहम कर सकता है वह ग़ैरों की

ख़ारदार झाड़ियों से मुम्किन नहीं। इस्लाम ऐसी नस्ले इंसानी तैयार करता है जिससे इंसान अपने ख़ालिक को पहचान सके, यही तमाम कोशिशों की बुन्याद है। फिर जो शख़्स अपने रब को पहचान ले वह उसकी मख़्लूक तक उसका कलिमा पहुंचाने की कोशिश करेगा और इस कोशिश से पहले वह अपने अख़्लाक व किर्दार को कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में संवारेगा ताकि उसकी गुफ़्तार में किर्दार की महक आए।

बिरादराने इस्लाम! तरबियत के जो ज़रूरी अनासिर और मसाइल हैं, उनमें पहला मकाम खुद घर और ख़ानदान से शुरू होता है जहां इंसान की ज़िंदगी का कीमती वक्त बसर होता है, लिहाज़ा अच्छे घर के लिये एक साहिबे किर्दार ख़ातून का होना ज़रूरी है ताकि उसकी गोद में मुस्तकबिल परवान चढ़ सके क्योंकि मां की गोद और उसकी शफ़कत ही बच्चे को पहली बुन्याद फ़राहम करती है। मां एक मुरब्बिया है, मां एक मुअल्लिमा है और मां ही बच्चे की रूहानी और ज़ह्नी नशो व नुमा का ज़रीआ है। बाहर की दुनिया के माद्दी वसाइल की ज़रूरत बाद में पेश आती है, कुर्आन ने ताकीद फ़रमाई है:

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا۔

"ऐ ईमान वालो! तुम खुद को और अपने अह्ल व अयाल को आग से बचाओ।"(1)

उलमाए रब्बानी ने कहा है कि बच्चों को तालीम दो, उनकी तरबियत करो, उन्हें ऐसे आदाब सिखाओ जो अज़ाबे इलाही के आगे ढाल बन सकें।"(2)

यह एक ऐसी अमानत है जिसके मुतअ़ल्लिक बाज़पुर्स होने वाली है, रसूले अकरम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया:

كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَّكُلُّكُمْ مَّسْئُولٌ عَنْ رَّعِيَّتِهٖ۔

"तुम में से हर एक ज़िम्मादार है और हर एक से उसकी ज़िम्मादारी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।"[3]

एक बच्चा अपने वालिदैन से गोया ज़िंदगी का पहला सबक़ सीखता है, नौनिहाल के लिये मां बाप का किर्दार नमूना होता है, वह उनके अक़्वाल और अफ़आल को अपने लिये उस्वा बनाता है, रसूले अकरम सल्ल0 ने यहां तक फ़रमाया है:

كُلُّ مَوْلُودٍ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهٖ أَوْيُنَصِّرَانِهٖ أَوْيُمَجِّسَانِهٖ۔

"हर बच्चा फ़ितरत (इस्लाम) पर पैदा होता है, फिर उसके वालिदैन उसे यहूदी या नसरानी या मजूसी बना देते हैं।"[4]

आप सल्ल0 ने मज़ीद फ़रमाया:

مَا نَحَلَ وَالِدٌ وَّلَدَهٗ مِنْ نَّحْلٍ أَفْضَلَ مِنْ أَدَبٍ حَسَنٍ۔

"किसी वालिद ने अपने बच्चे को हुस्ने अदब से बढ़कर कोई तुहफ़ा नहीं दिया।"[5]

आप सल्ल0 ही ने इर्शाद फ़रमाया:

مُرُوا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِينَ، وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرِ سِنِينَ، وَفَرِّقُوا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ۔

"अपने बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो जब वह सात साल के हो जाएं और उन्हें उस (नमाज़ न पढ़ने) पर मारो जब वह दस साल के हो जाएं और उनके बिस्तर अलग अलग

कर दो।''(6)

यह हैं तरबियत के तरजीह पहलू एक मुस्लिम घराने के लिये जिसमें नौनिहाल अक़ीदे और आमाले सालिहा का सबक़ सीखना है लेकिन अगर वालिदैन की तरजीहात बदल जाएं और वह माद्दी चीज़ों को दीन पर तरजीह दें तो यह उनकी ग़लती होगी और उसके संगीन नुक़्सानात होंगे।

वालिदैन से मेरी गुज़ारिश है कि वह अपनी औलाद के बारे में अल्लाह से डरें, अपने किर्दार का बेहतर नमूना उनके सामने पेश करें, उनके कुलूब व अज़्हान में किताब व सुन्नत की मुहब्बत बिठाएं, उनके मसाइल सोच समझ कर निमटाएं, ग़ैर ज़रूरी सख़्ती और ढील दोनों नुक़्सानदेह हैं। उनकी मसरूफ़ियात पर नज़र रखें, उनकी आदात और बोलचाल पर तवज्जोह दें। बअ़ज़ कमज़ोरियों की बरवक़्त इस्लाह कर दी जाए तो आदत पुख़्ता नहीं होती वर्ना इंसान बचपन में किसी चीज़ का आदी हो जाए तो बाद में उसकी इस्लाह मुश्किल हो जाती है। उनकी ज़बान पर तवज्जोह रखें, गाली गलोच या झूट बोलने की लअ़नत उनके क़रीब भी न फटकने पाए। अगर मियां बीवी के दर्मियान शकर रंजी हो जाए तो औलाद को इसकी ख़बर न होने पाए वर्ना मां बाप के माबैन इख़्तिलाफ़ात का औलाद पर बहुत बुरा असर पड़ता है। वह लोग जो ख़ुद अपनी औलाद की तरबियत से ग़ाफ़िल होते हैं और बच्चों के उमूर मुलाज़िमीन के हवाले कर देते हैं, वह ग़लती पर हैं और उनका तरीक़ा अक़्ल और उसूले तरबियत के ख़िलाफ़ है क्योंकि कोई ख़ादिम या ख़ादिमा वालिदैन का बदल नहीं हो सकती। वालिदैन को बच्चों के दोस्तों और उनकी दिलचस्पियों पर भी नज़र रखनी चाहिये क्योंकि इन बातों का उन पर गहरा असर मुरत्तब होता है लेकिन निगरानी का अंदाज़ शफ़क़त व

मुहब्बत से लबरेज़ होना चाहिये ताकि ग़ैर ज़रूरी सख़्ती से बच्चे पर बुरे असरात मुरत्तब न हों। मुख़र्रिबे अख़्लाक़ और आदात बिगाड़ने वाली चीज़ें घर में दाख़िल न होने पाएं, आजकल ऐसी ही चीज़ों के ख़तरात ज़्यादा हैं। इन इंसानी तदबीरों के साथ साथ रूहानी तदबीरें भी ज़रूरी हैं। सबसे अहम चीज़ उनके हक़ में वालिदैन की दुआ है, अंबियाए किराम का उस्वा हमारे सामने होना चाहिये, हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलै० को देखिये और उनकी दुआओं पर ग़ौर कीजियेः

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ۔

"ऐ मेरे रब! मुझे (बेटा) अता फ़रमा जो सालिहीन में से हो।"[(7)]

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ۔

"ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को भी नमाज़ क़ाइम करने वाला बना।"[(8)]

हज़रत ज़करिया अलै० दुआ करते हुए बारगाहे रब्बानी में अर्ज़ करते हैंः

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً۔

"ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता कर।"[(9)]

औलाद अगर सालेह न हो तो फिर उसकी कोई वक़अत नहीं। हज़रत लुक़मान हकीम ने अपने बेटे को जो नसीहतें कीं, वह सूरए लुक़मान में पढ़िये। हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने नौजवानों की तरबियत का अपने क़ौल व अमल से आला तरीन नमूना क़ाइम फ़रमाया क्योंकि औलाद की तरबियत एक अमानत और ज़िम्मादारी है, इसमें सुस्ती और ग़फ़लत न होने पाए, बच्चों के बैठने उठने, सोने

जागने, खाने पीने और मस्जिद से दिलचस्पी वग़ैरा हर चीज़ पर तवज्जोह देने की ज़रूरत है। औलाद की तरबियत के लिये घर के बाद अहम जगह मदरसा है जहां बच्चे दिन का अक्सर हिस्सा गुज़ारते हैं, मदारिस उनके बनाने और बिगाड़ने में अहम किर्दार अदा कर सकते हैं। अगर उनसे वाबस्ता अफ़राद अपनी ज़िम्मादारियां बख़ूबी पूरी करें तो यह मदारिस मज़बूत क़िल्ओं का काम करेंगे। मुअल्लिमीन और मुअल्लिमात से मेरी गुज़ारिश है कि वह अपनी ज़िम्मादारियों को अमानत समझें, वालिदैन ने जो एतिमाद उन पर किया है उस पर पूरा उतरें। स्कूल और घर के दर्मियान राबता रखें ताकि तवज्जोह तलब मसाइल पर बरवक़्त कार्रवाई की जा सके। असातिज़ा को अपने अख़्लाक़ और सुलूक का आला नमूना पेश करना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि जिन चीज़ों से आप तालिबे इल्म को रोकना चाहते हैं, उन्ही बुराइयों में आप ख़ुद मुब्तला हों। यक़ीनन इल्म बग़ैर अदब और अख़्लाक़ के कोई क़ीमत नहीं रखता।

रहा मसाजिद का किर्दार तो उसकी एतिबार से बड़ी अहमियत है क्योंकि मसाजिद ईमान व अक़ीदे की पुख़्तगी और क़लब व दिमाग़ के इतमींनान का ज़रीआ हैं, जहां लोगों की दीनी प्यास बुझती है। वहां तिलावते क़ुर्आन, नमाज़ों का एहतिमाम, ज़िक्र व अज़्कार और दुआ व मुनाजात में लोग मसरूफ़ होते हैं, इसी लिये मुस्लिम सोसाइटी में मस्जिद का किर्दार निहायत अहम है।

रहा ज़राए अबलाग़ व नशरियात का मस्ला तो इस दौर में उसकी अहमियत से इंकार नहीं किया जा सकता न इससे मुरत्तब होने वाले दूर रस नताइज से ग़फ़लत बरती जा सकती है। इसके मुस्बत और मन्फ़ी दोनों असरात मुतवक़्क़ोअ़ हैं। इन वसाइल को मुफ़ीद और मुस्बत मक़ासिद के लिये इस्तेमाल होना चाहिये क्योंकि

यह घर घर पाए जाते हैं। इन वसाइल पर कड़ी नज़र रखनी चाहिये, क्योंकि हर अक्लमंद वाकिफ़ है कि इन वसाइल का आज़ादाना इस्तेमाल अख़्लाक़ व किर्दार को किस तरह तबाह करके रख देता है।

अल्लाह तआला हमें अपने बच्चों और बच्चियों की बेहतर तरबियत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ऐ हमारे रब! हमारे लिये हमारे बीवी बच्चों को आंखों की ठंडक का ज़रीआ बना दे। अल्लाह तआला हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ذِی الْمِنَنِ وَالْاٰلَاۗءِ وَالْعِزِّ وَالْعَظَمَةِ وَالْكِبْرِيَاۗءِ، اَلْمُسْتَحِقِّ لِأَعْظَمِ الشُّكْرِ، وَأَجْزَلِ الثَّنَاۗءِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ الْمُنَزَّهُ عَنِ الْأَنْدَادِ وَالنُّظَرَاۗءِ، وَالْأَمْثَالِ وَالشُّرَكَاۗءِ، أَوْجَبَ عَلَى الْأُمَّهَاتِ وَالْاٰبَاۗءِ، حُسْنَ تَرْبِيَةِ الْبَنَاتِ وَالْأَبْنَاءِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ، إِمَامُ الْحُنَفَاۗءِ، وَقَائِدُ الْأَصْفِيَاۗءِ، وَأَفْضَلُ مَنْ قَامَ بِالتَّرْبِيَةِ وَالْإِصْلَاحِ وَالْبِنَاۗءِ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الْأَوْفِيَاۗءِ، وَصَحْبِهِ الْأَتْقِيَاۗءِ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ، مَّا دَامَتِ الْأَرْضُ وَالسَّمَاۗءُ۔ أَمَّا بَعْدُ

"हर किस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो एहसानात व इन्आमात करने वाला और इज़्ज़त, अज़्मत और किब्रियाई वाला है। वह हर तरह के शुक्रिये का मुस्तहिक़ और सना का अह्ल है। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, वह हर तरह के शिर्क से पाक है, उसने

वालिदैन पर ज़िम्मादारी डाली है कि वह औलाद की बेहतर तरबियत करें और मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप मुख़्लिसीन के पेशवा और मुस्लिहीन के क़ाइद हैं और आप ही ने तरबियत के बेहतरीन उसूल बताए। अल्लाह की रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और अस्हाबे किराम पर और क़्यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

मुहतरम भाइयो! अल्लाह से डरो। उसने तरबियते औलाद की जो ज़िम्मादारी हम पर आइद की है उसे अंजाम दो। जो तुम्हारे मातहत हैं उनकी फ़िक्र करो, ख़ुसूसन उस वक़्त जबकि हम तरबियत की अहमियत और इफ़ादियत से वाक़िफ़ हो चुके हैं। इस वक़्त मुआशरा जिन परेशानियों का शिकार है उनका सबब मालूम किया जाए तो पता चलेगा कि अगर हम कल अपनी ज़िम्मादारियां मुनासिब तरीक़े से अंजाम देते तो आज यक़ीनन बहुत सी ख़राबियों से बच जाते। तरबियत के मस्ले में एक अहम बात औरत की तरबियत है, चाहे बेटी की शक्ल में हो या बहन के रूप में या बीवी की सूरत में, ग़र्ज़ औरतों की तरबियत निहायत अहम है क्योंकि दुनिया की ज़बूं हाली का इलाज इसी अमल में है। बच्चियों की तरबियत पर तवज्जोह दो, फ़ज़ीलत और अज्र व सवाब हासिल करने का बड़ा ज़रीआ बेटियां ही हैं।

शाइर ने कहाः

اَلْاُمُّ مَدْرَسَةٌ اِذَا اَعْدَدْتَهَا

أَعْدَدْتَ شَعْبًا طَيِّبَ الْأَعْرَاقِ

اَلْأُمُّ رَوْضٌ إِنْ تَعَهَّدَهُ الْحَيَا

بِالرِّيِّ أَوْرَقَ أَيَّمَا إِيرَاقِ

اَلْأُمُّ أُسْتَاذُ الْاَسَاتِذَةِ الْأُلٰى

شَغَلَتْ مَآثِرُهُمْ مَدَى الْآفَاقِ

"मां एक मदरसे की तरह है, अगर उसे सही तौर पर तैयार किया जाए तो गोया आप ने एक नस्ल तैयार कर दी। मां एक खेती है, उसे भले तरीके से सींच कर एक बेहतरीन फ़स्ल काटी जा सकती है। मां असातिज़ा की मुअल्लिमा है जिसकी गोद में एक मुस्तक़बिल परवान चढ़ता है।"(10)

मुआशरे की तबाही और अख़्लाक़ी मुफ़लिसी का एक सबब तरबियते निस्वां में हमारी कोताही है, मौजूदा बेपर्दगी, उर्यानियत और बेहयाई की वबा इसी लिये फैल गई है कि औरत के ज़ह्न से यह बात निकाली जा रही है कि शर्म व हया उसका ज़ेवर है। काश! ज़िम्मादार बुज़ुर्ग इस मस्ले पर तवज्जो दें और बेटियों को उनकी अस्ल ज़िम्मादारियों का सबक़ सिखाएं।

जान लो कि यह बहुत संगीन ग़लती है कि औरत की हर ख़्वाहिश और मुतालबे की तकमील की कोशिश की जाए, यह तहक़ीक़ ज़रूर करनी चाहिये कि इस मुतालबे में क्या चीज़ सही है और क्या ग़लत है? इसमें हलाल क्या है? और हराम क्या है? चाहे यह मुतालबा लिबास के बारे में हो या किसी और चीज़ के लिये। बअ़ज़ लोग इसमें इतनी ग़फ़लत बरतते हैं कि वह उनके मुतालबे पर कोई सवाल करना ही मुनासिब नहीं समझते। वह ख़ातून की हर

ख़्वाहिश पूरी करना ज़रूरी समझते हैं, ग़लत क़िस्म की तसावीर बनाना, नीम बरहना लिबास वग़ैरा, फिर इन तसावीर की खुले आम नुमाइश। इन मुख़र्रिबे अख़लाक़ वाहियात बातों का जो नतीजा निकलेगा, वह शाइर के अलफ़ाज़ में यह होगाः

أَلْقَاهُ فِي الْيَمِّ مَكْتُوفًا وَّقَالَ لَهُ
إِيَّاكَ إِيَّاكَ أَنْ تَبْتَلَّ بِالْمَاءِ!

"तुमने हाथ बांध कर समंदर में फैंक दिया, अब चिल्ला रहे हो कि ख़बरदार! कहीं पानी तुम्हें गीला न कर दे।"

अगर हर शख़्स अपने अपने दाएरए अमल में अपनी ज़िम्मादारी निभाए तो एक सालेह मुआशरा वजूद में आ सकता है। इंशा अल्लाह।

दरूद व सलाम पढ़िये मुअ़ल्लिमे बशरीयत और क़ाइदे इंसानियत रसूले रहमत पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 15

(1) अत्तहरीम 66:6 (2) ज़ादुल मसीर लिइब्नुल जौज़ीः312/8, व तफ़सीर इब्ने कसीरः167/8 (3) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः893, व सही मुस्लिम, हदीसः1829 (4) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः1385, व सही मुस्लिम, हदीसः2658 (5) जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीसः1952, व मुस्नद अहमदः412/3, वलमुस्तदरक लिलहाकिमः263/4 (6) सुनन अबी दाऊद, हदीसः495, व मुस्नद अहमदः180/2, वलमुस्तदरक लिलहाकिमः197/1 (7) अस्साफ़्फ़ात 37:100 (8) इब्राहीम 14:40 (9) आले इम्रान 38:3 (10) अशआर अज़ दीवान हाफ़िज़ इब्राहीमः1/230

ख़ुत्बा 16

मुसलमानों की हालते ज़ार और मस्जिदे अक़्सा की पुकार

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ، الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ، أَحْمَدُهٗ تَعَالٰى عَلٰى نِعَمِهِ الْغِزَارِ، وَأَشْكُرُهٗ سُبْحَانَهٗ عَلٰى فَضْلِهِ الْمِدْرَارِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهُ الْمَلِكُ الْجَبَّارُ، لَهُ الْخَلْقُ كُلُّهٗ، وَلَهُ الْأَمْرُ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا وَحَبِيبَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُهُ الْمُصْطَفَى الْمُخْتَارُ، فَهُوَ خِيَارٌ مِّنْ خِيَارٍ مِّنْ خِيَارٍ ﷺ، وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهِ الْأَبْرَارِ، اَلْمُهَاجِرِينَ مِنْهُمْ وَالْأَنْصَارِ، وَالتَّابِعِينَ الْأَخْيَارِ، اَلَّذِينَ لَزِمُوا السُّنَّةَ وَالْآثَارَ، صَلَاةً وَّسَلَامًا تَامَّيْنِ كَامِلَيْنِ مُتَعَاقِبَيْنِ مَا تَعَاقَبَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ، وَنَسْأَلُ اللّٰهَ أَنْ نَّكُونَ مِمَّنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ، فَرَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ، وَرَضُوا عَنْهُ، وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो अकेला और ज़बरदस्त है, वह अज़ीज़ और ग़फ़्फ़ार है। मैं उसी की तारीफ़ करता हूं, उसकी बेपायां नेअ़मतों और उसके अनगिनत एहसानात का शुक्र अदा करता हूं। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। वही मालिक और ज़बरदस्त है। सारी मख़्लूक़ उसी की है। हर चीज़ पर उसी का हुक्म चलता है। उसने हर चीज़ दुरुस्त अंदाज़े से बनाई और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप निहायत बरगुज़ीदा हैं और बहुत बुलंद मर्तबे वाले हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और मुहाजिरीन व अंसार सहाबए किराम पर और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो आप की इत्तिबा करें। अल्लाह उन सबसे राज़ी हो और उन्हें अपनी नेअ़मतों से सरफ़राज़ फ़रमाए।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, वही अल्लाह की नुसरत और मदद का ज़रीआ है और इसी में हमारी कामियाबी का राज़ मुज़्मर है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को क़्यामत तक के तमाम इंसानों को बेहतरीन दीन देने और सच्चा रास्ता दिखाने के लिये बशीर और नज़ीर बना कर भेजा, आप सल्ल0 ने रिसालत की ज़िम्मादारियों को कामिल अहसान अंदाज़ में निभाया, अमानत का हक़ अदा किया और उम्मत के साथ मुकम्मल भलाई और ख़ैरख़्वाही का मुआमला किया। आप की तशरीफ़ आवरी से पहले दुनिया तारीकियों में भटक रही थी, आपने इंसानों को रौशनी दिखाई और आपकी नूरानी तालीम से सारी दुनिया जगमगा उठी। इस अज़ीमुश्शान मक़्सद की कामियाबी के लिये अल्लाह ने आप सल्ल0 को बेहतरीन सहाबए किराम की जमाअत अता की। इन बुज़ुर्गों ने आप सल्ल0 की दोस्ती का हक़ अदा किया और शरीअत को दूर दूर तक पहुंचाया, रसूले अकरम सल्ल0 के बाद हक़ की आवाज़ हर तरफ़ फैलाई, दावत और जिहाद का अलम बुलंद किया। अल्लाह ने उन्हें ज़बरदस्त कामियाबी अता फ़रमाई और मशरिक़ व मग़रिब और शिमाल व जुनूब में हर तरफ़ फ़तूहाते बलाद से नवाज़ा। उनके क़दम जहां जहां पड़े शिर्क और बुतपरस्ती का ख़ातमा हुआ। इस दीन और इसके साथ इख़्लास के बाइस अल्लाह तआला ने इन ऊंटों के चरवाहों को इंसानियत का क़ाइद और रखवाला बना दिया। उन्होंने कुर्रहए अर्ज़ से ज़ुल्म का ख़ातमा किया, इंसाफ़ को आम किया, अद्ल व इंसाफ़ और हुकूमत के ऐसे नुक़ूश छोड़े कि इसकी नज़ीर चश्मे फ़लक ने कभी न देखी लेकिन कितने क़लक़ की बात है कि

यह सुनहरा दौर इब्तिदाई तीन सदियों तक जारी रहा, फिर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फ़ित्नों ने जनम लिया, हवाए नफ़सानी और ज़ाती अग़राज़ की कसरत से उनकी सफ़ों में इंतिशार फैल गया। उनमें गिरोह बंदियों और फ़िर्क़ा वारियत ने सर उठाया, फिर वह मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों और गिरोहों में बट गए। इस तरह उन्होंने खुद आपस में एक दूसरे के टुक्ड़े टुक्ड़े कर दिये।

كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ۔

"और हर गिरोह जो कुछ उसके पास है उसी पर इतरा रहा है।"[1]

फिर इख़्तिलाफ़ात शदीद तर होते गए, अनानियत और खुदपसंदी ने मज़ीद हवा दी, लोगों ने अपने क़द बुलंद करने के लिये अपने असल मक़्सद को पीछे धकेलना शुरू किया, असल मिशन से तवज्जोह हट गई, फिर दुश्मनों के दिल से उनका रोअ़ब ख़त्म हो गया, उन्हें मुख़्तलिफ़ महाज़ों पर पस्पाई होने लगी। यह और बात है कि अल्लाह का दीन हमारा मुहताज नहीं, वह हर सूरत में फैल कर रहेगा, फ़रमाने बारी तआला है:

وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔

"और अल्लाह इंकार करता है मगर यह कि अपना नूर पूरा करे, ख़्वाह काफ़िरों को बुरा ही लगेगा।"[2]

जहां तक हमारी हालत है, वह सब पर अयां है। हमारे इख़्तिलाफ़ात और दीन से बेज़ारी के संगीन असरात हर मैदान में देखे जा सकते हैं। अक़ाइए व आमाल, अफ़कार व ख़्यालात और अमाकिने मुक़द्दसा हर जगह मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की दरअंदाज़ी हो रही है। हमारे ख़िलाफ़ उनकी रीशादानियां बढ़ रही हैं। मुख़्तलिफ़

बहानों से शआइरे इस्लामी के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा हो रहा है। नतीजे में हमने अस्लाफ़ की मीरास गंवा दी है, अहकामे दीन को खो दिया है। जिन इलाक़ों को हमारे अस्लाफ़े किराम ने अपनी मेहनते शाक़्क़ा से हासिल किया, वह हमने तनपरवरी और इस्लाम बेज़ारी के बाइस गंवा दिये, फिर जिनके बुज़ुर्गों ने ज़मीन में दीने हक़, अमन व अमान और अद्ल व इंसाफ़ की आबयारी की, आज उनकी नस्लें अपनी इज़्ज़त की भीक मांग रही हैं, आज उन्हें उनके इलाक़ों के माल व दौलत से महरूम हत्ता कि उनके मुक़द्दस मक़ामात से बेदख़ल किया जा रहा है, वह दरबदर की ठोकरें खा रहे हैं और फिर ज़माने और ज़िंदगी की सितम ज़रीफ़ी देखिये कि हमारे इन रिस्ते हुए ज़ख़्मों पर मरहम रखने के बजाए अक़वामे आलम नमक पाशी कर रही हैं, अद्ल व इंसाफ़ के पैमाने बदल गए हैं, ज़ालिम को मज़लूम और ग़मख़्वार को ग़मनह्वार के रूप में पेश किया जा रहा है और आलमी इदारे मुसलमानों के हुक़ूक़ से गोया अपनी आखें बंद किये बैठे हैं। तो मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की दासताने अलम है लेकिन खुद हम क्या कर रहे हैं? यह बात अक़वामे आलम और बैनुल अक़्वामी इदारों के किर्दार से ज़्यादा अलमअंगेज़ है, यअ़नी एक तरफ़ तो दुशमनाने इस्लाम की हमारे ख़िलाफ़ यह कारस्तानियां ज़ोर व शोर से जारी हैं और दूसरी तरफ़ हमारी बेहिसी का आलम यह है कि हम आपस ही में दस्त व गिरेबान हैं और एक दूसरे को निचा दिखाने में सरगर्दां हैं, हमारी तवानाइयां एक दूसरे को ज़लील करने में सर्फ़ हो रही हैं। जो अस्लहा मज़लूम के तहफ़्फ़ुज़ का ज़रीआ बनना चाहिये अब उसकी ज़द में खुद हमारे ही भाई का सीना है। अल्लाह हम पर रहम फ़रमाए।

बिरादराने अज़ीज़! नक़्शए आलम पर फैले हमारे मुख़्तलिफ़

मसाइल से एक अहम मस्ला मस्जिदे अक़्सा का मुआमला है जो क़िब्लए अव्वल है, जो इस्लाम की तीन मुक़द्दस मसाजिद में से एक है। इस वक़्त वहां मुसलमानों के साथ जो कुछ हो रहा है, दुनिया इसकी चश्मदीद गवाह है। हर चंद सहीवनी लोग दुनिया की आंखों में धूल झोंकने की कितनी कोशिश करें, सहीवनियों की तारीख़ मक्र व फ़रेब, चालाकी व सफ़्फ़ाकी और जारिहियत से भरी पड़ी है।

बोसनिया के मुसलमानों के साथ जो कुछ सर्बी दरिंदों ने किया, वह किससे पोशीदा है? बोसनिया, बिलख़ुसूस सराइवो और सरबरीनीका के मुसलमानों और उनकी मसाजिद व मदारिस के साथ ईसाइयत के परस्तारों ने जो वहशियाना सुलूक किया, दुनिया उसका तमाशा देख रही है, सोमालिया पर जो क़्यामत टूटी उससे कौन वाक़िफ़ नहीं! सोमालिया के ग़रीब मुसलमान अपने ही मुल्क में अम्न व सलामती के लिये परेशान हैं। अफ़ग़ानिस्तान की जो सूरते हाल है उसे देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कौन किसका दुश्मन है? किसी की गोली का कौन निशाना बन रहा है? कौन किस का सीना छलनी कर रहा है? इस अलमिये पर ग़ौर कीजिये। इसके अस्बाब का गहराई से जाइज़ा लीजिये, अफ़ग़ान बाशिंदों की जुर्अत और बहादुरी को देखिये कि उन्होंने वक़्त की अज़ीम ताक़त कम्यूनिस्ट सोवियत रूस से मुक़ाबला करके हैरत अंगेज़ कामियाबी हासिल की जिससे तमाम मुसलमानों के सर फ़ख़्र से बुलंद हो गए। उन्हें अपनी कुर्बानी का, जो उन्होंने माल व दौलत और अफ़राद की शक्ल में दी थी, नतीजा दिखाई दिया तो उन्हें इस राह में दी जाने वाली अपनी कुर्बानियां कारगर दिखाई दे रही थीं। अचानक जीती हुई जंग का नक़्शा बदला, मुजाहिदीन की गोलियों का निशाना ख़ुद मुजाहिदीन बनने लगे बल्कि ऐसी तबाहकुन ख़ूंरेज़ी हुई और हो रही है जो थमने

का नाम ही नहीं लेती। उन्हें चाहिये था कि अपने इख़्तिलाफ़ात का क़ाबिले अमल हल ढूंढते, आपस में बैठ कर मस्ले सुलझाते और इस्लामी शरीअ़त को बतौर क़ानून नाफ़िज़ करते लेकिन उन्होंने उन खुफ़िया हाथों को नहीं पहचाना जो उन्हें लड़ाकर अपने मज़मूम मक़ासिद हासिल करना चाहते हैं। उन्होंने मुल्क को बर्बाद किया, उसका अमन ताराज किया और लोगों को कंगाल कर डाला। हम अफ़ग़ानिस्तान भाइयों से गुज़ारिश करते हैं कि आप उम्मते मुस्लिमा की उन उम्मीदों पर जो आप से वाबस्ता की गई थीं, पानी न फेरें, इस्लाम की लाज रख लें, अक़ीदए तौहीद बारी तआला की अज़मत को तसलीम करते हुए अपनी अना और शख़्सियत परस्ती से बाज़ आएं, क़ौमी फ़ाएदों को ज़ाती मफ़ादात पर तर्जीह दें, अपने उहदों और मंसब की ख़ातिर क़ौम व मिल्लत का सौदा न करें, अपनी सफ़ों में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ पैदा करें।

शाइर कहता है:

عَلٰى بِلَادٍ مِّنَ الْإِسْلَامِ خَاوِيَةٍ

قَدْ أَقْفَرَتْ وَلَهَا بِالْكُفْرِ عُمْرَانُ!

حَتّى الْمَآذِنُ تَبْكِى وَهِىَ جَامِدَةٌ

حَتّى الْمَنَابِرُ تَرْثِى وَهِىَ عِيدَانُ!

كَمْ يَسْتَغِيثُ بِنَا الْمُسْتَضْعَفُونَ وَهُمْ

قَتْلٰى وَأَسْرٰى فَمَا يَهْتَزُّ إِنْسَانُ!

لِمِثْلِ هٰذَا يَذُوبُ الْقَلْبُ مِنْ كَمَدٍ

إِنْ كَانَ فِى الْقَلْبِ إِسْلَامٌ وَّإِيمَانُ

"आलमे इस्लाम का हाल कटे हुए दरख़्त के तने की तरह

है जिस पर कुफ़्र का ग़ल्बा है, उनकी मसाजिद के मीनार मर्सिया ख़्वां हैं और उनके बोसीदा मिंबर शिक्वा कुनां हैं। बहुत से कमज़ोर फ़रयादी हम से मदद तलब करते हैं जिनमें से बअ़ज़ को क़त्ल किया जा चुका और बअ़ज़ को क़ैदी बना लिया गया लेकिन कोई इंसान ज़ालिम कुव्वतों से निपटने के लिये तैयार नहीं। यह वह सूरते हाल है जिस पर इंसान का दिल पिघल जाए बशर्ते कि दिल में इस्लाम और ईमान का नूर हो।"(5)

मुसलमान हुक्मरानों को चाहिये कि वह अपने ज़िम्मादारियों को महसूस करें। अल्लाह तआला ने उन्हें इक़्तिदार से नवाज़ा ताकि अद्ल व इंसाफ़ को आम करें, ज़ुल्म का ख़ातमा करें, शरई क़वानीन नाफ़िज़ करें और उम्मते मुस्लिमा के मसाइल हल करने में अपना किर्दार अदा करें।

उलमाए किराम जो वारिसीने अंबियाए किराम हैं, जिन्हें हक़ बात के एलान व इज़्हार की ताकीद की गई है, वह कितमाने हक़ के मुज्रिम न बनें, वह अल्लाह तआला के सामने जवाबदही का एहसास पैदा करें, अपने फ़राइज़ अदा करने में किसी तरह की मुदाहनत न करें, नसीहत करने की ज़िम्मादारी पूरी करें, ख़ैर ख़्वाही करें अल्लाह के दीन से, उसकी किताब से और उसके रसूल सल्ल0 और मुसलमान अइम्मा और अवाम के साथ।

दाइयाने दीन को चाहिये कि मन्हजे सलफ़े सालिहीन को समझें और उसके मुताबिक़ दावती फ़राइज़ अंजाम दें, दावते दीन का परचम बुलंद करने के लिये गिरोहबंदी, फ़िर्क़ा वारियत और ज़ातियात को तर्क करें, ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में एक दूसरे के हमदर्द बनें और हुक्मरानों के साथ ख़ैर और भलाई को आम करने में तआवुन

करें वर्ना उनकी नाफ़रमानी बदतरीन नताइज का सबब बनेगी। अलहम्दु लिल्लाह! इस मुल्क का इम्तियाज़ है कि यहां कि हुक्मरानों और उलमा ने मुसलमानों की फ़लाह व बह्बूद में नुमायां किर्दार अदा किया है। यह किसी पर एहसान नहीं बल्कि हम समझते हैं कि यह हमारी ज़िम्मादारी है जो हम अंजाम दे रहे हैं लेकिन इसमें कामियाबी के लिये ज़रूरी है कि हम ख़ैर के कामों में एक दूसरे के हमदर्द और मददगार बनें और शर की रोकथाम की कोशिश करें।

उम्मते मुस्लिमा जिन हालात से दो चार है उनसे उहदा बर्आ होने और अपनी अज़्मते रफ़्ता को हासिल करने के लिये ज़रूरी है कि हम लफ़्फ़ाज़ी और बयानबाज़ी से बुलंद होकर अमली इक़्दामात करें। यह तमाम मुसलमानों की अहम ज़िम्मादारी है, हर शख़्स अपनी ज़िम्मादारी महसूर करे, अपने ईमान को मज़बूत करे, तालीमी मैदानों में तरक़्क़ी करे, अक़्लमंदी और हिक्मत का मुज़ाहिरा करे ताकि वादए रब्बानी पूरा हो क्योंकि अल्लाह का वादा, जो उसने हामिलीने दीने इस्लाम से किया है, पूरा होकर रहेगा, शब तारीक से सुब्ह रौशन नमूदार होकर रहेगी, इंशा अल्लाह। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ۔

"जो तुम में से ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में ज़रूर ख़िलाफ़त देगा, जैसे उसने उनसे पहले लोगों को

ख़िलाफ़त दी थी और उनके लिये ज़रूर उनका वह दीन मुहकम व पाएदार कर देगा जो उसने उनके लिये चुना और यक़ीनन उनकी हालते ख़ौफ़ को बदल कर वह ज़रूर उन्हें अमन देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी शै को शरीक नहीं ठहराएंगे और जो कोई इसके बाद कुफ़्र करे तो वही लोग फ़ासिक़ हैं।"[4]

शाइर कहता है:

وَلَـرُبَّ ضَـائِـقَةٍ يَّـضِيـقُ بِهَـا الْـفَتٰـى
ذَرْعًـا، وَّعِـنْـدَ الـلّٰـهِ مِنْهَا الْمَخْـرَجُ
ضَـاقَـتْ فَلَمَّـا اسْتَحْكَمَـتْ حَلَقَاتُهَا
فُـرِجَـتْ، وَكُـنْـتُ أَظُـنُّهَـا لَا تُـفْـرَجُ

"बहुत से तंग व तारीक मक़ामात से, जहां उम्मीदें जवाब दे जाती हैं और मायूसियां डेरे डाल लेती हैं, अल्लाह तआला निकलने की राह पैदा कर देता है।"[5]

अल्लाह हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، بَارَكَ حَوْلَ الْمَسْجِدِ الْأَقْصٰى، وَأَقْصٰى مَنْ أَعْرَضَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَاسْتَقْصٰى، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، أَمَرَنَا بِالتَّمَسُّكِ بِالدِّيْنِ وَأَوْصٰى، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهُ، بَلَّغَ رِسَالَةَ رَبِّهِ فَمَا ضَلَّ وَلَا اسْتَعْصٰى، صَلَّى اللّٰهُ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى مَنْ تَبِعَ مِلَّتَهُ وَتَمَسَّكَ بِسُنَّتِهِ وَاسْتَوْصٰى، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह के लिये है जिसने मस्जिदे अक़्सा के अतराफ़ के इलाक़े को बाबरकत बनाया और जिसने अल्लाह की बंदगी से मुंह मोड़ा वह उसके दरबार से दूर हुआ। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने अपने दीन को मज़बूती से पकड़ने का हुक्म दिया और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप सल्ल0 ने रब के पैग़ाम को बिला कम व कास्त दूसरों तक पहुंचाया। अल्लाह की रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल0 पर और क़्यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो आप सल्ल0 की इत्तिबा करें।"

हम्द व सलात के बाद:

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि सबसे सच्ची किताब, अल्लाह की किताब है, बेहतरीन रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का रास्ता है और सबसे बुरी बात यह है कि दीन में

नई बात पैदा की जाए, हर नई बात बिद्अत है और बिद्अत गुमराही है।

बिरादराने इस्लाम! मस्जिदे अक्सा के बारे में यह बात हर एक के ज़हन में होनी चाहिये कि यह ख़ालिस इस्लामी मस्ला है, इस पर कोई खुफ़िया समझौता कभी नहीं हो सकता, न कोई इस हक़े इस्लामी से दस्तबरदार हो सकता है। मस्जिदे अक्सा का मुआमला मुसलमानों के अहम तरीन मसाइल में से एक है, मस्जिदे अक्सा इस्लाम की तीन मुक़द्दस मसाजिद में से एक है, मस्जिदे अक्सा मुसलमानों को पहला क़िब्ला है, मस्जिदे अक्सा सफ़रे मेअ़राज का स्टेशन है लेकिन अफ़सोस! इस वक़्त वहां जो हालात हैं उन्हें देखकर कलेजा मुंह को आने लगता है और दिल पारा पारा हो जाता है कि किस जुर्अत और बेबाकी से बंदरों और ख़िन्ज़ीरों के भाई बंद इसको मुन्हदिम करना चाहते हैं ताकि वहां बजुअ़मे खुद हैकल तामीर कर सकें। अल्लाह महफ़ूज़ रखे। इस हालत में जब कि मुख़ालिफ़ीन के यह नापाक अज़ाइम हैं दूसरी तरफ़ इंतिफ़ाज़ए इस्लामी से वाबस्ता हमारे भाई एक नए जोश और वलवले के साथ मस्जिदे अक्सा के दिफ़ाअ़ के लिये उठ खड़े हुए हैं। तमाम मुसलमानों की ज़िम्मादारी है कि उनके शाना बशाना खड़े हों और उनसे हर तरह का तआ़वुन करें ताकि वादए हक़ पूरा हो।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

"और यह अल्लाह पर कुछ मुश्किल नहीं।"[6]

दरूद व सलाम पढ़िये साहिबे इस्रा व मेअ़राज रसूले मुअ़ज़्ज़म पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी नम्बर 16

(1) अलमोमिनून 23:53 (2) अत्तौबा 9:32 (3) यह अबुल बक़ा अलरंदी अलउंदलुसी अलमुतवफ़्फ़ा 798 हि० के अशआर का तर्जुमा है, बहवाला नफ़्हुल तय्यब लिलमुक़री:2/194 (4) अन्नूर 24:55 (5) यह इमाम शाफ़ई रह० की तरफ़ मंसूब अशआर का तर्जुमा है। दीवाने शाफ़ई, स० 32 (6) इब्राहीम 14:20 व फ़ातिर 35:17

खुत्बा 17

तौबा राहे नजात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِہٖ وَیَعْفُو عَنِ السَّیِّآتِ، نَحْمَدُہٗ تَعَالٰی وَنَشْکُرُہٗ، وَنَتُوبُ اِلَیْهِ وَنَسْتَغْفِرُہٗ، وَنَعُوذُ بِہٖ مِنَ الشُّرُورِ وَالْخَطِیئَاتِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیكَ لَہٗ، غَفَّارُ الذُّنُوبِ، وَسَتَّارُ الْعُیُوبِ، وَقَابِلُ التَّوْبَةِ مِمَّنْ یَّتُوبُ، فَسُبْحَانَہٗ مِنْ اِلٰهٍ کَرِیمٍ تَوَّابٍ، یُّحِبُّ مِنْ عِبَادِہٖ کُلَّ مُتَطَهِّرٍ أَوَّابٍ، وَّأَشْهَدُ أَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُولُہٗ، وَمُصْطَفَاہُ وَخَلِیلُہٗ، سَیِّدُ الْمُسْتَغْفِرِینَ وَالتَّائِبِیْنَ، وَخَاتَمُ الْأَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِینَ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَیْهِ وَعَلٰی آلِهٖ وَصَحْبِهِ الطَّیِّبِینَ الطَّاهِرِینَ، وَعَلٰی أَزْوَاجِهٖ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِینَ، وَعَلَی التَّابِعِینَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰی یَوْمِ الدِّینِ۔ أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल करता है और ग़लतियां मुआफ़ फ़रमाता है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं और उसी का शुक्र अदा करते हैं, उसी के हुज़ूर तौबा करते हैं और उसी से मग़फ़िरत तलब करते हैं और उसी से पनाह मांगते हैं अपने नफ़्स की बुराइयों और ग़लत आमाल से। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। वह गुनाहों को मुआफ़ करने वाला है, उयूब की पर्दा पोशी करने वाला है, तौबा क़बूल करने वाला है, वह पाक है, वह करीम और तव्वाब है, तौबा करने वाले बंदों को पसंद करता है और मैं गवाही देता हूं कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप अल्लाह के महबूब और ख़लील हैं, आप सय्यदुल मुस्तग़फ़िरीन और ख़ातिमुल अंबिया हैं। अल्लाह की बेशुमार रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल, अज़वाजे उम्माहातुल मोमिनीन पर और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो आप सल्ल० की इत्तिबा करें।"

हम्द व सलात के बादः

बिरादराने इस्लाम! अल्लाह से डरो, उसकी बारगाह में तौबा करो, उससे मग़फ़िरत तलब करते रहो और जान लो कि नफ़्स की बुराइयों में से एक बुराई ग़फ़लत और बेपरवाई है। जब दिल सख़्त हो जाता है तो इंसान बेहिस हो जाता है, गुनाह पर गुनाह करने के बावजूद उसे कोई एहसासे ज़ियां नहीं होता, ज़मीर में ख़लिश तक नहीं होती। इस अफ़सोसनाक सूरते हाल से निकालने का एक तरीक़ा तर्के मआसी है क्योंकि जब आदमी गुनाह करने लगता है तो उसके दिल पर ज़ंग और ज़मीर पर पर्दा छा जाता है, वह जिस क़दर गुनाहों में मुलव्विस होगा उतना ही उसका ज़मीर बेहिस और मुर्दा हो जाएगा। इससे नजात का बेहतरीन तरीक़ा तर्के मआसी है और तौबा की असास भी यही तर्के मआसी है। यूं तो गुनाह हर इंसान से सरज़द होता है मगर अक़्लमंद आदमी वह है जो गुनाह के बाद तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करे। तौबा व इस्तिग़फ़ार एक क़िला है, तौबा के क़िले में महफ़ूज़ हो जाने वाला शख़्स गुनाहों से बच जाता है। अफ़राद और मुआशरे में पाई जाने वाली नाफ़रमानियां ही उनकी तबाही की बड़ी वजह होती हैं क्योंकि उमूमन आज़माइश और मुसीबत गुनाह के सबब ही आती है, जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है:

وَمَآ اَصٰبَكُمۡ مِّنۡ مُّصِيۡبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِيۡكُمۡ وَيَعۡفُوۡا عَنۡ كَثِيۡرٍ۔

"और तुम्हें जो भी मुसीबत पहुंचती है तो वह तुम्हारे अपने ही करतूतों की वजह से (पहुंचती है) और बहुत सी बातों से तो वह दरगुज़र ही फ़रमाता है।"(1)

इसलिये मुसलमान को चाहिये कि वह हर दम अपने नफ़्स की इस्लाह की फ़िक्र करे, अपनी ज़ाती ज़िंदगी और अपने घर वालों की रोज़ मर्रा ज़िंदगी में पाई जाने वाली ख़ामियों, कोताहियों और बुराइयों को नेकियों और अच्छाइयों से बदलने की कोशिश करे, नाफ़रमानी तर्क करके इताअत गुज़ारी की राह इख़्तियार करे, सुस्ती और ग़फ़लत छोड़कर तौबा और तअ़ल्लुक़ बिल्लाह की कोशिश करे। यही अफ़राद और मुआशरे की इस्लाह का बुन्यादी उसूल हैं, अल्लाह तआला का इर्शाद है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ

"बेशक अल्लाह नहीं बदलता जो किसी क़ौम में है हत्ता कि वह उसे बदल लें जो उनके नुफ़ूस में है।"(2)

आदमी को नहीं मालूम कि उसका परवानए अजल कब आ जाए, कब उसे मौत दबोच ले। इसी मफ़हूम को उर्दू के एक शाइर ने इस तरह बयान किया है-

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है, पल की ख़बर नहीं

इसलिये इंसान को तौबा और इस्लाह की तरफ़ फ़ौरी तवज्जोह देनी चाहिये ताकि आख़िरत की हसरत और पछतावे से महफ़ूज़ रहे। तौबा हर इंसान की एक लाज़मी ज़रूरत है क्योंकि कोई शख़्स भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसकी ज़िंदगी की मअ़सियत, ग़लती और लग़ज़िश से पाक है, यह इंसानी फ़ित्रत के ख़िलाफ़ है, लिहाज़ा तौबा हर इंसान की ज़रूरत है और रब्बुल आलमीन को वही बंदा महबूब है जो तौबा के ज़रीए उसकी तरफ़ रुजूअ़ करता है, फ़रमाने इलाही है:

وَتُوبُوٓا اِلَى اللهِ جَمِيعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۔

"ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह की बारगाह में तौबा करो ताकि तुम फ़लाह पा सको।"[3]

कुर्आन ने उन लोगों को जो तौबा नहीं करते, ज़ालिम और जाहिल क़रार दिया है, इर्शादे बारी तआला है:

وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۔

"और जो तौबा नहीं करते वह वह यक़ीनन ज़ालिम हैं।"[4]

अल्लाह तआला ने अह्ले ईमान को ईमान का वास्ता देते हुए तौबा करने का हुक्म दिया ताकि वह गुनाहों से आलूदा ज़िंदगी को पाक साफ़ कर सकें और जन्नत में दाख़िल होने के मुस्तहिक़ बन सकें, चुनांचे फ़रमाया:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ۔

"ऐ ईमान वालो! तुम अपने रब की बारगाह में मुख़्लिसाना तौबा करो, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ कर दे और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिसके नीचे नहरें जारी होंगी।"[5]

ख़ालिस तौबा, यअ़नी तौबतुन्नसूह कब और कैसे होती है? हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि0 ने फ़रमाया:

اَلتَّوْبَةُ النَّصُوْحُ: أَنْ يَّتُوبَ مِنَ الذَّنْبِ ثُمَّ لَا يَعُوْدُ اِلَيْهِ

كَمَا لَا يَعُودُ اللَّبَنُ فِي الضَّرْعِ۔

"तौबतुन्नसूह यह है कि इंसान गुनाहों को छोड़ कर दोबारा उनका मुर्तकिब न हो, यअ़नी गुनाहों को यूं छोड़ दे जैसे दूध दोहे जाने के बाद थन में वापस नहीं जा सकता।"[6]

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमायाः

هِيَ أَنْ يَّكُونَ الْعَبْدُ نَادِمًا عَلٰى مَا مَضٰى، مُجْمِعًا عَلٰى أَنْ لَّا يَعُودَ إِلَيْهِ۔

"तौबा करने के लिये ज़रूरी है कि बंदा जो ग़लती हो जाए उस पर नादिम हो और आइंदा न करने का अहद करे।"[7]

और हज़रत कलबी रह० ने कहाः

أَنْ تَسْتَغْفِرَ بِاللِّسَانِ، وَتَنْدَمَ بِالْقَلْبِ، وَتُمْسِكَ بِالْبَدَنِ۔

"तौबा करने के लिये यह बात शर्तें लाज़िम है कि ज़बान से इस्तिग़फ़ार करो, दिल में शर्मिंदगी महसूस करो और अअ़ज़ाए बदन से दोबारा वह हरकत न करो।"[8]

हज़रत मुहम्मद बिन कअ़ब रह० ने फ़रमायाः

يَجْمَعُهَا أَيْ: التَّوْبَةُ أَشْيَاءَ: الْإِسْتِغْفَارُ بِاللِّسَانِ، وَالْانْقِطَاعُ بِالْأَبْدَانِ، وَإِضْمَارُ تَرْكِ الْعَوْدِ بِالْجَنَانِ، وَمُهَاجَرَةُ سَيِّ الْإِخْوَانِ۔

"तौबा करने के लिये चार बातें निहायत ज़रूरी हैंः ज़बान से इस्तिग़फ़ार करना, मअ़सियत से जिस्म को दूर रखना, दिल में पक्का इरादा करना कि वह दोबारा यह गुनाह नहीं करेंगे बुरे लोगों की सोहबत से दूर भागेंगे।"[9]

इमाम इब्ने कसीर रह0 ने सूरए तहरीम की आयत की तशरीह करते हुए फ़रमायाः

"तौबतुन्नसूह ऐसी पक्की तौबा को कहते हैं जो सरज़द होने वाली ग़लती को मिटा दे और आदमी को दोबारा गुनाह के रास्ते पर जाने से रोक दे।"(10)

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने फ़रमायाः

"तौबतुन्नसूह में तीन बातों का पाया जाना ज़रूरी हैः तर्के मआसी, यअ़नी तमाम गुनाहों को यक क़लम छोड़ देना, दोबारा कभी न करने का अ़ज़्म और गुनाहों की तरफ़ ले जाने वाले रास्तों से इज्तिनाब।"(11)

अह्ले इल्म ने तौबा की जो तारीफ़ की है उससे यह वाज़ेह हो जाता है कि तौबा पक्के इरादे, शुऊर और संजीदगी के साथ होती है, तौबा चंद अल्फ़ाज़ को ज़बान से दोहराने का नाम नहीं कि एक तरफ़ तो ज़बान से तौबा के कलिमात कहे जा रहे हैं और दूसरी तरफ़ मअ़सियत के सारे काम जारी हैं बल्कि तौबा करने वाले के लिये लाज़मी है कि गुनाहों की तरफ़ ले जाने वाले रास्तों से भी दूर भागे।

अज़ीज़ भाइयो! तौबा के लिये उज्लत ज़रूरी है, क़ुर्आन मजीद और सुन्नत में इसकी ताकीद की गई है। तौबा के बग़ैर इंसान अपने रब की रहमतों से दूर रहता है, उसे अपने रब की तरफ़ फ़ौरन रुजूअ़ करना चाहिये, चाहे गुनाहों का तअ़ल्लुक़ हुक़ूके अल्लाह से हो या हुक़ूकुल इबाद से, हर क़िस्म के गुनाहों से दूर रहना चाहिये। अगर इन गुनाहों का तअ़ल्लुक़ इबादत में कमी कोताही से हो तो इसकी तलाफ़ी करे। अगर गुनाह लोगों के हवाले से किये गए हों, जैसे किसी की ग़ीबत की है तो उसके साथ मुआमला तय करले और मुआफ़ी मांग ले, किसी का माल हड़प कर लिया हो तो माल हक़दार

को लौटाए, रसूले अकरम सल्ल0 ने फ़रमायाः

مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ أَنْ لَا يَكُونَ دِينَارٌ وَّلَا دِرْهَمٌ، إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ، وَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّآتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ۔

"जिस शख़्स के पास अपने किसी भाई की इज़्ज़त या किसी और चीज़ से मुतअ़ल्लिक़ कोई हक़ हो तो वह उससे आज ही मुआफ़ कराले, उस (दिन) से पहले कि जब न कोई दीनार होगा न दिरहम। अगर उसके पास कोई नेक अमल होगा तो उससे ज़ुल्म के बराबर नेकियां ले ली जाएंगी और अगर उसके पास नेकियां न होंगी तो उसके साथी (मज़लूम) के गुनाहों में से (ज़ुल्म के बराबर गुनाह) लेकर उस पर डाल दिये जाएंगे।"[13]

अज़ीज़ भाइयो! अल्लाह तआला की यह बहुत बड़ी करम फ़रमाई है कि उसने तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है जिन गुनाहगारों और ख़ताकारों ने मआ़सी से अपना नामए आमाल सियाह कर लिया हो उन्हें चाहिये कि वह रब्बुल आलमीन की चौखट पर सर झुका दें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह वह मक़ामे रहमत है जहां बड़े से बड़ा गुनाह भी मुआफ़ हो सकता है हत्ता कि एक काफ़िर भी अगर इस दर पर दस्तक दे और इस्लाम क़बूल कर ले तो उसके लिये भी मुआफ़ी का एलाने आम है, इर्शादे बारी तआला है:

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوٓا إِنْ يَّنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ۔

"(ऐ नबी!) जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनसे कह दीजिये कि अगर वह बाज़ आ जाएं तो जो कुछ पहले हो चुका

वह उन्हें मुआफ़ कर दिया जाएगा।"[13]

अल्लाह तआला मुख़्तलिफ़ कबीरा गुनाहों शिर्क, क़त्ल, ज़िना वग़ैरा का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाता है:

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَٰلِحًا فَأُولَٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّـَٔاتِهِمْ حَسَنَٰتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا۔

"मगर जिसने तौबा की और वह ईमान लाया और नेक अमल किये तो इन्ही लोगों की बुराइयों को अल्लाह अच्छाइयों से बदल देगा और अल्लाह ग़फ़ूर (और) रहीम है।"[14]

तौबा के बाब में इतनी वुस्अत है कि तसलीस के जिन परस्तारों ने अल्लाह की तौहीद को तसलीस का धब्बा लगा कर उसे बिगाड़ने की कोशिश की, अल्लाह तआला ने उनके लिये भी तौबा का दरवाज़ा खोल दिया और फ़रमाया:

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ۔

"फिर क्या वह अल्लाह के सामने तौबा नहीं करते और उससे बख़्शिश नहीं मांगते? और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"[15]

अल्लाहुअक्बर! कैसी बेमिस्ल अज़मतों वाला रब है और उसकी इनायात की बारिश किस किस पर कितनी फ़य्याज़ी से बेदरेग़ हो रही है, फ़रमाया:

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ۔

"और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसके लिये जो तौबा करे, ईमान लाए और नेक अमल करे, फिर हिदायत पर रहे।"[16]

मज़ीद फ़रमायाः

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فٰحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ صلے وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ۔ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ۔

"और वह लोग जब कोई बुरा काम कर बैठते हैं या अपने आप पर जुल्म कर गुज़रते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते हैं और अल्लाह के सिवा कौन गुनाहों को बख़्शता है! और वह अपने किये पर जान बूझ कर इस्रार नहीं करते। वही लोग हैं जिनका बदला उनके रब की तरफ़ से बख़्शिश और जन्नत के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वह इन (बाग़ों) में हमेशा रहेंगे और अमल करने वालों के लिये (अल्लाह के यहां) अच्छा अज्र है।"(17)

मज़ीद फ़रमायाः

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا۔

"और जो शख़्स बुरा अमल करे या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर वह अल्लाह से बख़्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला पाएगा।"(18)

कैसी ख़ुशख़बरी है तौबा करने वालों के लिये और कैसी बशारत

है मग़फ़िरत तलब करने वालों के लिये कि इंसान ग़लती करे और मुआ़फ़ी मिल जाए, इससे गुनाह सरज़द हो और उसकी तौबा क़बूल कर ली जाए। तौबा व इस्तिग़फ़ार के लिये अल्लाह ने किसी मख़्सूस वक़्त और घड़ी की शर्त भी नहीं रखी, उनकी अ़ता दिन रात जारी है, सही हदीस में इर्शादे गिरामी है:

إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ، وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَّغْرِبِهَا۔

"बेशक अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल रात को अपना हाथ फैला देता है कि दिन में गुनाह करने वाला तौबा कर ले और दिन में अपना हाथ फैलाता है कि रात में गुनाह करने वाला तौबा कर ले (यह सिलसिला जारी रहेगा) यहां तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ हो जाए।"(19)

एक और हदीस में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया:

يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالٰى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقٰى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ يَقُولُ: مَنْ يَّدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَّسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، مَنْ يَّسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ؟

"हर रात जब आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रहता है, हमारा रब तबारक व तआ़ला आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाता है और मुनादी करता है: कौन है जो मुझ से दुआ करे, मैं उसकी दुआ क़बूल करूंगा? कौन है जो मुझ से सवाल करे, मैं उसे अ़ता करूं? कौन है जो मुझसे बख़्शिश मांगे,

मैं उसे बख़्श दूं?"[20]

जब एक गुनाहगार तौबा करके बारगाहे इलाही में नदामत के आंसू बहाते हुए पेश होता है तो अल्लाह को अपने भटके हुए बंदे की राहे हक़ पर वापसी से इतनी ज़्यादा ख़ुशी होती है कि उसे इस मिसाल के ज़रीए वाज़ेह किया गया है कि एक शख़्स सहराई सफ़र के लिये एक सवारी पर रवाना हुआ, उस पर तमाम ज़ादेराह और दीगर सामान लदा हुआ था, इत्तिफ़ाक़ से वह सवारी गुम हो गई, इस हालत में जो परेशानी उस मुसाफ़िर को हो सकती थी उसका अंदाज़ा किया जा सकता है। उसे अपनी मौत का यक़ीन हो गया क्योंकि इस लक़ व दक़ सहरा में उसकी सवारी, खाने पीने की चीज़ें और जुम्ला सामान सब कुछ नाबूद हो चुका था। अभी वह इसी इज़्तिराब के आलम में था कि अचानक उसकी सवारी सामने खड़ी हुई। शदीद मायूसी और नाउम्मीदी की इस फ़ज़ा में जब अचानक उसे अपनी सवारी नज़र आई तो वह फ़र्ते मुसर्रत से झूम उठा......[21] जब कोई राहे रास्त से भटका हुआ शख़्स तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करता है तो अल्लाह को उससे कहीं ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी ख़ुशी इस सहराई मुसाफ़िर को अपनी गुमशुदा ऊंटनी पाकर हुई।

लोगो! अपने गुनाहों के अंबार और मअ़सियत के हजम को न देखो बल्कि रब्बुल आलमीन के फ़ज़्ल व करम की वुसअत को देखो, अगर कोई यह समझे कि मेरे गुनाहों की कसरत की वजह से शायद मुझे बारगाहे रब्बानी से धुतकार दिया जाए, उसने अल्लाह की अज़मत को समझा ही नहीं। अगर बनी इस्राईल के एक क़ातिल को जिसने निन्नानवे लोगों को क़त्ल किया, फिर मायूसी और बेबसी के आलम में एक और शख़्स को क़त्ल करके पूरी सेंचरी बना दी। इस क़दर ख़ूंरेज़ी का मुज़ाहिरा करने के बावजूद जब इसी सफ़्फ़ाक

क़ातिल (SERIAL KILLER) ने सच्ची तौबा की तो अल्लाह तआला ने उसे भी मुआफ़ फ़रमा दिया।"[22]

लेकिन इसको कोई यह ग़लत मतलब न निकाले कि गुनाह पर गुनाह किये जाओ, बुराई पर बुराई करते रहो क्योंकि अल्लाह तो मुआफ़ करने वाला है, बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है, लिहाज़ा मुआफ़ फ़रमा देगा। ऐसा सोचना और करना बड़ी बेहयाई, ढिटाई और रुसवाई की बात है। ऐसा क़दम क़त्अन ग़लत होगा क्योंकि कोई नहीं जानता कि आने वाली सुब्ह उसके लिये क्या पैग़ाम लेकर नुमूदार होगी? बल्कि जब ज़िंदगी का एक लम्हा भी गुज़रता है तो इसके बाद के लम्हात की कुछ ख़बर नहीं होती कि वह अपने दामन में क्या ला रहे हैं? सांस की डोरी का क्या एतिबार, न जाने कब टूट जाए? दम का क्या भरोसा, कौन जाने कब दम निकल जाए? इसलिये लाज़िम है कि गुनाह आज और अभी हमेशा के लिये तर्क कर दिया जाए और फ़ौरी तौर पर बिला ताख़ीर सच्ची तौबा की जाए। तर्के मआसी और तौबा में उज्लत मोमिन की पहचान है, तौबा में ताख़ीर बजाए ख़ुद निहायत ख़तरनाक ग़लती है। आह! ग़ाफ़िल इंसान की फिर आने वाले लम्हात से बेख़बरी और इस पर मज़ीद पछतावा और नदामत!!...... फ़रमाने रब्बानी है:

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰٓئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۔ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّـَٔاتِ حَتَّىٰٓ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْـَٔـٰنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۔

"अल्लाह तआला सिर्फ़ उन्ही लोगों की तौबा कबूल फ़रमाता है जो बवजह नादानी कोई बुराई कर गुज़रें, फिर उससे जल्द बाज़ आ जाएं और तौबा कर लें तो अल्लाह भी उनकी तौबा कबूल करता है, वह बड़े इल्म वाला और हिक्मत वाला है वह उनकी तौबा कबूल नहीं फ़रमाता जो बुराइयां करते चले जाएं यहां तक कि उनमें किसी की मौत का वक़्त आ जाए तो कहने लगे कि मैंने तौबा की, उनकी तौबा भी कबूल नहीं जो कुफ़्र पर मर जाएं, यही लोग हैं जिनके लिये अलमनाक अज़ाब तैयार है।"[23]

अज़ीज़ भाइयो! यह ग़फ़लत और यह ख़ुद फ़रामोशी कब तक? आख़िर हम अपने मुकर्रम परवरदिगार की अज़मत व जलालत से कब तक बेख़बर रहेंगे? उसकी चौखट पर कब सर झुकाएंगे? आख़िर कब तक फ़िस्क़ व फुजूर और दीन बेज़ारी में हम डूबे रहेंगे?

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ۔

"क्या ईमान वालों के लिये अभी वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ज़िक्रे इलाही से नरम पड़ें।"[24]

बस अब राहे तौहीद से भटके हुए को राहे रास्त पर आ जाना चाहिये, ग़ाफ़िल लोगों को बेदार हो जाना चाहिये, अब फ़ौरी तौर पर सलात और ज़कात का एहतिमाम करें, शिर्क की आलूदगी से बचें, अख़्लाक़ी बुराइयों से परहेज़ करें, मंशियात को हराम समझें, रोज़मर्रा ज़िंदगी को लग़वियात से पाक रखें, मौत से पहले जल्द अज़ जल्द तौबा की फ़िक्र करें, जब वक़्त मौऊद आएगा हमें मनों मिट्टी के ढेर में दबा दिया जाएगा, दोस्त अहबाब, रिशतेदारियां और दुनिया की इशरत सामानियां क़ब्र की तारीकी और तन्हाई में काम नहीं आएंगी, वहां सिर्फ़ ईमान और आमाले सालेहा ही का सहारा होगा, फ़रमाने

इलाही पर ग़ौर कीजियेः

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ۔ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۔ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ۔ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ۔ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ۔ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ۔

"कह दीजिये कि ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो, यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे सारे गुनाहों को बख़्श देगा, वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है। तुम सब अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करो और उसकी फ़रमांबरदारी करो इससे पहले कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी मदद न की जाए और पैरवी करो उस बेहतरीन चीज़ की जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ पड़े और तुम्हें ख़बर भी न हो। ऐसा न हो कि कोई शख़्स कहे कि हाए अफ़सोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह के हक़ में

कोताही की बल्कि मैं मज़ाक़ उड़ाने वालों में था या कहे कि अगर वाक़ई अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता या जब वह अज़ाब देखे तो कहे कि काश! मेरे लिये एक बार (दुनिया में) लौटना हो तो मैं नेक अमल करने वालों में शामिल हो जाऊं। क्यों नहीं, बेशक तेरे पास मेरी आयात आईं तो तूने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू इंकान करने वालों में से था।''[25]

अल्लाह हमें सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, ग़फ़लत और मआसी से दूर रहने की हिम्मत दे। अल्लाह तआला हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيرُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، لَا نِدَّلَهُ سُبْحَانَهُ وَلَا شَبِيهَ، وَلَا مَثِيلَ وَلَا نَظِيرَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ الْبَشِيرُ النَّذِيرُ، وَالسِّرَاجُ الْمُنِيرُ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ، وَكُلِّ تَابِعٍ مُّسْتَنِيرٍ۔

أَمَّا بَعْدُ

''हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये है जो गुनाहों को मुआफ़ करने वाला, तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, ताक़तवर है, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। मैं

शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, न उसका कोई हमसर है, न कोई उसका शरीक है और न कोई उसके मुशाबा है और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल है, आप बशीर, नज़ीर और सिराजे मुनीर हैं। अल्लाह की लामहदूद रहमतें और सलामतें हों आप पर, आप की आल और अस्हाब पर और उनके नक़्शे क़दम पर चलने वालों पर।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, उससे मग़फ़िरत तलब करो, उसकी जनाब में तौबा करो और छोटे गुनाहों से भी बचो क्योंकि यही बड़े गुनाहों की तरफ़ ले जाते हैं और यही सग़ीरा गुनाह इंसान को खोखला कर डालते हैं, जैसा कि रसूले अकरम सल्ल0 ने वज़ाहत फ़रमाई है।(26)

मुअज़्ज़ज़ भाइयो! हमें रसूले अकरम का उस्वए हसना पेशे नज़र रखना चाहिये कि आप की शख़्सियत इतनी अज़ीम थी कि अल्लाह तआला ने आपके अगले पिछले गुनाहों को मुआफ़ कर दिया था, इसके बावजूद आप सल्ल0 एक एक मजलिस में सौ सौ बार इस्तिग़फ़ार किया करते थे। आप सल्ल0 अल्लाह तआला से अर्ज़ किया करते थे:

رَبِّ اغْفِرْلِی وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ۔

"ऐ मेरे रब! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे और मेरी तौबा क़बूल कर, बेशक तू बहुत ज़्यादा मुआफ़ करने वाला, निहायत मेहरबान है।"(27)

खुद बनफ़्से नफ़ीस आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

وَاللّٰهِ! إِنِّى لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِى الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً۔

"अल्लाह की कसम! बेशक मैं एक दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह की मग़फ़िरत तलब करता हूं और उसकी तरफ़ तौबा करता हूं।"[28]

अगर यह मक़ामे मुस्तफ़ा और उस्वए मुज्तबा सल्ल0 है तो फिर हम गुनाहगारों और ख़ताकारों को कितनी तौबा और इस्तिग़फ़ार की ज़रूरत है? इसका अंदाज़ा किया जा सकता है। हमें अपने आमाल का खुद इहतिसाब करना चाहिये, बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में इज्ज़ व इंकिसार से रुजूअ़ करना चाहिये और तर्के मआ़सी का अह्द करते हुए अपनी ज़िंदगियों का अज़सरे नौ जाइज़ा लेना चाहिये।

बिरादराने इस्लाम! हम अभी कुछ दिनों बाद अज़मत व बरकत से लबरेज़ रमज़ानुल मुबारक का इस्तिक़बाल करने वाले हैं, इस माहे मुबारक में क़दम रखने से पहले हमें अपने गुनाहों को यक क़लम छोड़ने का अज़्म करना चाहिये। हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद में होने वाली कोताहियों को दूर करना चाहिये, इस मुबारक महीने के इस्तिक़बाल करने का यही सही तरीक़ा है लेकिन हमारे सोचने समझने के पैमाने बदल चुके हैं। हम इस्तिक़बाले रमज़ान के लिये बाज़ारों और दुकानों पर हुजूम करने लगते हैं, जैसे रमज़ान का मक़सद खाने पीने और मरगूबात की रेल पेल है वर्ना हक़ीक़त में रमज़ान का इस्तिक़बाल तौबा व इस्तिग़फ़ार, तलब व मग़फ़िरत और रिज़वाने ख़ुदावंदी के ज़रीए होता है ताकि इस महीने के बरकतों से हम अपनी झोलियां भर सकें।

दरूद व सलाम पढ़िये रसूले अकरम, हादिये उमम, ख़ैरुल अनाम पर। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

हवाशी खुत्बा नम्बर 17

(1) अश्शूरा 42:30 (2) अर्रअ़द 13:11 (3) अन्नूर 24:31 (4) अलहुज्रात 49:11 (5) अत्तहरीम 66:8 (6) तफ़सीर अत्तबरी:12/158, व मदारिजुस्सालिकीन लिइब्ने क़य्यिम:1/309 (7) मदारिजुस्सालिकीन:1/309 (8) मदारिजुस्सालिकीन:1/309 (9) मदारिजुस्सालिकीन:1/1/310 (10)तफ़सीर इब्ने कसीर:8/168 (11) मदारिजुस्सालिकीन:1/310 (12)सहीहुल बुख़ारी, हदीस:2449 (13) अलअन्फ़ाल 8:38 (14) अलफ़ुर्क़ान 25:70 (15) अलमाइदा 5:74 (16) ताहा 20:82 (17) आले इम्रान 3:135,136 (18) अन्निसा 4:110 (19) सही मुस्लिम, हदीस:2759 (20) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:1145, व सही मुस्लिम:758, व मुस्नद अहमद:2/433 (21) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:6309, व सही मुस्लिम, हदीस:2747 (22)सहीहुल बुख़ारी, हदीस:3470, व सहीह मुस्लिम, हदीस:2766 (23) अन्निसा 4:17,18 (24) अलहदीद 57:16 (25) अज़्ज़ुमर 39:53-59 (26) मुस्नद अबी दाऊद अलतयालिसी, हदीस:400, व मुस्नद अहमद:1/400,401 (27) सुनन अबी दाऊद, हदीस:1516, व जामिउत्तिर्मिज़ी, हदीस:3434 (28) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:6307

खुत्बा 18

इंसान और मुआशरे पर गुनाहों के मुहलिक असरात

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِينُهٗ، وَنَسْتَهْدِيهِ وَنَسْتَغْفِرُهٗ، وَنَتُوبُ إِلَيْهِ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا، وَسَيِّآتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، قَضٰى بِالْخَيْرِ وَالْعِزِّ لِأَهْلِ الطَّاعَةِ وَالْإِيمَانِ، وَبِالذُّلِّ وَالْهَوَانِ لِأَهْلِ الشَّرِّ وَالْعِصْيَانِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُولُهٗ، وَصَفِيُّهٗ وَخَلِيلُهٗ، وَأَمِينُهٗ عَلٰى وَحْيِهٖ، بَشَّرَ وَأَنْذَرَ، وَبَلَّغَ وَجَاهَدَ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ، فَلَمْ يَتْرُكْ خَيْرًا إِلَّا دَلَّ أُمَّتَهٗ عَلَيْهِ، وَلَا شَرًّا إِلَّا حَذَّرَهَا مِنْهُ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهِ الَّذِينَ سَارُوا عَلٰى هَدْيِهٖ، وَالْتَزَمُوا شَرِيعَتَهٗ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّينِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह तआला ही के लिये है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से हिदायत मांगते हैं, उसी से मग़फ़िरत चाहते हैं, उसी की बारगाह में तौबा करते हैं और हम अल्लाह की पनाह तलब करते हैं अपने नफ़्स की शरारतों से और आमाल की बुराइयों से। जिसे अल्लाह हिदायत अता फ़रमाए उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसने अहले ख़ैर के लिये कामियाबी व कामरानी का फ़ैसला फ़रमाया और नाफ़रमानों के लिये ज़िल्लत और रुसवाई मुक़द्दर कर दी। मैं गवाही देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप सल्ल० अल्लाह के महबूब और ख़लील हैं, आप अमीन और बशीर व नज़ीर हैं, आपने तबलीग़ का हक़ अदा कर दिया और अल्लाह के रास्ते में दावते दीन की भरपूर कोशिश की। आपने ख़ैर के तमाम रास्ते उम्मत को बताए और हर क़िस्म के शर से ख़बरदार किया। अल्लाह तआला की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामतें हों आप सल्ल० पर, आप की आल और अस्हाब पर जो आप के तरीक़े पर चले और आप की शरीअत से मुकम्मल तौर पर वाबस्ता रहे और क़यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो उनके नक़्शे क़दम पर चलते रहें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह से डरो, उसकी इताअत करो और नाफ़रमानी से बचो। अल्लाह तआला का एहसाने अज़ीम है कि उसने इस उम्मत को राहे हक़ का पेशवा और इमाम बनाया, ख़ातिमुल अंबिया वर्रुसुल की बेअसत के लिये इस उम्मत का इंतिख़ाब फ़रमाया, उनकी रहनुमाई के लिये बेहतरीन किताब नाज़िल फ़रमाई। जब तक वह इस दीन से वाबस्ता रहें, उनके लिये शर्फ़ व मर्तबा और नुसरत व मदद का वादा फ़रमाया, चुनांचे एक तवील अर्से तक फ़रज़ंदाने मिल्लते इस्लामिया दुनिया की इमामत व क्यादत करते रहे, फिर उनकी अज़मत ज़िल्लत से और शौकत निकबत से बदल गई, मुख़्तलिफ़ क़ौमें उन पर टूट पड़ीं, चारों तरफ़ से उन पर हमले होने लगे, हर तरफ़ उनको शिकस्त और पस्पाई होने लगी। यहां सवाल पैदा होता है कि वह कौनसे अवामिल थे जिनकी वजह से हमने अपना मक़ाम खो दिया, हमारी इज़्ज़त ज़िल्लत में तबदील हुई और अवजे सुरय्या से हमें तहतुस्सरा फैंक दिया गया? इसका तज्ज़िया किया जाए तो इसका अहम सबब गुनाहों से आलूदा हमारी ज़िंदगी और अल्लाह तआला की नाफ़रमानी है क्योंकि यह क़ानूने इलाही है जिसे कोई फ़र्द या जमाअ़त बदल नहीं सकती कि जब तक कोई क़ौम अपने रब के हुक्म और नबी के रास्ते पर गामज़न होगी वह तरक़्क़ी की मंज़िलें तय करती जाएगी और इसके लिये अल्लाह की नुसरत आती रहेगी लेकिन अगर कोई क़ौम अपने ख़ालिक़ से बग़ावत करे और नबी का रास्ता छोड़ दे तो फिर अल्लाह तआला का क़ानून रंग व नस्ल और ख़ानदान को नहीं देखता बल्कि उसका इंसाफ़ सबके लिये बराबर और क़ानून हर एक के लिये यक्सां है, फिर वह उस बाग़ी क़ौम के ख़िलाफ़ हरकत में आ जाता है और उसे मक़ामे बुलंद से

उठा कर पस्तियों में फैंक देता है, चुनांचे फ़रमाने बारी तआला है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ

"बेशक अल्लाह तआला किसी क़ौम की हालत उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वह ख़ुद अपने आप को बदल न डाले।"(1)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया:

وَمَآ اَصٰبَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ۔

"और जो कुछ तुम्हें मुसीबत पहुंचती है, वह तुम्हारे आमाल का नतीजा है और बहुत सी चीज़ों को वह मुआफ़ कर देता है।"(2)

और रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ يَغَارُ، وَغَيْرَةُ اللّٰهِ أَنْ يَّأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ۔

"बेशक अल्लाह को भी ग़ैरत आती है और अल्लाह को ग़ैरत उस वक़्त आती है जब कोई मोमिन अल्लाह की हरामकर्दा चीज़ों का इर्तिकाब करे।"(3)

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है:

رَأَيْتُ الذُّنُوبَ تُمِيتُ الْقُلُوبَ
وَقَدْ يُورِثُ الذُّلَّ إِدْمَانُهَا
وَتَرْكُ الذُّنُوبِ حَيَاةُ الْقُلُوبِ
وَخَيْرٌ لِنَفْسِكَ عِصْيَانُهَا

"मैंने देखा कि गुनाह दिलों को मुर्दा कर देते हैं और आदमी को हमेशा की ज़िल्लत में मुब्तला कर देते हैं, तर्क

मआसी में दिलों की ज़िंदगी है, तुम्हारे लिये नफ़्स की सरकशी ख़त्म करने में भलाई है।"[4]

अज़ीज़ भाइयो! गुनाहों का अफ़राद और कौमों की ज़िंदगी पर गहरा असर मुरत्तब होता है, इमाम इब्ने कय्यिम र० अ० ने फ़रमायाः

"मआसी और गुनाहों का इंसानी जिस्म पर वैसा ही असर होता है जिस तरह कोई ज़हर उसे नुक़्सान पहुंचाता है। दुनिया और आख़िरत की बरबादी गुनाहों से आलूदगी के बाइस है। क्या आपने ग़ौर किया कि हमारे जद्दे अमजद को जन्नत से क्यों निकाला गया? क्या आपने सोचा कि इबलीस क्यों रान्दए दरबारे इलाही हुआ? किस सबब से वह मूजिबे लअ़नत ठहरा? और क्यों उस पर हमेशगी की ज़िल्लत तारी कर दी गई? जन्नत से उठा कर जहन्नम में क्यों झोंक दिया गया? साबिक़ा अक़्वाम की तबाही क्योंकर हुई? क़ौमे आद पर आंधियों का अज़ाब क्यों मुसल्लत हुआ? जिसकी वजह से यह तंदुरुस्त व तवाना क़ौम कटे हुए दरख़्त के तनों की तरह पड़ी रही? क़ौमे समूद के कलेजे क्यों फट गए? क़ौमे लूत की बस्तियां को क्यों तलपट कर दिया गया? क्यों उन पर आसमान से पत्थर बरसाए गए? क़ौमे शुऐब को क्यों साएबान के हैबतनाक अज़ाब में मुब्तला किया गया? उन पर दहकते हुए अंगारों की बारिश क्यों बरसाई गई? फ़िरऔनियों को किस वजह से ग़र्क़ किया गया? और क्यों उनको जहन्नम में फैंका गया? क़ारून को उसकी दौलत समेत ज़मीन में क्यों धंसा दिया गया? क़ौमे नूह के बाद मुख़्तलिफ़ क़ौमों को मुख़्तलिफ़ अज़ाबों में क्यों मुब्तला किया गया?

बनी इस्राईल के ख़िलाफ़ सख़्तगीर क़ौम को क्यों मुसल्लत किया गयाः

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ أُولَٰهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ

شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا۔

"इन दोनों वादों में से पहले के आते ही हम तुम्हारे मुक़ाबले पर अपने ताक़तवर बंदों को खड़ा कर देंगे, वह तुम्हारे घरों के अंदर घुस जाएंगे, अल्लाह का यह वादा पूरा होना ही था।"(5)

किसने उनके मर्दों को तहतेग़ किया? बच्चों और औरतों को पस ज़न्दान किया? किसने उनकी जाएदाद और धन दौलत को आग लगा दी, फिर दोबारा उन पर इसी तरह का अज़ाब मुसल्लत किया गया।

وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا۔

"और फिर दोबारा जिस जिस पर क़ाबू पाएंगे जड़ से उखाड़ फैंकेंगे।"(6)

फिर उन पर अज़ाबों को सिलसिला मुसल्लत किया गया, कभी उनकी हलाकत व ख़ूरेज़ी की गई, कभी ज़ालिम हुक्मरानों ने उन्हें अपने ज़ुल्म का निशाना बनाया, कभी उनके चेहरे मस्ख़ करके उन्हें बंदर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल में बदल दिया गया और एक से बढ़ कर एक सख़्त ज़िल्लत आमेज़ अज़ाब आया।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ۔

"और वह वक़्त याद करो जब आपके रब ने यह बात बतला दी वह उन यहूदियों पर क़यामत तक उन लोगों को मुसल्लत करता रहेगा जो उन्हें शदीद तकलीफ़ पहुंचाते रहें।"(7)

इमाम इब्ने क़य्यिम रह० ने बड़ी शर्ह व बस्त से गुनाहों के

असरात का ज़िक्र किया है कि दुनिया और आख़िरत में अफ़राद और क़ौमों पर मआसी के क्या क्या नुक़्सानात होंगे, यह असरात व नुक़्सानात कभी इल्म से महरूमी, रिज़्क़ में बेबरकती, तंगी और ज़ुल्मत की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं और कभी क़ल्ब व बदन की कमज़ोरी, इताअ़त से दूरी और ज़िल्लत की शक्ल में नमूदार होते हैं, फ़रमाने इलाही है:

وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ۔

"जिसे अल्लाह तआला ज़लील कर दे उसे कौन इज़्ज़त बख़्श सकता है, बेशक अल्लाह जो चाहे करता है।"(8)

मआसी के मज़ीद नुक़्सानात कभी अक़्ल व ख़ुर्द की बरबादी की सूरत में दिखाई देते हैं और कभी पस्त हिम्मती, बेज़मीरी, बेग़ैरती, ज़वाले नेअ़मत, जिल्लत की मार, ख़ौफ़ व रोअ़ब, परेशानी, बसीरत की क़िल्लत, बारिश की कमी और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की परेशानियों की शक्ल में दुनिया में, क़ब्र में और आख़िर में ज़ाहिर होते हैं, ग़र्ज़ गुनाहों का हर नुक़्सान एक दूसरे से बड़ा और हर तबाही दूसरी तबाही से ज़्यादा इबरतनाक सूरत में ज़ाहिर होती है। क़ुर्आन मजीद और अहादीस में इसकी सराहत इस क़दर साफ़ साफ़ कर दी गई है कि शक व शुब्हा की अद्ना सी गुंजाइश भी बाक़ी नहीं रहती।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ۔

"बिला शुब्हा इबरत है इसमें उनके लिये जो होशमंदी का मुज़ाहरा करें, बात तवज्जोह से सुनें और हाज़िर हों।"(9)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا

وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ۔

"हर शख़्स अपने गुनाह के बदले गिरफ़्त में लिया गया, इनमें कुछ ऐसे हैं जिन्हें सख़्त आंधी से ख़त्म किया गया, कुछ ख़ौफ़नाक चिंघाड़ के ज़रीए और बअ़ज़ को ज़मीन में धंसा दिया गया और कुछ को ग़र्क़े आब किया गया, यक़ीनन तुम्हारे रब ने इनमें से किसी पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे।"[10]

शाइर ने क्या ख़ूब कहा:

إِذَا كُنْتَ فِي نِعْمَةٍ فَارْعَهَا
فَإِنَّ الْمَعَاصِي تُزِيلُ النِّعَمْ
وَدَاوِمْ عَلَيْهَا بِشُكْرِ الْإِلٰهِ
فَشُكْرُ الْإِلٰهِ يُزِيلُ النِّقَمْ

"अगर तुम्हें किसी नेअ़मत से सरफ़राज़ किया गया है तो उसकी हिफ़ाज़त करो क्योंकि गुनाह ज़वाले नेअ़मत का सबब हैं। नेअ़मत को अल्लाह के शुक्र के ज़रीए बाक़ी रखा जा सकता है और शुक्रे इलाही से अल्लाह का ग़ैज़ व ग़ज़ब भी टल जाता है।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं:

"नेकी से चेहरे पर रौनक़, दिल में नूर, रिज़्क़ में वुस्अ़त, बदन में कुव्वत और मख़्लूक़ के दिलों में मुहब्बत पैदा होती है और गुनाह से चेहरा पज़मुर्दा, क़ल्ब और क़ब्र की तारीकी, जिस्म में कमज़ोरी, रिज़्क़ में क़िल्लत और लोगों

के दिलों में नफ़रत पैदा होती है।"[11]

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमायाः

"अल्लाह के नाफ़रमान चाहे सख़्त जान ख़च्चरों पर सवार हो जाएं या सुबक रफ़तार घोड़ों पर, उन्हें हक़ीक़ी इज़्ज़त व सरफ़राज़ी हासिल नहीं हो सकती, इसलिये कि गुनाहों का बोझ उनके दिलों की राहत छीन लेगा, अल्लाह तआला का फ़ैसला है कि उसके नाफ़रमानों का सर नीचा हो जाए।"[12]

अज़ीज़ाने गिरामी! क्या अभी वह वक़्त नहीं आया कि हम अपने गुनाहों की संगीनी का जाइज़ा लें और यह हक़ीक़त समझ लें कि हमारी ज़िल्लत और पस्ती का बुन्यादी सबब ख़ुद हमारी बदआमालियां हैं। हमें चाहिये कि अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह दें, इस्लाह तर्के मआसी और गुनाहों से तौबा के ज़रीए होती है, नीज़ दानिशवरों को भी ग़ौर करना चाहिये कि इस वक़्त जो हर तरफ़ बदअम्नी और फ़ित्ना व फ़साद का दौर दौरा है, ख़ाना जंगियों की कसरत है, लूटमार और क़त्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म है, नित नई बीमारियों की वबा फैल रही है, कहीं यह सब कुछ हमारे ही करतूतों का नतीजा तो नहीं? क्योंकि फ़रमाया गया हैः

وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا۔

"जो अल्लाह के ज़िक्र से एअराज़ करेगा उस पर सख़्त अज़ाब मुसल्लत कर दिया जाएगा।"[13]

मज़ीद फ़रमायाः

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ۔ اَوْ

يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ- أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ-

"क्या वह लोग जिन्होंने बुराइयां कीं इस बात से बेख़ौफ़ हो गए कि अल्लाह तआला उन्हें ज़मीन में धंसा दे या उन पर इस तरह अज़ाब ले आए जिसे वह महसूस ही न कर सकें या उस वक़्त उन्हें अपनी लपेट में ले जब वह सो रहे हों, वह अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते या उन्हें हालते ख़ौफ़ आ दबोचे, बेशक तुम्हारा रब बहुत करम करने वाला और मेहरबान है।"[14]

अगर हम अपने आसपास मुख़्तलिफ़ इलाक़ों और क़ौमों पर नाज़िल होने वाली बलाओं और मुसीबतों का जाइज़ा लें तो यह बात यक़ीनी तौर पर कही जा सकती है कि इसका अहम सबब उनके गुनाह और ऐशपरस्ती है। गुनाहों में इतनी दीदा दिलैरी कि अक़ाइद, आमाल और अख़्लाक़ियात हर चीज़ इसकी लपेट में आ गई, अक़ाइद में शिर्क, तर्के सुन्नत, बिद्आत और खुराफ़ात में दिलचस्पी बढ़ने लगी और आमाल का यह हाल है कि हुदूदुल्लाह की खुल्लम खुल्ला ख़िलाफ़ वर्ज़ी हो रही है और अख़्लाक़ियात्त का तो कहना ही क्या, अलअमान वलहफ़ीज़! फ़िस्क़ व फ़ुजूर का बाज़ार हर तरफ़ गर्म है, न उस पर किसी को एतिराज़ है न नकीर की फ़ुर्सत, इल्ला माशा अल्लाह! फिर हमारा मीडिया ख़ुसूसन इलेक्ट्रानिक मीडिया तो जलती पर तेल छिड़कने का काम कर रहा है, इसी मीडिया के ज़रीए बुराइयों को इतनी खूबसूरती से आम किया गया कि लोग खुले बंदों सीना ज़ोरी के साथ बुराई करने लगे, उनके दिल से एहसासे ज़ियां तक जाता रहा, हालांकि कुदरत की लाठी बेआवाज़ होती है:

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ-

"और बेशक तुम्हारा रब घात लगाए हुए है।"[15]

यह अफ़सोसनाक हालात इस बात के मुतक़ाज़ी हैं कि हुक्काम, क़ाइदीन, उलमा, दाइयाने दीन और दानिशवराने मिल्लते इस्लामिया को मिल बैठ कर सोचना चाहिये कि गुनाहों के इस सैलाब के आगे बंद किस तरह बांधा जाए। इस मुआमले पर अमल करने की हंगामी बुन्यादों पर ज़रूरत है ताकि वक़्त हाथ से निकल जाए, मायूसी की घटा टोप तारीकी में हल्की सी रौशनी ईमान की हरारत वालों की तरफ़ से दिखाई दे रही है, बअ़ज़ लोगों की इस्लाह पसंदाना कोशिशों के मुस्बत नताइज देखने में आ रहे हैं और आलमे इस्लाम में बेदारी की ठंडी हवाओं के झोंके चलने लगे हैं, जिनसे इंशा अल्लाह आलमे इस्लामी मुस्तफ़ीद हो सकता है।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

"यह बात अल्लाह के लिये भारी नहीं।"[16]

अल्लाह तआला हमें कुर्आन मजीद और इत्तिबाए रसूले अकरम सल्ल0 की बरकतों से बहरामंद फ़रमाए। अल्लाह हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ، وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह ही के लिये जो गुनाहों का

बख़्शने वाला, तौबा क़बूल करने वाला और ज़बरदस्त ताक़त वाला है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसी की तरफ़ हमें लौटना है। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं शहादत देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बंदे और रसूल हैं, अल्लाह की लामुतनाही रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल0 पर, आप की आल और आपके अस्हाब पर और क़्यामत तक आने वाले उन तमाम लोगों पर जो क़ुर्आन व सुन्नत की राह पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि जब भी किसी इलाक़े में गुनाहों की कसरत होती है वह बर्बाद हो जाता है, जिस दिल में बुराइयां घर कर लेती हैं वह मुर्दा हो जाता है, जिस जिस्म में उनको जगह मिलती है वह नाकारा हो जाता है, जिस क़ौम में यह आम होती हैं उसे ज़लील कर देती हैं और जिस सोसाइटी में फैलती हैं उसे उजाड़ देती हैं। बुराइयों के बढ़ते हुए सैलाब को रोकने की ज़िम्मादारी कलिमा गो मुसलमानों पर आइद होती है, रसूले अकरम सल्ल0 का इर्शादे गिरामी हैः

كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ-

"तुम में से हर एक ज़िम्मादार है और हर एक से उसकी ज़िम्मादारी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।"(17)

हर शख़्स अपनी ज़िम्मादारी पूरी करे। अपनी, अपने घर की और औलाद की तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दे ताकि उनमें ख़ैर का जज़्बा रासिख़ हो, मुन्करात से नफ़रत हो और अपनी ताक़त के मुताबिक़ मुआशरे को पाक करने की जुस्तजू हो क्योंकि जब भी कोई

बला और आफ़त नाज़िल होती है वह गुनाह के सबब से होती है और तौबा के ज़रीए दूर होती है, लिहाज़ा हमें बकसरत इस्तिग़फ़ार और अमली तौबा की संजीदगी से फ़िक्र करनी चाहिये, शायद हमारा सोज़ दिल और हमारी तड़प अल्लाह को पसंद आ जाए, अल्लाह तआला का फ़रमान है:

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

"कह दीजिये, ऐ मेरे बंदो! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की है, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न होना, बेशक अल्लाह तआला तमाम गुनाहों को मुआफ़ करने वाला है, यक़ीनन वह ग़फ़ूर और रहीम है।"

दरूद व सलाम पढ़िये जनाब ख़ैरुल वरा रसूले मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 पर।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 18

(1) अर्रअ़द 13:11 (2) अश्शूरा 42:30 (3) सहीहुल बुख़ारी, हदीसः 5223, व सही मुस्लिम, हदीस:2761 (4) यह तर्जुमा अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 से मन्सूब अशआर का है, अलजवाबुल काफ़ी लिइब्ने क़य्यिम, स0:84, व शरहुल अक़ीदतुत्तहाविया, स0:235 (5) बनी इस्राईल 17:5 (6) बनी इस्राईल 17:7 (7) अलआराफ़ 7:167, वलजवाबुल काफ़ी, स0:61,62 (8) अलहज 22:18 (9) क़ाफ़ 50:37 (10) अलअन्कबूत 29:40 (11) अलजवाबुल काफ़ी, स0:78 (12) अलजवाबुल काफ़ी, स0:84 (13) अलजिन्न 72:17 (14)अन्नह्ल 16:45-47 (15) अलफ़ज्र 89:14 (16) इब्राहीम 14:20, व फ़ातिर 35:17 (17) सहीहुल बुख़ारी, हदीस:893, व सही मुस्लिम, हदीस:1829 (18) अज़्ज़ुमर 39:53

ख़ुत्बा 19

मौजूदा आलमी हालात में उम्मते मुस्लिमा की ज़िम्मादारियां

إِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِينُهٗ، وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَتُوبُ إِلَيْهِ،
اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ، وَلَكَ الشُّكْرُ كُلُّهٗ، وَإِلَيْكَ يَرْجِعُ
الْأَمْرُ كُلُّهٗ، عَلَانِيَتُهٗ وَسِرُّهٗ، لَكَ الْحَمْدُ حَتّٰى تَرْضٰى،
وَلَكَ الْحَمْدُ إِذَا رَضِيتَ، وَلَكَ الْحَمْدُ بَعْدَ الرِّضَا، وَلَكَ
الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ حَالِ أَهْلِ
الضَّلَالِ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ،
الْكَبِيرُ الْمُتَعَالُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا وَسَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُ
اللّٰهِ وَرَسُولُهٗ كَرِيمُ السَّجَايَا وَشَرِيفُ الْخِصَالِ، صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ خَيْرِ صَحْبٍ وَّأَفْضَلِ آلٍ،
وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الْمَآلِ، وَسَلَّمَ
تَسْلِيمًا كَثِيرًا۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह के लिये सज़ावार है, हम उसी की तारीफ़ करते हैं, उसी से मदद तलब करते हैं, उसी से मग़फ़िरत चाहते हैं और उसी के दरबार में तौबा करते हैं, या अल्लाह! हम्द सब की सब तेरे ही लिये है और शुक्र की तमाम अक़्साम तेरे ही लिये ज़ेबा हैं। हर बात बिलआख़िर लौट कर तेरी ही तरफ़ वापस होने वाली है, चाहे वह ख़ुफ़िया बात हो या एलानिया, ऐ अल्लाह! हम तेरी तारीफ़ करते रहेंगे यहां तक कि तू राज़ी हो जाए, उसके बाद भी तेरी तारीफ़ जारी रखेंगे, तेरी रज़ा हासिल करने के बाद भी तेरी ही हम्द बयान करते रहेंगे, हर हाल में इलाही तेरी ही हम्द है, हम अल्लाह की पनाह तलब करते हैं गुमराहों की ज़लालत से। मैं शहादत देता हूं कि हमारे महबूब हमारे रहनुमा हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बंदे और रसूल हैं। आप सल्ल० की ज़ाते गिरामी नेक ख़सलतों और उम्दा आदात का मज्मूआ है। अल्लाह की रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल० पर, आप सल्ल० की आल और अस्हाब पर और क़यामत तक आने वाले उन सब लोगों पर जो सलफ़े सालिहीन के नक़्शे क़दम पर चलें।"

हम्द व सलात के बादः

लोगो! हम में से हर शख़्स को अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करना चाहिये, यही हम सबके लिये हिदायते रब्बानी है, इसी में हमारी कामियाबी है, यही हम सबके लिये दुनिया का सरमाया और क़ब्र की तन्हाई, तारीकी और सफ़रे आख़िरत के वह्शतनाक रास्तों के लिये ज़ादेराह है, यही तक़्वा हर जगह काम आएगा।

बिरादराने इस्लाम! जब भी हम किसी मुसीबत में हों या हमारी कशती तूफ़ान के गिर्दाब में हिचकौले खा रही हो तो हमें ऐसे नाख़ुदा की ज़रूरत होती है जो हमारी डोलती डूबती कशती पार लगा सके। जब हमें मुख़्तलिफ़ चैलन्जिज़ और परेशानियों का सामना हो तो ऐसे उलमाए रब्बानी की ज़रूरत होती है जो हमें दरपेश नज़ाकतों से उह्दा बरआ होने में मदद दें। हक़ व बातिल और ख़ैर व शर के माबैन मअ़रका आराई हमारी ज़िंदगी का एक हिस्सा है, इंसानी तारीख़ इस तरह की मअ़रका आराइयों से भरी पड़ी है लेकिन यह बात हतमी है कि फ़तह और कामियाबी हमेशा हक़ को नसीब होती है, जीत हमेशा सच्चाई की होती है, यह वादए इलाही हैः

فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ۔

“झाग बे मसरफ़ होकर उड़ जाता है और जो लोगों के लिये नफ़ा बख़्श चीज़ है वह ज़मीन पर बाक़ी रहती है।”(1)

यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम है कि वह उम्मत में ऐसे ग़ुयूर रिजाले ख़ैर को पैदा फ़रमाता रहता है जो आंधियों में चिराग़ जलाते हैं और सख़्त तूफ़ान में मर्दाना वार आगे बढ़ते हैं, आंधी और

तूफ़ान उनके पाए इस्तिक़बाल में जुंबिश भी नहीं पैदा कर सकते। यह लोग दीने इस्लाम के अमीन हैं, जो दीनी ज़िम्मादारियों से किसी दौर में ग़ाफ़िल नहीं होते क्यों यह वादए रब्बानी है:

وَيَأْبَى اللهُ إِلَّا أَنْ يُّتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔

"अल्लाह तआला इंकार करता है मगर यह कि वह दीन की रौशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे काफ़िर नाख़ुश हों।"(2)

जब दुनिया जाहिलियत की तारीकी में डूबी हुई थी, शिर्क और बुत परस्ती का दौर दौरा था, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपने ख़ास फ़ज़्ल से रसूले अकरम हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को तमाम उम्मत के लिये अपना नबी बना कर भेजा, फिर आप सल्ल0 के बाद आप के जांनिसार सहाबए किराम दीन का झंडा अपने हाथों में थामे आगे बढ़ते रहे, इस्लाम का क़ाफ़िला आगे ही बढ़ता गया, हर चंद सदियों पर मुहीत इस अर्से में मद व जज़्र और उतार चढ़ाव भी आते रहे लेकिन सफ़ीनए हक़ को आगे बढ़ाने वाले अपना फ़रीज़ा अदा करते रहे, लगता है कि अब हम एक मर्तबा फिर कश्तिये तूफ़ान में हैं, मग़रिब परस्ती और माद्दियत का तूफ़ान इस तेज़ी से आ रहा है कि हमारे अपने कलिमा गो भाई इसकी ज़द में आ गए और बहुत से तालीम याफ़्ता अह्ले क़लम और मीडिया से वाबस्ता अफ़राद फ़िक्री बेबसी और अख़्लाक़ी दरमांदगी का शिकार हो गए। अब क़लम व बयान के ज़ोर पर वह औरों को भी गुमराह करने की कोशिश में लगे हुए हैं, हालांकि इस्लामी तह्ज़ीब के मुक़ाबले में उनकी तरक़्क़ी की हैसियत सिर्फ़ झाग की तरह सतही और बेक़ीमत है, जैसे मग़्ज़ के बग़ैर सिर्फ़ छिल्के! लेकिन इस्लाम और माद्दियत की इस कशमकश में अब लोग ख़ुसूसन हक़ पसंद अफ़राद यह गवाही देने लगे हैं कि

माद्दी खुशहाली के दावे खोखले थे, खुशहाली की बातें बेवज़न थीं, इस हज़ीमत के बाद अब हमें एक ऐसे उसूल और ठोस सच्चाई की तरफ़ रुजूअ करने की ज़रूरत है जो लोगों के मुर्दा ज़मीरों को झिंझोड़े और आला अख़्लाक़ व मुरव्वत की तालीम दे। अलहम्दु लिल्लाह! ज़िंदगी बसर करने के मुहज़्ज़ब आदाब और उसूल सिर्फ़ दीने इस्लाम ही ने पेश किये हैं और अब फिर से आलमी पैमानी पर इस्लाम की तालीमात की बाज़ गश्त सुनाई देने लगी है। चारों तरफ़ से इस्लाम में लोगों की गहरी दिलचस्पी की ख़बरें आ रही हैं, आए दिन इस्लामी मराकिज़ की तामीर और तालीमी इदारों की कसरत इस बात की बेहतरीन दलील है। हमें उम्मीद है कि यह इदारे इस्लामी अफ़कार व नज़रियात और दीगर तहज़ीबों के दर्मियान मफ़ाहमत का ज़रीआ साबित होंगे, इंशा अल्लाह। जहां यह मुस्बत तबदीलियां आ रही हैं वहीं हमें चौकन्ना रहने की भी अशद ज़रूरत है क्योंकि इस बर्बाद शुदा तहज़ीब के दिलदादा आज भी अपनी अक़्लों पर पर्दे डाले चमगादड़ों की तरह इस ज़वाल याफ़्ता तह्ज़ीब को संभाला देने की कोशिश में लगे हुए हैं और अपने पुरकशिश बयानात के ज़रीए इसे मुज़य्यन करके लोगों के सामने पेश कर रहे हैं, इस सूरते हाल में हक़परस्तों के लिये ज़रूरी है कि वह आगे बढ़ें और इन गुमराहकुन पर्दों को चाक करें ताकि दुनिया हक़ाइक़ का नज़ारा कर सके और पुरफ़रेब दावों की हक़ीक़त जान सके।

وَيَأْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔

"अल्लाह का अटल फ़ैसला है वह काफ़िरों के अलीयुल रग़म अपने नूर को ग़ालिब करके रहेगा।"(3)

मुहतरम भाइयो! हमारी तरक़्क़ी और खुशहाली का दौर हमारे अपने ही करतूत के बाइस ज़वाल का शिकार हुआ, जब इस्लाम की

अमली तत्बीक़ से हमने पहलू तही की तो हम में फ़िर्क़ा वारियत, इख़्तिलाफ़ात और फ़िक्री इंहितात शुरू हुआ, फिर हमारी वहदत पारा पारा हो गई, इज़्ज़त ज़िल्लत में और तरक़्क़ी पस्ती में तबदील हो गई। दुशमनाने इस्लाम को मौक़ा मिल गया, उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ चढ़ाई की, मुस्लिम इलाक़े उनके क़ब्ज़े में चले गए, फिर उन्होंने हमारे असासे और हमारे कुदरती वसाइल माले ग़नीमत समझ कर लूटे और हमारी ख़ुशहाली को पामाल किया। वह इन मुमालिक पर यूं टूट पड़े जैसे भूके दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं। उन्होंने मुख़्तलिफ़ ज़राए से हमले शुरू किये जिनमें सलीबियों के हमले और तातारी हमले नमुायां थे। इस्लामी तहज़ीब के नुक़ूश मिटते गए। उंदुलस में आठ सदियों की तरक़्क़ी के बाद ज़वाल शुरू हुआ, फिर इस्तिअ़मारी ताक़तों ने मुख़्तलिफ़ इलाक़ों पर हमले करके वहां से इस्लामी तहज़ीब के आसार मिटाने शुरू किये, इस्लामी शनाख़्त को बदनाम करने लगे, इस्लाम की जगह क़ौमी, नस्ली, इलाक़ाई और गिरोही नअ़रे लगाए गए और जज़्बात भड़काए गए, उम्मते मुस्लिमा की इकाई को जुग़राफ़ियाई हुदूद की टुकड़ियों में बांट दिया गया, फिर उनमें एक दूसरे के ख़िलाफ़ इख़्तिलाफ़ात उभारे गए और दुशमनियों को हवा दी गई, जो एक दीन के पैरूकार थे वह एक दूसरे के दुशमन बन गए। इस्लाम पर जो हमले किये गए, उनमें एक नया हमला ग्लोबल वीलेज Global Village (आलमी क़र्या) के नाम से शुरू किया गया कि यह दुनिया एक गांव के मानिंद है, गोया एक ऐसा जंगल है जिसमें ख़ूंख़ार भेड़ियों की कसरत है जो किसी पर भी हमलाआवर होकर अपने पंजे गाड़ सकते हैं, इस नाम के ख़ूबसूरत लेबल के पीछे जो मक्र व अज़ाइम हैं वह उम्मते मुस्लिमा के लिये ज़हरे क़ातिल की हैसियत रखते हैं, जिसका मक़्सद आलमे इस्लाम पर मग़रिबी कुव्वत

का ग़ल्बा व तसल्लुत है। इस इस्तिलाह के बहाने ताक़तवर सामराज कमज़ोर लोगों के अक़ाइद, नज़रियात और तह्ज़ीब को मिटा कर अपने अक़ाइद नज़रियात और तह्ज़ीब को ठूंसना चाहता है, यह वह तह्ज़ीब है जिसके कड़वे कसीले फलों की ज़ह्रनाकी से कोई महफ़ूज़ नहीं रह सकेगा। इस आलमी इत्तिहाद के अलमबरदारों के यहां वह पैमाने हैं, दुनिया से असबियत और तरफ़दारी ख़त्म करने के दावेदार ख़ुद बदतरीन क़िस्म के तअ़स्सुब और तरफ़दारी का शिकार हैं। यह इंसाफ़ की हक़ीक़ी रूह के मुन्किर हैं, ख़ुसूसन जब भी उनकी मईशत को किसी क़िस्म का कोई ख़तरा लाहिक़ होगा वह अपने मफ़ादात के लिये कुछ भी कर गुज़रेंगे वर्ना मुसलमानों से बढ़ कर आलमी इत्तिहाद का अलमबरदार भला कौन हो सकता है जिन्होंने पूरे कुर्रहये अर्ज़ को अद्ल व इंसाफ़ और सलामती का गह्वारा बना दिया थाः

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ۔

"ऐ नबी सल्ल0! हमने तो आप को तमाम अह्ले आलम के लिये रहमत बना कर भेजा है।"[4]

क्या यह हक़ीक़त नहीं कि इस आलमी इत्तिहाद के अलमबरदार इस्लाम को अपने लिये सबसे बड़ी रुकावट समझतें हैं? उनकी हर दम यही कोशिश होती है कि लोगों के सामने इसका चेहरा दाग़दार करके पेश करें और हक़ाइक़ से आंख मिचौली खेलें। शायद इस सिलसिले में इंतिहाई ख़तरनाक नताइज वाला जो खेल खेला जा रहा है वह मादर पिदर आज़ाद मीडिया की ताक़त है जो इस्लाम और मुसलामनों के ख़िलाफ़ पूरी कुव्वत से झोंक दी गई है। इसके ज़रीए मुसलमानों के अफ़कार और नज़रियात को ग़लत रंग देकर पेश किया जा रहा है। क्या मुसलमान होश के नाख़ुन लेने और ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होने के लिये तैयार हैं? उन्हें ख़बरदार रहना चाहिये कि

उनके ख़िलाफ़ क्या क्या मंसूबे बनाए जा रहे हैं।

आजकल बहुत सी इस्तिलाहात ऐसी राइज हैं जिनका गहराई से जाइज़ा लेने की ज़रूरत है ताकि अगर उनमें कोई मुस्बत और मुफ़ीद पहलू हो जो हमारी शरीअ़त और इस्लामी मस्लिहतों से न टकराता हो तो उससे फ़ाएदा उठाया जाए वर्ना हमें यक़ीन रखना चाहिये कि यह पुरफ़रेब इस्तिलाहात, खोखले नअ़रे और झूटे दावे दूर का ढोल हैं। मुसलमानों को उनके ढकोसले में नहीं आना चाहिये। उन्हें यह हक़ीक़त भी जान लेनी चाहिये कि वह अस्रे हाज़िर के इन चैलन्जिज़ का मुक़ाबला उस वक़्त तक नहीं कर सकते जब तक वह अपनी सफ़ों में इत्तिहाद क़ाइम न कर लें और अपनी कोशिशों को मुनज़्ज़म व मुरत्तब न कर लें, जब तक वह आपस में बाहमी तआ़वुन की सही मंसूबा बंदी न करेंगे उस वक़्त तक किसी चैलंज से उहदा बरआना हो सकेंगे। हम आलमी इत्तिहाद के अलमबरदारों पर दो टूक अलफ़ाज़ में यह वाज़ेह करना भी अपना फ़र्ज़ समझते हैं कि उम्मते मुस्लिमा अपने अक़ाइद व नज़रियात और अपनी तह्ज़ीब व सक़ाफ़त का कभी सौदा नहीं कर सकती। हम तह्ज़ीबे जदीद की चमक और भड़क के आगे अपने अख़्लाक़ व किर्दार को कभी ज़ेर न होने देंगे, इंशा अल्लाह! चाहे अह्ले बातिल कितना ही ज़ोर लगा लें।

यहां अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारी सफ़ों में कुछ ऐसे शिकस्त ख़ुर्दा लोग भी हैं जो मग़रिबी तह्ज़ीब की चमक दमक से मरऊब हैं। वह अपनी बेबसी के बाइस यह समझतें हैं कि मुसलमानों के ज़वाल और तरक़्क़ी की दौड़ में पीछे रहने की वजह उनकी दीन पसंदी और दीन से वाबस्तगी है, अल्लाह ही उन्हें समझ अता फ़रमाए, गोया दीने इस्लाम तरक़्क़ी की राह में रुकावट है, सुब्हानल्लाह! हमारे ही भाई बंदुओं की कमज़ोर ज़ह्नियत और अदमे

बसीरत ने हमें कहां से कहां ला खड़ा किया, फलस्तीन पर दूसरों का क़ब्ज़ा हो चुका, मुक़द्दसाते इस्लामिया किसी और के तसल्लुत में हैं, शरीअ़ते इस्लामिया की तन्फ़ीज़ बेशतर मुमालिक में रोक दी गई है बल्कि अल्लाह की शरीअ़त के मुक़ाबले में ख़ुद साख़्ता क़वानीन को अहमियत दी गई है। यह सब कुछ हमारे ही लोगों के हाथों कराया गया है जिनकी तरबियत दुशमनाने इस्लाम की गोद में हुई, जिनके फ़िक्र व नज़र को शुरू ही से मस्मूम किया गया और मीडिया ने इस जलती पर तेल छिड़कते हुए ऐसे प्रोग्राम पेश किये जिनसे दीन बेज़ारी में इज़ाफ़ा हुआ, ग़ैर इस्लामी अफ़कार और दीन की नफ़ी करने वाली आदात को बड़ी ख़ूबसूरती से पेश किया गया, गुमराहकुन नअ़रे इतनी चालाकी से लगाए गए कि बहुत से लोग यह समझने लगे कि हमारे ज़वाल का सबब हमारा दीन ही है क्योंकि दीन तरक़्क़ी की राह में रुकावट है। لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

क्या हम अब भी बेदार नहीं होंगे? क्या हम अब भी अपनी ज़िम्मादारियां पूरी करने के लिये आगे नहीं बढ़ेंगे? आइये! हम सब मिलकर मुहासिने इस्लाम को दुनिया के सामने पेश करें और तमाम इंसानों को अपने अमल से दीने हनीफ़ का ख़ूबसूरत मंज़र दिखलाएं, यह हम सबकी मुशतर्का ज़िम्मादारी है क्योंकि हमने दावते दीन की वह ज़िम्मादारी क़बूल की है जिससे ज़मीन व आसमान और पहाड़ भी अपनी बेबसी और आजिज़ी का इज़हार कर रहे थे, दीन की दावत इल्म, बसीरत और इस्लाही जज़्बे के साथ होनी चाहिये। वाबस्तगाने दीन के लिये ज़रूरी है कि वह अपने अंदर यह ग़ैर मुतज़लज़ल यक़ीन पैदा करें कि दीन हर तरफ़ फैल कर रहेगा, इसके बढ़ते हुए क़दमों को ग़लत प्रोपेगंडे के बलबूते पर दुनिया की कोई ताक़त रोक नहीं सकती। आइये! हम सब इंसानों को बताएं कि

दुनिया में पाई जाने वाली बेचैनी और अफ़रा तफ़री का हल सिर्फ़ और सिर्फ़ दीने इस्लाम करता है। हमारा दीन ख़ालिस अक़ीदए तौहीद और किताब व सुन्नत की तालीमात का मुरक्क़ा है। क़ुर्आन व सुन्नत को सलफ़े सालिहीन के तरीक़े के मुताबिक़ समझना चाहिये।

दुनिया की इस बदलती सूरते हाल का जाइज़ा लेने वाले हसरत के साथ यह गवाही देने पर मजबूर होंगे कि दावते दीन के तक़ाज़ों से हमने सख़्त कोताही बरती है, हमने उसे मुअस्सिर उस्लूब में पेश करने के लिये टेक्नालोजी और जदीद वसाइल टीव वी, इंटरनेट और मीडिया का सही इस्तेमाल नहीं किया, एक तरफ़ दुनिया में इस्लाम की बाज़गश्त सुनाई दे रही है, मवाक़ेअ़ और इम्कानात के नए दरीचे खुल रहे हैं लेकिन उनसे फ़ाएदा उठाने वाले दूर दूर तक दिखाई नहीं देते। हम में कितनब लोग हैं जो इस्लाम को उसकी सही सूरत में पेश करने का जज़्बए सादिक़ा रखते हैं? हमें फ़ौरी तौर पर फ़िक्र करनी चाहिये कि हम अपने वक़्त और सलाहियतों का कितना हिस्सा दीन के लिये दे सकते हैं?

हमारी परेशानी के लिये यही बात काफ़ी है कि जब दीन से वाबस्ता अफ़राद ख़ुद ही पहलू तही से काम लें तो फिर अल्लाह की मदद कहां से आएगी? क्या अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और इस्लाम का हम पर इतना भी हक़ नहीं कि हमारे नौजवान और बुज़ुर्ग इसके दिफ़ाअ़ के लिये कमर बस्ता हो जाएं?

बिरादराने इस्लाम! लोगों ने मुख़्तलिफ़ अफ़कार और तह्ज़ीबों को अपनाकर देख लिया, मुख़्तलिफ़ नअ़रों की छांव में वक़्त गुज़ार कर अंदाज़ा लगा लिया कि यह तह्ज़ीब की चमक दमक ज़ाहिरी और खोखली है क्योंकि इसकी बुन्याद दीन से बेज़ारी और अख़्लाक़ी

क़दरों की पामाली पर रखी गई है, लिहाज़ा इसकी कोख से जनम लेने वाली तहज़ीब अपने दिन गिन रही है, वह दीवालिया पन का शिकार हो चुकी है, चाहे वक़्ती तौर पर उसके दामन में कुछ माद्दी तरक़्क़ी की झलक भी मौजूद है मगर अंजामे कार क्या होगा? वही जो कलामे इलाही में बता दिया गया है:

وَعْدَ اللّٰهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ۔ يَعْلَمُوْنَ ظٰهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ۔

"यह अल्लाह का वादा है और अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करता लेकिन अक्सर लोग इस हक़ीक़त को नहीं जानते, वह दुन्यवी ज़िंदगी की ज़ाहिरी चीज़ों से बाख़बर हैं लेकिन आख़िरत से वह ग़ाफ़िल हैं।"(5)

इस तरक़्क़ी के मुक़ाबले में लोगों ने रूहानी, फ़ित्री और अक़्ल व शुऊर के तक़ाज़ों को बालाए ताक़ रख कर आगे बढ़ने की कोशिश की, उन्हें शख़्सी आज़ादी की आड़ में शहवत पसंद और खुद ग़र्ज़ बना दिया गया, इंसान एक मशीन की तरह दुनिया कमाने के पीछे लग गया, वह अख़्लाक़ी और रूहानी क़द्रों के बग़ैर चक्की की तरह माद्दियत के इर्दगिर्द घूम रहा है जिससे दुनिया का तवाज़ुन मुतअस्सिर हुआ, नौबत अब यहां तक पहुंच चुकी है कि खुद उनके अपने दानिशवर चीख़ रहे हैं कि इंसान इस माद्दी दौड़ में इतना आगे बढ़ गया है कि उसकी हलाकत और तबाही यक़ीनी है। एक शाइर के बक़ौल:

اَلْفَضْلُ مَا شَهِدَتْ بِهِ الْاَعْدَاءُ

"हक़ीक़ी बरतरी तो इस बात में है कि दुशमन भी आप

की खूबियों की गवाही दे।"[6]

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हमें दीने इस्लाम की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया, बुतपरस्ती के लशकर को पस्पा कर दिया, जाहिलियत के नअ़रों को खोखला कर दिया, वक़्त की बड़ी ताक़तों के सर झुका दिये, क़ैसर व किस्रा, तातारी और सलीबियों का मुंह फेर दिया, अल्लाह की अज़्मत का नअ़रा बुलंद हुआ, रसूलुल्लाह सल्ल0 को ग़ल्बा नसीब हुआ, उमर, सअ़द, ख़ालिद, तारिक़ और सलाहुद्दीन रज़ि0 की शक्ल में दीने इस्लाम का अलम बुलंद करने वाले मुजाहिद मिले, हर तरफ़ "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" का ज़मज़मा गूंजने लगा और उम्मते मुस्लिमा की ताक़त और सतूत का हर तरफ़ ग़ल्ग़ला हुआ। अब इंशा अल्लाह फिर से यह दीन ग़ालिब आएगा, यह उम्मत कामरान होगी, क्योंकि यह दीने फ़ित्रत है, अल्लाह की वह फ़ित्रत जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है:

لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ۔

"अल्लाह तआला की बनाई हुई चीज़ को बदला नहीं जा सकता।"[7]

लेकिन इससे मुसलमानों को क़त्अ़न ग़लत फ़हमी या लापरवाई का मुज़ाहरा नहीं करना चाहिये बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। अपनी कमज़ोरियों का सही इलाज करना चाहिये। दुशमन के लिये कोई रास्ता नहीं छोड़ना चाहिये। दीन के बुन्यादी मसादिर किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल सल्ल0 को पूरी मज़बूती से थाम लेना चाहिये। इसके मुक़ाबले में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब, मुमालिक और मशारिब जो क़ुर्आन व सुन्नत की तालीमात से टकराते हों उनसे फ़ौरी तौर पर अपनी अलाहिदा और दस्तबरदारी का एलान कर देना चाहिये, अपनी और अपनी नस्ल की शरई अलम की

रौशनी में सही तरबियत करनी चाहिये।

यक़ीनन हर मुसलमान पर उम्मीद है कि दीने इस्लाम का मुस्तक़बिल रौशन है क्योंकि यह वादए रब्बानी है जो पूरा होकर रहेगा:

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ۔

"हम पर ज़रूरी है कि मोमिनों की मदद करें।"[8]

रसूले अकरम सल्ल0 ने बशारत दी है:

لَيَبْلُغَنَّ هٰذَا الدِّيْنُ مَا بَلَغَ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ، وَلَا يَتْرُكُ اللّٰهُ بَيْتَ مَدَرٍ وَّلَا وَبَرٍ اِلَّا أَدْخَلَهُ هٰذَا الدِّيْنَ، بِعِزِّ عَزِيْزٍ أَوْ بِذُلِّ ذَلِيْلٍ، عِزًّا يُعِزُّ اللّٰهُ بِهِ الْاِسْلَامَ وَذُلًّا يُذِلُّ بِهِ الْكُفْرَ۔

"यह दीन वहां तक पहुंचेगा जहां तक शाम और सहर के उलट फेर का सिलसिला जारी है, अल्लाह तआला रूए ज़मीन पर कोई कच्ची झोंपड़ी या पुख़्ता मकान ऐसा नहीं छोड़ेगा जिसमें दीन दाख़िल न हो, इज़्ज़तदार की इज़्ज़त के साथ और ज़लील की ज़िल्लत के साथ, ऐसी इज़्ज़त जो अल्लाह की तरफ़ से इस्लाम की वजह से दी जाएगी और ऐसी ज़िल्लत जो कुफ़्र की वजह से मुसल्लत कर दी जाएगी।"[9]

यह बातें ख़्याल व ख़्वाब की नहीं बल्कि यह वादए हक़ है जिसकी बुन्याद सच्ची ख़बर पर है लेकिन इसका क़तअन यह मतलब नहीं कि मुसलमान इस पर तकिया करके बैठे रहें बल्कि उन्हें ख़ुद सच्चा और खरा मुसलमान बनने और दूसरों को भी सच्चा और खरा मुसलमान बनाने के लिये दावत व तबलीग़ की ज़बरदस्त मेहनत करनी होगी। मुस्लिम हुक्मरानों को चाहिये कि वह अपनी दीनी

ज़िम्मादारियों को समझें और शरीअ़ते इलाहिया को अमलन नाफ़िज़ करें और तमाम मुसलमानों को चाहिये कि इस वक़्त जबकि लोग हक़ के प्यासे और सच्चाई के मुतलाशी हैं, माद्दी रेलपेल और चकाचौंध से उक्ता चुके हैं, खुसूसन मग़रिबी मुमालिक के मुआशरे अपनी ही भड़कीली तहज़ीब से आजिज़ आ चुके हैं, ऐसी हालत में पूरा मौक़ा है कि हम इससे भरपूर फ़ाएदा उठाएं। दाइयाने दीन, सुलहाए उम्मत और दानिशवराने मिल्लत को चाहिये कि वह आगे बढ़ें और दावती ज़िम्मादारियों को अस्रे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ पूरा करें, खुसूसन इस वक़्त बिलादुल हरमैन में इसका एहतिमाम हो तो आलमी सतह पर बेहतरीन असर देखने में आएगा, दुनिया भर के लोगों की हौसला अफ़ज़ाई होगी कि कुछ लोग हैं, जो इनके मसाइल पर ग़ौर करते और मुआमलात पर तवज्जोह देते हैं, इसी तरह उन तमाम शर पसंदों को लगाम देने की ज़रूरत है जो गंदे पानी में शिकार खेल रहे हैं, अपने गुमराहकुन ख़्यालात का प्रचार कर रहे हैं और बातिल तसव्वुरात फैलाना चाहते हैं। मैं इस नुक्ते को पूरी अहमियत के साथ वाज़ेह करना चाहता हूं कि दावत व तबलीग़ का उस्लूब तग़य्युर पज़ीर है, आज के बदलते हालात में हमें जदीद तरीन मुअस्सिर वसाइल टी वी चैनल्ज़ वग़ैरा की सख़्त ज़रूरत है जो इस्लामी महासिन मुनासिब उस्लूब में मुख़्तलिफ़ ज़बानों में नश्र कर सकते हों क्योंकि ज़राए अबलाग़ व नशरियात का दुनिया में नुमायां असर है, लोगों के अफ़्कार व नज़रियात पर असर अंदाज़ होने का यह मुअस्सिर हथियार है, लिहाज़ा जो इन शोबों में महारत रखते हैं वह और खुसूसन दौलतमंद अफ़राद और ज़िम्मादारान को चाहिये कि इस अहम ज़रूरत की तकमील के लिये भरपूर कोशिश करें और अलहम्दु लिल्लाह! फ़र्ज़न्दाने मिल्लत के यहां इम्कानात और

सलाहियतों की कमी नहीं, सिर्फ़ तवज्जोह देने की ज़रूरत है। क्या यह लोग अपनी ज़िम्मादारियों को महसूस करते हुए आगे बढ़ेंगे? क्या इस कमी की तलाफ़ी के लिये कोशिश करेंगे ताकि इस्लाम का सच्चा पैग़ाम लोगों तक पहुंच सके? क्योंकि ज़राए अबलाग़ व नशरियात ने अभी तक इस्लाम के रौशन चेहरे को बदनुमा अंदाज़ में पेश किया है, इसकी पाकीज़ा तालीमात को मस्ख़ करके दिखाया है, इसकी अख़्लाक़ी क़दरों को पामाल किया है और यह निहायत तल्ख़ और अलम अंगेज़ हक़ीक़त है कि यह बुराइयां हमारे ही भाइयों की निगरानी में फैलाई जा रही हैं जो हमारे ही इलाक़ों से तअ़ल्लुक़ रखते हैं और हमारी ही ज़बान बोलने वाले हैं, हाए अफ़सोस! हमारी दीनी हमियत, अरबी ग़ैरत और इस्लामी मुहब्बत कहां चली गई? अल्लाह तआला हमें हिदायत के बाद गुमराही से महफ़ूज़ रखे।

उंदलुसी शाइर ने ऐसी सूरते हाल की क्या ख़ूब अक्कासी की है:

وَلِلْحَوَادِثِ سُلْوَانٌ يُّسَهِّلُهَا
وَمَا لِمَا حَلَّ بِالْإِسْلَامِ سُلْوَانُ!
أَلَا نُفُوسٌ أَبِيَّاتٌ لَّهَا هِمَمٌ؟!
أَمَا عَلَى الْخَيْرِ أَنْصَارٌ وَّأَعْوَانُ؟!

"मुख़्तलिफ़ हादसात के बाद उनसे नजात और तसल्ली के इम्कानात हैं लेकिन इस्लाम पर टूट पड़ने वाली मुसीबतों से नजात का रास्ता दिखाई नहीं देता। हर चंद हम में बड़े बा हिम्मत और मज़बूत इरादों के लोग मौजूद हैं लेकिन क्या ख़ैर के लिये भी कोई मददगार और मुआविन है?"[10]

इन वाक़िआत को देखकर दिल पिघल जाता है। काश कि दिल में नूरे इस्लाम और हरारते ईमान भी होती, फ़रमाने इलाही है:

وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ۔

"जो लोग हमारी राह में जिद्द व जिह्द करेंगे हम उन्हें अपनी राहें ज़रूर दिखाएंगे, बेशक अल्लाह तआला नेकूकार बंदों के साथ है।"(11)

अल्लाह तआला कोशिश करने वालों की लग़ज़िशों को मुआफ़ फ़रमाए, ग़ैरतमंदों की मेहनतों में बरकत अता फ़रमाए ताकि दीन, उम्मत और वतन की ख़िदमत हो सके, अल्लाह तआला हमारे आमाल में इख़्लास पैदा फ़रमाए और हम सबकी मग़फ़िरत फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي جَعَلَنَا مِنْ خَيْرِ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ وَمَنَّ عَلَيْنَا بِلِبَاسِ الإِيمَانِ خَيْرِ لِبَاسٍ، أَحْمَدُهُ تَعَالٰى وَأَشْكُرُهُ عَلٰى مَا هَدَانَا لِلإِسْلَامِ، وَجَعَلَنَا مِنْ أُمَّةِ سَيِّدِ الْأَنَامِ، وأَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلِيُّ الْفَضْلِ وَالإِنْعَامِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُاللّٰهِ وَرَسُوْلُهُ، بَدْرُ التَّمَامِ، وَمِسْكُ الْخِتَامِ، وَخَيْرُ مَنْ عَمِلَ بِالدِّيْنِ وَقَامَ، صَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهِ الْبَرَرَةِ الْكِرَامِ، وَصَحَابَتِهِ الأَعْلَامِ، وَالتَّابِعِيْنَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِإِحْسَانٍ إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

أَمَّا بَعْدُ

"हर क़िस्म की हम्द अल्लाह के लिये सज़ावार है जिसने हमें बेहतरीन उम्मत का लक़ब अता फ़रमाया और दौलते

ईमान से सरफ़राज़ फ़रमाया, मैं उसी की तारीफ़ करता हूं और उसी का शुक्र अदा करता हूं कि उसने हमें इस्लाम जैसा दीन दिया और हमें सय्यदुल अंबिया वलमुर्सलीन सल्ल0 की उम्मत में शामिल फ़रमाया। मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वही हक़ीक़ी इन्आ़म से नवाज़ने वाला है और मैं शहादत देता हूं कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के बंदे और रसूल हैं, आप बदरे कामिल और ख़ातिमुल अंबिया हैं। आपने इस दीन पर सबसे ज़्यादा अमल किया, अल्लाह तआला की रहमतें और सलामतें हों आप सल्ल0 पर, आपके बाबरकत घराने पर और आप के सहाबए किराम और उन तमाम लोगों पर जो आप सल्ल0 के नक़्शे क़दम पर चलें।''

हम्द व सलात के बादः

लोगो! अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और जान लो कि बेहतरीन किताब, अल्लाह तआला की किताब है और बेहतरीन रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का रास्ता है और सबसे बुरी बात दीन में नई बात शुरू करना है, हर नई बात बिद्अ़त और हर बिद्अ़त गुमराही है।

अज़ीज़ भाइयो! इस्लाम एक बड़ी नेअ़मत है जो हमें अता की गई है। इस सच्चे दीन की तरफ़ रहनुमाई करके अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हम पर एहसाने अज़ीम किया है। यह ऐसी नेअ़मत है कि हमें अपने इल्म व अमल के ज़रीए और ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर हर हाल में उसका शुक्र अदा करना चाहिये क्योंकि यह दीन सरतापा अद्ल, इंसाफ़, सलामती, रहमत, मुहब्बत और उख़ूवत की दावत देता

है। आज सारी दुनिया सच्चाई की तलाश में सरगर्दां है, अब यह हमारी ज़िम्मादारी है कि मैदाने दावत व तबलीग़ में कमरबस्ता हो जाएं, इस मैदान में काम करने वाले आपस में मंसूबा बंदी करें, बाहमी इख़्तिलाफ़ात और इंतिशार से परहेज़ करें क्योंकि बाहमी इख़्तिलाफ़ात का फ़ाएदा सिर्फ़ दुशमनाने इस्लाम को पहुंचेगा। इस वक़्त दावत व तबलीग़ के मैदान में मेहनत करने की अशद ज़रूरत है। ज़मीन निहायत ज़र ख़ेज़ है, इसमें बीज बोने की ज़रूरत है ताकि इस्लाम की खेती फिर से लहलहाने लगे, इसके लिये बाहमी मशवरे, सही मंसूबाबंदी और गहरी प्लानिंग करनी होगी, आज ऐसे दाइयाने दीन की सख़्त ज़रूरत है जो अस्रे हाज़िर के तक़ाज़ों को समझते हों ताकि दुनिया के सामने हम अपने मौक़िफ़ की सच्चाई, मक़ासिद की पाकीज़गी और बुलंद अह्दाफ़ उजागर कर सकें क्योंकि इस्लाम की सूरत को बअ़ज़ लादीन और मुन्हरिफ़ ताक़तों ने बिगाड़ने की कोशिश की, दुनिया के सामने इसकी ऐसी भोंडी तस्वीर पेश की गोया यह ख़ूंख़ार लोगों का दीन है, हालांकि हक़ तो यह है कि यह दीन इफ़रात व तफ़रीत से पाक एक एक इंतिहाई मुतवाज़िन, मुअ़तदिल, सादा और फ़ित्री दीन है। हम तहदीसे नेअ़मत के तौर पर उन अह्ले ख़ैर की मसाइये जमीला की तरफ़ इशारा करना चाहेंगे, जो दावत व इस्लाह के लिये अपनी दौलत का सही इस्तेमाल कर रहे हैं, वह यक़ीनन अल्लाह तआला से इसका अज्र पाएंगे, नीज़ इस अहम मैदान में की जाने वाली दाइयाना सरगर्मियों की जो पुश्त पनाही और मदद इस मुल्क बिलादुल हरमैन अश्शरीफ़ैन की तरफ़ से की जा रही है, उसे कोई इंसाफ़ पसंद नज़र अंदाज़ नहीं कर सकता क्योंकि इन कोशिशों का दाइरा सिर्फ़ मक़ामी तौर पर महदूद नहीं बल्कि दुनिया भर में इसके बेहतरीन आसार व नताइज देखे जा सकते हैं। हम

समझते हैं कि यह हमारी बुन्यादी जिम्मादारियों में शामिल और हमारे अह्दाफ का हिस्सा है कि इस्लामी मराकिज़ और दीनी इदारों की तामीर की जाए ताकि यहां से ख़ैर के चशमे फूटें। अल्लाह तआला इन कोशिशों में इख़्लास अता फरमाए, इसका अज्रे अज़ीम दे और मज़ीद ख़ैर व भलाई के कामों की तौफ़ीक़ से नवाज़े।

दरूद व सलाम पढ़िये नबीये मुकर्रम सल्ल0 पर। यह बेहतरीन नेकी और अफ़ज़ल अमल है जिसका अल्लाह तआला ने हमें अपनी किताबे अज़ीज़ में हुक्म दिया है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हवाशी ख़ुत्बा नम्बर 19

(1) अर्रअ़द 13:17 (2) अत्तौबा 9:32 (3) अत्तौबा 9:32 (4) अलअंबिया 21:107 (5) अर्रूम 30:6,7 (6) यह सरियुर्रिफा के एक शेअ़र का तजुर्मा है, मौसूआ अमसालुल अरब:6/33 (7) अर्रूम 30:30 (8) अर्रूम 30:47 (9)मुस्नद अहमद:4/103, वलमुस्तदरक लिलहाकिम:4/430 (10) मशहूर उंदलुसी शाइर अबुल बक़ा अलरंदी के मर्सिया कुछ अशआर हैं। (11)अलअन्कबूत 29:69